

THE FREE INDOLOGICAL COLLECTION

WWW.SANSKRITDOCUMENTS.ORG/TFIC

FAIR USE DECLARATION

This book is sourced from another online repository and provided to you at this site under the TFIC collection. It is provided under commonly held Fair Use guidelines for individual educational or research use. We believe that the book is in the public domain and public dissemination was the intent of the original repository. We applaud and support their work wholeheartedly and only provide this version of this book at this site to make it available to even more readers. We believe that cataloging plays a big part in finding valuable books and try to facilitate that, through our TFIC group efforts. In some cases, the original sources are no longer online or are very hard to access, or marked up in or provided in Indian languages, rather than the more widely used English language. TFIC tries to address these needs too. Our intent is to aid all these repositories and digitization projects and is in no way to undercut them. For more information about our mission and our fair use guidelines, please visit our website.

Note that we provide this book and others because, to the best of our knowledge, they are in the public domain, in our jurisdiction. However, before downloading and using it, you must verify that it is legal for you, in your jurisdiction, to access and use this copy of the book. Please do not download this book in error. We may not be held responsible for any copyright or other legal violations. Placing this notice in the front of every book, serves to both alert you, and to relieve us of any responsibility.

If you are the intellectual property owner of this or any other book in our collection, please email us, if you have any objections to how we present or provide this book here, or to our providing this book at all. We shall work with you immediately.

-The TFIC Team.

माणिकचन्द्र-दिगम्बर-जैनग्रन्थमाला, पुष्प ४५

जैनशिलालेखसंग्रहः

(द्वितीयो भागः)

संस्कृतं
पं० विजयमूर्ति एम० ए० शास्त्राचार्यः

प्रकाशिका

माणिकचन्द्र-दिगम्बर-जैनग्रन्थमालासमितिः

विक्रम संवत् २००९

मूल्यं पंचरूप्यकम्

१

- प्रकाशक -
नाथूराम प्रेमी,
मन्त्री, भाणिकचन्द्र-जैतून्यमाला
हीराबाग, बम्बई ४

सितम्बर १९५२

- मुद्रक -
लक्ष्मीबाई नारायण चौधरी
निर्णयसागर प्रेस,
२६-२८ कोलभाट स्ट्रीट, बम्बई २

खगति

जैनशिलालेखसंग्रहका प्रथम भाग आजसे चौबीस वर्ष पूर्व (सन् १९२८ ईस्वीमें प्रकाशित हुआ था। उसके प्राथमिक वक्तव्यमें मैंने यह आशा प्रकट की थी कि यदि पाठकोने चाहा, और भविष्य अनुकूल रहा, तो अन्य शिलालेखोंका दूसरा संग्रह शीघ्र ही पाठकोको भेंट किया जायगा। पाठकोने चाहा तो खूब, और माणिकचन्द्र-दिगम्बर-जैनग्रंथशालाके परम उत्साही मंत्री पं० नाथूरामजी प्रेमीकी प्रेरणा भी रही, किन्तु मैं अपनी अन्य साहित्यिक प्रवृत्तियोंके कारण इस कार्यको हाथमें न ले सका। तथापि चित्तमें इस कार्यकी आवश्यकता निरन्तर खटकती रही। अपने साहित्यिक सहयोगी डॉ० आदिनाथजी उपाध्येसे भी इस सम्बन्धमें अनेक बार परामर्श किया किन्तु शिलालेखोंका संग्रह करने करानेकी कोई सुविधा न निकल सकी। अतएव, जब कोई दो वर्ष पूर्व श्रद्धेय प्रेमीजीने मुझसे पूछा कि क्या पं० विजयमूर्तिजी एम० ए० (दर्शन, संस्कृत) शास्त्राचार्यद्वारा शिलालेखसंग्रहका कार्य प्रारम्भ कराया जावे, तब मैंने सहर्ष अपनी सम्मति दे दी। आनन्दकी बात है कि उक्त योजनानुसार जैनशिलालेखसंग्रहका यह द्वितीय भाग छपकर तैयार हो गया और अब पाठकोके हाथोंमें पहुँच रहा है।

यह बतलानेकी तो अब आवश्यकता नहीं है कि प्राचीन शिलालेखोंका इतिहास-निर्माणके कार्यमें कितना महत्त्वपूर्ण स्थान है। जबसे जैन शिलालेखोंका प्रथम भाग प्रकाशित हुआ, तबसे गत चौबीस वर्षोंमें जैनधर्म और साहित्यके इतिहाससम्बन्धी लेखोंमें एक विशेष प्रौढता और प्रामाणिकता दृष्टिगोचर होने लगी। यद्यपि वे शिलालेख उससे पूर्व ही प्रकाशित हो चुके थे, किन्तु वह सामग्री केंद्रेजीमें, पुरातत्त्वविभागके बहुमूल्य और बहुधा अप्राप्य प्रकाशनोमें निहित होनेके कारण साधारण लेखकों तथा पाठकोको सुलभ नहीं थी। इसीलिये समस्त प्रकाशित शिलालेखोंका सुलभ संग्रह नितान्त आवश्यक है।

जैनशिलालेखसंग्रह प्रथम भागमें पाँच सौ शिलालेख प्रकाशित किये गये थे। वे सब लेख श्रवणवेल्लुल और उसके आसपासके कुछ स्थानोंके ही थे।

अब प्रस्तुत संग्रहमें गैरीनोद्वारा संकलित जैन प्राचीन लेखोंकी सूची (Repertoire D'epigraphie Jaina by A. Gueniot) के क्रमानुसार लेख उपस्थित करनेका प्रयत्न किया गया है। नामोंको मोटे टाइपमें छापने तथा लेखोंका सारांश हिन्दीमें दे देनेकी शैली प्रथम भागके अनुसार यहाँ भी अपनाई गई है। किन्तु खेद है कि प्रत्येक लेखके भीतर पद्योंकी सख्याका क्रमसे अंकन नहीं किया गया, जिससे उनके उल्लेख करनेमें कुछ असुविधा हो सकती है।

इन शिलालेखोंका इतिहासकी दृष्टिसे मूल्य आँकना आवश्यक है। किन्तु अब यह कार्य उचित रीतिसे तभी निष्पन्न किया जा सकता है जब शेष शिलालेखोंके संग्रह भी इसी शैलीसे प्रकाशित हो जावें। अतएव, संग्राहक और प्रकाशकका इस महत्त्वपूर्ण प्रकाशनके लिये अभिनन्दन करते हुए मैं आशा करता हूँ कि वे अपने इस कार्यको गतिशील बनाये रखेंगे और बिना अधिक विलम्बके संग्रहका कार्य पूरा करके लेखकों और पाठकोंकी दीर्घकालीन पिपासाकी पूर्णतः तृप्ति करनेका अनुपम यश प्राप्त करेंगे।

नागपुर महाविद्यालय
नागपुर, ६-३-१९५२

हीरालाल जैन

जैन-शिलालेख-संग्रह

द्वितीय भाग

१

दिल्ली (टोपरा) — प्राकृत ।

अशोकके सातवें धर्मशासन-लेखका अन्तिम भाग

[लगभग २४२ ईस्वी पूर्व]

[१] धमवडिया च वाढं वडिसति [१] एताये मे अठाये धंमसा-
वनानि सावापितानि धमानुसाथिनि विविधानि आनपितानि [यथा मे
पुलि] सापि बहुने जनसि आयता एते पलियोवदिसति पि पवियलि-
संतिपि [१] लजूका पि बहुकेसु पानसनसहसेसु आयता ते पि मे आन-
पिता[:] हेव च हेव च पलियोवदाथ

[२] जनं धमयुत [१] देवान पिये पियदसि हेव आहा[:] एतमेव
मे अनुवेखमाने धमयभानि कटानि[,] धममहामाता कटा[,] धम-
[सावने] कटे [१] देवान पिये पियदसि लाजा हेवं आहा[:] मगोसु पि मे
निगोहानि लोपापितानि[:] छायोपगानि होसंति पसुमुनिसान[,] अवा-
वडिक्या लोपापिता[,] अढकोसिक्यानि पि मे उटुपानानि

[३] खानापितानि[,] निसिधिया च कालापिता[:] आपानानि मे
बहुकानि तत तत कालापितानि पटीभोगाये पसुमुनिसान [१] ल[हुके
चु] एस पटीभोगे नाम [१] विविधायाहि सुखायनाया पुलिमेहिपि लाजी

हि ममया च सुखयिते^१ लोके [I] इमं च धमानुपटीपतीअनुपटी-
पज्जुति[.] एतदथा मे

[४] एस कटे [I] देवान् पिये पियदसि हेव आहा[:] धम्महा-
मातापि मे ते बहुविधेषु अठेसु अनुगहिकेसु वियापटा से पवजीतान चैव
गिहियान च [.] सब्[पास]डेसु पि च वियापटा से [I] संघठसि पि मे
कटे इमे वियापटा होहतिति[.] हेमेव वाभनेसु आजीविकेसु पि मे कटे

[५] इमे वियापटा होहतिति [I] निगंठेसु पि मे कटे इमे
वियापटा होहंति[:] नानापासडेसु पि मे कटे इमे वियापटा होह-
तिति [I] पट्टिविसठ पटीविसठ तेसु तेसु ते ते महामाता [I] धम्महा-
माता च मे एतेसु चैव वियापटा सवेसु च अनेसु पासडेसु [I] देवान्
पिये पियदसि लाजा हेव आहा[:]

[६] एते च अने च बहुका मुखा दानविसगसि वियापटा से मम
चैव देविन च[.] सबसि च मे आलोधनसि ते बहुविधेन आ[का]
लेन तानि तानि तुठायतनानि पटी [पाडयति] हिद चैव दिसासु च [I]
दालकान पि च मे कटे अनान च देविकुमालान इमे दानविसगोसु
वियापटा होहंति ति

[७] धम्मपदानठाये धमानुपट्टिपतिये [I] एस हि धमापदाने धम्म-
पटीपति च या इय दया दाने सचे सोचवे मदवे साधवे च लोकस हेव
वडिसतिति [I] देवान् पिये [पियद] सि लाजा हेव आहा[:] यानि हि
कानि चि ममिया साधवानि कटानि त लोके अनूपटीपने त च
अनुविधियति[.] तेन वडिता च

१ सुखीयवे Indian Antiquary, Vol XIII, p 310, t.

[८] वटिसंति च मातापितुसु सुसुसाया गुलसु सुसुसाया वयोम-
हालकान अनुपटीपतिया वाभनसमनेसु कपनवलाकेसु आव दासभट-
केसु संपटीपतिया [I] देवानपिये [पि]यदसि लाजा हेव आहा[:]
मुनिसानं चु या इय धमवटि वटिता दुवेहि येव आकालेहि धंमनियमेन
च निज्ञतिया च

[९] तत च लहु से धमनियमे[,] निज्ञतिया व भुये[I] धमनियमे च
खो एस ये मे इय कटे इमानि च इमानि जातानि अवघियानि[,] अनानि
पि चु वहु [कानि] धमनियमानि यानि मे कटानि[I] निज्ञतिया व चु
भुये मुनिसान धमवटि वटिता अविहिसाये भुतान

[१०] अनालंभाये पानान[I] से एताये अथाये इय कटे[,] पुता-
पपोतिके चदमसुलियिके होतु ति[,] तथा च अनुपटीपजंतु ति[I] हेव हि
अनुपटीपजत हिदतपालते आलघे होति[I] सतविसतिवसाभिसितेन
मे इयं धंमलिवि लिखापापिताति[I] एत देवानंपिये आहा[:] इय

[११] धमलिवि अन अथि सिलायभानि वा सिलाफलकानि वा
तत कटविया एन एस चिलठितिके सिया ।

[यह धर्मशासन-लेख अशोकके द्वारा महास्त्रम्भोंपर लिखाये गये लेखो-
मेंसे अन्तिम है । इसको कोई कोई आठवां धर्मशासन-लेख (Edict)
मानते हैं, तो कोई मात्र सातवे धर्मशासन-लेखका ही अन्तिम
भाग मानते हैं ।

इसमें बताया है कि सम्राट् अशोकने अपने राज्याभिषेकसे २७ वें
वर्षमें यह धर्मशासन-लेख लिखाया था । इसमें उसने अपने द्वारा
नियोजित धर्ममहामात्योका उल्लेख किया है । ये धर्ममहामात्य 'संघ'
(बौद्धसंघ), आजीवक, ब्राह्मण और निर्ग्रन्थोंकी देखरेख रखनेके लिये

नियुक्त किये गये थे। यहाँ 'निर्ग्रन्थ' शब्दसे जैनोका तात्पर्य है। इसपरसे मालूम पडता है कि उस समयके अनेक अग्रेसर धर्मोंमें जैनधर्म भी एक था।]

२

हाथीगुफाका शिलालेख—प्राकृत ।

जैन-सम्राट् खारवेलका इतिहास ।

[मौर्यकाल १६५ वॉ वर्ष]

[१] नमो अरहतान [1] नमो सवसिधान [1] ऐरेन महाराजेन महामेघवाहनेन चैतराजवस-वधनेन पसथसुमलखनेन चतुरंतल थुन-गुनोपहितेन कालिंगाधिपतिना सिरि खारवेलेन ।

[२] पन्दरसवसानि सिरि-कडार-सरीर-वता कीडिना कुमारकी-डिका [1] ततो लेखरूपगणना-ववहार-विधिविसारडेन सवविजावदातेन नववसानि योवरज पसासित [1] सपुण-चतुचीसति-वसो तदानि वधमानसेसयोवे(=व) नाभिविजयो ततिये

(३) कालिंगराजवसे पुरिसयुगे महाराजाभिसेचन पापुनाति [1] अभिसितमतो च पधमे वसे वात-विहत-गोपुर-पाकार-निवेसन पटिसखा-रयति [1] कालिंगरि [1] ख-वीर इसि-ताल तडाग-पाडियो च वन्धा-पयति [1] सबुयान-पतिसठपन च

[४] कारयति [1] पनतीसाहि सतसहसेहि पकतियो च रजयति [1] द्वुतिये च वसे अचितयिता सातकणि पछिमदिस हय-गज-नर-रध-बहुल दड पयापयति [1] कण्हवेना गताय च सेनाय वितापति^१ मुसिक-नगरं [1] ततिये पुन वसे

१ जैनहितैषी, भाग १५, अंक ५, मार्च १९२१, पृष्ठ १३९-१४५ से उद्धृत । २ वितापित इति वा ।

[५] गधव-वेद्वुधो दत-नत-गीत-त्रादितसदसनाहि उसव-समाज-कारापनाहि च कीडापयति नगरिं [I] तथा चवुथे वसे विजाधराधिवास अहत-मुव कालिंगपुवराजनिवेशितवितध-मकूटे सविलमदिते च निखित-छन-

[६] भिंगारे हित-रतन-सापतेये सव-रठिक भोजके पाटे वटाप-यति [I] पचमे च ढानी वसे नंदराज ति-वससत-ओघाटित तनसुलिय-वाटा पनाडिं नगर पवेस[य]ति [I] सो [पि च वसे] छडम भिसितो च राजसुय [?] सन्दसयतो सवकर-वण

[७] अनुगह-अनेकानि सतसहसानि विसजति पोर जानपद[I] सतम च वसं पसासतो वजिरघरवि धुसि ति घरिनी समतुक-पद-पुना-सकुमार[?].....[I] अठमे च वसे महतिसेनाय मह[तभिचि] गोर-धगिरिं

[८] घातापयिता राजगहं उपपीडापयति[I] एतिना च कम पदान-पनादेन सवितसेन-त्राहिनी विपमुचितु मधुरा अपयातो येव नरिदो [नाम].....[मो?] यछति [विछ]पलवभरे

[९] कल्परुखे हय-गज-रध-सह-यते सव-धरावास-परिवसने स अगिणठिये[I] सवगहन च कारयितु वम्हणान जाति-पतिं परिहार ददाति[I] अरहत..... व न.....गिय

[१०].....[क] [ि] मानेहि रा[ज] संनिवासं महाविजय पासाद कारापयति अठतिसाय सत-सहसेहि[I] दसमे च वसे महधीत' भिसनयो भरधवस-पथान महिजयन ति कारापयति.....[निरितय] उया तान च मणि-रतना[नि] उपलभते ।

[११]मडे च पुत्र-राजनिवेशित-पीथुडग-द[ल]भ-नगले
नेकासयति जनपदभावन च तेरस-वस-सत-केतुभद-तित' मरदेह-
संघान[] वारसमे च वसे..... 'सेहि वितासयति उत्तरापयराजानो

[१२]मगधान च विपुल भयं जनेतो हथिसु गंगाय
पाययति[] मागध च राजान वहसतिमितं' पादे वदापति[] नंदराज-
नीत च कालिंग-जिन-संनिवेशं..... 'गहरतनान पडिहारेहि
अंगमागध-वसु च नेयाति []

[१३] .. त जठर-लिखिल-वरानि सिहिरानि नीवेशयति
सत-विसिकन परिहारेन[] अमुतमछरिय च हथि-नावन परीपुर उ
[प-]देणह हयहथी-रतना-[मा]निक पंडराजा एदानि अनेकानि सुत-
मणिरतनानि अहरापयति इध सत-[स] []

[१४]सिनो वसीकरोति [] तेरसमे च वसे सुपवत-विज-
यिचके कुमारीपवते अरहिते य[] प-खिम-व्यसताहि काय्यनिसीदीयाय
थापनावकेहि राजभित्तिनि चिनवतानि बोसासितानि [] पूजानि कत-उ-
वासा खारवेल-सिरिना जीवदेव-सिरि-कल्प राखिता []

[१५] ... [ता] सु कत समण-सुविहितान (नु १) च
सातदिसान (नु १) आतान तपसइसिन सघायन (नु ५) [,]
अरहतनिसीदिया समीपे पभारे वराकर-समुथापिताहि अनेक-योजना-
हिताहि . . . सिलाहि सिंहपथ-रात्रियं धुसिय निसयानि

[१६] ... पटालिकोचतरे च वेडूरियगमे थंमे पतिठापयति []
पानतरिया सतसहसेहि [] मुरिय-काल वोळिन (ने १) च चोयठि-

अगस-निकंतरिय उपादायति [1] खेमराजा स वदराजा स मिखुराजा
धमराजा पसंतो सुनतो अनुभवंतो कलाणानि

[१७].....गुण-विसेस-कुसलो सवपासंडपूजको सव-देवायत-
नसंकारकारको [अ]पति-हत-चकि-वाहिनि-त्रलो चकधुर-गुतचको पवत-
चको राजसि-त्रस-कुल-विनिश्रितो महा-विजयो राजा खारवेल-सिरि

अनुवाद—[१] अर्हतोंको नमस्कार । सर्व सिद्धोंको नमस्कार । ऐल-
महाराज महामेघवाहन, चैत्रराजवंशवर्धन, प्रशस्तशुभलक्षणसम्पन्न,
अखिल-देशस्तम्भ, कलिङ्गाधिपति श्री खारवेलने

[२] पन्द्रह वर्षतक श्रीसम्पन्न और कठार (गन्दुमी) रंगवाले शरी-
रसे कुमार-क्रीड़ाएँ कीं । बादमें लेख, रूपगणना, व्यवहार-विधिमें उत्तम
योग्यता प्राप्त करके और समस्त विद्याओंमें प्रवीण होकर उसने नौ वर्षोंतक
युवराजकी भाँति शासन किया ।

जब वह पूरा चौबीस वर्षका हो चुका तब उसने, जिसका शेष यौवन
विजयोसे उत्तरोत्तर वृद्धिगत हुआ,—चृतीय

[३] कलिङ्गराजवंशमें, एक पुरुषयुगके लिये महाराज्याभिषेक पाया ।
अपने अभिषेकके पहले ही वर्षमें उसने वातविहत (तूफानके विगाडे हुए)
गोपुर (फाटक), प्राकार (चहारदीवारी) और भवनोंका जीर्णोद्धार
कराया; कलिङ्ग नगरीके फव्वारेके कुण्ड, इपितल (?) और तड़ागोंके
बाँधोंको बँधवाया; समस्त उद्यानोंका प्रतिस्थापन कराया और पैतीस
लक्ष प्रजाको सन्तुष्ट किया ।

[४] दूसरे वर्षमें, सातकर्णिकी चिन्ता न करके उसने पश्चिम देशको
चहुत-से हाथी, घोडो, मनुष्यों और रथोंकी एक बडी सेना भेजी । कृष्ण-
चेण नदीपर सेना पहुँचते ही, उसने उसके द्वारा भूपिक नगरको सन्तापित
किया । तीसरे वर्षमें फिर

[५] उस गन्धर्व-वेदमें निपुणमतिये दंप, नृत्य, गीत, वाद्य, सन्दर्शन,
उत्सव और समाजके द्वारा नगरीका मनोरञ्जन किया ।

और चौथे वर्षमें, विद्याधर-निवासोक्तो, जो पहले कभी नष्ट नहीं हुए थे और जो कलिव्रके पूर्व राजाओंके निर्माण किये हुए थे.....उनके मुकुटोंको व्यर्थ करके और उनके लोहेके टोपोंके दो तण्ड करके और उनके छत्र,

[६] और शृंगारो (सुवर्णकलशो) को नष्ट करके तथा गिराकर, और उनके समस्त बहुमूल्य पदार्थों तथा रत्नोंका हरण करके, उसने समस्त राष्ट्रिको और भोजकोंसे अपने चरणोंकी बन्दना कराई ।

इसके बाद पाँचवें वर्षमें उसने तनसुलिय मार्गसे नगरीमें उस प्रणाली (नहर) का प्रवेश किया जिसको नन्दराजने तीन सौ वर्ष पहले खुदवाया था ।

छठे वर्षमें उसने राजसूय-यज्ञ करके सब करोको क्षमा कर दिया,

[७] पौर और जानपद (संस्थाओं) पर अनेक शतसहस्र अनुग्रह वितरण किये ।

सातवें वर्ष राज्य करते हुए, वज्र धरानेकी दृष्टि (प्राकृत=धिसि) नाश्री गृहिणीने मातृक पदको पूर्ण करके सुकुमार [१]... (१)

आठवें वर्षमें उसने (खारवेलने) बड़ी दीवारवाले गोरथगिरिपर एक बड़ी सेनाके द्वारा

[८] आक्रमण करके राजगृहको घेर लिया । पराक्रमके कार्योंके इस समाचारके कारण नरेन्द्र [नाम] अपनी धिरी हुई सेनाको छुड़ानेके लिये मथुराको चला गया ।

(नवें वर्षमें) उसने दिये.....पल्लवयुक्त

[९] कल्पवृक्ष, सारथीसहित हय-गज-रथ और सबको अग्निवेदिका-सहित गृह, आवास और परिवसन । सब दानको ग्रहण कराये जानेके लिये उसने ब्राह्मणोंकी जातिपंक्ति (जातीय सस्थाओं) को भूमि प्रदान की । अर्हत्... व ... न ... गिया (?)

१ राजधानीकी सस्थाको 'पौर' और ग्रामोंकी सस्थाको 'जानपद' कहते थे । वर्तमान समयमें हम इन्हें 'म्युनिसिपल' और 'डिस्ट्रिक्ट-बोर्ड'के नामसे पुकार सकते हैं ।

[१०] [क] [ि] मानैः (१) उसने महाविजय-प्रासाद नामक राजस-
त्रिवास, अठतीस सहस्रकी लागतका बनवाया ।

दसवें वर्षमें उसने पवित्र विधानोद्वारा युद्धकी तैयारी करके देश
जीतनेकी इच्छासे, भारतवर्ष (उत्तरी भारत) को प्रस्थान किया ।...
कुश (१) से रहितउसने आक्रमण किये गये लोगोके मणि और
रत्नोको पाया ।

[११] (ग्यारहवें वर्षमें) पूर्व राजाओके बनवाये हुए मण्डपमें,
जिसके पहिये और जिसकी लकड़ी मोटी, ऊची और विशाल थी, जनपदसे
प्रतिष्ठित तेरहवें वर्ष पूर्वमें विद्यमान केतुभद्रकी तिक्त (नीम) काष्ठकी
अमर मूर्तिको उसने उत्सवसे निकाला ।

बारहवें वर्षमें.....उसने उत्तरापथ (उत्तरी पञ्जाव और सीमान्त
प्रदेश) के राजाओमें त्रास उत्पन्न किया ।

[१२]और मगधके निवासियोमें विपुल भय उत्पन्न करते
हुए उसने अपने हाथियोको गंगा पार कराया और मगधके राजा बृह-
स्पतिमित्रसे अपने चरणोकी बन्दना कराई(वह) कलिंग-
जिनकी मूर्तिको जिसे नन्दराज ले गया था, घर लौटा लाया और अंग
और मगधकी अमूल्य वस्तुओको भी ले आया ।

[१३] उसने.....जठरोल्लिखित (जिनके भीतर लेख खुदे हैं)
उत्तम शिखर, सौ कारीगरोको भूमि प्रदान करके, बनवाये और यह बड़े
आश्चर्यकी बात है कि वह पाण्डवराजसे हस्ति नावोंमें भरा कर श्रेष्ठ हय,
हस्ति, माणिक और बहुतसे मुक्ता और रत्न नजरानेमें लाया ।

[१४] उसने.....वशमें किया ।

फिर तेरहवें वर्षमें व्रत पूरा होनेपर (खारवेलने) उन याप-ज्ञापकोंको
जो पूज्य कुमारी पर्वतपर, जहाँ जिनका चक्र पूर्णरूपसे स्थापित है, समाधियों-
पर याप और क्षेमकी क्रियाओमें प्रवृत्त थे; राजभृतियोंको वितरण किया ।
पूजा और अन्य उपासक कृत्योके क्रमको श्रीजीवदेवकी भाँति खारवेलने
प्रचलित रखा ।

[१५] सुविहित श्रमणोंके निमित्त ग्राह्य-नेत्रके धारकों, ज्ञानियों और तपोबलसे पूर्ण ऋषियोंके लिये (उसके द्वारा) एक संघायन (एकत्र होनेका भवन) बनाया गया । अर्हत्-श्री समाधि (निपद्या) के निकट, पहाडकी ढालपर, बहुत योजनोसे लाये हुए, और सुन्दर खानोंसे तिका-ले हुए पत्थरोंसे, अपनी सिंहप्रस्थी रानी 'धृष्टी' के निमित्त विश्रामागार—

[१६] और उसने पाटालिकाधोमें रत्न-जदित स्तम्भोको पचहत्तर लाख पणों (सुद्राओं) के व्ययसे प्रतिष्ठित किया । वह (इस समय) मुरिय कालके १६४ वें वर्षको पूर्ण करता है ।

वह क्षेमराज, चर्द्धराज, भिक्षुराज और धर्मराज हैं और कल्याणको देखता रहा है, सुनता रहा है और अनुभव करता रहा है ।

[१७] गुणविशेष-कुशल, सर्व भक्तोंकी पूजा (सन्मान) करनेवाला, सर्व देवालयाका संस्कार करानेवाला, जिसके रथ और जिसकी सेनाको कभी कोई रोक न सका, जिसका चक्र (सेना) चक्रधुर (सेना-पति) के द्वारा सुरक्षित रहता है, जिसका चक्र प्रवृत्त है और जो राजर्षिवंश-कुलमें उत्पन्न हुआ है, ऐसा महाविजयी राजा श्रीखारवेल है ।

इस शिलालेखकी प्रसिद्ध घटनाओंका तिथिपत्र—

वी. सी. (ईसाके पूर्व)

- | | |
|--------------------|---|
| ” १४६० (लगभग) | ... केतुभद्र |
| ” ... ४६० (लगभग) | ... कलिगमें नन्दशासन |
| ” [२३० | ... अशोककी मृत्यु] |
| ” [२२० (लगभग) | .. कलिगके तृतीय-राजवंश-
का स्थापन] |
| ” १९७ ... | ... सारवेलका जन्म |
| ” [१८८ ... | ... मौर्यवंशका अन्त और
पुण्यमित्रका राज्य प्राप्त करना] |
| ” १८२ ... | ... सारवेलका युवराज होना |
| ” [१८० (लगभग | ... सातकर्णि प्रथमका राज्य-
प्रारम्भ] |

॥ १७३ खारवेलका राज्याभिषेक
॥ १७२ मूपिक-नगरपर आक्रमण
॥ १६९ राष्ट्रिकों और भोजकोंका पराजय
॥ १६७ राजसूय-यज्ञ
॥ १६५ मगधपर प्रथम बार आक्रमण
॥ १६३ उत्तरापथ और मगधपर आक्रमण, पाण्डवराजसे अदेय (नजराने) की प्राप्ति
॥ १६० शिलालेखकी तिथि

३

वैकुण्ठ (स्वर्गपुरी) गुफा उदयगिरि—प्राकृत ।

[लगभग १६५ मौर्यकाल]

अरहन्तपसादन कलिग...य .. नान लोनकाडतं रजिनोलस...
हेथिसहसं पनोतसय... कलिग वेलस अगमहि पिडकाड

[इस शिलालेखमें अर्हन्तोकी कृपाको प्राप्त गुहानिर्माण (Excavation) बताया गया है । इस लेखका शेषभाग इतना टूटा हुआ है कि वह पढ़नेमें नहीं आसकता । वैकुण्ठ गुफा, जिसके नामसे यह शिलालेख प्रसिद्ध है, राजा ललाकके द्वारा अर्हन्तो और कलिगके श्रमणोंके लाभ या उपयोगके लिये बनाई गई थी ।]

[JASB, VI, p 1074]

४

मथुरा—प्राकृत ।

[विना कालनिर्देशका] लेकिन करीब १५० ई० पूर्वका [बृहहर]-

समनस माहरखितास अतेवासिस वळीपुत्रस सावकास उतर-
दासक[१] स पासादोतोरनं [॥]

अनुवाद—माहरखित (माघरखित) के शिष्य, वळी (वाल्मी
माता) के पुत्र उतरदासक (उत्तरदासक) श्रावकका (दान) यह
मन्दिरका तोरन(ण) है।

[EI, II, n° XIV, n° 1]

५

मथुरा—प्राकृत ।

[महाक्षत्रप शोडासके ४२ वें (?) वर्षका]

१. नम अरहतो वर्धमानस ।
२. ख[१]मिस महक्षत्रपस शोडासस सवत्सरे ४० (१) २
हेमतमासे २ दिवसे ९ हरितिपुत्रस पालस भयाये समसाविकाये^१
३. कोछिये अमोहिनिये सहा पुत्रेहि पालघोपेन पोठघोपेन
धनघोपेन आयवती प्रतियापिता प्राय—[भ]—

४ आर्यवती अरहतपुजाये [॥]

अनुवाद—अर्हत्त वर्धमानको नमस्कार हो । स्वामी महाक्षत्रप
शोडासके ४२ (?) वें वर्षकी शीतऋतुके दूसरे महीनेके नौवें दिन,
हरिति (हरिती या हारिती माता) के पुत्र पालकी स्त्री, तथा श्रमणोकी
श्राविका, कोछि (कौत्सी) अमोहिनि (अमोहिनी) के द्वारा अपने पुत्रों
पालघोप, पोठघोप, (प्रोष्ठघोप) और धनघोपके साथ आयवती
(आर्यवती) की स्थापना की गई थी ।

[EI, II, n° XIV, n° 2]

६

पभोसा (अलाहाबादके पास)—संस्कृत ।

[द्वितीय या प्रथम ईसवी पूर्व (फ्यूरर)]

१ पदो 'समन्यायिकाये' ।

१. राज्ञो गोपालीपुत्रस
२. बहसतिमित्रस
३. मातुलेन गोपालीयां
४. वैहिदरीपुत्रेन [आसा]
५. आसाढसेनेन लेनं
६. कारितं [उदाकस]^१ दस-
७. मे सवछरे कश्शपीयानं अरह-
८. [ता] न े - ी - ि - - - ो [॥]

अनुवाद—गोपालीके पुत्र राजा बहसतिमित्र (बृहस्पतिमित्र) के मामा, तथा गोपाली वैहिदरी (अर्थात् वैहिदर-राजकन्या) के पुत्र आसाढसेनने कश्शपीय अरहतोके . . . दसवे वर्षमे एक सुफाका निर्माण कराया ।

[EI, II, p. 242]

७

पभोसा (प्रभात)—प्राकृत ।

[द्वितीय या प्रथम शताब्दि ई. पू]

१. अधियल्लात्रा राजो शोनकायनपुत्रस्य वगपालस्य
२. पुत्रस्य राजो तेवणीपुत्रस्य भागवतस्य पुत्रेण
३. वैहिदरीपुत्रेण आपाढसेनेन कारितं [॥]

अनुवाद—अधिलत्राके राजा शोनकायन (शौनकायन) के पुत्र राजा वगपालके पुत्र (और) तेवणी (अर्थात् त्रैवर्ण-राजकन्या) के पुत्र राजा भागवतके पुत्र (तथा) वैहिदरी (अर्थात् वैहिदर-राजकन्या) के पुत्र आपाढसेनने बनवाई ।

[नोट—शुद्धकालके अक्षरोसे मिलने-जुलनेके कारण दोनों शिलालेखोका काल विश्वासके साथ द्वितीय या प्रथम शताब्दि ई० पूर्व निश्चित किया]

१ समवत 'गोपालिया' । २ समी अक्षर सशयापत्र है ।

५. ना अरहतायतने स [ह]ा मातरे भगिनिये धितरे पुत्रेण

६. सविन च परिजनेन अरहनपुजाये ।

अनुवाद—अर्हत् वर्धमानको नमस्कार हो । भ्रमणोंकी उपासिका (श्राविका) गणिका नादा, गणिका दन्दाकी बेटी वासा, लेणशोभिकाने अर्हन्तोंकी पूजाके लिये व्यापारियोंके अर्हत्मन्दिरसे अपनी माँ, अपनी बहिन, अपनी पुत्री, अपने लड़कैके साथ और अपने सारे परिजनोके साथ मिलकर एक बेटी, एक पूजागृह, एक कुण्ड और पापाणासन बनवाये ।

[I. A., XXXIII, p 152-153.]

९

मथुरा—प्राकृत ।

(कालनिर्देश नहीं दिया है, किन्तु जे. एफ. फ्लीटके अनुसार लगभग १४-१३ ई० पूर्वका होना चाहिये)

१. [न] मो अरहतो वर्धमानस्य गोतिपुत्रस पोठयशक.

२. कालत्रालस

३. [भार्याये] कोशिकिये शिवमित्राये' अयागपटो प्रि [प्रति-
स्थापितो]

अनुवाद—वर्धमान अर्हन्तको नमस्कार हो । गोतिपुत्र (गौतीपुत्र) की स्त्री कोशिककुलोद्भूत शिवमित्राने एक अयागपट स्थापित किया । गोतिपुत्र पोठय और शक लोगोंके लिये काला सर्प (कालवाल) था ।

[El, I, n° XLIV, n° 33]

१०

मथुरा—प्राकृत ।

[बिना कालनिर्देशका सम्भवतः १४-१३ ई० पूर्व]

१. मा अरहतपूजा[ये]

२. गोतीपुत्रस ईद्रपा[ल]....

१ इसकी जगह 'शिवमित्राये' पढ़ना चाहिये (J. F. Fleet) ।

अनुवाद—गौती (गौती माता) के पुत्र इन्द्रपाल (इन्द्रपाल) के...
... अर्हन्तोंकी पूजाके लिये.....प्रतिमा.....

[El, II, n° XIV, n° 9.]

११

गिरनारः—संस्कृत ।

[विक्रमसंवत् ५८]

हुमदके पवित्र स्थानके आङ्गनमें वृक्षके नीचे एक चाँकोर चवूतरा है ।
उसके किनारेपर निम्नलिखित लिखा हुआ है.—

स० ५८ वर्षे चैत्र वदी २

सोमे धारागञ्जे

प० नेमिचन्द्रशिष्य

पंचाणचंद्रमूर्ति

अनुवाद—संवत् ५८ के वर्षमें, सोमवार, चैत्र वदी २ को, धारागञ्जमें
नेमिचन्द्रके शिष्य पंचाणचंद्रकी मूर्ति ।

[ASI, XVI, p 357, n° 20]

१२

मथुरा—प्राकृत ।

(विना कालनिर्देशका)

१. भद्रतजयसेनस्य आतेवासिनीये

२. धामघोषायै दानो पासादो [II]

अनुवाद—भद्रन्त जयसेनकी शिष्या धमघोषा (धर्मघोषा) के
दानस्वरूप यह मन्दिर है ।”

[El, II, n° XIV, n° 4]

१३

मथुरा—प्राकृत ।

भगवा नेमैसो भग—

अनुवाद—“भगवान नेमैस (नैगमेष), भगवान ..

[El, II, n° XIV, n° 6]

१४

मथुरा—प्राकृत ।

[विना कालनिर्देशका]

१. मा अहंतान^१ श्रमणश्राविका[वे]
- २.....लहस्तिनीये तोरण प्रति [घ्रापि]^२
३. सह माना पितिहि सह
सश्रू-शशुरेण

अनुवाद—अर्हन्तोंको नमस्कार । अपने माता पिता और सास-ससुरके साथ साधुओंकी एक शिष्या...लहस्तिनी (बलहस्तिनी), के हुक्मसे एक तोरण खड़ा किया गया ।

[ऐसा मालूम पड़ता है कि उन्म समय माता-पिता और सास-ससुरके साथ कोई धार्मिक कार्य करनेसे, उनको भी पुण्यप्राप्तिमें साझीदार समझा जाता था ।]

[Bl, I, XLIII, n° 17]

१५

मथुरा—प्राकृत ।

[विना कालनिर्देशका]

१. अ. नमो अरहतान फगुयशस
२. अ. नतकस भयाये शिवयशा-
३. अ. — -ि -ा -ा -ा -काये
१. व. आयागपटो कारिनो
२. व. अरहतपुजाये [III]

१ 'नमो अरहतानं' पढ़ना चाहिये । २ 'प्रतिष्ठापित' पढो । संभवतः पहली और दूसरी पक्तिके अन्तमें और अधिक अक्षर टूटे हुए मालूम पड़ते हैं ।

अनुवाद—अर्हन्तोको नमस्कार ! फगुयश (फलगुयशस्) नर्तककी पत्नी शिवयज्ञा (शिवयज्ञास्) के द्वारा अर्हन्तोकी पूजाके लिये एक आयागपट बनवाया गया ।

[EI, II, n° XIV, n° 5]

१६

मथुरा—प्राकृत—भद्र ।

[विना कालनिर्देशका]

नमो अरहन्तो महाधिरस । माथुरक-लवाडस[सा]-भयाये-वृ...ताये
[आयागपटो] [II]

अनुवाद—महावीर अर्हन्को नमस्कार । मथुरानिवासी-लवाड (?) की पत्नी— ताके [दानस्वरूप] यह आयागपट है ।

[EI, II, n° XIV, n° 8]

१७

मथुरा—प्राकृत ।

[द्विविष्काल ?] वर्ष ४

अ सिद्ध स ४ प्रि १ टि २० वारणातो गणातो अर्य्यहाट्ट-
कियातो कुलतो वजणगरित [१े जा] --

व पुण्यमित्रस्य शिशिनि सथिसहाये शिशिनि सिंहमित्रस्य
सढचरि ---

स दाति सहा प्रहचेटेन प्रहदासेन --

अनुवाद—सिद्धि हो । चतुर्थ वर्षके ग्रीष्म ऋतुके १ ले महीनेके २० वे दिन, वारणागण, अर्य्य हाट्टकिय (अर्य्य हाट्टकीय) कुल, वजणगरी (वज्र-नगरी) शासक -- -- पुण्यमित्रकी शिष्या, सथिसिहा (षष्ठिसिहा) की शिष्या, सिंहमित्र (सिंहमित्र) की सढचरी (श्राद्धचरी) ..

[EI, II, n° XIV, n° 11]

१८

मथुरा—प्राकृत—भद्र ।

[हुविष्ककाल ?] वर्ष ५

स्य व ५ गृ ४ टि ५ कौट्टिया

त [१] शाखात [१] वाचकस्य अर्थ्य ...

अनुवाद— ..के ५ वें वर्षकी ग्रीष्म ऋतुके चौथे महीनेके ५ वे दिन,
.....कोट्टिय (गण) ... शाखाके वाचक अर्थ्य ... (अर्थ्य) ...

[EI, II, n° XIV, n° 12]

१९

मथुरा—प्राकृत ।

[कनिष्क स० ५]

अ. १. ...^१ दे [व] पुत्रस्य क[नि]ष्कस्य स ५ हे १ टि १
एतस्य पूर्व [१] य कौट्टियातो गणातो ब्रह्मदासिका [तो]

२. [कु]लातो [उ]चेनागरिनो शाखातो सेथि-ह-स्य ि-
ि- ि- सेनस्य सहचारिखुडाये दे [व]—

व. १. पालस्य धि [त] ..

२. वधमानस्य प्रति[मा] ॥

अनुवाद—देवपुत्र कनिष्कके ५ वें वर्षकी हेमन्त ऋतुके १ ले महीनेके
१ ले दिन, कौट्टियगण, ब्रह्मदासिका कुल और उचनागरी शाखाकी खुदा
(खुद्रा) ने वधमानकी प्रतिमा समर्पित की । यह खुद्रा श्रेष्ठी ...
सेनकी पत्नी और देव ... पालकी पुत्री थी ।

[EI, I, XLIII, n° 1]

२०

मथुरा—प्राकृत—भद्र ।

[?] वर्ष ५

अ १. सिद्ध[म्] स ५ हे १ दि १० २ अत्य[ि] पूर्व[ि] ये
कोट्टि[यानो] ।

२. [ग] णातो ब्रह्मदासिकातो उच[ि] ना (क) रितो
[शाखातो]

व १. श्र[ि] गृहातो स[—भोगातो]... .. ।

२. . . .स निड(?)

स १ . ि बोधिलामे ए वासुदेवा पुवि

२. . सर्व-सत्[त्वा] न[म्] ह[ि]]त-सुख[ि] ये ।

अनुवाद—सिद्धि हो । वर्ष ५, हेमन्तका पहिला महिना, १२ वॉ
दिन । इस दिन कोट्टिय गण, ब्रह्मदासिक (कुल), उचेनाकरी (उच्चा-
नागरी) शाखा, (श्रीगृह) सम्भोगके (प्रार्थना
पर) सब जीवोंके हित और सुखके लिये ।

[IA, XXXIII, p. 36-37, n° 5]

२१

मथुरा—प्राकृत—भद्र ।

[?] वर्ष ५

..... तो पतिव ब्रह्मजाति . . . स ५ हे ४ दि २० अत्य

पूर्वयि कु महिलनस्य शिष्य अर्यगरिकतो

[यह शिलालेख अर्य गरिकके किसी दानका उल्लेख करता है । गरिक
महिलनके शिष्य थे । यह दान सं० ५ के वर्षमें, शीतऋतुके चौथे महीनेके
२० वें दिन किया गया ।]

[A Cunningham, Reports III, p 31 n° 3]

२२

मथुरा—प्राकृत ।

[विना कालनिर्देशका]

- अ. १. सिद्ध को[ट्टि] यतो गणतो उचैन—
 २. गरितो शखतो ब्रम्हा(ह्ला)दासिअतो
 ३. कुलनो शिरिग्रिहतो संभोकतो
 ४. अय्य जेष्टहस्तिस्व शिष्यो अ [र्यमि] [हि] लो]
- ब. १. त्तस्य शिष्य [े] अर्य्यक्षेर
 २. [को] वाचको तस्य निर्वत—
 ३. न वर [ण] हस्ति [स्व]
- स. १. [च] देवियच धित जय—
 २. देवस्य वधु मोपिनिघे
 ३. वधु कुठस्य कसुथस्य
- द. १. धमप [ति] ह स्थिरए
 २. टन शवदोभद्रिक
 ३. सर्वसत्वन हितसुखये

[EI, II, n° XIV, n° 37]

अनुवाद—कोट्टिय गण, उचैनगरी (उच्चनागरी) शाखा, (और) ब्रह्म-
 दासिअ (ब्रह्मदासिक) कुल, शिरिग्रह संभोगके अय्य जेष्टहस्ति (ज्येष्ठह-
 स्तिन्) के शिष्य अर्य्य मिहिल (आर्य्य मिहिर) थे; उनके शिष्य वाचक
 अर्य्य क्षेरक (आर्य्य क्षेरक ?) थे; उनके कहनेसे वरणहस्ती और देवी,
 दोनोकी पुत्री, जयदेवकी बहू तथा मोपिनीकी बहू, कुठ कसुथकी
 धर्मपत्नी स्थिराके दानसे, सर्व जीवोंके कल्याण और सुखके लिये, सर्वतो-
 भद्रिका प्रतिमा दी गई ।

२३

मथुरा—प्राकृत ।

[विना कालनिर्देशका]

अ. १ सिद्धम् ॥ कोट्टियातो गणानो ब्रह्मदासिकात्[] कुलातो

२ उच्चै[]नागरिनो शाखानो—रिनातो स[]गे[]गतो अ []र्य्य-

व. १. ज्येष्ठहस्ति[] शि[]ष्यो अर्य्यमहलो अर्य्यज्येष्ठ[]हस्ति[]

[] शिशो] अर्य्य[]गा]ठक [] [] त] स्व शिशिनि [] अर्य्य-

२. शामये निर्वतना । उ[]स] प्रतिमा वर्मये वीतु [] गुल्हा]

ये जयदासस्य कुटुबिनिये दान

अनुवाद—सफलता प्राप्त हो । अर्य्य (आर्य) ज्येष्ठहस्तिके शिष्य अर्य्य महल थे । वे कोट्टिय गण, ब्रह्मदासिक कुल, उच्चनागरी शाखा और .. रिन संभोगके थे । ज्येष्ठहस्तिके एक और शिष्य आर्य गाढक थे । उनकी शिष्या शामाके कहनेसे गुल्हाने, जो कि वर्माकी पुत्री और जयदासकी पत्नी थी, एक ऋषभदेवकी प्रतिमा समर्पित की ।

[Bl, 1, XLIII, n° 14]

२४

मथुरा—प्राकृत ।

[कनिष्क सं० ७]

१ [सिद्धम् ॥] महाराजस्य राजातिरास्य देवपुत्रस्य पाहि-
कणिष्कस्य सं० ७ हे १ दि १० ५ एतस्य पूर्व्याया अर्य्यो-
देहिकियातो

२. गणानो अर्य्यनागभुतिकियातो कुलातो गणिस्य अर्य्यबुद्ध-
रिस्य शिष्यो वाचको अर्य्यस[]न्धि]कस्य भगिनि अर्य्यजया
अर्य्यगोष्ठ

अनुवाद—सफलता हो। महाराज, राजाधिराज, देवपुत्र, शाहि कनिष्कके ७ वें वर्षमें, हेमन्तऋतुके पहले महीनेके १५ वें दिन (अमावस्या) (Lunar day) अर्योदेहिकीय (आर्य उद्देहिकीय) गण और अर्य-नागभूतिकीय (आर्य नागभूतिकीय) कुलके गणी अर्य बुद्धिशिरि (आर्य बुद्धश्री)के शिष्य वाचक अर्य (सन्धि) ककी भगिनी अर्य जया (आर्य जया) अर्य गोष्ट....

[Bl, I, XLIII, n° 19]

२५

मथुरा—प्राकृत ।

[कनिष्क वर्ष ९...]

१. सिद्ध महाराजस्य कनिष्कस्य संवत्सरे नवमे मासे प्रथ १ दिवसे ५ अस्य पूर्वयि कोट्टियातो गणातो
 २. . धव... ढिस . न बुद . भ जिमित
- विकट

[यह महत्त्वपूर्ण लेख नववे संवत्, पहले महीने (ऋतुका नाम लुप्त है) पाँचवें दिनका है। यह महाराज कनिष्कके राज्यकाल (ईस्वी पूर्व ४८) का है।]

[A Cunningham, Reports, III, p 31, n° 4]

२६

मथुरा—प्राकृत ।

[कनिष्कका १५ वाँ वर्ष]

- अ. १. स १० ५ गृ ३ दि १ अस्या पूर्व [I] य
- व. १. हिक्कातो^१ कुलातो अर्यजयभूति .
- स. १. स्य शिशीनिनं अर्यसङ्गमिकये शिशीनि^३
- द. १. अर्यवसुलये [निर्वर्त्त] न

१ 'सिद्ध' की पूर्ति करो । २ 'मेहिकातो' पढ़ो । ३ 'शिशीनिन' पढ़ो ।

- अ. २. . लस्य धी [तु] . ि . धु' वेणि
 व. २ . श्रेष्ठि [स्य] धर्मपत्तिये भट्टि[से]नस्य
 स. २. [मातु] कुमरमितयो' दन भगवतो [प्र] ..
 द २ मा सव्यतोभद्रिका [II]

अनुवाद—[सफलता हो ।] १५ वें वर्षकी ग्रीष्म ऋतुके तीसरे महीनेके पहले दिन, भगवानकी एक सर्वतोभद्रिका प्रतिमाको कुमरमिता (कुमार-मित्रा) ने [मोहिक] कुलके अर्यजयभूतिकी शिष्या अर्य सङ्गमिकाकी शिष्या अर्य वसुलाके आदेशसे समर्पित की । कुमारमित्रा...लकी पुत्री, .. की बहू (वधू), श्रेष्ठी वेणीकी धर्मपत्नी और भट्टिसेनकी माँ थी ।

[EI, 1, n° XLIII, No 2]

२७

मथुरा—प्राकृत ।

[हुविष्क ?] वर्ष १८

- अ. स १० ८ गृ ४ दि ३ [अस्या पु]—[य] [या] तो
 गण [तो]
 व सभोगातो वच्छलियातो कुलातो गणि
 द १ वासि जयस्य—तु मासिगिये [?] दान सर्व्वत [१] भ—
 [३]

२. — [सर्व्वस] वा [न] सुखाय भवतु ।

अनुवाद—वर्ष १८ ग्रीष्मऋतुका ४ या महीना, तीसरे दिनके अवसर पर, [कौट्टि] य गण, ...संभोग, वच्छलिय (वात्सलीय) कुलके गणि... के आदेशसे जयकी (माता) मासिगिका दान एक सर्व्वतोभद्र [प्रतिमा] के रूपमें किया गया ।

[EI, II, n° XIV, n° 13]

१ 'वधु' पढो । २ इसे 'कुमारमितये' पढना चाहिये ।

२८

मथुरा—प्राकृत-भद्र ।

[हुविष्क ?] वर्ष १८

अ.प १० [८] व २ दि. १० १

व. धितु मि [तशि] रिये भगवती अरिष्टणेमिस्य [वेवर्त] ?

अनुवाद—वर्ष १८, वर्षाऋतुका २ रा महीना, ११ वां दिन, इस दिन की पुत्री मितशिरि (? मित्रश्री) के दानके रूपमें भगवान अरिष्टणेमि (अरिष्टनेमि) की.... [की प्रतिष्ठा).....

[EI, II, XIV, n° 14]

२९

मथुरा—प्राकृत ।

[कनिष्क सं. १९]

अ. १. सिद्धम् । सं १० ९ व ४ दि १० अस्या पु....

२. व्वायि वाचकस्य अर्घ्यत्रल ..

३. दिनस्य शिष्यो [वाच] को अर्घ्यमा ...

४. तृदिनः तस्य [नि] वर्त्त [न]।

व. १ [कोट्टियातो गणातो ठानियातो

२. [कुलातो श्रीगृहातो समोगातो]

३. [अर्घ्यवेरिशाखातो सु] चि....

स. [ल] स्य धर्म्यपत्निये ले...

द. दान भगवतो स [न्ति][प्र] तिमा

अ. ५ नाश.....तनं

व. ४.....[त] मो अरत्ततान सर्व्वलोकुत्त [मानं]

अनुवाद—सिद्धि हो । १९ वें वर्षकी वर्षाऋतुके चौथे महीनेमें, वाचक अर्च्य बलदिन (बलदत्त) के शिष्य वाचक अर्च्य मातृदिनके आदेशसे भगवान् शान्तिनाथकी प्रतिमा ले . की तरफसे अर्पित की गई । यह अर्पण करनेवाली स्त्री सुचिल (शुचिल) की धर्मपत्नी थी और वह कोट्टिय गण, ठानीय कुल, श्रीगृह सम्भोग तथा अर्च्य वेरि (आर्य-वज्र) शाखाकी थी । सर्व लोकोमें उत्तम ऐसे अर्हंतोको नमस्कार हो ।

[El, 1, n° XLIII, n° 3]

३०

मथुरा—प्राकृत ।

[कनिष्क वर्ष २०]

अ १ सिद्ध स [२०] गृमा-दि १० ५ कोट्टियातो गणतो
[ठ] णियातो कुलतो वेरितो शखतो शिरिकातो

व १. [समो] गातो वाचकस्य अर्च्यसघसिहस्य निर्व्यर्त्तना दाति-
लस्य .. मति-

२ लस्य कुटुविणिये जयवालस्य देवदासस्य नागदिनस्य च
नागदिनय च मातु

स १ श्राविकाये दि-

२ [ना] ये दान ॥

३ वर्द्धमानप्र-

४ तिम् ।

अनुवाद—सिद्धि हो । २० वें वर्षकी ग्रीष्मऋतुके १ ले महीनेके १५ वें दिन, कोट्टियगण, ठानीय कुल, वेरि (वज्र) शाखा और शिरिक सम्भोगके वाचक अर्च्य सघसिह (आर्य सद्वासिह) के आदेशसे श्राविका दीना (दिन्ना) की तरफसे वर्द्धमानकी प्रतिमा [अर्पित की गई] । यह

दिना दातिल [की पुत्री], मातिलकी पत्नी और जयपाल, देवदास, नागदिन (नागदत्त) तथा नागदिना (नागदत्ता) की माँ थी।

[El, 1, n° XLIV, n° 28]

३१

मथुरा—प्राकृत—भ्रम ।

[हुविष्क सं० २०]

अ. १. [सिद्ध स २० गृ ३] डि [१०] ७ [एत]स्य पूर्व्याय कोट्टिय[ि] तो गणातो ब्रह्मदासियातो कुलातो उच्चे [नागरितो गा] खातो [श्री] गृह [ि] तो मभोगातो [वृहत्तव] चक च गणिन च ज [-मित्र] स्य.....^१

२. अर्य्य [ओ] यस्य शिष्यगणिस्य [अ] र्य्यपालस्य अ [द्वच] रो [वाच]कस्य अर्य्य[दत्त]स्य शिष्यो वाचको अर्य्य-सीहा [त]स्य निव्वर्त्तणा [खो] दमि [त्त]स्य मानिकरस्य [गी]—जयभ[दि] धीतु दास्य—

व १ [लो] हवाणियत्स वाधर वधू [ह] ग्गु [देव]स्य धर्मपन्निये मित्राये [दान]..... [सर्व्व] स [त्वान] हि [तसु] खाये काक [तेय].....क्ष—

२.—वाज..... ि . ो . . . रज..... ।

अनुवाद—सिद्धि हो । हुविष्कके २० वें वर्षकी श्रीपम्भरुतुके तीसरे महीनेके १७ वें दिन, वाचक अर्य्य सीह (सिंह)—जो वाचक दत्तके शिष्य थे, और जो कोट्टियगण, ब्रह्मदासीय कुल, उच्चनागरी शाखा तथा श्रीगृह

१ 'शिष्य' पढ़ो ।

ममोगके ये—की आज्ञासे सब सत्त्वोके सुख और कल्याणके लिये, मित्रा-की तरफसे 'समर्पित' की गई । यह मित्रा हग्यु देव (फल्युदेव) की धर्मपत्नी, लोहेका व्यापार करनेवाले वाधरकी वह खोटमित्रके मालिकर 'जयमट्टिकी पुत्री' । अर्य्यवृत्त गणी अर्य्यपालके श्राद्धचर थे । अर्य्यपाल अर्य्य ओधके शिष्य थे और अर्य्य ओध महावाचक गणी जयमित्रके शिष्य थे ।

[El, 1 n° XLIII, n° 4]

३२

मथुरा—प्राकृत—भग्न ।

[बिना कालनिर्देशका है, पूर्ववर्ती शिलालेखसे ही मिलता-जुलता होनेसे इसका भी समय हुविष्क सं. २० है]

वाचकस्य दत्तशिष्यस्य सीहस्य नि.....

[El, 1, p 383, n° 60]

३३

मथुरा—प्राकृत ।

[हुविष्क सं. २२]

१. सिद्ध सव २० . २ प्रि १ दि त्य पुर्व्वाय वाचकस्य अर्य्य-मात्रिदिनस्य णि . १

२. सत्तवाङ्गिनिये धर्मसोमाये दान ॥ नमो अरहतान

अनुवाद—सिद्धि प्राप्त हो । [हुविष्कके] २२ वें वर्षकी ग्रीष्मके पहले महीनेके . दिन, वाचक अर्य्य-मात्रिदिन (अर्य्य-मातृदत्त) के आदेशसे यह धर्मसोमाका दान है । धर्मसोमा एक साथैवाहकी स्त्री थी । अर्हन्तोको नमस्कार हो ।

[El, 1, n° XLIV, n° 29]

३४

मथुरा—प्राकृत ।

[हुविष्क सं. २२]

[सि] द्व सं २० (?) [२] प्रि २ टि ७ वर्षमानस्य प्रतिमा
चारणातो गणातो पेटिवामि[क]...

अनुवाद—सिद्धि प्राप्त हो। २२ वें वर्षकी ग्रीष्मके दूसरे महीनेके
७ वें दिन, चारणा गण, पेटिवामिक [कुल] की तरफसे वर्षमानकी
प्रतिमा [प्रतिष्ठापित की गई] ।

[EI, 1, n° XLIII, n° 20]

३५

मथुरा—प्राकृत ।

[हुविष्क वर्ष २५]

अ. १. सवत्सरे पञ्चविंशे हेमतम [से] त्रिनिये दिवसे वीगे अस्मि
क्षुणे

व. १. कोट्टियतो गणतो ब्र[ह्म]दासिकतो कुलतो उचेनाग-
रितो शाखातो अयवलत्रतस्य शिपो सधि

२. स्य शिषिनि प्रर्हा — — — ि... — वतन [ना] दिअ [रि] त
जभ[क] स्य वधु जयभट्टस्य कुट्टविनीय रयगिनिये [वु] सुय [॥]

अनुवाद—२५ वें वर्षकी शीतऋतुके तीसरे महीनेके १२ वें दिनके
समय रयगिनिने जो नान्दिगिरि (?) के जभककी बहू थी, एक वुसुय^१
प्रर्हा — — की आज्ञासे समर्पित की । रयगिनि जयभट्टकी पत्नी थी ।
प्रर्हा — — सधिकी शिष्या थी । सधि अर्थात् बलत्रत (बलत्रात) के शिष्य
थे । यह बलत्रात कोट्टिय गण, ब्रह्मदासिक कुल (और) उच्चनागरी
शाखाके थे ।

[EI, 1, XLIII, n° 5]

१ यह एक प्रकारकी या तो प्रतिमा है या कोई दान है ।

३६

मथुरा—प्राकृत ।

[विना कालनिर्देशका, मभवत्. हुविष्कके २५ वे वर्षका]

१ उचेनगरितो अखतो अर्य्यवलत्रतस्य गिसिणि अर्य्यब्रह्म —

२. अर्य्यवलत्रतस्य गिण्यो अर्य्यसन्धिस्य परिग्रहे नवहस्तिस्य
धिता ग्रहसेनस्य वधु३. गिवसेनस्य देवसेनस्य शिवदेवस्य च भ्रात्रिन मातु जायये
प्रतीमा प्र

४ [मा] नस्य सर्व्वसत्वान हितसुखय ॥

अनुवाद—अर्य्य ब्रह्म (आर्य्य ब्रह्म) [और] अर्य्य वलत्रत (आर्य्य वल-
त्रात) के शिष्य अर्य्य सन्धि (आर्य्य सन्धि) के ग्रहणके लिये उचेनगारि
(उच्चनागरी) शाखाके अर्य्य वलत्रत (आर्य्य वलत्रात) की शिष्या, जयाने
सब जीवोके कल्याण और सुखके लिये वर्धमानकी प्रतिमाकी प्रतिष्ठा की ।
यह जया नवहस्तीकी पुत्री, ग्रहसेनकी वधू तथा शिवसेन, देवसेन
और शिवदेव इन तीन भाइयोंकी माँ थी ।

[El, 11, n° XIV, n° 34]

३७

मथुरा—प्राकृत ।

[हुविष्क वर्ष २९]

अ महाराज ष्कस स. २० ९ हे २ टि ३० अम क्षुणे
भगवतो वर्धमानस प्रति [मा] प्रतिष्ठापिता ग्रहह[थ]स्य धितर
सुखिताये वोधिनादि [ये]

व. कुटुविनिये वारणे गणे पुश्यमित्रीये कुले गणिस अर्य्य [दत्तस्य
शिष्यस्य] गह [प्र] कि [व] स निर्वर्त [ना] अर[ह] तपुजाये ।

अनुवाद—महाराज . एक के २९ वें वर्षकी अतीतकृतके, दूसरे महीनेके तीसवें दिन, एक विवाहिता बोधिनदि (बोधिनन्दि ?) की आज्ञासे भगवान् वर्धमानकी प्रतिमाकी प्रतिष्ठा की गई । बोधिनदि ग्रहहृदि (ग्रहहस्ती) की प्यारी लडकी थी । यह प्रतिष्ठा ग्रहप्रक्रिव (?) की प्रेरणासे हुई । यह ग्रहप्रक्रिव आर्य दत्तके जो वारण गण और पुष्यमित्रीय (पुष्यमित्रीय) कुलके थे, गिण्य थे ।

[El, I, n° XLIII, n° 6]

३८

मथुरा—प्राकृत—भग्न ।

[संभवत् हुविष्क वर्ष २९]

अ. १. एकुनती [ग] व. १. अ [र] [ह] तो स. १.....

२. वा— २. [ह] खल २ प्रतिस—

द १. स्व म-र- स्व देव [पु] त्रस्य [हु] क्षस्य

२. [वा] मि [क] नगदत्तस्य गिषो मि [ग क] ो स—

[इम खण्ड-लेखका ठीक ठीक अनुवाद नहीं दिया जा सकता । इतना निश्चित है कि द. १. २ पंक्तियाँ हमे महाराज देवपुत्र हुक्ष (हुष्क या हुविष्क) और एक भिक्षु नगदत्त (नागदत्त) का नाम बताती है । यह भी हो सकता है कि यह लेख द. १ से शुरू हुआ हो, क्योंकि उस पंक्तिमे 'स्व', 'सिद्ध' का स्थानीय मालूम पड़ता है, तथा उससे राजाका भी नाम है । इसकी धारा अ. १ हो सकती है । २९ वा वर्ष हुविष्कके राज्यमें आयेगा ।

[El, II, n° XIV, n° 26]

३९

मथुरा—संस्कृत—भग्न ।

[काल लुप्त-संभवत्. हुविष्कका २९ वा वर्ष]

..... [व] पुत्रस्य हुविष्कस्य स^१

१ 'देवपुत्रस्य' और 'सवत्सरे' पठो ।

अनुवाद— देवपुत्र हुविष्कके वर्षमें ...

[El 11, n° XIV n° 25]

४०

मथुरा—प्राकृत ।

[वर्ष ३१ हुविष्ककाल]

अ-स ३० १ व १ टि १० अस्म क्षुणे

व १ यातो गणतो [अ]र्य्य वेरितो शाखतो [ठ] णियातो
कुलातो वह [तो] । कुटुम्बिणिये [ग्र] ह

२ [अर्थ]—दासस्य निवर्तना बुद्धिस्य धितु देविलस्य
शिरिये दाण ।

[ऊपरके शिलालेखका ठीक क्रम, जी बृहहरकी सम्मतिसे, इस
तरह है.—]

[कोट्टि]यातो गण [तो] अर्य्यवेरितो शाखतो [ठ]णियातो
कुलानो वह [तो] (?) [गणिस्य] अर्य्य [गो] दासस्य निवर्तना
बुद्धिस्य धितु देविलस्य कुटुम्बिणिये ग्रहशिरिये दाण ॥

अनुवाद—३१ वें वर्षकी वर्षाश्रुतके पहले महीनेके १० वें दिन,
बुद्धिकी पुत्री (तथा) देविलकी पत्नी गृहशिरि (गृहश्री)ने, कोट्टिय
गण, अर्य्य वेरि (आर्य्य वज्री) शाखा, ठाणिय (स्थानीय) कुलके
[गणी] आर्य्य गोदासके आदेशसे दान किया ॥

[El, II, n° XIV, n° 15]

४१

मथुरा—प्राकृत ।

[हुविष्क काल] वर्ष ३२

अ. १. सिद्धम् । सव [त्स] रे ३० २ हेमन्तमासे ४ दिवसे २ चारणानो गणा...यातो [कु] ० ?^१

२.

ब. १. -णि अर्यनन्दिकस्य निर्बर्त्तना जितामित्रय[रि] नन्दिस्य धीतु बुद्धिस्य कुटुम्बिनिये प्रा—^२

तारिकस्य—नी ि - प्य मातु गन्धिकस्य अरहन्नप्रतिमा सर्व-
तोभद्रिका ।

अनुवाद—सिद्धि हो । ३२ वें वर्षकी शीतऋतुके चौथे महीनेके दूसरे दिन, रितुनन्दि (ऋतुनन्दि) की पुत्री, बुद्धिकी पत्नी तथा गंधिककी माँ ...जितामित्राने, चारण गण ...य कुल ...अर्य-नन्दिक (अर्यनन्दिक) के आदेशसे एक अहन्तकी सर्वतोभद्रिका प्रतिमाकी प्रतिष्ठापना की ।

[EI, II, n° XIV, n° 16]

४२

मथुरा—प्राकृत ।

[हुविष्क वर्ष ३५]

अ. १. [मिद्ध] । स ३० [५] व ३ दि १० अस्य [ि] पूर्वाया कोट्टियातो गणतो [स्यानि] या [तो] कु—

ब. १. वडरानो श [ि] ख [ि] तो चिरिकातो स[भो]कातो अर्य-
बलदिनस्य शिशिनि कुमारमि[त]

१ सभवत 'गणानो हट्टियातो' पढ़ो । ० सभवत 'प्रातारिकस्य' पढ़ना चाहिये ।

२ तस्य पुत्रो कुम[र]भट्टि गधिको तस ...न प्रतिमा वर्धमा-
नस्य सञ्चितमखित [वो] धित

स. १ अ [र्य]

२. कुमार-

३. मित्रा-

४ ये-

द १ व्व

२ [त] न [III]

सारांश—आर्य बलदिन (बलदत्त) की शिष्या कुमरमित्रा (कुमार-
मित्रा) थी । वह कोट्टिय गण, स्थानीय कुल, बहुरा शाखा (तथा)
शिरिक सभोक (संभोग) की थी । उसका पुत्र कुमारभट्टि गन्धिक (तेल,
इत्रका व्यापार करनेवाला) था । उसने तीक्ष्ण, उज्वल, प्रबुद्ध कुमार-
मित्राके आदेशसे वर्धमानकी प्रतिमाकी प्रतिष्ठा की ।

[EI, I, n° XLIII, n° 7]

४३

मथुरा—प्राकृत ।

[हुविष्क संवत् ३९—हस्तिस्लम्भ]

१ महाराजस्य देवपुत्रस्य हुविष्कस्य सं० ३९

२. हे ३ दि० ११ एतय पुर्व्वये नन्दि विशाल

३ प्रतिष्ठपितो सिवदास श्रेष्ठिपुत्रेण श्रेष्ठिना

४. अर्थेन रुद्रदासेन अरहतन पुजाये

अनुवाद—देवपुत्र महाराज हुविष्कके राज्यमें, सं० ३९ की शीतऋतुके
नीसरे महीनेके ११ वे दिन, यह विशाल नन्दी शिवदास श्रेष्ठिके पुत्र आर्य
श्रेष्ठी रुद्रदासने अर्हन्तोकी पूजाके लिये बनवाया (१८ ई० पूर्व) ।

[A Cunningham, Reports, III, p 32-33, n° 9]

४४

मथुरा—प्राकृत ।

[हुविष्क वर्ष ४०]

- अ. १.—४०—हे—दि १०
 व. १. ए [त] स्य पू [व्रा] य वरणतो ग [ण]-
 स. १. तो आर्य्य हटिक्रियतो कुलतो
 द. १ वजनगरित[ो] ग [ा] ख [ा] त [ो] शि [रि] यत [ो] -
 अ. २ -- [ग] तो [द] तिस्य ञिञिनिये
 व. २. महन [न्दि] स्य सढचरिये
 स. २ वल [वर्म] ये [नन्द] ये च ञिञिनिये
 द. २ अ [कक] ये [निर्व्वर्त्तना].....
 अ. ३.—[स्य] धीतु ग्रमि [क] जयदेवस्य वधूये
 व. ३ ...मिको ज्यनागस्य धर्मपत्निये सिंहदत्ता [ये]
 स. ३...[लयभ]ो^१ दन ="

अनुवाद—[सिद्धि हो ।] ४० वें [वर्षमें] शीत ऋतुके.....सहीनेके दसवें दिन, सिंहदत्ता (सिंहदत्ता) ने एक पाषाण-स्तम्भकी स्थापना की । यह सिंहदत्ता ग्रामिक जयनागकी धर्मपत्नी, जयदेव ग्रामिक (गाँवका मुखिया) की बहू (तथा) ... की पुत्री थी । इस पाषाणस्तम्भकी स्थापना वारण गण, आर्य-हाटीकीय कुल, वज्रनागरी शाखा तथा शिरिय संभोगकी अकका (?) के आदेशसे हुई थी । यह अकका नन्दा और बलवर्माकी शिष्या, महनन्दि (महानन्दि) की श्राद्धचरी तथा दत्ति (दत्ती) की शिष्या थी ।

[El, 1, n° XLIII, n° 1]

४५

मथुरा—प्राकृत—भग्न

[हुविष्क वर्ष ४४]

अ मू-नमशर [स] तममहरजस्य हुविक्षस्य सव [त्स] रे ४० ४
हनगृ [स्य] मस ३ दिविस २ ए [त]-

व. [स्या] पूर्वय [ि] ... गणे अर्थचेटिये कुले हरीतमालकाटिय [श]
ख वाचक [स्य] हगिनदिअ गिसो ग ... नागसेणस्य नि ...

अनुवाद—स्वस्ति । नमः । प्रतापी (?) महाराज हुविष्कके ४४ वें
वर्षकी ग्रीष्म ऋतुके तीसरे महीनेके द्वितीय दिवस, [वारण] गण, अर्थ्य
चेटिय (अर्थ-चेटिक) कुल, हरीतमालकदि (हरीतमालकडी) शाखाके
वाचक हगिनदि (भगनन्दि ?) के गिष्य आर्थ्य नागसेनके आदेशसे—

[EI, 1, n° XLIII, n° 9]

४६

मथुरा—प्राकृत—भग्न

[हुविष्क वर्ष ४५]

१. सिद्धम् स ४० ५ व [३] दि १० [७] एतस्य पूर्व्य[ि]य-
..... ये बुद्धिस्य वधुये धम्मवृद्धिस्य—

अनुवाद—सिद्धि हो । ४५ वें वर्षकी वर्षाऋतुके तीसरे (?) (महीने)
के १० वें दिन, धम्मवृद्धिकी ... बुद्धिकी बहूने.....

[EI, 1, n° XLIII, n° 10]

४७

मथुरा—प्राकृत ।

[हुविष्क वर्ष ४७]

१. स ४० ७ गृ २ दि २० एतस्य पूर्व्य वरणे गणे पेटिवमि-
के कुले वाचकस्य ओहनदिस्य गिसस्य सेनस्य निवतृत्ता सवकस्य

२. पुषस्य वधुये गिह...[कुटिविनि] ...[पुष] दिन [स्य]
[मातु] र्य

अनुवाद—४७ वे वर्ष की ग्रीष्मऋतुके २ रे महीनेके २० वें दिन, वरण (वारण) गण, पेलिवमिक (प्रैतिवर्मिक) कुलके वाचक और ओहनदि (ओघनन्दि) के शिष्य सेनकी प्रार्थनापर पुष (पुष्य) श्रावककी बहू, गिहकी गृहिणी, पुषदिन (पुषपदत्त) की माँ, की तरफसे [यह समर्पित किया गया] ।

[EI, 1, n° XLIV, n° 30]

४८

मथुरा—प्राकृत—भग्न ।

[काल लुप्त, संभवतः वर्ष ४७]

१. सिद्धम् । महाराजस्य राजातिराजस्य . . .

२. ओहनन्दिस्स शिष्येण से न ि-^१

अनुवाद—सिद्धि हो । महाराज, राजातिराजओहनन्दि (ओघनन्दि) के शिष्य सेनने

[EI, II n XIV, n° 27]

४९

मथुरा—संस्कृत ।

[हुविष्क वर्ष ४७]

दान देविलस्य दधिक्कर्णदेविकुलकस्य स ४० ७ गृ० ४ दिवसे २९

अनुवाद—४७ वें वर्षकी ग्रीष्मऋतुके चौथे महीनेके २९ वे दिन, दधिक्कर्ण मन्दिर (या चैत्यालय) के पुजारी (या माली) देविलका दान ।

[1A, XXXIII, p 102-103, n° 13]

५०

मथुरा—प्राकृत—भद्र ।

[हुविष्क वर्ष ४८]

१. महाराजस्य हुविष्कस्य स ४० < हे ४ दि ५

२. ब्रह्मदासिये कुल [] उ [च] १ नागरिय शाखाया धर.....

अनुवाद—महाराज हुविष्कके राज्यमें, ४८ वें वर्षकी शीतऋतुके चौथे महीनेके ५ वें दिन, ब्रह्मदासिक कुल, उच्चनागरी शाखाके धर

[1A, XXXIII, p 103, n' 14]

५१

मथुरा—प्राकृत ।

[हुविष्ककाल वर्ष ५०]

१ पण ५० हेमतमासे प...

२ आर्य्यचेरस्य

३ ये युधदिनस्य

४ धित

५. पूषवुधिस्य

[इस खण्ड-शिलालेखका पूरा अनुवाद संभव नहीं है । काल ५० वाँ वर्ष और शीतऋतुका पहला या पाँचवा महीना है ।]

[EI, II, n° XIV, n° 17]

५२

मथुरा—प्राकृत—भद्र ।

[हुविष्कका ५० वा वर्ष]

१ — ५० (१) है २ दि १ अस्य पूर्व्वय वरणतो गणतो
अय्यभिस्त कुलतो [स] —२. खतो शिरिग्रहतो सभोगतो ब्रह्मो वचक च गणिनो च
समदि [अ] .

३.वस्य दिनरस्य शिशिनि अय्य जिनदसि पणति-धरितय
शिशिनि अ .

४. घकरवपणतिहरमसोपवसिनि वुवुस्य धित रज्यवसुस्यधर्म...^१

५. [द] विलस्य मत्तु विष्णु[भ] वस्य पिदमहिक विजय-
शिरिये दन वध.....^२

६.

अनुवाद—५० वां वर्ष, शीतऋतुका दूसरा महीना, पहला दिन, इस दिन, वरण (वारण), गण, अय्यभिस्त (?) कुल, सं [कासिया] शाखा, शिरिग्रह (श्रीगृह) संभोगके महावाचक तथा गणि समदि 'व दिनर की शिष्या अय्य-जिनदसि (आर्य जिनदासी) की आज्ञाको माननेवाली... अय्य घकरव (?) की आज्ञाको धारण करनेवाली विजयशिरि [विजयश्रीने] दानमें वध [मान] अर्थात् वर्धमान की प्रतिमा..... । यह विजयश्री वुवुकी पुत्री, रज्यवसु (राज्यवसु) की धर्मपत्नी, देविलकी माँ (और) विष्णुभवकी नानी थी और इसने एक महीनेका उपवास किया था ।

[Bl, II, n° XIV, n° 36]

५३

रामनगर—प्राकृत ।

[काल ? वर्ष ५०]

वर्ष	राजा	स्थान	कहाँ	विशेषता
५०	—	रामनगर (अहिच्छत्र)	A'S N-W-P-O, Annual report 1891-1892, p 3	दूसरा महीना, शीतऋतु, पहला दिन; ब्राह्मी लिपि

[JRAS, 1903, p 7-14, n° 40]

१ 'धर्मपत्नी' पदो । २ 'वधमान प्रतिमा' या शायद 'प्रतिमा' ।

५४

मथुरा—प्राकृत ।

[हुविष्क वर्ष ५२]

१. सिद्ध सवत्सर द्वापना ५० २ हेमन्त [मा] स प्रथ-दिवस
पचवीश २० ५ अस्म क्षुणे क[ो]द्विया तो गणात[ो]

२ वेरातो शाखतो स्थानिकियातो कुलात[ो] श्रीगृहतो सभो-
गातो वाचकस्यार्यघस्तुहस्तिस्य

३ शिष्यो गणिस्यार्यमंगुहस्तिस्य पदचरो वाचको अर्यदिवि-
त्स्य निर्व्वर्तना शूरस्य श्रम-

४. णकपुत्रस्य गोदिकस्य लोहिकाकारकस्य दान सर्व्वसत्वान
हितसुखायास्तु ।

अनुवाद—सिद्धि हो । ५२ वें वर्षके शीतऋतुके पहले महीनेके २५
वें दिन, कोद्विय गण, वेरा (वज्रा) शाखा, स्थानिकिय कुल (तथा)
श्रीगृह संभोगके वाचक आर्य घस्तुहस्तिके शिष्य और गणी आर्य मङ्गुहस्ति-
के श्राद्धचर ऐसे वाचक अर्यदिवितके आदेशसे श्रमणकके पुत्र, शूर लुहार
गोदिकने दान दिया ।

[Bl, II, n° XIV, n° 18]

५५

मथुरा—प्राकृत ।

[हुविष्क वर्ष ५४]

१.—धम् । सव ५० ४ हेमतमासे चतुर्थे ४ दिवसे १० अ—

२. स्य पुर्वाया कोद्वियातो [ग] णातो स्थानि [य]तो कुलातो

३. वैरातो शाखातो श्रीगृह [I] तो सभोगातो वाचकस्यार्य-

४ [ह] स्तहस्तिस्य शिष्यो गणिस्य अर्यमाघहस्तिस्य श्रद्धचरो

वाचकस्य अ-

५. अर्यदेवस्य निर्वर्त्तने गोवस्य सीहपुत्रस्य लोहिककारुकस्य दान
६. सर्वसत्त्वाना हितसुखा एकसरस्वती प्रतीष्ठाविता अवतले
रङ्गान[र्त्तन] १

७. मे [॥]

अनुवाद—सिद्धि हो । ५४ वे वर्षकी शीतऋतुके चौथे महीनेके (शुक्ल-पक्षके) १० वें दिन, वाचक आर्यदेवकी प्रेरणासे सीहके पुत्र गोव लुहारके दानरूपमें एक सरस्वतीकी (प्रतिमा) प्रतिष्ठापित की गई । आर्य देव कोट्टियगण, स्थानिय कुल, वैरा शाखा तथा श्रीगृहसंभोगके वाचक आर्य हस्तहस्तिके शिष्य गणि आर्य माघहस्तिके श्राद्धचर थे । अवतलमें मेरा रङ्गशालीय नृत्य (?) ।

[El, 1, n° XLIII, n° 21]

५६

मथुरा—प्राकृत ।

[हुविष्क वर्ष ६०]

अ. सिद्धम् । म [हा] रा [ज] स्य र[ाजा] तिराजस्य देवपुत्रस्य हुविष्कस्य स ४० (६०^१) हेमन्तमासे ४ दि० १० एतस्या पूर्वाया कोट्टिये गणे स्थानिकीये कुले अर्य[वेरि] याण शाखाया वाचकस्यार्यवृद्धहस्ति [स्य]

व शिष्यस्य गणिस्य आर्यख[र्णा]स्य पुय्यम[न][स्य] ...[व] तकस्य [क]—सकस्य कुटुम्बिनीये दत्ताये—नधम्मो^१ महा-भोगताय प्रीयताम्भगवानृपभश्री ।

अनुवाद—सिद्धि हो । महाराज, राजातिराज, देवपुत्र हुविष्कके ६० वे वर्षकी शीतऋतुके चौथे महीनेके १० वे दिन, कोट्टियगण, स्थानिकीय कुल (तथा) अर्य वेरियो (आर्य-वज्रके अनुयायियो) की शाखाके वाचक आर्य वृद्धहस्तिके शिष्य, गणि आर्य खर्णके आदेशसे ..वतके निवासी

१ 'दानधर्मो' पठो ।

पसक.नी पत्नी दत्ताने महाभोगता (महासुख)के लिये यह दानधर्म किया। भगवान् ऋषभदेव प्रसन्न होवें।

[El, 1, n° XLIII, n° 8]

५७

मथुरा—प्राकृत।

[हु० सवत् ६२]

वाचकस्य आर्य-ककसघस्तस्य शिष्या आतपिको ग्रहचलस्य निर्वर्तन

अनुवाद—वाचक आर्य ककसघस्त (ककशघर्षित)के शिष्य आतपिक ग्रहचलके आदेशसे।

इस शिलालेखसे मालूम पड़ता है कि किसी मुनिके आदेशसे जैन आश्रमके वैहिकाने एक प्रतिमाका दान किया।

[1A, XXXIII, p. 105-106, n° 19]

५८

मथुरा—प्राकृत।

[हु० वर्ष ६२]

१. सिद्ध। स ६० २ व २ दि ५ एतस्य पुत्रय वाचकस्य आयककुहस्थ [स]

२ वारणगणिस शिषो ग्रहचलो आतपिको तस निर्वर्तना।

अनुवाद—सिद्धि हो। वर्ष ६२, वर्षाकृतुका २ रा महीना, दिन ५, इस दिन, वारणगणके वाचक आय-ककुहस्थ (आर्य ककशघर्षित) के शिष्य आतपिक ग्रहचल थे। उनकी प्रेरणासे

[El, II, n° XIV, n° 19]

५९

मथुरा—प्राकृत।

[] वर्ष ७९

अ. १. स ७० ९-वै ४ दि २० एतस्या पुत्र्याय कोट्टिये गणे चडराया शाखाया ..

२. को अयवृधहस्ति अरहतो णन्दि [आ] वर्तस प्रतिम निर्वर्तयति ।
 वः भार्यये श्राविकाये [दिनाये] दानं प्रतिमा वोद्रे थुपे
 देवनिर्मिते प्र..... ?

अनुवाद—वर्ष ७९, वर्षाऋतुका चौथा महीना, २० वा दिन, इस
 दिन, कोट्टियगण (तथा) वडरा (वज्रा) शाखा के वाचक अय-वृधहस्ति
 (आर्य वृद्धहस्ति) ने दीना [दत्ता] श्राविकाको, जो..... की भार्या थी,
 एक अर्हत् णन्दिआवर्त्त (नन्द्यावर्त्त)^१ की प्रतिमाके निर्माणके लिए
 कहा । दीनाकी यह प्रतिमा देवनिर्मित वोद्रे स्तूपपर प्रतिष्ठित हुई ।

[El, II, n° XIV, n° 20]

६०

मथुरा—प्राकृत—भद्र ।

[हुविष्क वर्ष ८०]

१. [सिध] महरजस्य स ८० हण व १ दि १२ एतस
 पूर्व्याया

२. धितु संघनधि [स्य] वधुये बलस्य

अनुवाद—[स्वस्ति ।] महाराज वासुदेवके ८० वें वर्षमें, वर्षाऋतुके
 १ ले महीनेके १२ वें दिन,.....की पुत्री, सघनधि (?) की बहू,
 बलकी (अपूर्ण) .

[El, n° XLIII, n° 24]

६१

मथुरा—प्राकृत—भद्र ।

[] वर्ष ८१

१. स ८० १ व १ दि ६ एतस्य पुवाय [अ] यिकाजीवाये अते-

२. वासिकिनिये दत्ताये निवतना । [ग्र] हशिरिये.....

१ 'प्रतिष्ठापिता' । २ नन्द्यावर्त्त जिसका चिह्न है ऐसे १८ वें तीर्थङ्कर
 अर्हनाथ भगवान्की प्रतिमा ।

अनुवाद—वर्ष ८१, वर्षाऋतुका १ ला महीना, ६ ठा दिन, इस दिन, अयिका-जीवा (आर्थिकाजीवा) की शिष्या दत्ताकी प्रार्थनापर ग्रहशिरि (ग्रहश्री) ।

[EI, II, n° XIV, n° 21]

६२

मथुरा—प्राकृत ।

[वासुदेव] वर्ष ८३

१ सिद्ध महाराजस्य वासुदेवस्य स ८० ३ गृ २ दि १० ६
एतस्य पूर्व्वये सेनस्य

२ [धि] तु दत्तस्य वधुये व्य ... च स्य गन्धिकस्य कुटुम्बिनिये
जिनदासिय प्रतिमा ध [मट] न

अनुवाद—सिद्धि हो । महाराज वासुदेवके राज्यसे ८३ वें वर्षकी ग्रीष्मऋतुके दूसरे महीनेके १६ वें दिन, सेनकी पुत्री, दत्तकी बहू, गन्धिक (तेल, इत्र बेचनेवाले) व्य-च...की पत्नी जिनदासीके पवित्रदानसे एक प्रतिमा ।

[1A, XXXIII, p 107, n° 21]

६३

मथुरा—प्राकृत ।

[हुविष्क वर्ष ८६]

१ स ८० ६ हे १ दि १० २ दसस्य धितु पृथस्य कुटुम्बिनिये

२ .. [क] तो कुलतो अयस [झ] मि [क] य शिशिनिय
अयवसुल [ये] नि [व] तने [||]

अनुवाद—८६ वें वर्षकी शीतऋतुके पहले महीनेके १२वें दिन, दस (दास) की पुत्री, पृथ (प्रिय) की पत्नी ... का दान अर्पित किया गया । यह दान [मेहि] क कुलकी अर्थ सद्भूमिकाकी शिष्या अर्थ वसुलाके कहनेसे हुआ ।

[EI, I, n° XLIII, n° 12]

६४

मथुरा—प्राकृत ।

[हुविष्क वर्ष ८७]

[सं ८० ७ ?] गृ १ दि [२० ?] अ [स्मि] क्षुणे उच्चैनागर-
स्वार्य्यकुमारनन्दिशिष्यस्य मित्रस्य.....

अनुवाद—८७ (?) वें वर्षमें ग्रीष्मऋतुके १ ले महीनेके २० (?)
वें दिन, उच्चनागरके, कुमारनन्दीके शिष्य, मित्रके... ..

[EI, I, n° XLIII, n° 13]

६५

मथुरा—प्राकृत—भद्र ।

[वासुदेव] वर्ष ८७

१. सिद्ध । महाराजस्य राजातिराजस्य शाहिइ=वासुदेवस्य

२. म ८० ७ हे २ दि ३० एतस्या पूर्वाया

अनुवाद—सिद्धि हो । महाराज राजातिराज शाहि वासुदेवके ८७ वें
वर्षकी शीतऋतुके २ रे महीनेके तीसवें दिन,

[1A, XXXIII, p 108, n° 22]

६६

मथुरा—प्राकृत—भद्र

[सं० ९०]

१. सत्र [९० व] टुवनिए दिनस्य वधूय

२. को ... तो ग [णा] तो प-य [ह]-[क] तो कुलानो

मझमानो शाखा [तो] ...सनिकय भतित्रलाए भिनि

[यह लेख बहुत टूटा हुआ है । इसमें खास कामकी चीज मझमा
शाखा और प-चह-क कुलका उल्लेख हैं । प-वहक कुल जैन परम्पराका
प्रश्नवाहनक या पण्ढवाहणय कुल है । वर्ष (सं) ९० है]

[EI, II, n° XIV, n° 22]

६७

मथुरा—प्राकृत—भ्रम ।

[वर्ष ९३]

अ नमो अर्हतो महाविरस्य स० ९० ३ [व]

व १. शिष्यस्य ग [णि] स्य [न] न्दिये [नि] र्वर्त्तना देवस्य
हैरण्यकस्य धितु .

२ ... ि- [भ] - वतो वर्द्धमानप्रतिमा प्रति पुजा
[ये] [॥]

अनुवाद—अर्हत् महाविर (महावीर) को नमस्कार हो । वर्ष ९३,
वर्षाऋतुका (महीना), . के शिष्य गणी नन्दीके आदेशसे [अर्हत्
की] पूजाके लिये, हैरण्यक (सुनार) देवकी पुत्री . ने भगवान् वर्द्धमा-
नकी प्रतिमाकी प्रतिष्ठा कराई ।

[El, II, n° XIV, n° 23]

६८

मथुरा—प्राकृत ।

[वर्ष ९५]

१ [ि] सद्ध स ९० ५ [१] षि २ दि १० ८ कोडि [य] ।
तो गणातो ठानियातो कुलातो वइर [। तो गा] खातो अर्य्य अरहं.....

२ शिशिनि धाम [था] ये निर्वर्त्तन [।] ग्रहदत्तस्य धि [तु]
धनहथि

अनुवाद—सिद्धि हो । ९५ वे (?) वर्षके ग्रीष्मऋतुके दूसरे महीनेके
१८ वें दिन, धामथाके आदेशसे ग्रहदत्तकी पुत्री, धनहथि (धनहस्ती) की
पत्नी का [दान किया गया] । धामथा कोट्टियगण, ठानिय कुल, वइरा
शाखाके अर्य्य अरह [दिन्न] की शिष्या थी ।

[El, 1, n° XLIII, n° 22]

अनुवाद—वर्ष ९८ की शीतक्रतुके १ ले महीनेके ५ वें दिन, कोट्टिय गण, उचनगरी (उच्चानागरी) [शाखा]

[EI, II, n° XIV, n° 24]

७१

मथुरा—प्राकृत ।

[विना कालनिर्देशका]

१. नमो अरहतान सिहकस वानिकस पुत्रेण कोशिकिपुत्रेण

२. सिंहनादिकेन आयागपटो प्रतियापितो आरहतपुजाये [||]

अनुवाद—अर्हन्तोको नमस्कार हो । वानिक सिहक (सिहक) के पुत्र तथा किसी कोशिकी (कौशिकी माँ) के पुत्र सिंहनादिक (सिंह-नन्दिक ?) के द्वारा एक आयागपटकी प्रतिष्ठा अर्हन्तोकी पूजाके लिये की गई ।

[EI, II, n° XIV, n° 30]

७२

मथुरा—प्राकृत—भद्र ।

[विना कालनिर्देशका]

नमो अरहताना शिवघो [पक] स भरि [या] ...ना...ना ...

अनुवाद—अर्हन्तोको नमस्कार । शिवघोषककी , भार्या

[EI, II, n° XIV, n° 31]

७३

मथुरा—प्राकृत ।

[विना कालनिर्देशका]

प. १. नमो अरहतान [मल] णस त्रितु भद्रयशस वधुये
भद्रनदिस भयाये

२. अ [चला] ये आ[या] गपटो प्रतियापितो अरहतपुजाये ।

व दुकम वायकस सिसिनिए सादिताए नि ...

अनुवाद—भगवान् वृषभ (उसभ) को नमस्कार हो । वारण गण, नाडिक कुल तथा..... के वाचक .. दुककी शिष्या सादिताके आदेशसे ..

[EI, II, n° XIV, n° 28]

८३

मथुरा—प्राकृत ।

[विना कालनिर्देशका]

स्थ [I]निकिये कुले गनिस्य उग्गाहिनिय शिषो वाचको घोषको आर्हतो पर्थस्य प्रतिमा

अनुवाद—“स्थानिकिय (कीय) कुलके गणि (गणिन्) उग्गाहिनिके शिष्य वाचक घोषकने एक अर्हत पार्श्वकी प्रतिमा... ”

[EI, II, n° XIV, n° 29]

८४.

मथुरा—प्राकृत—भन्न ।

[विना कालनिर्देशका]

अ. वर्धमानपटिमा वज्रनद्यस्य धिता वाधिशिव... ”

१.-ि- स्य- कुटीविनि दिनाये दाति वडिम [शि] ये ...

२ /

अनुवाद—“वज्रनद्य (वज्रनन्दिन्) की पुत्री, वाधिशिव (वृद्धिशिव ?) की बहू, ि ... की पत्नी दिना (दत्ता) के दानके रूपसे एक वर्धमानकी प्रतिमा ... वडिमशिके... ”

[EI, II, n° XIV, n° 33]

८५

मथुरा—प्राकृत—भद्र ।

[विना कालनिर्देशका]

अ. तिये निर्वर्तना

व. १. नो गखतो शिरिकतो समोकतो अर्थ

३. लनस्य मतु हि [स्त].....

२. f—धराये निवतना शिवद [त]

[EI, II, n° XIV, n° 35]

[नोट—'निर्वर्तना' और 'निवतना' इन दो शब्दोंके एक ही शिलालेखमें आ जानेसे एक ही शिलालेखके दो खण्ड मालूम पड़ते हैं और वे सम्बद्ध अर्थको व्यक्त नहीं करते हैं ।]

८६

मथुरा—प्राकृत ।

(विना कालनिर्देशका)

१.ये मोगलिपुतस पुफकस भयाये

२. असाये पसादो

अनुवाद—किसी मोगली (मां मांइलीविशेष) के पुत्र, पुफक (पुष्पक) की पत्नी असा (अम्बा ?) का दान ।

[1A, XXXIII, p 151, n° 28]

८७

राजगिरि—संस्कृत ।

[]

T. Bloch के आर्कीओलोजिकल सर्वे, बङ्गाल सर्किल, वार्षिक रिपोर्ट १९०२, पृ० १६, विश्लेषणमें इस शिलालेखका उल्लेख है । मूलका पता नहीं है ।

[AS, Bengal circle, Annual report 1902, p. 16. a]

८८

मथुरा—संस्कृत—भद्र ।

[सं० २९९]

१. नमस्-सर्वसिद्धाना अरहन्ताना । महाराजस्य राजातिराजस्य
सवच्छरगते द [८] [तिये नव (१) -नवत्यधिके ।]

२. २०० ९० ९ (१) हेमन्तमासे २ दिवसे १ आरहानो
महावीरस्य प्रातिमा

३. स्य ओखारिकाये धितु उज्जतिक्राये च ओखाये श्राविका
भगिनिय [१]

४ ... शरिकस्य शिवदिनास्य च एतै आराहातायनाने
स्थापित [१]

५. देवकुल च ।

अनुवाद—सब सिद्धो और अर्हन्तोको नमस्कार हो । महाराज और
राजातिराजके (९९ से अधिक) दूसरी शताब्दिमें, २९९ (?), शीतक्र-
तुके दूसरे महीनेके पहले दिन—भगवान महावीरकी प्रतिमा अर्हन्मन्दिरमें
... के द्वारा तथा . की पुत्री, ओखारिकाकी उज्जतिका द्वारा,
. श्राविका भगिनी ओखाके द्वारा, तथा शरिक और शिवदिना इनके द्वारा
स्थापित की गई . साथमें एक जिनमन्दिर भी ।

[G. Buhler, J R A S, 1896, p 578-581]

८९

मथुरा—संस्कृत—भद्र

[गुप्तकाल^१ वर्ष ५७]

संवत्सरे सप्तपञ्चाश ५० ७ हेमन्धत्रिती...^१

—से [दि] वसे त्रयोदशे अ-पूर्वाया ...

१ 'हेमन्त' और 'तृतीय' या 'तृतीये' पढो ।

अनुवाद-५७ वें वर्ष, शीतऋतुकी तीसरे महीनेके १३ वें दिन,
इसदिन*

[El, II, n° XIV, n° 38]

९०

नोणमङ्गल—संस्कृत

गुप्तकालसे पहिले, संभवतः ३७० ई० का

[नोणमंगलमें ताम्र-पट्टिकाओंपर]

[१ व] स्वस्ति नमस् सर्वज्ञाय ॥ जित भगवता गत-धन-गगनाभेन
पद्मनाभेन श्रीमज्-जाह्नवेय-कुलामल-व्योमावभासन-मास्करस्य स्व-भुज-
जवज-जय-जनित-सुजन-जनपदस्य दारुणारिगण-विदारण-रणोपलब्ध-
त्रण-विभूषण-भूपितस्य काण्वायनसगोत्रस्य श्रीमत्कोङ्कुणिवर्म-धर्म-
महाधिराजस्य पुत्रस्य पितुरन्वागत-गुण-युक्तस्य विद्या-विनय-विहित-
वृत्तस्य

[२ अ] सम्यक्-प्रजा-पालन-मात्राधिगत-राज्य-प्रयोजनस्य विद्वत्कवि-
काञ्चन-निकपोपल-भूतस्य विशेषतोऽप्यनवगेषस्य नीति-शास्त्रस्य वक्तृ-
प्रयोक्तृकुशलस्य सुविभक्त-भक्त-भृत्यजनस्य दत्तक-सूत्र-वृत्ति-प्रणेतुः
श्रीमन्माधववर्म-धर्म-महाधिराजस्य पुत्रस्य पितृ-पैतामह-गुणयुक्तस्य
अनेक-चतुर्दन्त-युद्धावाप्त-चतुरुदधि-सलिलस्त्रादित-यशस समद-द्विर-
दतुरगारोहणातिशयोत्पन्न-कर्मणः श्रीमद् हरिवर्म-महाधिराजस्य
पुत्रस्य गुरु-गो-ब्राह्मण-पूजकस्य नारायण-चरणानुध्या

[२ व] तस्य श्रीमद्विष्णुगोप-महाधिराजस्य पुत्रेण पितुरन्वागत-
गुण-युक्तेन त्र्यम्बकचरणाम्भोरुहराज (ज) पवित्रीकृतोत्तमाङ्गेन व्यायामो-
द्वृत्त-पीन-कठिनभुजद्वयेन स्व-भुज-बल-पराक्रम-क्रय-क्रीत-राज्येन क्षुत्-

क्षामोष्ठ-पिस्तितान्नप्रीतिकर-निसिन-धारासिना श्रीमता माधववर्म-म-
हाधिराजेन आत्मनःश्रेयसे प्रवर्द्धमानविपुलैश्चर्ये त्रयोदशे सवत्सरे
फाल्गुने मासे शुक्ल-पक्षे तिथौ पञ्चम्या श्रीमद्-वीर-देव-आसनाम्भरावभा-
सन-सहस्रकरस्य आचार्यवीर-देवस्य -

[३ अ] निज-कृतान्तपर-राद्धान्त-प्रवीणस्य उपदेशनात्
सुदुकोत्तर-विषये पेन्वोल्ल-ग्रामे अर्हट्टायतनाय मूलसवानुष्ठिताय
महा-तटाकस्य अधस्तात् द्वादश-खण्डुकावापमात्र-क्षेत्रे च तोड-क्षेत्रे च
पटु-क्षेत्रे च कुमारपुर-ग्रामश्च एतत्सर्वं स-सर्व-परिहार-क्रमेणाद्भिर्दत्त.
योऽस्य लोभात् प्रमादाद्वापि हर्त्ता स पञ्च-महा-पातक-संयुक्तो भवति
अपि चात्र मत्तुरीता[] श्लोका[.]

ख-उत्ता पर-उत्ता वा यो हरेत वसुध्वराम् ।

पण्डि-वर्ष-सहस्राणि धीरे तमसि वर्तते ॥

(अन्य हमेशाके अन्तिम श्लोक)

[इस लेखमें गगकुलके राजाओकी परम्परा—कोङ्कणिवर्मा, माधववर्मा,
हरिवर्मा, विष्णुगोप और माधववर्मा—देकर यह बताया है कि अन्तिम
राजाने अपने राज्यके १३ वें वर्षमें, फाल्गुनसुदी पचमीको, आचार्य वीर-
देवकी सम्मतिसे, सुदुकोत्तर-देशके पेन्वोल्ल गावमें मूलसंवद्वारा प्रतिष्ठापित
जिनालयमें (उक्त) भूमि और कुमारपुर गाव दानमें दिये ।]

[EC, X, Malhar II, n° 73]

९१

उदयगिरि (साची के निकट)-संस्कृत ।

[गुप्तकाल १०६= ई. सं० ४२६]

Corrected transcript of the facsimile

[१] नमः सिद्धेभ्यः[]

श्रीसंयुताना गुणतोयधीनाम्
गुप्तान्वयाना नृपसत्तमानाम् [I]

- [२] राज्ये कुलस्याभिविद्वमाने
पद्भिर्युते वर्षगतेऽथ मासे [II] १.
सुकार्तिके बहुलदिनेऽथ पञ्चमे
- [३] गुहामुखे स्फुटविकटोत्कटामिमा [I]
जितद्विपो जिनवरपार्श्वसन्निकाम्
जिनाकृती शमदमवान
- [४] चीकरत् [II] २ आचार्य-भद्रान्वयभूपणस्य
शिष्यो ह्यसावार्थकुलोद्भूतस्य [I]
आचार्य-गोश
- [५] मर्म मुनेस्तुतस्तु पद्मावत [स्या] श्वपतेर्भटस्य [II] ३.
परैरजेयस्य रिपुघ्नमानिनम्
स सङ्घ
- [६] लस्येत्प्रभिविश्रुतो भुवि [I] स्वसन्नया शंकरनामगद्वितो
विधानयुक्त यतिमार्गमास्थितः [II] ४
स उत्तराणा सदृशे गुरुणा
उदग्दिशादेशवरे प्रसूतः [I]
- [८] क्षयाय कर्म्मरिगणस्य धीमान्
यदत्र पुण्य तदपाससर्ज [II] ५

[इस शिलालेखमें शम-दमवाले किसी व्यक्तिद्वारा पार्श्वनाथ जिनेन्द्रकी प्रतिमाकी कार्तिक वदी पंचमीके दिन स्थापनाकी बात है। यह प्रतिमा किसी गुफाके द्वारपर खड़ी की गई थी। इस प्रतिमाकी स्थापना करने वाला या उसको खड़ा करनेवाला आचार्य गोदासका शिष्य था। ये गोदास आचार्य भद्रके वंशमें हुए थे, इनकी परम्परा आर्यकुलकी थी और अश्वपति योद्धाके लड़के थे। ये अश्वपति सद्धल (या सिंहल) के नामसे प्रसिद्ध थे और इन्होंने जिनदीक्षा लेनेके बाद अपना नाम शंकर रक्खा था।]

[इण्डियन एण्टीक्वेरी, जिल्ड ११, पृ० ३१०]

९२

मथुरा—संस्कृत।

[गुप्तकाल, वर्ष ११३]

१ सिद्धम् । परमभट्टारकमहाराजाधिराज श्रीकुमारगुप्तस्य विजयराज्यस [१०० १०] ३ क.....न्तमा ..[दि]—स २० अस्या ५ [पूर्व्याया] कोट्टिया गणा-

२ द्विधाधरी [तो] शाखानो दत्तिलाचार्यप्रज्ञपिताये शामाल्याये भट्टिभवस्य वीतु प्रहमित्रपालि [त] प्रा [ता] रिक्त्य कुटुम्बिनीये प्रतिमा प्रतिष्ठापिता ।

अनुवाद—सिद्धि ही । परमभट्टारक महाराजाधिराज श्रीकुमारगुप्तके विजयराज्यके ११३ वें वर्षमें, [ग्रीतकृत महीने] कार्तिकके २० वे दिन, कोट्टियगण (तथा) विद्याधरी शाखाके दत्तिलाचार्य (दत्तिलाचार्य) की आज्ञाले शामाल्य (श्यामाल्य) ने एक प्रतिमाकी प्रतिष्ठा करवाई । श्यामाल्य भट्टिभवकी बेटी (और) प्रहमित्रपालित प्रातारिक (घाटी या नाविक) की पत्नी थी ।

[El, II, n° XIV, n° 39]

९३

कहायू—संस्कृत

[गुप्तकाल १४१ वां वर्ष=४६१ ई. स]

सिद्धम् ।

- [१] यस्योपस्थानभूमिर्नृपतिगतशिरपातवानावधूता
 [२] गुप्ताना वशजस्य प्रविसृतयशसस्तस्य सर्वोत्तमर्द्धे
 [३] राज्ये अक्रोपमन्य क्षितिपयानपते. स्कन्दगुप्तस्य शान्ते
 [४] वर्षे त्रिंशद्दशैकोत्तरकगततमे ज्येष्ठमासि प्रपन्ने ॥ १ ॥
 [५] ह्यातेऽस्मिन् ग्रामरत्ने ककुभ इति जनैस्साधुनसर्गपूते
 [६] पुत्रो यत्सोमिलस्य प्रचुरगुणनिवेर्भट्टिसोमो महात्मा
 [७] तन्मन्सूद्रसोम[ः] प्रथुलमतिथशा व्याघ्र इत्यन्यसजो
 [८] मद्रस्तस्यात्मजोऽभूद् द्विजगुरुयतिषु प्रायश प्रीतिमान् य. ॥
 [९] पुण्यस्कन्ध म चक्रे जगदिदमखिल मसरद्वीभ्य भीतो
 [१०] श्रेयोऽयं भूतभूत्यै पथि नियमवनामर्हतामादिकर्तृन्
 [११] पञ्चेन्द्रास्थापयिन्वा वरणिधरमयान् मन्निखातस्तनोऽयम्
 [१२] डैलस्तम्भ सुचारुगिरिवरशिखराग्रोपम कीर्तिकर्ता ॥ ३ ॥

[इस जिलालेखमें, जो कि गुप्तकालके १४१ वें वर्षका है, बताया गया है कि किसी मद्र नामके व्यक्तिने, जिसकी कि वशावली यहा उसके प्रपितामह सोमिल तक गिनाई है, अर्हन्तों (तीर्थकरों)में मुख्य समझे जाने वाले, अर्थात् आदिनाथ, ज्ञान्तिनाथ, नेमिनाथ, पार्श्व, और महावीर, इन पांचोंकी प्रतिमाओंकी स्थापना करके इम स्तम्भको खड़ा किया । लेखकी ११ वीं पंक्तिके 'पञ्चेन्द्रान' से इन्हीं पांच तीर्थंकरोंसे मतलब है ।]

[हृषिडयन एण्टिकेरी, जिल्द १०, पृ० १२१-१२६]

१४

नोणमंगल—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

[गुप्तकालसे पहिले, समव्रत ४२५ (१) ई० अ]

[नोणमंगल (लक्ष्मूर परगना) में, ध्वस्त जैन वस्तिके ताम्र-पत्रो परै]

(१ व) स्वस्ति जिन भगवता गतघन-गगनामेन पद्मनाभेन श्रीमज् जाद्ववेय-कुलामल-व्योमावभासन-भास्करस्य स्व-भुज-जव-ज-जय-जनित-सुजन-जनपदस्य दारुणारि-गण-विदारण-रणोपलब्ध-त्रण-विभूषण-भूषितस्य काण्वायनस-गोत्रस्य श्रीमत्क्रोङ्गणिवर्म्म-धर्म्म-महाधिराजस्य पुत्रस्य पितुरन्वागत-गुण-युक्तस्य विद्या-विनयविहित-वृत्तस्य सम्यक्-प्रजा-पालन-मात्राधिगत-राज्य-प्रयोजनस्य विद्वत्-कवि-काञ्चन-निकपो

[२ अ] पल-भूतस्य विगेष्यतोऽप्यनवगोपस्य नीति-शास्त्रस्य वक्तु-प्रयोक्तुकुशलस्य सुविभक्त-भक्त-भृत्य-जनस्य दत्तक-भूत-वृत्ति-प्रणेत् श्रीमन्माधववर्म्म-धर्म्म-महाधिराजस्य पुत्रस्य पितु-पैतामह-गुण-युक्तस्य अनेक-चतुर्दन्त-युद्धावाप्त-चतुरुदधि-सलिलाखादित-ग्रथस समद-द्विरद-नुरगारोहणातिशयोत्पन्न-कर्मण धनुरभियोगस-म्पद्-विगोपस्य श्रीमद्-हरिवर्म्म-महाधिराजस्य पुत्रस्य गुरु-गो-ब्राह्मण-पूजकस्य नारायण-चरणानुध्यातस्य श्रीमद्विष्णुगोप-महाधिराजस्य पुत्रस्य पितुरन्वा

[२ ब] गत-गुण-युक्तस्य त्रम्वक-चरणाम्भोरुह-रज-पवि-त्रीकृतोत्तमाङ्गस्य व्यायामोद्वृत्त-पीन-कठिन-भुज-द्वयस्य स्वभुजवल-परा-

१ ये ताम्रपत्र जर्मीनमे मिले है ।

क्रम-क्रयत्रीत-राज्यस्य चिर-प्रनष्ट-देव-भोग-ब्रह्मदेय-नैक-सहस्र-विसर्गा-
अयण-कारिण. क्षुत्-आमोष्ट-पिसिताशन-प्रीतिकर-निशित-धारासे' कलि-
युग-ब्रह्मवमग्न-धर्मोद्धरण-निलय-सन्नद्धस्य श्रीमतो माधववर्म-धर्म-महा-
धिराजस्य पुत्रेण जननी-देवताङ्क-पर्यङ्क-तले-समधिगत-राज्य-विभव-
विलासेन निज-प्रभावागु-चक्रवालाखण्डिन-गन्तु-नृपति-मण्डलेनाखण्ड

[३ अ] ल-विडम्बि-गौर्य-वीर्य-यशो-धाम-भूतेन गज-धुरि-हय-पृष्ठे
कार्मुके चाद्वितीयेन ललना-नयन-भ्रमरावली-नित्यकृतानुयात्रेण प्रजा-
परिपालन-कृत-परिकर-ब्रन्धेन कि बहुना इदङ्कलि-युधिष्ठिरेण-श्रीमता
कोङ्कुणिवर्म-धर्म-महाधिराजेन आत्मन श्रेयसे प्रवर्द्धमान-विपुलैश्वर्यं
प्रथमसवत्सरे फाल्गुन-मासे शुक्ल-पक्षे तिथौ पञ्चम्या सो(खो)पाध्यायस्य
परमार्हतस्य विजयकीर्तिः सकलदिङ्मण्डलव्यापिकीर्तिरुपदेगत.
चन्द्रनन्दाचार्य-प्रमुखेन मूल-सधेनानुष्ठिताय उरनूरार्हतायत

[३ व] नाय कोरिकुन्द-विपये वेनैलकरनिग्रामः पेरुरेवानि-अडि
गलर्हदायतनाय शुक्ल-ब्रह्मिष्कर्पापणेषु पादश्च देव-भोगक्रमेणाद्भिर्हत्त
योऽस्य लोभाद् प्रमादाद्वापि हर्त्ता स पञ्च-महा-पातक-सयुक्तो भवति
अपि चात्र मनुगीता श्लोका

खदत्ता परदत्ता वा यो हरेत वसुधराम् ।
पष्टि-वर्ष-सहस्राणि घोरे तमसि वर्त्तते
भूमि-दानात् पर दान न भूत न भविष्यति ।
तस्यैव

[४ अ] हरणात् पाप न भूत न भविष्यति ॥

(दो हमेशाके श्लोक)महाराज-मुखाज्ञाप्या मारिपेण त्वद्वकारेण
लिखितेय ताम्र-पट्टिका

[EC, X, Mälur tl, n° 72.]

अनुवाद—कोङ्गणिवर्म धर्म-महाधिराज जाह्नवी (या गंग)-
कुलके निर्मल आकाशमे चमकनेवाले सूर्य थे; वे काण्वायनसगोत्रके थे ।

इनके पुत्र माधववर्मधर्ममहाधिराज थे, जो एक 'दत्तकसूत्र-
वृत्ति' के प्रणेता थे ।

इनके पुत्र हरिवर्मा-महाधिराज थे ।

इनके पुत्र विष्णुगोप-महाधिराज थे ।

इनके पुत्र माधववर्म-धर्म महाधिराज थे, जो कलियुगकी फीचड़में फसे
हुए धर्मरूपी वैलको निकालनेसे हमेशा सन्नद्ध रहते थे ।

इनके पुत्र कोङ्गणिवर्म-धर्म-महाधिराजने जो कि कलियुगी युधिष्ठिर
कहलाते थे, अपने कल्याणकेलिये, अपने बढ़ते हुए राज्यके प्रथम
वर्षकी फाल्गुन सुदी पञ्चमीको, अपने उपाध्याय परमार्हत (भक्तजैन)
विजयकीर्तिकी सभमतिसे, मूलसंघके चन्द्रनन्द इत्यादिके द्वारा प्रतिष्ठापित
उरनूर के जैन मन्दिरको कोरिकुन्द-देशमेका वेन्नेल्करनि गाँव दिया
था, और पेरूर एवानि-अडिगलके जिनमन्दिरमे बाहरकी चुड़ीके कार्पापर्ण
(या धन) का चतुर्थ भाग दिया था ।

हमेशाके शापात्मक (imprecatory) श्लोक । महाराज अपने
मुँहसे जैसा बोलते जाते थे, मारिपेण त्वद्वकार वैसा ही इन ताम्र-पट्टिकाओं-
पर खोदता जाता था ।

१ ८० रत्तीके तौलके ताम्रके सिक्के, जो प्राचीनतम देशी मुद्राके थे ।
(डा० वूल्फरकी Grundriss, में रैपसनका 'Indian Coins' नामका लेख
देखो ।)

९५

मर्करा—संस्कृत तथा कन्नड ।

[शक ३८८=४६६ ई.]

अविनीत कोङ्गणिका मर्करा-पत्र

(मर्कराके खजानेमेसे प्राप्त ताम्रपत्रोके ऊपर)

(१ व) स्वस्ति जित भगवता गतघनगगनाभेन पद्मा(ध्र)नाभेन श्रीमद्जाह्नवीय[कु]लामलव्योमावभासनभास्कर. स्वखड्गैकप्रहारखण्डित-महाशिलास्तम्भलब्धवलपराक्रमो दारणो(रुणा)रिगणविदारणोपलब्धव्र(त्र)-णविभूषणविभूषित काण्वायनसगोत्रस्य (१) श्रीमान् कोङ्गणिमहाधिराज ॥ तत्पुत्र पितुरन्वागतगुणयुक्तो विद्याविने(न)यविहितवृत्त. सम्प्रा(म्य)क्प्रजापालना(न)मात्राधिगतराज्यात्प्र(ज्यप्र)योजन विद्वत्कविकाञ्चननिक-षोपलभूतो नीतिशालस्यवक्तुप्रयोक्तृकुशलस्य (२) दत्तकसूत्रवृत्ति.(त्ते) प्रणेता(ता) श्रीमान्माधवमहाधिराज ॥ तत्पुत्र पितृपैतामहा(ह)गुणयुक्तो व(ऽ)नेकत्रातुर्दन्तयुद्ध(द्वा)वाप्तिचतुरुदधिसल्लिलास्त्रादिनयश श्रीमद् हरि-वर्म्ममहाधिराज ॥ तत्पुत्र ॥ द्विजगुरुदेवता.(ता)पूजनपरो नारायण-चरणानुद्ध(ध्या)न श्रीमद्विष्णुगोपम

(२ अ) हाधिराज ॥ तस्य पुत्र ॥ त्रियम्भ(त्र्यम्भ)कचरणाम्भोरुहरा-जा (रज.)पवित्रीकृतोत्तमाङ्ग स्वसुजवलपराक्रमक्रियाकृतराज्य कलियुगवल-पङ्कावसन्नवृषोद्धरणानिन्यसन्नद्ध श्रीमान्माधवमहाधिराज ॥ तस्य पुत्र ॥ श्रीमद्कदम्बकुलगगनगभस्तिमालिन कृष्णवर्म्ममहाधिराजस्य प्रिया(य) भागिनेयो विद्याविनय(या)तिस(ञ)यपरिपूरितान्तरात्म(त्मा) निरवप्रहप्रया- (य)नसौर्ष्य विद्वत्सु प्रथमगण्य श्रीमान् कोङ्गणिमहाधिराज अविनीतना-मवेय दत्तस्य देसिग-गण कोण्डकुन्दान्वयगुणचन्द्र भटारगिष्यस्य अभ-

वदणेगुप्ते नामका सुन्दर गाँव दानमें प्राप्तकर अकालवर्ष पृथ्वी-बल्लभके मन्त्रीने शकसंवत्सर ३८८ के माघ महीनेकी शुक्ल पञ्चमी, सोमवारको स्वातिनक्षत्रके समय इसे भेंट किया । यह गाँव पूनाहु छः हजारके पड़ेनाहु सत्तरके मध्यमे अवस्थित है । साथमे १२ 'कण्डुग' प्रत्येक छः आश्रित गावोमेसे, तथा पोगरिगेह्ले और पिरिकेरेंमे से भी दिया ।]

९६

हल्ली (जिला बेलगाँव)—सस्कृत ।

[ई० पाँचवी शताब्दिका (फलीट)]

प्रथम पत्र ।

[१] नमः ॥ जयति भगवाञ्जिनेन्द्रो गुणरुन्द्रः प्र[थि]त
[परम] कारुणिक

[२] त्रैलोक्याश्वासकरी दयापताकोच्छ्रिता यस्य ॥ परम—

[३] श्रीविजयपलाशिकाया प्रजासाधारणा [शा] नाम् ॥

दूसरा पत्र, पहला ओर ।

[४] कदम्बाना युवराज श्रीकाकुस्थवर्मा स्ववैजयिके अशीतितमे

[५] सवत्सरे भगवतामर्हताम् सर्व्वभूतशरण्यानाम् त्रैलोक्य-
निस्तार-

[६] काणाम् खेटग्रामे वटोवरक्षेत्र [म्] श्रुतकीर्तिसेनापतये ॥

दूसरा पत्र, दूसरी ओर ।

[७] आत्मनस्तारणार्थं दत्त्वा [न्] [॥] तद्यो [हि] न (ना)
स्ति स्ववश्यः [प] रवश्यो वा

[८] स पञ्चमहापातकसयुक्तो भवती (ति) [॥] यो भिरक्षती (ति)
तस्य सत्यर्व्व (सर्व्व, या सत्य सर्व्व) गु-

[९] णपुण्यावाप्तिः [II] अपि चोक्तम् [I] बहुभिर्व्यसुधा दत्ता ॥^१

[१०] [रा] जभिस्सगरादिभिः यस्य यस्य य[दा]भू[मि]. तस्य तस्य नदा फलम् [II]

[११] खदत्ता परदत्ता वा यो हरेत वसुन्धरा पथिवर्षसहस्र(त्ता) णी (णि)

[१२] नरके पच्यते तु सः ॥ नमो नमः [III] ऋपभाय नमः ॥

[इस लेखमें कदम्ब 'युवराज' काकुत्स्थ (काकुत्स्थ)वर्माके द्वारा श्रुतकीर्ति सेनापतिको दिये गये एक क्षेत्र-दानका उल्लेख है। यह दान खेटग्राम नामक गाँवमें किया गया था।]

[इ० ए०, जिल्द ६, पृ० २२-२४, नं० २०]

९७

देवगिरि (जिला धारवाड़)—संस्कृत ।

—[?]

सिद्धम् जयत्यर्हखिलोकेश सर्वभूतहिते रत ,
रामाधारिहरोनन्तो नन्तज्ञानदृगीश्वर

स्वस्ति विजयवैजयन्त्यां स्वामिमहासेनमातृगणानुद्धयाताभिषिक्ताना
मानव्यसगोत्राणा हारितीपुत्राण(णा) अङ्गिरसा प्रतिष्ठनस्वाध्यायचर्चका-
ना सद्गर्भसद्गन्धाना कद्गन्धाना अनेकजन्मान्तरोपार्जितविपुलपुण्यस्कन्ध.
आह्वार्जितपरमरुचिरदृढसन्ध ? विशुद्धान्वयप्रकृत्यानेकपुरुषपरपरागते
जगत्प्रदीपभूते महत्यदितोदिते काकुस्थान्वये श्रीशान्तिवर्म्मतनयः

१ यह पूर्ण विरामका चिह्न फल्लू है। २ इन पत्रोंमें यह खास बात है कि जहाँ द्वित्वाक्षरोंका इतना अधिक प्रयोग किया गया है वहाँ 'सत्त्व' और 'तत्व'में 'त' अक्षर द्वित्व नहीं किया गया।

श्रीमृगेश्वरवर्मा आत्मनः राज्यस्य तृतीये वर्षे पौषसवत्सरे कार्तिकमासे बहुले पक्षे दशम्या तिथौ उत्तराभाद्रपदे नक्षत्रे बृहत्परलूरे (१) त्रिदशमुकुटपरिघृष्टचारचरणेभ्यः परमार्हदेवेभ्यः समार्जनोपलेपनाभ्यर्चनभग्नसस्कारमहिमार्थं ग्रामापरदिग्विभागसीमाभ्यन्तरे राजमानेन चत्वारिंशन्नित्तन कृष्णभूमिक्षेत्र चत्वारि क्षेत्रन्नित्तन च चैत्यालयस्य बहिः, १ एक नित्तन पुष्पार्थं देवकुलस्याङ्गनञ्च एकनित्तनमेव सर्वपरिहारयुक्त दत्तवान् महाराज । लोभादधर्माद्वा योस्याभिहर्त्ता स पञ्चमहापातकसयुक्तो भवति योस्याभिरक्षिता स तत्पुण्यफलभागभवति । उक्तञ्च-

वैद्भुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभिः ।

यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ॥

स्रदत्ता परदत्ता वा यो हरेत वसुन्वरा ।

षष्टिं वर्षसहस्राणि नरके पच्यते तु सः ॥

अद्विर्दत्त त्रिभिर्मुक्त सद्भिश्च परिपालितम् ।

एतानि न निवर्तन्ते पूर्वराजकृतानि च ॥

स्व दातु सुमहच्छक्य दुःखमन्यार्थपालन ।

दान वा पालन वेति दानाच्छ्रेयोनुपालनम् ॥

परमधार्मिकेण दामकीर्तिभोजकेन लिखितेय पट्टिका इति सिद्धिरस्तु ॥

[३० ए०, जिल्द ७, पृ० ३५-३७, न ३६]

[यह पत्र श्रीशान्तिवर्माके पुत्र महाराज श्री 'मृगेश्वरवर्मा' की तरफसे लिखा गया है, जिसे पत्रमें काकुत्था(त्था)न्वयी प्रकट किया है, और इससे ये कदम्बराजा, भारतके सुप्रसिद्ध वंशोंकी दृष्टिसे, सूर्यवंशी अथवा इक्ष्वाकु-

१ व्याकरणकी दृष्टिसे यह वाक्य विलकुल शुद्ध नहीं मालूम होता । २ यह पद्य मिस्टर फ्लीटके शिलालेख न० ५ में मनुका ठहराया गया है । आमतौर-पर यह व्यासका माना जाता है ।

वंशी ये, ऐसा मालूम होता है। यह पत्र उक्त नृगेश्वरवर्माके राज्यके तीसरे वर्ष, पौष (?) नामके संवत्सरमे, कार्तिक कृष्ण दशमीको, जबकि उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र था, लिखा गया है। इसके द्वारा अभिषेक, उपलेपन, पूजन, भग्नसंस्कार (मरम्मत) और महिमा (प्रभाषना) इन कामोंके लिये कुछ भूमि, जिसका परिमाण दिया है, अरहन्तदेवके निमित्त दान की गयी है। भूमिकी तफसीलमें एक निवर्तनभूमि खालिस पुष्पोके लिये निर्दिष्ट की गई है। ग्रामका नाम कुछ स्पष्ट नहीं हुआ, 'बृहत्परल्लरे' ऐसा पाठ पढ़ा जाता है। अन्तमें लिखा है कि जो कोई लोभ या अधर्मसे इस दानका अपहरण करेगा वह पंचमहापापोंसे युक्त होगा और जो इसकी रक्षा करेगा वह इस दानके पुण्य-फलका भागी होगा। साथ ही इसके समर्थनमे चार श्लोक भी 'उक्त' च रूपसे दिये हैं, जिनमेंसे एक श्लोकमें यह बतलाया है कि जो अपनी या दूसरेकी दान की हुई भूमिका अपहरण करता है वह साठ हजार वर्ष तक नरकमे पकाया जाता है, अर्थात् कष्ट भोगता है। और दूसरेमें यह सूचित किया है कि स्वयं दान देना आसान है परंतु अन्यके दानार्थका पालन करना कठिन है, अतः दानकी अपेक्षा दानका अनुपालन श्रेष्ठ है। इन 'उक्त' च श्लोकोंके बाद इस पत्रके लेखकका नाम 'दामकीर्ति भोजक' दिया है और उसे परम धार्मिक प्रकट किया है। इस पत्रके शुरूमे अर्हन्तकी स्तुतिविषयक एक सुन्दर पद्य भी दिया हुआ है जो दूसरे पत्रोंके शुरूमे नहीं है, परंतु तीसरे पत्रके विल्कुल अन्तमे जरासे परिवर्तनके साथ जरूर पाया जाता है।]

९८

देवगिरि (जिला-धारवाड़)—सस्कृत

—[?]—

सिद्धम् ॥ विजयवैजयन्त्याम् स्वामिमहासेनमातृगणानुद्धयाताभिषि-

१ साठ संवत्सरोंमे इस नामका कोई संवत्सर नहीं है। सम्भव है कि यह किसी संवत्सरका पर्याय नाम हो या उस समय दूसरे नामोंके भी संवत्सर प्रचलित हों। २ यह और आगेके लेख न० ९८ और १०५ जैनहितैषी, भाग १४, अंक ७-८, पृ० २२८-२२९ से उद्धृत किये हैं।

क्तस्य मानव्यसगोत्रस्य हारितीपुत्रस्य प्रतिकृतचर्चापारस्य विबुधप्रति-
 विम्बाना कदम्बाना धर्ममहाराजस्य श्रीविजयशिवमृगेशवर्मणः
 विजयायुरोगैश्वर्यप्रवर्द्धनकर संवत्सरः चतुर्थः वर्षापक्षः अष्टमः
 तिथि पौर्णमासी अनयानुपूर्व्या अनेकजन्मान्तरोपार्जितविपुलपुण्यस्कंधः
 सुविशुद्धपितृमातृव्रतः उभयलोकप्रियहितकरानेकशास्त्रार्थतत्त्वविज्ञानवि-
 वेच्च (१) ने विनिविद्यविशालोदारमतिः हस्त्यश्वारोहणप्रहरणादिषु व्याया-
 मिकीषु भूमिषु यथावत्कृतश्रमः दक्षो दक्षिण नयविनयकुण्डलः अनेकाह-
 वार्जितपरमदृढसत्त्व उदात्तबुद्धिधैर्यवीर्यत्यागसम्पन्न सुमहति सम-
 रसङ्कटे स्वभुजव्रलपराक्रमावाप्तविपुलैश्वर्य सम्यक्प्रजापालनपरः स्वजन-
 कुमुदवनप्रबोधनशशाङ्क देवद्विजगुरुसाधुजनेभ्य गोभूमिहिरण्यत्रयना-
 च्छादनान्नादिअनेकविधदाननित्य विद्वत्सुहृत्स्वजनसामान्योपभुज्यमान-
 महाविभव आदिकालराजवृत्तानुसारी धर्ममहाराजः कदम्बाना श्रीविजय-
 शिवमृगेशवर्मा कालवङ्गग्राम त्रिधा विभज्य दत्तवान् । अत्र पूर्वमर्ह-
 च्छालापरमपुष्कलस्थाननिवासिभ्य भगवदर्हन्महाजिनेन्द्रदेवताभ्य एको
 भागः, द्वितीयोर्हत्प्रोक्तसद्गर्भकरणपरस्य श्वेतपटमहाश्रमणसंघोपभोगाय,
 तृतीयो निर्ग्रन्थमहाश्रमणसंघोपभोगायेति । अत्र देवभाग धान्यदेव-
 पूजावल्लिचरुदेवकर्मकरभग्नक्रियाप्रवर्त्तनाद्यर्थोपभोगाय । एतदेव न्यायलब्ध
 देवभोगसमयेन योभिरक्षति स तत्फलभागभवति, यो विनाशयेत् स पच-
 महापातकसयुक्तो भवति । उक्तञ्च ब्रह्मिर्वसुधा मुक्ता राजभिस्सगरा-
 दिभि यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फल । नरवरसेनापतिना
 लिखित ।

[३० ए०, जिल्द ७, पृ० ३७-३८, नं० ३७]

१ इन प्रतिलिपियोंमें विसर्ग उस चिह्नके स्थानमें लिखा गया है जो कण्ठवर्णों
 (Gutturals) से पहले विसर्गकी जगह प्रयुक्त हुआ है । २ 'देवभाग
 समयेन' शुद्ध पाठ मालम पठता है ।

[यह दानपत्र चतुर्थीके धर्ममहाराज 'श्रीविजयशिवमृगेश वर्मा' की तरफसे लिखा गया है और इसके लेखक हैं 'नरवर' नामके सेनापति । लिखे जानेका समय चतुर्थमंसवर, वर्षा (ऋतु) का आठवां पक्ष और पौर्णमासी तिथि है । इस पत्रके द्वारा 'कालका' नामके ग्रामको तीन भागोंमें विभाजित करके इस तरफपर बाँट दिया है कि पहला एक भाग तो अहंछाला परम-पुष्पल स्थाननिवासी भगवान् अहंन्महाजिनेन्द्रदेवताके लिये, दूसरा भाग अहंमोक्त मन्मन्चरणसे तत्पर श्वेताम्बरमहाश्रमणमंडके उपभोगके लिये और तीसरा भाग निम्रन्धमहाश्रमणमंडके उपभोगके लिये । साथ ही, देवभागके मन्वन्धमें यह विधान किया है कि वह धान्य, देवपूजा, बलि, चरु, देवकर्म, घर, भग्नाक्रिया प्रवर्तनादि अर्थापभोगके लिये है, और यह सब न्यायलब्ध है । अन्तमें इस दानके अभिरक्षकको यही दानके फलका भागी और विनाशकको पत्र महापापोंसे युक्त होना बतलायाहै, जैसाकि नं० ९७ के दानपत्रमें उल्लेखित है । परंतु यहाँ उन चार 'उक्त च' श्लोकोंमेंसे सिर्फ पहलेका एक श्लोक दिया है जिसका यह अर्थ होता है कि, इस पृथ्वीको समागति बहुतसे राजाओंने भोगा है, जिस समय जिस-जिसकी भूमि होती है उस समय उसी-उसीको फल लगता है ।

इस पत्रमें 'चतुर्थ' मंसवरके उल्लेखसे यद्यपि ऐसा भ्रम होता है कि यह दानपत्र भी उन्हीं मृगेश्वरवर्माका है जिनका उल्लेख पहले नम्बरके पत्र (जि० ले० नं० ९७) में है अर्थात् जिन्होंने पूर्वका (नं० ९७) दान-पत्र लिखाया था और जो उनके राज्यके तीसरे वर्षमें लिखा गया था, परंतु यह भ्रम ठीक नहीं है । कारण कि एक तो 'श्रीमृगेश्वरवर्मा' और 'श्रीविजयशिवमृगेशवर्मा' इन दोनों नामोंमें परस्पर बहुत बड़ा अन्तर है; दूसरे, पूर्वके पत्रमें 'शात्मनः राज्यस्य तृतीये वर्षे पौष सवत्सरे' इत्यादि पदोंके द्वारा जैसा स्पष्ट उल्लेख किया गया है वैसा इस पत्रमें नहीं है; इस पत्रके समय-निर्देशका ढंग विलकुल उससे विलक्षण है । 'संवत्सर चतुर्थः, वर्षा पक्षः अष्टमः, तिथि पौर्णमासी,' इस कथनसे 'चतुर्थ' शब्द संभवतः ६० संवत्सरोंमेंसे चौथे नम्बरके 'प्रमोद' नामक संवत्सरका द्योतक मालूम होता है, तीसरे, पूर्वपत्रमें दातारने बड़े गौरवके साथ अनेक विशेषणोंसे युक्त जो अपने 'काकुत्स्थान्वय' का उल्लेख किया है और साथ ही अपने पिताका नाम

भी दिया है, वे दोनों बातें इस पत्रमें नहीं हैं जिनके, एक ही दाता होनेकी हालतमें, छोड़ दिये जानेकी कोई वजह मालूम नहीं होती; चाँये, इस पत्रमें अर्हन्तकी स्तुतिविषयक मंगलाचरण भी नहीं है, जैसाकि प्रथम पत्रमें पाया जाता है; इन सब बातोंसे ये दोनों पत्र एक ही राजाके मालूम नहीं होते ।

इस पत्र न. ९८ में श्रीविजयशिवमृगेशवर्माके जो विशेषण दिये हैं उनसे यह भी पता चलता है कि, यह राजा उभयलोककी दृष्टिसे प्रिय और हितकर ऐसे अनेक शास्त्रोंके अर्थ तथा तत्त्वविज्ञानके विवेचनमें बड़ा ही उदारमति था, नय-विनयमें कुशल था और ऊँचे दर्जेके बुद्धि, धैर्य, वीर्य, तथा त्यागसे युक्त था । इसने व्यायामकी भूमियोंमें यथावत् परिश्रम किया था और अपने भुजबल तथा पराक्रमसे किसी बड़े भारी संग्राममें विपुल ऐश्वर्यकी प्राप्ति की थी; यह देव, द्विज, गुरु और साधुजनोंको नित्य ही गौ, भूमि, हिरण्य, शयन (शय्या), आच्छादन (वस्त्र) और अन्नादि अनेक प्रकारका दान दिया करता था; इसका महाविभव विद्वानों, सुहृदों और स्वजनोके द्वारा सामान्यरूपसे उपभुक्त होता था; और यह आदिकालके राजा (संभवतः भरतचक्रवर्ती) के वृत्तानुसारी धर्मका महाराज था । दिगम्बर और श्वेताम्बर दोनों ही सम्प्रदायोंके जैनसाधुओंको यह राजा समानदृष्टिसे देवता था, यह बात इस दानपत्रसे बहुत ही स्पष्ट है ।]

९९

हस्ती—संस्कृत ।

—[?]—

स्वस्ति ॥

जयति भगवाञ्जिनेन्द्रो गुणरुद्रः प्रथितपरमकारुणिकः ।

त्रैलोक्यास्वासकरी दयापताकोच्छ्रिता यस्य ॥॥

कदम्बकुलसत्केतोः हेतोः पुण्यैकसम्पदाम्

श्रीकाकुत्स्थनरेन्द्रस्य सृजुर्भानुरिवापरः ॥॥

श्रीशान्तिवरवर्मैति राजा राजीवलोचनः
 खलेन वनिताकृष्टा येन लक्ष्मीद्विपदगृहात् [II]
 तत्प्रियज्येष्ठतनय. श्रीमृगेशनराधिप. ।
 लोकैकधर्मविजयी द्विजसामन्तपूजित. [II]
 मत्वा दान दरिद्राणा महाफलमितीव य.
 स्वय भयदरिद्रोऽपि गन्धुभ्योऽदाद्ब्रह्मामयम् [II]
 तुङ्गगङ्गकुलोत्सादी पल्लवप्रलयानल.
 स्वार्थके नृपतौ भक्त्या कारयित्वा जिनालयम् [II]

श्रीविजयपलाशिकाया यापनि(नी)यनिर्ग्रन्थकूर्चकानां स्ववैज-
 यिके अष्टमे वैशाखे संवत्सरे कार्तिकपौर्णमास्याम् । मातृसारित आरभ्य
 आ इङ्गिणीसङ्गमात् राजमानेन त्रयस्त्रिङ्गनिवर्तन । श्रीविजयवैजयन्ती-
 निवासी दत्तवान् भगवद्भयोर्हृद्भयः [I] तत्राज्ञाति । दामकीर्त्तिभोजकः
 जियन्तश्चायुक्तक सर्वस्यानुष्ठाता इति [II]

अपि च—उक्तम् [I]

बहुभिर्वसुधा दत्ता राजभिस्सगरादिभि.
 यस्य यस्य यदा भूमि तस्य तस्य तदा फलम् [II]
 स्वदत्ता परदत्ता वा यो हरेत वसुन्धराम्
 पष्टिवर्षसहस्राणि कुम्भीपाके स पच्यते [II]

सिद्धिरस्तु ।

[यह दानपत्र शान्तिवर्मके ज्येष्ठ पुत्र राजा मृगेशवर्माका है । उन्होने

१ हमारी रायमें यह पाठ 'ऽदान्महाभयम्' ऐसा होना चाहिये । २ यह
 और आगे का १०३ वाँ शिलालेख (ताम्रपत्र) 'अनेकान्त', वर्ष ७, किरण १-२,
 पृष्ठ ८-९ से लिया है ।

स्वर्गगत राजा (शान्तिवर्मा) को भक्तिसे पलाशिका नामक नगरमें जिना-
लय निर्माण कराके अपनी विजयके आठवें वर्षमें यापनीयों, निर्ग्रन्थो और
कूर्चकोंके लिये भूमि दान किया है । यहाँ कूर्चक सम्प्रदाय दिगम्बर सम्प्र-
दायका ही एक भेद मालूम पड़ता है ।

[३० ए०, जिल्द ६, पृ० २४-२५]

१००

हल्सी—सस्कृत ।

—[१]—

प्रथम पत्र

- [१] जयति भगवाद्धिनेन्द्रो गुणरुन्द्रः प्रथितपरमकारुणिकः त्रैलोक्या
[२] श्वासकरी दयापताकोच्छ्रिता यस्य ॥ स्वामिमहासेनमातृगणानु-
[३] ध्याताना मानव्यसगोत्राणा हारितीपुत्राणा प्रतिकृतस्त्राध्याय
च [चर्चा]-

दूमग पत्र, पहिली ओर ।

- [४] पारगाणाम् स्वकृतपुण्यफलोपभोक्तृणाम् स्वब्राह्मवीर्योपार्जिज-
[५] तैश्वर्यभोगभागिनाम् सद्गर्म्मसदम्बाना कदम्बानाम् ॥ काकुस्थ-
[६] वर्म्मर्नृपलब्धमहाप्रसाद समुक्तवाञ्छुतनिधिश्श्रुतकीर्त्तिभोजः

दूसरा पत्र, दूसरी ओर ।

- [७] ग्राम पुरा नृपु वरः पुरुपुण्यभागी खेटाहक यजनदानदयो-
[८] पपन्नः ॥ तस्मिन्स्त्रय्यति शान्तिवर्म्मवनीज मात्रे धर्म्मार्थ
दत्तवान् दा-
[९] मकीर्त्ते. भूमौ विख्यातस्तत्सुतश्श्रीमृगेशः पित्रानुज्ञात धार्म्मि-
को दान-

१ देखो अनेकान्त, वर्ष ७, किरण १-२, पृष्ठ ७-८, से श्री प. नाथूरामजी
प्रेमीका 'कूर्चकोंका सम्प्रदाय' नामक लेख ।

तीसरा पत्र; पहली ओर ।

[१०] मेव ॥ श्रीदामकीर्तिरुरुपुण्यकीर्तिः सद्धर्ममार्गस्थितशुद्ध-
बुद्धेः ज्याया-

[११] न्सुतो धर्मपरो यगस्वी विशुद्धबुद्धया (द्वय) ज्ञयुतो गुणाद्य-
आचार्यैर्वन्धु-

[१२] पेणाहै निमित्तज्ञानपारगै स्थापिनो भुवि यद्वज श्रीकीर्ति-

[१३] कुन्दवृद्धये [॥] तत्प्रसादेन लब्धश्री दानपूजाक्रियोद्यतः गुरु-
तीसरा पत्र; दूसरी ओर ।

[१४] भक्तो विनीतात्मा परात्महितकाम्यया ॥ जयकीर्तिप्रतीहारः
प्रसादानृप-

[१५] ते रवेः पुण्यार्थं स्वपितुर्मात्रे दत्तवान् पुरुखेटकं ॥ जिने-
न्द्रमहिमा

[१६] कार्या प्रतिसवत्सर क्रमात् अष्टाहकृतमर्यादा कार्तिक्या-
न्तद्वना-

[१७] गमात् वार्षिकाश्चतुरो मासान् यापनीयास्तपस्विनः
मु[ञ्जीरस्तु]

चतुर्थ पत्र; पहली ओर ।

[१८] यथान्याय्य महिमागेषवत्तुकम् [॥] कुमारदत्तप्रमुखा
हि सूरयः

[१९] अनेकगाल्हागमखिन्नबुद्धयः जगत्यतीतास्तुतपोधनान्विताः
गणो

[२०] स्य तेषा भवति प्रमाणतः ॥ धर्मेप्सुभिर्जानपदैस्सनागरै

[२१] जिनेन्द्रपूजा सतत प्रणेया इति स्थितिं स्थापितवान् रवीशः
पला [शिका]

चतुर्थे पत्र; दूसरी ओर ।

- [२२] या नगरे विजाले ॥ स्थित्यानया पूर्व्वनृपानुजुष्टया यत्ताम्र-
पत्रेषु नि-
- [२३] वद्धमादौ धर्माग्रमत्तेन नृपेण रक्ष्य संसारदोष प्रविचार्य्य
- [२४] बुद्ध्या [॥] बहुभिर्व्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभिः
यस्य यस्य
- [२५] यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ॥ स्वदत्ता परदत्ता वा
यो हरेत

पञ्चम पत्र

- [२६] वसुन्धरा पाष्टे वर्षसहस्राणि नरके पच्यते भृशम् ॥ अद्भि-
र्दत्त त्रिभि-
- [२७] भुक्त सर्द्धिश्च परिपालितम् एतानि न निवर्त्तन्ते पूर्व्वराज-
कृतानि च [॥]
- [२८] यस्मिञ्जिनेन्द्रपूजा प्रवर्त्तते तत्र तत्र देशपरिवृद्धिः ।
- [२९] नगराणा निर्भयता तद्देशस्वामिनाञ्चोर्जा ॥ नमो नमः [॥]
[ई० ए० जिल्द ६, पृ० २५-२७, न. २२]

[यह लेख जैनधर्मका 'अष्टाहिका' नामका उत्सव मनानेके लिये रवि-
वर्मा और अन्य लोगो द्वारा दिये गये दानो और हुनमोका उल्लेख करता
है । इसमें कदम्बोके राजा काकुत्स्थ (काकुत्स्थ) वर्मा का, उसके बाद
शान्तिवर्मा, तत्पश्चात् श्री मृगेश (वर्मा) का और अन्तमें रविवर्माके दान-
का वर्णन है । जिस गांव का दान दिया गया उसका नाम है पुरुखेटक ।

१ मि० राउस इसको 'पद्भिश्च प्रतिपालितम्' पढ़ते हैं और उसका अर्थ 'छः-
पीढियोंतक जानेवाला' दान करते हैं ।

१०१

हल्सी—संस्कृत ।

—[?]—

प्रथम पत्र ।

- [१] जयति भगवाञ्जिनेन्द्रो गुणरुन्द्रः प्रथितपरमकारु-
 [२] णिकः त्रैलोक्याश्वासकरी दयापताकोच्छ्रिता यस्य ॥
 [३] श्रीविष्णुवर्मप्रभृतीन्नेन्द्रान् निहत्य जित्वा पृथिवीं सम[स्ता]
 [४] उत्साह काञ्चीश्वरचण्डढण्डम् पलाशिकाया समवस्थितस्तः[॥]

द्वितीय पत्र, पहली ओर ।

- [५] रवि कदम्बोरु कुलाम्बरस्य गुणाशुभिर्व्याप्य जगत्सम[स्त]
 [६] मानेन चत्वारि निवर्त्तनानि ददौ जिनेन्द्राय महीम् महेन्द्रः [॥]
 [७] संप्राप्य मातुश्वरणप्रसाद धर्मेकमूर्तेरपि दामकीर्त्तेः
 [८] तत्पुण्यवृद्धयर्थमभून्निमित्तम् श्रीकीर्त्तिनामा तु च तत्कनिष्ठः[॥]

दूसरा पत्र, दूसरी ओर ।

- [९] रागात्प्रमादादथवापि लोभात् यस्तानि हिस्यादिह भूमि-
 [१०] पाल आसप्तम तस्य कुल कदाचित् नापैति कृत्स्नान्निरया-
 न्निमग्नम् [॥]
 [११] तान्येव यो रक्षति पुण्यकाङ्क्ष स्ववशजो वा परवशजो वा
 [१२] स मोदमानस्सुरसुन्दरीभिः चिर सदा क्रीडति नाकपृष्ठे [॥]

तीसरा पत्र ।

- [१३] अपि चोक्त मनुना [१] बहुभिर्व्वसुधा दत्ता राजभिस्सगरा-
 दिभिः
 [१४] यस्य यस्य यदा भूमि तस्य तस्य तदा फलम् ॥

[१५] स्वदत्ता परदत्ता वा यो हरेत वसुन्धराम्

[१६] पष्ठिवर्षसहस्राणि निरये स विपच्यते ॥

[इस लेखमें रविवर्माके द्वारा जिनेन्द्रदेवके लिये दिये गये एक भूमि-दानका उल्लेख है। दान की गई भूमि नापमें ४ निवर्तन थी, दामकीर्ति, जो कि धर्ममूर्ति थे, की माताके चरणोंका प्रसाद पाकरके ही यह राजा दानमें प्रवृत्त हुआ। दामकीर्ति के छोटे भाईका नाम श्रीकीर्ति था। रविवर्मा पलायिकामें रहते थे। इन्होंने श्रीविष्णुवर्मा (संभवतः 'विष्णुगोप' या 'विष्णुगोपवर्मा' नामका पल्लव राजा) और दूसरे अन्य राजाओंका वध किया था, समस्त पृथ्वीको जीता था और काञ्चीश्वरके चण्डदण्डका उत्सादन (निर्मूलन) किया था।]

[३० ए०, जिल्द ६, पृ० २९-३०, न० २४]

१०२

हल्सी—संस्कृत ।

—[?]—

प्रथम पत्र ।

स्वस्ति ॥

जयति भगवाञ्जिनेन्द्रो गुणरुन्द्रः प्रथितपरमकारुणिकः

त्रैलोक्याश्वासकरी दयापताकोच्छ्रिता यस्य ॥

श्रीमत्काकुत्थराजप्रियहिततनयश्शान्तिवर्मावनीग

तस्यैव ज्येष्ठसन्नुः प्रथितपृथुयज्ञा श्रीमृगेशो नरेशः ॥ (I)

दूसरा पत्र, पहली ओर ।

तत्पुत्रो दीप्ततेजा रविनृपतिरभूत्सत्त्वधैर्यार्जितश्रीः

तद्भ्राता भानुवर्मा स्वपरहितकरो भाति भूप(.) कनीयान् ॥

तेनेय वसुधा दत्ता जिनेभ्यो भूतिमिच्छता ।

पौर्णमासीष्वनुच्छिद्य स्वपनार्थं हि सर्व्वदा ॥

पलाशिकायाम् कर्द्दमपट्यां राजमानेन

१०३

हल्ली—संस्कृत ।

—[?]—

सिद्धम् ॥ स्वस्ति स्वामिमहासेनमातृगणानुध्याताभिषिक्तानाम्
 'मानव्य'-सगोत्राणाम् हारितीपुत्राणाम् प्रतिकृतस्वाध्यायचर्चिकानाम्
 कदस्मा(श्वा)नाम्महाराजः श्रीहरिवर्मा

बहुभवकृतैः पुण्यै राजश्रिय निरुपद्रवाम्
 प्रकृतिषु हित प्राप्तो व्याप्तो जगद्यगसाखिलम्
 श्रुतजलनिधि विद्यावृद्धप्रदिष्टपथि स्थिन.
 स्ववलकुलैगाघातोच्छिन्नद्विपद्वसुधाधर [॥]

स्वराज्यसवन्सरे चतुर्थे फाल्गुणशुक्लत्रयोदश्याम् उच्चश्रुत्त्वाम्
 सर्वजनमनोह्लादवचनकर्मणा सपितृव्येण शिवरथनामधेयेनोपदिष्टः
 पलाशिकायाम् भारद्वाज-सगोत्रसिंहसेनापतिसुतेन मृगेशेन
 कारितस्यार्हदायतनस्य प्रतिवर्षमाष्टाहिकमहामहसततत्र (?) रूपलेपन-
 क्रियार्थं तदवशिष्ट सर्वसंघभोजनायेति सुदि (?) ह्नि कुन्दूरविषये
 वसुन्तवाटकं सर्वपरिहारसयुतं कूर्चक्रानाम् वारिषेणाचार्यसङ्घ-
 हस्ते चन्द्रक्षान्तं प्रमुख कृन्वा दत्तवान् [॥] य एव न्यायतोभिरक्षति
 स तत्पुण्यफलभागभवति [] यश्चैन रागद्वेषलोभमोहैरपहरति स निष्कृ-
 ष्टतमा गतिमवाप्नोति [] उक्तञ्च—

स्वदत्ता परदत्ता वा यो हरेते वसुन्धराम्
 षष्टिं वर्षसहस्राणि नरके पच्यते तु स []
 बहुभिर्वसुधा मुक्ता राजमिस्सगरादिभिः
 यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् [] इति

वर्धता वर्धमानार्हच्छासन सयमासनम्

येनाद्यापि जगज्जीविपापपुजप्रभंजनम् [III] नमोर्हते वर्धमानाय [III]

[यह दानपत्र कदम्ब राजवंशके महाराजा हरिवर्माका है । उन्होंने अपने राज्यके चौथे वर्षमें शिवरथ नामके पितृव्यके उपदेशसे, सिंहसेनापतिके पुत्र मृगेशद्वारा निर्मापित जैनमन्दिरकी अष्टाह्निका-पूजाके लिये और सर्वसघके भोजनके लिए 'वसुन्तवाटक' नामक गाँव कूर्चकोंके वारिपेणाचार्यसंघके हाथमें चन्द्रक्षान्तको प्रमुख बनाकर प्रदान किया । यह और ९९ वां दान-पत्र दोनों, तात्रपत्रोंपर हैं । नम्बर ९९ वें के दान-पत्रमें यापनीय, निग्रन्थ और कूर्चक इन तीन सम्प्रदायोंके नाम हैं और इसमें सिर्फ कूर्चक सम्प्रदायका । इससे मालूम होता है कि इस सम्प्रदायमें 'वारिपेणाचार्यसंघ' नामका एक संघ था, जिसके प्रधान चन्द्रक्षान्त (मुनि) थे ।]

[३० ए०, जित् ६, पृ० ३०-३१]

१०४

हल्सी—संस्कृत ।

—[?]—

प्रथमपत्र ।

सिद्धम् ॥ स्वस्ति ॥ स्वामिमहासेनमातृगणानुध्यानाभिषिक्तानाम्
मानव्यसगोत्राणा[न्] हारितीपुत्राणाम् प्रतिवृत्तस्वाध्यायचर्चापा-
राणाम् कदम्बानाम् महाराजश्रीरविवर्मणः स्वसुजत्रलपराक्रमावाप्ता(१)
निरवद्यविपुलराज्यश्रियः विद्वन्मतिसुवर्णनिक्रमभूतस्य कामाद्यरिगण-

दूसरा पत्र; पहली ओर ।

स्वागाभिव्यञ्जितेन्द्रियजयस्य न्यायोपार्जितार्थ [स] हितसाधुज [न]-
स्य क्षितितलप्रततविमलयशसः प्रियतनय पूर्वसुचरितोपचितविपुल-
पुण्यसम्पादितशरीरवृद्धिसत्व सर्वप्रजाहृदयकुमुदचन्द्रमा महाराज-
श्रीहरिवर्मा स्वराज्यसत्रत्सरे पञ्चमे पलाशिकाधिष्ठाने अहरिष्टि-
समाह्वयः

शि० ६

दूसरा पत्र, दूसरी ओर ।

श्रमणसङ्घान्त्रयवस्तुन धर्मनन्द्याचार्याधिष्ठितप्रामाण्यस्य चैत्या-
लयस्य पूजासंस्कारनिमित्तम् साधुजनोपयोगार्थञ्च सेन्द्रकाणां कुल्ल-
लामभूतस्य भानुशक्तिराजस्य विज्ञापनया मरदे ग्रामं दत्तवान् [II]
य एतल्लोभायै कदाचिदपहरेत् स पञ्चमहापातकसयुक्तो भवति यश्चा-
भिरक्षति स तत्पुण्यफलम्

तीसरा पत्र ।

अवाप्नोतीति [II] उक्तञ्च ॥

स्वदत्ता परदत्ता वा यो हरेत् वसुध्वराम्
पष्टिवर्षसहस्राणि नरके पच्यते तु स ॥
बहुभिर्व्यसुधा भुक्ता राजभित्सगरादि [भिः]
यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ॥
ये सेतूनभिरक्षन्ति मैगान् सस्थापयन्ति च ।
द्विगुणं पूर्वकर्तृभ्यः तत्फलं समुदाहृतम् [III]

[इस लेखमें अपने राज्यके पाँचवें वर्षमें सेन्द्रकके कुलके भानु-
शक्ति राजाकी प्रार्थनापर हरिवर्माने 'मरदे' नामका गाँव दानमें दिया
था, इस बातका उल्लेख है। यह हरिवर्मा रविवर्माका प्रियपुत्र है। यह
दान राजधानी पलाशिकामे किया गया। इस दानका निमित्त वह
चैत्यालय था जो कि 'अहरिष्टि' नामके श्रमणसङ्घकी सम्पत्ति थी और
जिनपर आचार्य धर्मनन्दिनी आज्ञा चलती थी; उस चैत्यालयके पूजा
इत्यादिके प्रबंधके लिये तथा साधुजनोंके उपयोगके लिये ही यह दान
किया गया।]

[ई० ए०, जिल्द ६, पृ० ३१-३२.]

१०५

देवगिरि—संस्कृत ।

—[१]—

विजयत्रिपर्वते स्वामिमहासेनमातृगणानुद्धाताभिषिक्तस्य मानव्य-
सगोत्रस्य प्रतिकृतस्वाध्यायचर्चापारगस्य आदिकालराजर्षिविम्बाना आश्रि-
तजनाम्बाना कदम्बाना धर्ममहाराजस्य अश्वमेधयाजिनः समरार्जितविपु-
लैश्वर्यस्य सामन्तराजविशेषरत्नसुनागजिनाकम्पदायानुभूतस्य (१) शरद-
मलनभस्युदितशशिसदृशैकातपत्रस्य धर्ममहाराजस्य श्रीकृष्णवर्मणः
प्रियतनयो देववर्मैयुवराजः स्वपुण्यफलामिकाक्षया त्रिलोकभूतहितदे-
शिनः धर्मप्रवर्तनस्य अर्हतः भगवतः चैत्यालयस्य भग्नसंस्कारार्चनमहि-
मार्थं यापनीय [स]ङ्घेभ्यः सिद्धकेदारे राजमानेन (२) द्वादश निवर्तनानि
क्षेत्रं दत्तवान् योस्य अपहर्त्ता स पञ्चमहापातकसंयुक्तो भवति योस्याभिर-
क्षिता स पुण्यफलमश्नुते (१) उक्तं च—बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरा-
दिभिः । यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तथा (२) फल ॥ अद्भिर्दत्त
त्रिभिर्युक्तं सद्भिश्च परिपालितं । एतानि न निवर्तन्ते पूर्वराजकृतानि च ॥

स्व दातु सुमहच्छक्यं दु (१):ख (म) न्यार्थ्यपालनं ।

दानं वा पालनं वेत्ति दानाच्छ्रेयोनुपालनम् ॥

स्वदत्ता परदत्ता वा यो हरेत् वसुन्धरा ।

पष्टिवर्षसहस्राणि नरके पच्यते तु सः ॥

श्रीकृष्णानृपपुत्रेण कदम्बकुलकेतुना ।

रणप्रियेण देवेन दत्ता भूमिस्त्रिपर्वते ॥

दयामृतसुखास्वादपूतपुण्यगुणेषुना ।

देववर्मैकवीरेण दत्ता जैनाय भूरियम् ॥

जयत्यर्हल्लिलोकेण सर्व्वभूतहितकरः ।

रागाधारित्रोनन्तोन्नतज्ञानदृगीश्वरः ॥

[३० ए०, जिल्ड ७, पृ० ३३-३५, न. ३५]

[यह दानपत्र कदम्बोके धर्ममहाराज श्रीकृष्णवर्माके प्रियपुत्र 'देववर्मा' नामके युवराजकी तरफसे लिखा गया है और इसके द्वारा 'त्रिपर्वत' के ऊपरका कुछ क्षेत्र अर्हन्त भगवानके चंत्वालयकी मरम्मत, पूजा और महिमाके लिये 'थापनीय' संवको दान किया गया है ।

पत्रके अन्तमें इस दानको अपहरण करनेवाले और रक्षा करनेवालेके वाले वही कसम डिलाई है अथवा वही विधान किया है जैसा कि ९७ नम्बरके दानपत्रके मम्बन्धमें पहले बतलाया गया है। वही चारों 'उक्तं च' पद्य भी कुछ क्रमभंगके साथ दिये हुए हैं और उनके बाद दो पद्योंमें इस दानका फिरसे खुलासा दिया है, जिनमें देववर्माको रणप्रिय, दयानृतसुखास्वादनने पवित्र, पुण्यगुणोंका इच्छुक और एकवीर प्रकट किया है। अन्तमें अर्हन्तकी स्तुतिविषयक प्राय वही पद्य है जो ९७ नम्बरके दानपत्रके शुरूमें दिया है। इस पत्रमें श्रीकृष्णवर्माको 'अश्वमेध' यज्ञका कर्ता और शरद ऋतुके निर्मल आकाशमें उडित हुए चन्द्रमाके समान एक छत्रका धारक, अर्थात् एकछत्र पृथ्वीका राज्य करनेवाला लिखा है ।]

पूर्वके न० ९७, ९८ व इस दानपत्रपरसे निम्नलिखित ऐतिहासिक व्यक्ति-योंका पता चलता है.—

- १ स्वामिमहासेन—गुरु ।
- २ हारिती—मुख्य और प्रसिद्ध पुरुष ।
- ३ शान्तिवर्मा—राजा ।
- ४ मृगेश्वरवर्मा—राजा ।
- ५ विजयजिबमृगेशवर्मा—महाराजा ।
- ६ कृष्णवर्मा—महाराजा ।
- ७ देववर्मा—युवराज ।
- ८ दामकीर्ति—भोजक ।
- ९ नरवर—सेनापति ।

१०६

अल्तेम (जिला कोल्हापुर)—संस्कृत ।

[शक ४११=४८८ ई०]

पहला पत्र ।

स्वस्ति ॥ जयत्यनन्तमंसारपारावारैकसेतव

महावीरार्हतः पूताश्रणाम्बुजरेणव । ॥

श्रीमता विश्व-विश्वम्भराभिसंस्त्यमानमानव्यसगोत्राणा हारीति-
पुत्राणा सप्तलोकमातृभिस्सप्तमातृभिरभिवर्द्धितानां कार्तिकेयपरिरक्षणप्राप्त-
कल्याणपरम्पराणा भगवन्नारायणप्रसादसमासादितवराहलाञ्छनेक्षणक्षण-
वशीकृताद्येपमहीभृताना (भृत्याम्) चालुक्यानां कुलमलकरिणो ॥
स्वभुजोपार्जितवसुन्धरस्य निजयथाश्रवणमात्रेणैवावन्तराजकस्य कीर्त्तिप-
ताकावभासितदिगन्तरालस्य जयसिंहस्य राजसिंहस्य (?) सूनुत्सूत्र-
वागनवरतदानार्द्रिकृतकरस्सुरगज इव प्रथमनिविस्तपोनिधिरिव दृप्तवैरिपु
प्राप्तरणरागो रणरागोऽभवत् [III] तस्य चात्मजे श्वमेधनाव (०मेधाव)
भृत (थ)-स्नानपवित्रीकृतगात्रे प्रणतपरनुपतिमकुटनटघटितहटन्मणिगण-
किरणवाद्धीराधौतचारुचरणकमलयुगले चित्रकण्ठाभिधानतुरङ्गमकण्ठीखे-
णोत्सारितारातिस्तम्भेरममण्डले वण्णाश्रमसर्वधर्मपरिपालनपरे गङ्गासेतु(?)
मथ्यवनिदेजावीश्वरे शक्तित्रयप्रवर्द्धितप्राज्यसाम्राज्ये गङ्गायमुनापालि-

दूसरा पत्र; पहली ओर ।

ध्वजदण्डकादिपञ्चमहाशब्दचिह्ने करदीकृतचोल-चेर-केरल-सिंहल-
कलिंगभूपाले दण्डितपाण्ड्यादिमण्ड (ण्ड) लिके अप्रतिगासने
'सत्याश्रय'-श्री-पुलकेश्यभिधानपृथिवीवल्लभमहाराजाधिराजे पृथिवीमे-
कातपत्रं शासति सति [II] राजा रुन्द्रनीलसैन्द्रकवशशशाकायमानः

प्रचण्डदोर्दण्डमण्डितमण्डलाप्रो गोण्डनामासीत् [॥] अय-नय-विनयस-
म्पन्नस्तनयोऽस्य समररमरसिकस्सिचाराख्यया ख्यातः [॥] पुत्रोऽस्य
भूता (तो) धात्रीतिलकायमानः पराक्रमाक्रान्तवैरिनिकुरुम्भः अत्रार्थ्य-
वीर्यसमन्वितः कार्याकार्यनिपुणः हनूमानिन्न रामस्याभिरामस्य तस्य
भृत्यस्सख्यसन्धो धार्मिकस्सामियारस्समभूत् [॥] स तत्प्रासादसमा-
सादिनकुहुण्डीविषयस्त परिपा[ल] य (यन्) तदन्तर्भूतालक्तज्ञा-
मिधाननगर्भ्याप्रामसत्तञ्जतराजधान्यामयोपविषयविशेषकायमानाया शालि-
व्रीहीक्षुवणचणकप्रियङ्गुवरकोदारकश्यामाकगोधूमाद्यनेकधान्यसमृद्धाया
तद्देजविलासिनीमुखकमलमित्र विराजमानाया धनधान्यपरिपूर्णाकृपीवल्-
प्रायायाम् ॥

ऐन्द्रा दिशि महेन्द्राभः प्रासाद प्रवरम्भहत् जिनेन्द्रा-

दूसरा पत्र, दूसरी ओर ।

यतन भक्त्याकारयत् सुमनोहरम् ॥

प्रोत्तुग-प्रासाद त्रिसुवनतिलकं जिनालय प्रवर

नानास्तम्भसमुद्भूतविराजमान चिरं जगति ॥

शक्रुपपाब्देप्रेकादशोत्तरेषु चतुष्पष्टेषु व्यतीतेषु विभवसवत्सरे
प्रवर्त्तमाने ॥ कृते च जिनालये ।

वैशाखोदितपूर्णापुण्यदिवसे राहो (है) विधौ (धोर) मण्डल

श्लेष्टेन्दैर्त्यिकमज्जनार्दुपगत स्नेहाद् गृहं भूभुजम्

श्रीसत्याश्रयमाश्रय गुणवता विज्ञापयामास स

तज्जैनालयपूजनोचितनुतक्षेत्राय धर्मप्रियः ॥

आयुर्जन्मव्रतामिदं ननु तदि (डि) त् सन्व्येन्द्रा(न्द्र)चापोपम

ज्ञात्वा धर्मम (ध) नार्जनं बुधजनैर्म्मार्त्त (र्त्त): फल मन्यते

१ समवत शुद्ध पाठ 'श्लेष्टेऽन्वैर्यिकमज्जनाद्' होना चाहिये ।

इत्येव प्रवित्रोव्य सम्यजनता सत्याश्रयो बल्लभो
भक्त्या तज्जिनमन्दिरोपमक्रिये क्षेत्र ददौ शासनम् ॥
वैशाखपौर्णमास्या राहौ विधुमण्डल प्रविष्टवति

सत्याश्रयवृत्तिस्त्रिभुवनतिलकाय दत्तवान् क्षेत्रम् ॥
कनकोपलसम्भूतवृक्षमूलगुण (णा) न्वये
भूतस्समग्रान्द्रान्तस्सिद्धनन्दिमुनीश्वरः ॥
नस्यासीत् प्रथमदिशप्यो देवताविनुतक्रम.
दिश्यैः पञ्चशतैर्युक्त—

तीसरा पत्र, पहिली ओर ।

श्वितकचार्य्य-सहितः ॥

श्रीमत्काकोपलाम्नाये ख्यातकीर्तिर्वहुश्रुत.

लक्ष्मीवाच्चागदेव्याख्यश्वितकाचार्य्यदीक्षित. ॥

नागदेवगुरोदिशप्य प्रभूतगुणवारिधिः

समस्तशास्त्रसम्बोधि (धी) जिननन्दिः प्रकीर्तितः ॥

श्रीमद्विधिराजेन्द्रप्रस्फुरन्मकुटालिभिः

निघृष्टचरणाब्जाय प्रभवे जननन्दिने ॥

जिननन्द्याचार्य्यसूर्याय दुश्चरतपोविशेषनिकषोपलभूताय समधि-
सर्व्यशास्त्राय नगरशतलभोगाश्च अददौ [॥] तत्र तलभोगसीमान्याह
[१] चैत्यालयाद् वायव्या दिशि तटाक नटो ऋजुसूत्रक्रमेण पश्चिमाभि-
मुख गत्वा पथ तस्य मध्ये निखातपापाण तस्माद् दक्षिणाभिमुखमनुपथ
गत्वा प्रवाह तस्य (स्य) मध्ये निखातपापाण पूर्वोक्त-तटाक गत्वा
तिन्त्रिणीकवृक्ष यावत् तस्मादुत्तराभिमुख गत्वा पूर्वोक्त-तटाक । यावत्

१ इस पूर्णविराम की यहाँ कोई जरूरत नहीं है । 'पूर्वोक्त-तटाक यावत्'
ऐसा सम्बन्ध है ।

स्थितं एतन्नगरनिवेशक्षेत्रम् [॥] तत्र तलभोगक्षेत्रसीमान्याह [१]
 नगरस्य दक्षिणस्या दिशि सेतुवन्धात् प्रभृत्यनुजलवाहल पूर्वाभिमुख
 गत्वा यावदाञ्छिक्षेत्र तत्पश्चिमसीम्नि निखातपापाण यावत्तस्मादनुसी-
 मोत्तराभिमुख गत्वा यावच्छमीवल्मीक तस्मात्पुनः पूर्वाभिमुखं गत्वा
 यावत् स्थलगिरि तस्मात्पुनरनुगिर्युत्तराभिमुख गत्वा यावद्दिरेरुच्चप्रदेश
 तस्मात् पश्चिमाभिमुख गत्वा यावद्दिरे तस्मात् पश्चिमाभिमुख गत्वा याव-
 त्स्थलगिरि तस्मादक्षिणाभिमुख गत्वा यावत्सेतुवन्धन (न) स्थित राज-
 मनेन पञ्चापट् सदुत्तरनिवर्त्तनगत तलभोगक्षेत्र चतुस्सीमाविरुद्धम् ॥
 नरिन्दकनामग्रामे नैर्ऋत्या दिशि नरिन्दक-सामरिवाढ (ड) ग्रामपथि
 मध्यवर्त्तिर्दिशेगतेगटाकाद् ऋजुसूत्रक्रमेण नरिन्दकग्रामपथ यावत्तावत्स्थित
 चत्वारिंशत् नि (सन्नि) वर्त्तन क्षेत्र दक्षिणदिशि राजमानेन ॥ **किण-**
यिगेनामग्रामे पूर्वस्या दिशि अशीतिनिवर्त्तन क्षेत्रं राजमानेन पिशाचा-
 राम नैर्ऋत्या दिशि यावच्छमीझाटवल्मीक तस्मात् पूर्वाभिमुख गत्वा
 यावत्पथ तस्मादक्षिणाभिमुख गत्वा यावत्स्थलगिरि तस्मात् पश्चिमा-
 भिमुखमनुस्थलगिरि गत्वा यावच्छमीस्थलं तस्मादुत्तराभिमुख गत्वा
 यावच्छमी-झाटवल्मीक स्थित चतुस्सीमाविरुद्धम् ॥ **पन्तिगणगे** नामग्रामे
 चतुर्थं पत्र, पहिली ओर ।

नैर्ऋत्या दिशि मान्यस्य क्षेत्र उत्तरस्या दिशि चत्वारिंशन्निवर्त्तन
 क्षेत्र राजमानेन पश्चिमस्या दिशि स्थलगिरि तस्मादनुसीम पूर्वाभिमुख
 गत्वा यावच्छमीवल्मीकं तस्मादक्षिणाभिमुख गत्वा **कोमरश्चे**-ग्राम-सीम
 तस्मात्पूर्वाभिमुखमनुसीम गत्वा यावज्जलवाहल तस्मादुत्तराभिमुखमनु-
 वाहल गत्वा यावच्छमीझाटवल्मीक तस्मात्पश्चिमाभिमुख गत्वा यावत्तटा-
 कोत्तरकोडि (टि) तस्मादक्षिणाभिमुखमनुस्थलगिरि गत्वा यावत्तावत्स्थित
 चतुस्सीमाविरुद्धम् ॥

मंगलीनामग्रामपश्चिमदिशि राजमानेन चत्वारिंशन्निवर्तन क्षेत्र तस्य सीमान्याह स्थलगिरेः पश्चिमामिमुखमनुपथ गत्वा यावद्भूविक्रामसीम तस्मादुत्तरामिमुखमनुसीम गत्वा यावत्स्थलगिरि तस्मात्पूर्वामिमुख-मनुस्थलगिरि गत्वा यावत्स्थलगिरि तस्मादक्षिणाभिमुखमनुस्थलगिरि गत्वा स्थित चतुस्सीमाव (वि) रुद्धम् ॥ करण्डिगे नाम ग्रामे प-

चतुर्थ पत्र; दूसरी ओर ।

श्विमस्या दिशि चन्दवुर-पन्दर्ङ्गवल्लिनामग्राममार्गमध्ये अश्वत्थतटा-काद् वायव्या दिशि राजमानेन पञ्चविंशतिनिवर्तन क्षेत्रम् ॥ दावनवल्लिनामग्रामे पश्चिमस्या दिशि अलक्तकनगरकुम्भयिजनामग्राम-मार्गमध्ये विम्बालयपिशाचारामात्पश्चिमे राजमानेन चत्वारिंशन्निवर्तन क्षेत्रम् ॥ पुनरपि तस्मिन्नेव ग्रामे दक्षिणस्या दिशि हिङ्गुटीतटाकादुत्तरस-मीपस्थ राजमानेन शत नि (शत-नि) वर्तन क्षेत्रम् ॥ नन्दिणिगेनाम ग्रामे पूर्वस्या दिशि वरचुलिकसीम श्रीपुरमार्गमध्ये राजमानेन चत्वारिं-शन्निवर्तन क्षेत्रम् ॥ सिरिपत्तिनामग्रामे पश्चिमस्या दिशि श्रीपुरमार्गतो दक्षिणतो राजमानेन चत्वारिंशन्निवर्तन क्षेत्रम् ॥ अर्जुनवाद (ड) नामग्रामे पश्चिमस्या दिशि श्रीपुरमार्गतो उत्तरतो राजमानेन पञ्चाश-न्निवर्तन क्षेत्रम् ॥ ग्रामनामान्याह ॥ कुम्भयिज-द्वादशस्थो (स्या) न्तः रूविको नाम

पाँचवाँ पत्र ।

ग्रामः प्रथमः ॥ सामरिवादो (डो) नाम ग्राम' द्वितीय. ॥ वटमाले द्वादशस्यान्तः लहिवादो (डो) नाम ग्रामः तृतीय ॥ श्रीपुरद्वाद-शस्य मध्ये पेल्लिदको नाम ग्रामः चतुर्थः ॥ इत्येते चत्वारो ग्रामाः चतु-स्सीमाव (वि) रुद्धक्षेत्रः (त्रा.) सोदङ्गा. स (सो) परिकरा. अचाटभटप्रवेश्याः

[॥] तदागामिभिरस्मद्वंशैरन्यैश्च राजभिरायुरैश्वर्यादीना विलसितमच्छि-
राशुचञ्चलमवगच्छद्विराचन्द्रार्कधराण्यवस्थितिसमकाल यज्ञश्चित्रीशुभिः
स्वदत्तिर्निर्विघ्नेषु परिपालनीयमुक्त च मन्त्रादिभिः ॥

बहुभिर्व्यसुधा भुक्ता राजभिस्सगारादिभि-
र्यस्य यस्य यदा भूमिः तस्य तस्य तदा फलम् ।
स दातु सुमहच्छक्य दुःखमन्यस्य पालन
दान वा पालन श्रेयो श्रेयो दानस्य पालनम् ॥
स्वदत्ता परदत्ता वा यो हरेन वसुन्धराम् ।
पट्टिं वर्षसहस्राणि विष्टाया जायते कृमिः ॥

[३ ए, ७, पृ० २०९-२१७, न. ४४]

[इस दानपत्रमें पुलिकेशीकी वंशावलि उसके पितामह (वाचा) जयसिंह
और उसके पिता रणराग से लेकर दी हुई है । ऊपर विरुदावलिमें यह
वाक्यावली आती है, 'जयसिंहस्य राजसिंहस्य सुसु...रणरागोऽभवत्'—
जिमसे सर धाल्दर इंडियटने सन्देहास्पदरूपसे यह फलितार्थ निकाला है
कि 'राजसिंह' जयसिंहका दूसरा नाम था । पर यदि 'राजसिंह' यह
च्यक्तिवाचक नाम हो भी, तो इससे जयसिंहकी उपाधिका ही पता
लगेगा, जयसिंहके दूसरे नामका नहीं ।

तत्पश्चात् दानपत्रमें उसके (जयसिंहके) एक सामन्त सामियारका
उल्लेख है जो रुन्डनील-सैन्दक वंशका है । यह सामियार कुहुण्डी जिलेका
शासक था । इसके बाद यह वर्णन है कि सामियारने अलक्तकनगरमें, जो कि
उस जिलेके ७०० गावोंके समूहोंमें एक प्रधान नगर था, एक जैनमन्दिर
चनवाया, और राजाज्ञा लेकर, विभव संवत्सरमें जब कि शकवर्ष ४११
च्यतीत हो चुका था वैशाख महीने की पूर्णिमाके दिन चन्द्रग्रहणके अवसर-
पर कुछ जमीन और गाँव मन्दिरको दिये ।]

१०७

आङ्कर [जिला धारवाड]; संस्कृत तथा कन्नड-भङ्ग ।

—[१]—

पूर्ववतां चालुक्य कीर्तिचर्मा प्रथमका शिलालेख

- [१]जयत्यनेकधा विश्व विवृण्वन्नशुमानिव
..... श्री-वर्द्धमानदेवे.....
- [२]न् (१) यप-दुः-प्रत्राधनः [II]
प्रभास (१) ति भुवं भूयो
- [३] प्रताप-क्षत . . ि ि दान
.....
- [४]कु (१) र (१)-तेजसा वैजय
.....र.....
- [५]त्पाशशृद्धिषमो यमः चित्त वा मानस सत्य स्थित
..... [II] तेनेप (१)
- [६]गामुण्ड-निर्मापितजिनालयदानशालादिसंबुद्धयै विज्ञप्तेन
यशस्विना [I] पञ्चविं—
- [७] शक्ति-सख्यान-निवर्त्तन-कृत-प्रमं क्षेत्र राजमानेन दत्त
त्वहितरक्षण [II] [वि]—
- [८] श्राव्य साक्षिणः कृत्वा उञ्छोरिन्द-प्रधानकानन्यैरपि च
राजन्यै रक्षणीय स [II]
- [९] उक्तं च [I] स्वदत्ता परदत्ता वा यो हरेत वसुन्धराम्
षष्टि वर्षसहस्राणि विद्याय(I)म् [जाय]—

शूरे विदुषि च विभजन्दान मानं च युगपदेकत्र ।

अविहितयाथातथ्यो जयति च सत्याश्रयः^१ सुचिरम् ॥ ३ ॥

पृथिवीवल्लभशब्दो येषामन्यर्थता चिर जातः ।

तद्वग्ने (श्ये) पु जिगीषुषु तेषु बहुष्वप्यतीतेषु ॥ ४ ॥

नानाहेतिशताभिघातपतितभ्रान्ताश्चपत्तिद्विपे

नृत्यद्भीमकवन्धखड्गकिरणञ्चाल्यासहस्रे रणे ।

लक्ष्मीर्भावितचापलादिव कृता शौर्येण येनात्मसा-

द्राजासीञ्जयसिंहवल्लभ इति ख्यातश्शुलुक्यान्वयः ॥ ५ ॥

तदात्मजोऽभूद्रणरागनामा दिव्यानुभावो जगदेकनाथः ।

अमानुपत्व किल यस्य लोकः सुप्तस्य जानाति वपुःप्रकर्पात् ॥६॥

तस्याभवत्तनूजः पुलकेशी यः श्रितेन्दुकान्तिरपि ।

श्रीवल्लभोऽप्ययासीद्वातापिपुरीवधूवरताम् ॥ ७ ॥

यत्रिवर्गपदवीमल क्षितौ नानुगन्तुमधुनापि राजकम् ।

भूश्च येन हयमेधयाजिना प्रापितावभृयमज्जना व्रभौ ॥ ८ ॥

नलमौर्यकदम्बकालरात्रिस्तनयस्तस्य व्रभूव कीर्तिवर्मा ।

परदारविवृत्तचित्तवृत्तेरपि धीर्यस्य रिपुश्रियानुकृष्टा ॥ ९ ॥

रणपराक्रमलब्धजयश्रिया सपदि येन विरुग्णमशेषतः ।

नृपतिगन्धगजेन महौजसा पृथुकदम्बकदम्बकदम्बकम् ॥१०॥

तस्मिन्सुरेश्वरविभूतिगताभिलाषे

राजाभवत्तदनुजः किल मङ्गलीशः ।

यः पूर्वपश्चिमसमुद्रतटोषिताश्वः

सेनारजःपटविनिर्भितदिग्वितानः ॥ ११ ॥

१ 'सत्याश्रय' यह पुलकेशीका नामान्तर है ।

स्फुरन्मयूखैरसिदीपिका शतैर्व्युदस्य मातङ्गतमित्तसंचयम् ।
अवासवान् यो रणरङ्गमन्दिरे कलञ्चुरिश्रीललनापरिग्रहम् ॥ १२ ॥

पुनरपि च जिघृक्षो. सैन्यमाक्रान्तसाल
रुचिरवहुपताक रेवतीद्वीपमाशु ।
सपदि महदुदन्वत्तोयसंक्रान्तविम्ब
वरुणबलमिवाभूदागत यस्य वाचा ॥ १३ ॥

तस्याग्रजस्य तनये नहुपानुभावे
लक्ष्म्या किलाभिलषिते पुलकेशिनाम्नि ।
सासूयमात्मनि भवन्तमत. पितृव्यं
ज्ञात्वापरुद्धचरितव्यवसायवुद्धौ ॥ १४ ॥

स यदुपचितमन्त्रोत्साहशक्तिप्रयोग-
क्षपितबलविशेषो मङ्गलीशः समन्तात् ।
स्वतनयगतराज्यारम्भयत्नेन सार्धं
निजमतनु च राज्य जीवित चोज्ज्वलि स्म ॥ १५ ॥

तावत्तच्छत्रभगे जगदखिलमरात्यन्धकारोपरुद्ध
यस्यासह्यप्रतापद्युतिततिभिरिवाक्रान्तमासीत्प्रभातम् ।
नृत्यद्विद्युत्पताकैः प्रजविनि मरुति क्षुण्णपर्यन्तभागै-
र्गर्जद्विर्वारिवाहैरलिकुलमलिन व्योम या(जा)त कदा वा ॥ १६ ॥

लब्ध्वा काल भुवमुपगते जेतुमाप्यायिकारुष्ये
गोविन्दे च द्विरदनिकरैरुत्तराम्भोधिरथ्याः ।
यस्यानीदैर्युधि भयरसङ्गत्वमेक. प्रयात-
स्तत्रावाप्त फलमुपकृतस्यापरेणापि सब. ॥ १७ ॥

वरदातुङ्गतरङ्गङ्गविलसद्गंसानदीमेखला

वनवासीमवमृद्गतः सुरपुरप्रस्पर्थिनी संपदा ।

महता यस्य वलार्णवेन परितः सद्भादिनोर्वातल

स्थलदुर्गं जलदुर्गतामिव गत नत्तक्षणे पश्यताम् ॥ १८

गङ्गाम्बु पीत्वा व्यसनानि सप्त हित्वा पुरोपार्जितसपदोऽपि ।

यस्यानुभावोपनताः सदासन्नासन्नसेवामृतपानगौण्डा ॥ १९ ॥

क्रोङ्कणेषु यदादिष्टचण्डदण्डाम्बुवीचिभिः ।

उदस्तास्तरसा मौर्यपत्न्याम्बुसमृद्भयः ॥ २० ॥

अपरजलधेर्लक्ष्मीं यस्मिन्पुरी पुरभित्प्रभे

मदगजघटाकारैर्नावा शनैरवमृद्गति ।

जलदपटलानीकाकीर्णं नवोत्पलमेचक

जलनिधिरिव व्योम व्योमनः समोऽभवदम्बुधिः ॥ २१ ॥

प्रतापोपनता यस्य लाटमालवगूर्जराः ।

दण्डोपनतसामन्तचर्या वर्या इवाभवन् ॥ २२ ॥

अपरिमितविभूतिस्फीनसामन्तसेना-

मुकुटमणिमयूखाक्रान्तपादारविन्दः ।

युधि पतितगजेन्द्रानीकवीभत्सभूतो

भयविगलितहर्षो येन चाकारि हर्षः ॥ २३ ॥

भुवमुरुभिरनीकैः शासतो यस्य रेवा

वित्रिधपुलिनशोभावन्ध्यविन्ध्योपकण्ठा ।

अधिकतरभराजत्खेन तेजोमहिम्ना -

शिखरिभिरिभवर्ज्या वर्ष्मणा स्पर्धयेव ॥ २४ ॥

विधिवदुपचिताभिः शक्तिभिः शक्रकल्प-

स्तिस्मिरपि गुणैः स्वैश्च माहाकुलाद्यैः ।

अनमदधिपतित्व यो महाराष्ट्रकाणां

नवनवतिसहस्रग्रामभाजा त्रयाणाम् ॥ २५ ॥

गृहिणा स्वगुणैस्त्रिर्गुणैश्च विहितान्यक्षितिपालमानभङ्गाः ।

अभवन्नुपजातर्मातिलिङ्गा यदनीकेन सकोसलाः कलिङ्गाः ॥२६॥

पिष्ट पिष्टपुरं येन जात दुर्गमदुर्गमम् ।

चित्र यस्य क्लेशैश्च जात दुर्गमदुर्गमम् ॥ २७ ॥

संनद्धवारणघटास्थगितान्तराल

नानायुधक्षतनरक्षतजाङ्गरागम् ।

आसीजल यदवमर्दितमभ्रगर्भा-

केणालमम्बरमिवोर्जितसाध्यरागम् ॥ २८ ॥

उद्धृतामलचामरव्यजशतच्छन्नान्धकारैर्वलैः

शौर्योत्साहरसोद्धितारिमथनैर्मौलादिभिः पङ्क्तिवैः ।

आक्रान्तात्मवल्लोचति वलरजःसल्लवकाञ्चीपुरः

प्राकारान्तरितप्रतापमकरोवः पल्लवानां पतिम् ॥ २९ ॥

कावेरी हुतशफरीविलोलेनेत्रा चोलाना सपदि जयोद्यतस्तस्य (१) ।

प्रश्नयोत्तमदगजसेतुरुद्धनीरा सस्पर्श परिहरति स्म रत्नराशेः ॥ ३० ॥

चोलकेरलपाण्ड्याना योऽभूत्त्र महद्भये ।

पल्लवानीकनीहारतुहिनेतरदीधितिः ॥ ३१ ॥

उत्साहप्रभुमन्नशक्तिसहिते यस्मिन्समन्तादिशो

जिन्वा भूमिपतीन्विसृज्य महितानाराध्य देवद्विजान् ।

वातार्पा नगरा प्रविष्य नगरमेकामिवोर्वामिमा

चञ्चनीरधिनीरनीलपरिखा सत्याश्रये शासति ॥ ३२ ॥

त्रिंशत्सु त्रिसहस्रेषु भारतादाहवादिनः ।

सप्तदशतयुक्तेषु त्र (ग) तेष्वन्देषु पञ्चसु (३७३५) ॥ ३३ ॥

पञ्चाशत्सु कलौ काले पदसु पञ्चशतासु च (६५६) ।

समासु समतीनासु शकानामपि भूमुजाम् ॥ ३४ ॥

तस्याम्बुधित्रयनिवारितशासनस्य

सत्याश्रयस्य परमात्तवता प्रसादम् ।

शैल जिनेन्द्रभवन भवन महिम्ना

निर्मापित मतिमता रविकीर्तिनेदम् ॥ ३५ ॥

प्रज्ञस्तेर्वसतेश्चास्या जिनस्य त्रिजगद्गुरोः ।

कर्ता कारयिता चापि रविकीर्तिः कृती स्वयम् ॥ ३६ ॥

येनायोजि नवेऽश्मस्थिरमर्थविधौ विवेकिना जिनवेश्म ।

स विजयता रविकीर्तिः कविताश्रितकालिदासभारविकीर्तिः ३७

[प्रार्चनलेखमाला, प्रथमभाग, से० १६, पृ० ६८-७२, से उद्धृत]

[यह शिलालेख बीजापुर (पूर्वका कलाहरी) जिलेके हुड्डुपड तालुकाके ऐहोळेके मेनुटि नामके प्राचीन मन्दिरकी पूर्वकी तरफकी दीवालपर है। लेखमें कुल १९ पक्तियाँ हैं, जिनमेंसे १८ वी पक्ति पूर्ण और १९ वी छोटी पक्ति बादसे किसीकी जोड़ी हुई है और जिनमें महत्त्वपूर्ण कोई बात नहीं है।

समूचा शिलालेख किसी रविकीर्तिका बनाया हुआ है। वे (रविकीर्ति) चालुक्य पुलकेशी सत्याश्रय (अर्थात् पश्चिमी चालुक्य पुलकेशी द्वितीय) के राज्यमें थे। यह राजा उनका संरक्षक या पोषक था। इन्होंने शिलालेखवाले जिवालयमें जिनेन्द्रकी मूर्तिकी प्रतिष्ठा की। प्रतिष्ठाके समय यह लेख उत्कीर्ण करवाया गया था जिसमें सामान्यरूपसे चालुक्य वंशकी, और विशेषतः पुलकेशी द्वितीय (रविकीर्तिके आश्रयदाता) के

पराक्रमोकी प्रशक्ति है । इस लेखमें आये हुए ऐतिहासिक तथ्योंका पूरा विवरण प्रो० भाण्डारकर और डा० फ्लीटने दिया है^१ ।

इस लेख (या काव्य) का मुख्य भाग १७-३२ श्लोकोका है । इनको रविकीर्ति के आशयानुसार, रघुवशके (चौथे सर्गके) रघुदिग्विजयके समान, 'पुलकेशी सत्याश्रय दिग्विजय' कहा जा सकता है । इस काव्य (कविता) की रचनामें रविकीर्तिका कालिदासके रघुवशका तथा भार-विके त्रिरोतार्जुनीयका गहरा अध्ययन स्पष्ट काम कर रहा है; इसलिए उन्हींके शब्दोंमें उनका यह कथन कि 'स विजयतां रविकीर्तिं कविताश्रित-कालिदासभारवि-कीर्तिं.' सचमुचमें ठीक है ।

श्लोक २२ में बताया गया है कि पुलकेशीका प्रताप इतना तेज था कि लाट, मालव और गूर्जर लोग अपने-भाप ही उनकी शरण आते थे, बलपूर्वक नहीं ।]

[३० ए०, जिल्द ५, पृ० ६७-७१]

१०९

लक्ष्मेश्वर—संस्कृत ।

—[?]—

जयत्यतिशयजिनैवर्भासुरस्सुरवन्दितः ।

श्रीमाञ्जिनपतिस्सृष्टेरादेः कर्त्ता दयोदयः ॥

देहहिसरि (इह हि खस्ति) ॥

चालुक्यपृथ्वीवल्लभकुलतिलकेषु बहुध्वतीतेषु रणपराक्रमाङ्ग महाराजो भवत्तद्राजतनयः राजितनयो विवर्द्धितैश्वर्यश्रुतस्समुद्रान्तस्नाततुरङ्गेभपदा-तिसेनासमूह. एरैर्यनामवेयः श्रीमान् ॥

१ देखो प्रो० भाण्डारकरकी Early History of the Dekkan, 2nd ed, especially p. 51, और डॉ० फ्लीटकी Dynasties of the Kanarese Districts, 2nd ed. especially p 349 ff.

अपि च ॥

शासतीमा समुद्रान्ता वसुधा वसुधाधिपे ।

सत्याश्रयमहाराजे राजत्सत्यसमन्विते ॥

भुजगेन्द्रान्वयसेन्द्रावनीन्द्रसन्ततौ अनेकनृपसंज्ञैश्वतीतेषु तत्कुल-
गगनचन्द्रमा' बहुसमरविजयलब्धपताकावभासितादिगन्तरालवलयः
विजयशक्तिर्नाम नृपतिर्वर्भूव [॥] तत्सुनुरुदिततरुणादिवाकरकरसम-
प्रभः सौ (शौ) र्य्य-धैर्य्य-सत्त्व-गुणोपपन्नः सामन्तवृ (वृ) ण्डमौलि-
मालवलीटचरणः कुन्दशक्तिर्नाम राजाभूत् तस्य प्रियतनयः ॥ अद्वि-
तीयपुरुषकारसम्पन्नः । धर्मार्थकामप्रधानः अनेकरणविजयवीरपताका-
ग्रहणोद्धतकीर्तिः [॥] तेन दुर्गशक्तिर्नामधेयेन शङ्खजिनेन्द्रचैत्यनित्य-
पूजार्थं पुण्याभिवृद्धये च पुलिगेरे-नामनगरस्योत्तरपार्श्वे पञ्चाशन्नि-
वर्त्तनपरिमाणक्षेत्रं दत्तम् ॥ तस्य सीमा समाख्यायते [॥] पूर्वतः किन्न-
रीक्षेत्रम् । पावकदिशि ज्येष्ठलिङ्गभूमिः । दक्षिणतः घटिकाक्षेत्रम् ।
नैर्ऋत्या दिशि दं (? पं) -डीस (श) श्रेष्ठिभूमिः । पश्चिमतः रामे-
श्वरक्षेत्रम् वायव्या होनेश्वरक्षेत्रम् । उत्तरतः सिन्देश्वरक्षेत्र ई (ऐ)
शान्या दिशि भट्टारीक्षेत्रम् । तद्दक्षिणतः पूर्वोक्तकिन्नरीक्षेत्रम् ॥

देवस्व विष लोके न विष नै (?) विपमुच्यते ।

विपमेकाकिन हन्ति देवस्व पुत्र-पौत्रिकम् ॥

[यह लेख, जिसमें उस बड़े शिलालेख (नं. १४९) का दूसरा भाग
(पंक्तियाँ ५१-६१) निहित हैं, 'सेन्द्र' कुलका लेख हैं ।

१ यहाँ 'क' की जगह 'म' भी हो सकता है और तब 'मन्दशक्ति' पढ़ा
जायगा । २ यह 'न' अतिरिक्त है और भूलसे जुड़ गया है ।

इसका प्रारम्भ 'रणपराक्रमाङ्क' नामके एक चालुक्य राजा और उसके पुत्र एरेंश्यके उल्लेखसे हुआ है। लेकिन ये दोनों नाम पश्चिमी या पूर्वी चालुक्योंसेसे किसीकी भी वशावलीसे अभीतक नहीं मिले हैं। रणपराक्रमाङ्क शायद 'रणराग'के लिये उल्लेखित हुआ है, जो जयसिंह प्रथमका पुत्र और पुलिकेशी प्रथमका पिता था। जयसिंह प्रथमका जो दक्षिणके इस वंशके प्रथम पुरुष हैं, वर्णन कमी कमी आता है।

इसके अनन्तर 'सत्याश्रय' नामके एक राजाका उल्लेख आता है। परन्तु उससे यह पता नहीं चलता कि इस उपाधि (सत्याश्रय) को धारण करनेवाले किस पश्चिमी चालुक्य राजासे मतलब है।

इसके बाद, सत्याश्रयके समकालवर्तीके तौरपर, 'दुर्गशक्ति' राजाका उल्लेख आता है। यह राजा 'भुजगेन्द्र' अर्थात् नागवशके अन्वयसे सम्बन्ध रखनेवाले सेन्द्र राजाओके वंशका था। यह विजयशक्तिके पुत्र कुन्दशक्तिका पुत्र था।

इसमें दुर्गशक्तिके द्वारा शङ्खजिनेन्द्र नामके चैत्यके लिये दिये गये भूमिदानका कथन है। यह भूमिदान पुलिगेरे नगरमें किया गया था।

लेखका काल नहीं दिया गया है। यह संभवत प्राचीनतर कालका मालूम पडता है, जो यहाँ सिर्फ पूर्वकालके लेखके निश्चय या सुरक्षाके लिये ही दुहराया गया है।]

[३० ए०, जिल्द ७, पृ० १०१-१११, न० ३८ (पक्तियों ५१-६१)]

११०

[यह लेख श्रवण-बेलगोलाका संस्कृत और कन्नडमे है। इसे 'जैन शिलालेख-संग्रह प्रथम भाग' मे देखना चाहिये।]

[L. Rice, EC, II, sr -Bel ins no 24]

१११

लक्ष्मेश्वर—संस्कृत।

[शक ६०८=ई० सन् ६८७]

[यह लेख (मूल) इलियटके हस्तलिखितसंग्रहकी पहली जिल्दमें पृष्ठ २२ पर दिये गये ८७ पक्तिवाले एक लेखका चौथा भाग है और पंक्ति ६९

वींसे शुरु होता है। उस समस्त लेखका सिर्फ कुछ भाग ही उस पुस्तकमें पापाण-लेखपरसे लिया गया है, पूरा लेख नहीं। इसलिये उस लेखका यहाँ देना मुश्किल होनेसे सिर्फ उसकी विगत यहाँ दी जाती है।

उस विनाल लेखकी ६९ वीं पंक्तिसे एक दूसरा पश्चिमी चालुक्य शिलालेख शुरु हो जाता है। इस लेखकी ६९ से ८२ तककी पक्तियाँ यद्यपि अस्पष्ट हैं, फिर भी अति सुरक्षित हैं; उसके नीचेकी पाँच पक्ति-योका भी कुछ निजानोसे पता चल जाता है, यद्यपि अक्षर इतने विसे हुए हैं कि पढ़नेमें नहीं आते। इसमें पो(पु)लिकेशीवल्लभसे लेकर विनया-दित्य-सत्याश्रय तककी वशावली है और मूलमद्व अन्वयकी देवगण शाखाके किसी आचार्यको, उसके द्वारा दिये गये, दानका उल्लेख है। यह दान ६०८ शक वर्षके वीतनेपर जब उसके राज्यका पाँचवाँ या सातवाँ वर्ष चालू था और जब उसकी विजयका कैम्प (विजयस्कन्धा-वार) रक्तपुर नगरमें लगा हुआ था, माघ महीनेकी पूर्णमासीको दिया गया था। यह काल ७७-७८ पक्तियोंमें द्यो दिया हुआ है—अष्टोत्तर-पद-छत्तेसु शकवर्षेष्वतीतेषु प्रवर्द्धमानविजयराज्यपञ्चम (१ सप्तम)-सवत्सरे श्री रक्तपुरमधिवसति विजयस्कन्धावारे माघमासे पौर्णमास्याम्। यहाँ वार (दिन) नहीं दिया हुआ है।]

[इ० ए० ७, पृ० ११२, नं० ३९, चतुर्थभाग]

११२

श्रवणवेलगोला (विना कालका)-कन्नड।

(देखो "जैन शिलालेख संग्रह प्रथम भाग"।)

११३

लक्ष्मेश्वर—संस्कृत।

[शक ६५१=ई० सन् ७२९]

[यह लेख (मूल) इलियटके हस्तलिखित संग्रह (Elliot's Ms. Collection) की पहली जिल्दमें पृष्ठ २२ पर ८७ पंक्तिके एक बड़े लेखमें दिया हुआ है। उसमेंसे पंक्ति २८ से शुरु होकर पंक्ति ५३ तक

पश्चिमी चालुक्योका शिलालेख है। इसमें पो (पु) लिकेशीवल्लभ, अर्थात् पुलिकेशी प्रथमसे लेकर विजयादित्य सत्याश्रय तककी वंशावली दी हुई है तथा यह भी उल्लेखित है कि अपने राज्यके चौतीसवें वर्षमें जब कि शक संवत्के ६५१ वर्ष व्यतीत हो चुके थे फाल्गुनकी पूर्णिमाके दिन, जब कि उसका विजय स्कन्धावार रक्तपुर नगरमें था, पुलिकर नगरकी दक्षिण सीमापर बसे हुए कर्दम गाँवका दान अपने पिताके पुरोहित उदयदेव पण्डितको, जिन्हें 'निरवद्यपण्डित' भी कहते थे, दिया। ये श्रीपूज्यपादके गिण्य थे तथा मूलसंघ अन्वयकी देवगण शाखाके थे। यह दान पुलिकर नगरमें शङ्ख-जिनेन्द्रके मन्दिरके हितार्थ दिया गया था। कालनिर्देश पक्ति ४२-४४ में यो दिया हुआ है—एकपञ्चाशदुत्तरषट्छतेषु शकवर्षे-ष्वतीतेषु प्रवर्त्तमान-विजयराज्यसंवत्सरे चतुस्त्रिंशो वर्त्तमाने श्री-रक्तपुरमधि-वसति विजयस्कन्धावारे फाल्गुनमासे पौर्णमास्याम्। वार (दिन) इसमें नहीं दिया हुआ है।]

[ई० ए०, ७, पृ० ११२, नं० ३९ (द्वितीय भाग)]

११४

लक्ष्मेश्वर—सस्कृत।

[शक ६५६=७३४ ई०]

स्वस्ति [II]

जयत्याविःकृतं विष्णोर्वराह क्षोभितार्णवं ।

दक्षिणोन्नतदंष्ट्राप्रविश्रान्तभुवन वपुः ॥

श्रीमता सकलभुवनसस्त्यमानमानव्यसगोत्राणा हारीति-पुत्राणा सप्तलोकमातृभिः सप्तमातृभिरभिवर्द्धिताना क्रांतिंकेयपरिरक्षणप्राप्त-कल्याणपरम्पराणा भगवन्नारायणप्रसादसमासादितवराहलञ्छनेक्षणव-शीकृताशेषमहीभृता चालुक्यानां कुलमलकरिष्णोरश्वमेधावभृथस्तानप-वित्रीकृतगात्रस्य श्रीपोलिकेशीवल्लभमहाराजस्य - प्रियसूनुः श्रीकी-र्त्तिवर्मपृथ्वीवल्लभमहाराजस्तस्यात्मजस्य सत्याश्रयश्रीपृथ्वीवल्लभमहा-

राजाधिराजपरमेश्वरस्य प्रियतनयः (यस्य) प्रभावकुलिगढलितपाण्ड्य-
चोल-कैरल-कदम्बप्रमृतिभूभृदुदग्रविभ्रमस्य नित्यावनतकाश्रीपतिमु-
 कुटचुम्बितपादाम्बुजस्य **विक्रमादित्यसत्याश्रयश्रीपृथ्वीवल्लभमहा-**
 राजाधिराजपरमेश्वरस्य प्रियसूनुः (नो.) सकलोत्तरापथनाथमथनोपा-
 र्जितपालिध्वजाटिसमस्तपारमैश्वर्यचिह्नस्य **विनयादित्यसत्याश्रयश्रीपृ-**
 थ्वीवल्लभमहाराजाधिराजपरमेश्वरपरमभट्टारकस्य प्रियात्मज. साहसरस-
 रसिकः पराङ्मुखीकृतशत्रमण्डलस्सकलपारमैश्वर्यव्यक्तिहेतुपालिध्वजाबुज्ज
 (ज्व)लराज्यचिह्नो **विजयादित्यसत्याश्रयश्रीपृथ्वीवल्लभमहाराजाधि-**
 'राज (जः) [II] [तत्-]प्रियसूनोः प्रतिदिनप्रवर्द्धमानया(यौ)वनो (नस्य)
 रिपुमण्डलाक्रान्तिराज्याभ्युदयः (यस्य) कस्तूरीकिङ्गोरविक्रमैकरसो
 (सस्य) **विक्रमादित्यसत्याश्रयश्रीपृथ्वीवल्लभमहाराजाधिराजपरमेश्वर-**
 भट्टारकस्य विजयस्कन्धावारे **रक्तपुरमधिवसति पदपञ्चाशदुत्तरपदच्छ-**
तेषु शकवर्षेष्वतीतेषु प्रवर्द्धमानविजयराज्यसंवत्सरे द्वितीये
वर्त्तमाने माघपौर्णमास्यां मूलसंधान्वयदेवगणोदितः (ताय)
 परमतप(पः)श्रुतमूर्त्तिविगे(शो)करामदेवाचार्य्यशिष्यो (प्याय)
 विजितविपक्षवादिजयदेवपण्डितान्तेवासी (सिने) समुपगतैकवादि-
 त्वादि**श्रीविजयदेवपण्डिताचार्य्याय** जिनपूजाभिद्वृद्धयर्थं बाहु-
 वलिश्रेष्ठिविज्ञापनेन **पुलिकरनगरस्य शङ्खतीर्थवसन्तेर्मण्डनमण्डित**
 तस्य धवलजिनालयस्य जीर्णोद्धारण कृत्वा खण्डस्फुटितनवसस्कार-
 वलिनिमित्तं दानशीलादिप्रवर्त्तनार्थं नगरादुत्तरस्या दिशि गव्यूतिप्रमाण-
 व्यवस्थित **कर्पटितटाकादक्षिणस्या दिशि राजमानेन शतार्द्धनिवर्त्तन-**
 प्रमाणक्षेत्र सर्व्ववार्धापरिहारं दत्तम् [II] तस्य सीमा समाख्यायते ।
 पूर्व्वदिशि तत्साधितकिन्नरपापाणादक्षिणस्यामाग्राया धवलपापाणपार्श्व-

शम्य । पश्चिमस्या दिशि श्वेतपाषाणाढेकशमी उत्तरस्या दिशि आनीलपाषाणात् प्राक्प्रकाशिततटाकात् पूर्वस्या दिशि अरुणपाषाणात् पूर्वोक्तव्यक्तकिन्नरपाषाणसंगता सीमा ॥

स्व दातु सुमहच्छक्य दुःखमन्यस्य पालनम् ।

दानात्पालनाच्चेति (दान वा पालन चेति) दानाच्छ्रेयोऽनुपालनम् ॥

न विष विषमिस्राहुः देवस्व विपमुच्यते ।

विपमेकाकिनं हन्ति देवस्व पुत्र-पौत्रिकम् ॥

स्वदत्ता परदत्ता वा यो हरेत वसुन्धराम् ।

पष्टि-वर्षसहस्राणि विष्टाया जायते कृमिः ॥

प्रथ्यताम् जिनशासनम् [II]

[३० ए०, जिल्द ७, पृ० १०१-१११, नं० ३८ (पक्तियों ६१-८२)]

[यह लेख उस बड़े लेख (न. १२९) का तीसरा व अन्तिम भाग (पक्तियों ६१-८२ तक) है । यह पश्चिमी चालुक्य विक्रमादित्य द्वितीयका लेख है । यह उसके राज्यके द्वितीय वर्षका है जब कि शक वर्ष ६५६ (७३४-५ ई०) व्यतीत हो चुका था, और फलत पूर्व किसी लेख (शिला-लेख या ताम्रपत्र) से यहाँ निश्चय या सुरक्षाके लिये दुहराया गया है । यह लेख उसकी छावनी 'रक्तपुर' से निकाला गया है । 'रक्तपुर' आज-कलका कौन-सा स्थान है, यह नहीं कहा जा सकता ।

इसमें 'पुलिंकर'—पूर्वके दो शिलालेखोंका 'पुलिंगेरे'—शहरकी 'शङ्ख-तीर्थवसति' तथा 'धवलजिनालय' नामके एक दूसरे मन्दिरकी सजावट तथा मरम्मतका उल्लेख है और कहा गया है कि 'जिन' की पूजाके प्रबन्धके लिये कुछ भूमिदान किया गया ।

यह लेख अपने वशावली-परिचायक भागमें पश्चिमी चालुक्योंके शिलालेखोंसे मिलता है । इसमें दो आगेकी पीढ़ियोंका—विजयादित्य और विक्रमादित्य द्वितीयका, जो विजयादित्यके क्रमश पुत्र और पौत्र हैं,—भी उल्लेख है ।]

११५

पञ्चपाण्डवमलै—(आर्कटके निकट)—तामिल

—[?]—

१ नन्दिप्पोत्तरश[^१] कु अय् [म्] वदावट्टु नाग[ण]न्दि-
गुर [वर्]

२. [डरु] क्क पोञ्जिय [क्] किय[र्] पडिम कोट्टुधिटा [ञ्]

३. पु[ग]ळालैमंग[ल]त्तु मरुत्तुवर् मगञ् नारण-

४. ञ् [III]

अनुवाद—नन्दिप्पोत्तरशरके ५ वे (वर्ष) मे,—पुगळालैमङ्गलंके मरुत्तुवरके पुत्र नारणञ् (नारायण) ने नागणन्दि (नागवन्दि) गुरुकी मूर्तिके साथ-साथ पोञ्जियक्कियार्की मूर्ति खुदवाई ।

[EI, IV, no 14, A]

११६

अनहिलवाड-पाटन—संस्कृत ।

(सवत् ८०२= ई० स० ७४५)

यह शिलालेख श्वेताम्बर सम्प्रदायका है ।

[J Burgess and H Cousens, Antiquity of North Gujerat (A SI, XXXII)]

११७

श्रवणवेलगोला (विना कालका)—संस्कृत ।

[देखो “जैन शिलालेख-संग्रह प्रथम भाग” ।]

११८

नन्दी (गोपीनाथ पर्वत)—संस्कृत ।

विना कालनिर्देशका [=संभवत् ७५० ई० (लु० राइस)

[नन्दीमे, गोपीनाथ पहाडीके ऊपर गोपालस्वामी मन्दिरके पासकी चट्टानपर]

स्वस्ति श्रीमत् जित भगवता जिनवर-वृषभेण वृषभेण पुरा कलि-
अवसर्पिण्या द्वावरे युगे लोक-स्थितिरक्षार्थं काङ्क्षित-मनुष्य-जन्मना
पुरुषोत्तमेन सूर्य-वंश-व्योम-सूर्येण महारथेन दाशरथिना राम-स्वामिना
प्रतिष्ठापिताय भगवतोर्हत. परमेष्ठिनः सर्वज्ञस्य चैत्य-भवनाय पश्चात्
पाण्डवजनन्या क्रो(कु)न्तिदेव्या पुनर्नवीकृत-सस्काराय भूमिदेव्या-
स्तिलकायमानाय स्वर्गापवर्ग-पदयोस्सोपान-पदवीभूताय धराधर-धर-
णेन्द्रस्य फणा-मणि-स्त्रीलानुकारिणे धराधरवराय जिनेन्द्र-चैत्य-सान्निव्यात्
पावनाय परम-तीर्थाय तपश्चरण-परायण-महर्षि-गणाध्यासित-कन्दराय
श्रीकुन्दाख्याय (यहाँ वन्द हो जाता हे)

[वृषभ-देवको नमस्कार करनेके बाद,—

प्राचीन समयमें, कलि-अवसर्पिणीके द्वार-युगमें, सूर्यवंशके गगनमें
सूर्यके समान, दशरथके पुत्र महारथ राम-स्वामी (रामचन्द्रजी)के द्वारा
अहन्त परमेष्ठीका यह चैत्य-भवन प्रतिष्ठापित किया गया । बादमें,
पाण्डवोंकी माता कुन्तीने इसे फिरसे नया बनवा दिया ।

भूमिदेवीको तिलकके समान, स्वर्ग और अपवर्ग दोनोंके लिये सीढी,
सब पर्वतोंमें उत्तम, जिनेन्द्र-चैत्य (विम्ब)के सान्निध्यसे पवित्रीकृत,
नरमतीर्थ, जिसमें जगह जगह तपश्चरण-परायण महर्षिगणोंके लिये
कन्दराएँ (गुफायें) बनी हुई हैं, ऐसा 'श्रीकुन्द' नाम पर्वत (यहाँ लेख
खतम हो जाता है ।^१)

[EC, X, Chik-ballapur tl, no 29]

११९

वेलवत्ते—कन्नड़ ।

विना काल-निर्देशका (संभवत लगभग ७५० ई०)

[वेलवत्ते-मैसूर तालुकेमें, बसवेश्वर मन्दिरके पश्चिमकी ओर]

नेरैयर्दि एर्देनु मुने.....ळलियु प्रभिल्ल-वाग्वि विळोरु गुरि.....

१ प्रारम्भके शब्द 'स्वस्ति' को यहाँ अन्तमें लगा देनेसे यह लेख सभाव्य-
रूपसे पूर्ण समझा जा सकता है, क्योंकि 'स्वस्ति'के योगमें चतुर्थी विभक्ति होती
है, जो यहाँ है ।

दु एल्लु द्वे तम्म क्षेमकिरदल्लि-मेच्चिर ताळ्वदु परत्रे यपुदेवदेरु महा-
 प्रभु-गोवपय्यन् इन्त् इळ्ळपु समाधियोळे मुडिपि ताळ्ळिदन्नितमरेन्द्र-
 भोगम् ॥ पदेदोम् श्री-पुरुपय्यल् आम्मु-मोदलोर् कल्लनाडन् अन्दो
 वळेक् एदेयोर् अक्कुडु भूतिमृतुगानो दोत धाण धीक्षे सळे पडेदे...
 पितृ-क्कळ्ळ-मित्र-जनभ काव्यान्य ताळ्ळ् अप्पोडी-नुडियल् वेळ्कुमे पेम्पन्
 ओप्प गुणते तोळमिक्किळ्ळ गोपय्यनम् ॥

[महाप्रभु गोवपय्यको श्रीपुरुपकी तरकसे भूमि-दान मिला वा जौर
 वे (गो प.) समाधिमरणपूर्वक मरे थे ।]

[EC, III, Mysore tl, no 6]

१२०

देवलापुर—कन्नड ।

विना कालनिर्देशका (सभवतः लगभग ७५० ई०)

[देवलापुर (कृष्णहलि तालुका), मारीगुडीके पूर्वमे]

सस्ति श्रीपुरुप-महापृथुवी-राज्यकेये अरड्डि .. रम्मगन्दि
 सिंगं वीक्षे वीळादु अरड्डि-तीर कुडल्लरद गोडे मडिओडे-यम्बर
 आच्चिकय

(पृष्ठभागपर)

नोक्कज-ओडे आगदीकड . . कोडे नेल तेनेन्वक काळेरुक्कु साक्षी
 कुडल्ल पोडुल्लर एळ्ळमडियरु एळ्ळिरियरु मदुगरु कागच्चरु साक्षि आग
 कोडेदु आळ् आळ् किडिगिदोन वारणासिया शासिर-कविले शासिर-
 पार्वरु कोन्द कोले आक्का कोडिगिदोनुकुडुवेडिओनुडि तेने...
 डिद सचोनु . अरड्डिग तळर कुडल्लर आव्वत्ति

[जिस समय इस पृथ्वीपर श्री-पुरुष महाराज राज्य कर रहे थे,—
अरट्टि.....के पुत्र सिंगम् के (जिन) दीक्षा लेनेके बाद, (उसकी मा)
अरट्टितिने कुडलर् किलेके मडि-ओडेके द्वारा शासित प्रदेशमें भूमिदान
किया ।]

[EC, III, Mysore tl, no 25]

१२१

देवरहल्लि—संस्कृत तथा कन्नड ।

शक स० ६९८=७७६ ई०

[देवरहल्लि (देवलापुर प्रदेश)में, पटेल कृष्णय्यके ताम्रपत्रोपर]

(Ib) स्वस्ति जित भगवता गतधनगगनाभेन पद्मनाभेन श्रीम-
ज्जाह्वेयकुलामलव्योमावभासनभास्करः खखड्वैकप्रहारखण्डितमहाशिला-
स्तम्भलव्यवलपराक्रमो दारुणारिगणविदारणोपलव्यव्रणविभूषणभूषितः
काण्वायन-सगोत्र. श्रीमत्कोङ्गणिवर्म्मधर्म्ममहाधिराजः तस्य पुत्रः
पितुरन्वागतगुणयुक्तो विद्याविनयविहितवृत्तिः सम्यक्प्रजापालनमात्राधि-
गतराज्यप्रयोजनो विद्वत्कविकाञ्चननिकपोपलभूतो नीतिशास्त्रस्य वक्तृ-प्रयो-
क्तृकुशलो दत्तकसूत्रवृत्तेः प्रणेता श्रीमान् माधवमहाधिराजः तत्पुत्रः
पितृपैतामहगुणयुक्तोऽनेकचातुर्दन्तयुद्धावाप्तचतुरुदुधिसल्लिखादितयशः
श्रीमद्भरिवर्म्ममहाधिराजः तस्य पुत्रो द्विजगुरुदेवतापूजनपरो
(IIa) नारायणचरणानुव्यातः श्रीमान् विष्णुगोपमहाधिराजः
तत्पुत्रः त्र्यम्बकचरणाम्भोरुहरजःपवित्रीकृतोत्तमाङ्गः स्वभुजवलपराक्रम-
क्रयक्रीतराज्यः कलियुगवलपङ्कावसन्नधर्म्मवृपोद्धरणनित्यसन्नद्धः श्रीमान्
माधवमहाधिराजः तत्पुत्रः श्रीमत्कदम्बकुलगनगभस्तिमालिनः
कृष्णवर्म्ममहाधिराजस्य प्रियभागिनेयो विद्याविनयातिशयपरिपूरिता-
न्तरात्मा निरवग्रहप्रधानशौर्यो विद्वस्तु ? (विद्वत्सु) प्रथमगण्यः श्रीमान्

क्रोङ्गणिमहाधिराजः अविनीतनामा तत्पुत्रो विजृम्भमाणशक्तित्रयः
 अन्दरि-आलचूरू-प्पोरुळरें-पेळ्ळनगराद्यनेकसमरमुखमखड्डुतप्रहतशूर-
 पुरुपपशूपहारविघसविहस्तीकृतकृतान्ताग्निमुखः किरातार्जुनीयपञ्चदश-
 सर्ग- (IIb) टीकाकारो दुर्विनीतनामधेयः तस्य पुत्रो दुर्धा-
 न्तविमर्दविमृदितविश्वम्भराधिपमौलिमालामकरन्दपुञ्जपिञ्जरीक्रियमाणचरण-
 युगलनलिनो मुष्करनामधेयः तस्य पुत्रश्चतुर्दशविधास्थानाधिगत-
 विमलमतिः विशेषतोऽनवशेषस्य नीतिशास्त्रस्य वक्तृप्रयोक्तृकुशलो रिपुति-
 मिरनिकरनिराकरणोदयभास्करः श्रीविक्रमप्रथितनामधेयः तस्य पुत्रः
 अनेकसमरसम्पादितविजृम्भितद्विरदरदनकुलिशाघात - व्रणसरूढभास्वद्वि-
 जयलक्षणलक्षीकृतविशालवक्षस्थल, समधिगतसकलशास्त्रार्थतत्त्वस्समा-
 राधितत्रिवर्गो निरवद्यचरित् प्रतीदिनमभिवर्द्धमानप्रभावो भूविक्रम-
 नामधेयः

अपि च—

नानाहेतिप्रहारप्रविघटितभटोरष्कवाटोत्थितास्रग्-
 धारास्त्राद-ग्र(IIIa) मत्तद्विपशतचरणक्षोदसम्मर्दभीमे ।
 सग्रामे पल्लवेन्द्रं नरपतिमजयद्यो विलन्दा-मिधाने
 राज-श्रीवल्लभाख्यस्समरशतजयावाप्तलक्ष्मीविलासः ॥
 तस्यानुजो नतनरेन्द्रकिरीटकोटि-
 रत्नार्कदीधितिविराजितपादपद्मः ।
 लक्ष्म्या स्वयम्भृतपतिर्ज्ञयकामनामा
 शिष्टप्रियोऽरिगणदारणगीतकीर्तिः ॥

तस्य क्रोङ्गणिमहाराजस्य शिवमारापरनामधेयस्य पौत्रः सम-
 वनतसमस्तसामन्तमुकुटतटघटितवहलरत्नविलसदमरधनुषखण्डमण्डितच-

रणखमण्डलो नारायण[चरण]निहितभक्तिः शूरपुरुषतुरगनरवारणघटासं-
घट्टदारुणसमरगिरसि निहितात्मकोपो मीमकोपः प्रकटरतिसमयसमनु-
वर्त्तनचतुरयुवतिजनलोकधूर्त्तोऽलोकधूर्त्तः सुदुर्द्धरानेकयुद्धमूर्धूलव्यविजय-
सम्पद हितगजघ्न (IIIb) टाकेसरी राजकेसरी । अपि च ।

यो गङ्गान्वयनिर्मलाम्बरतलव्याभासनप्रोल्लसन-
मार्त्तण्डोऽरिभयङ्करः शुभकरस्सन्मार्गरक्षाकरः ।
सौराज्य समुपेत्य राज्यसमितौ राजन् गुणैरुत्तमै-
राज-श्रीपुरुषश्चिरं विजयते राजन्य-चूडामणिः ॥
कामो रामासु चापे दशरथनयो विक्रमे जामदग्न्यः
प्राज्यैश्वर्ये बलारिर्विहुमहसि रविस्त्व-प्रभुत्वे धनेश ।
भूयो विख्यातशक्तिस्स्फुटनरमखिल प्राणभाज विधाता
धात्रा सृष्टः प्रजाना पित(पति)रिति कवयो य प्रशंसन्ति नित्य ॥

तेन प्रतिदिनप्रवृत्तमहादानजनितपुण्याहवोपमुखारितमन्दिरोदरेण
श्रीपुरुषप्रथमनामवेयेन पृथुवीक्रोङ्गणिमहाराजेन अष्टानवत्युत्तरे-
[पु] पद्च्छतेषु शकवर्षेष्वतीतेष्व्वात्मनः प्रवर्द्धमानविजयैश्वर्य्यै
संवत्सरे पञ्चाशत्तमे प्रवर्त्तमाने मान्यपुरमधिव-(IVa)सति
विजयस्कन्धावारे श्रीमूल-मूलगणाभिनन्दितनन्दिसङ्घान्वये एरेगित्तू-
र्त्तान्नि गणे पुल्लिकल्गच्छे स्वच्छतरगुणकिरण[ण]प्रततिप्रह्लादितसकल्लोकः
चन्द्र इवापरः चन्द्रनन्दीनाम गुरुरासीत् तस्य शिष्यस्समस्तविबुधलो-
कपरिरक्षणक्षमात्मशक्ति, परमेश्वरलालनीयमहिमा कुमारवद्वितीय, कुमार-
ण(न)न्दी नाम मुनिपतिरभवत् तस्यान्तेवासी समधिगतसकलतत्त्वार्थ-
समर्थितबुधसार्थसम्पत्सम्पादितकीर्त्तिः कीर्त्त(त्तिं)नन्दाचार्यो नाम
महामुनिस्समजनि तस्य प्रियशिष्यः शिष्यजनकमलाकरप्रबोधनकः

मिथ्याज्ञानसन्ततसन्तमससन्तानान्तकसद्धर्मव्योमात्रभासनभास्करः **विम-**
लचन्द्राचार्यस्समुदपादि तस्य (IV b) महर्षेर्द्धम्मोपदेशनया
 श्रीमद्भाणकुलकलः सर्व्वतपमहानन्दीप्रवाहः महादण्डमण्डलाप्रखण्डितारि-
 मण्डलद्रुमपण्डो दुण्डुप्रथमनामधेयो **नीगुन्द**युवराजो जज्ञे तस्य प्रियात्मजः
 आत्मजनितनयविशेषनिःशेषीकृतरिपुलोकः लोकहितमधुरमनोहरचरितः
 चरितार्थत्रिकरणप्रवृत्तिः **परमगूल**प्रथमनामधेयश्रीपृथुवीनीगुन्दराजो-
 ऽजायत पल्लवाधिराजप्रियात्मजाया सगरकुलतिलकात् **मरुवर्म**णो
 जाता **कुन्दा**च्चिनामधेया भर्तृभवन आवभूव भार्या तथा सततप्रवर्त्तित-
 धर्मकार्य्या निर्मिताय **श्रीपुरो**त्तरदिशमलङ्कुर्वते **लोकतिलक**नाम्ने
जिनभवनाय खण्डस्फुटितनवसंस्कारदेवपूजादानधर्मप्रवर्त्तनार्थं तस्यैव
 पृ(Va)**थिवीनीगुन्दराज**स्य विज्ञापनया महाराजाधिराजपरमेश्वरश्री-
 जसहितदेवेन नीगुन्दविषयान्तर्पाति **पोन्नळ्ळि**नामग्रामस्सर्व्वपरिहारोपेतो
 दत्तः तस्य सीमान्तराणि पूर्व्वस्या दिशि नोल्लिवेळदा वेळ्गल्-मोर्दुदि पूर्व्व-
 दक्षिणस्या दिशि पण्यङ्गेरी दक्षिणस्या दिशि वेळ्गळ्ळिगेर्रेया ओळ्गेर्रेया
 पल्लदा कूळ् दक्षिणपश्चिमायान्दिशि जैदरा केय्या वेळ्गल्-मोर्दु पश्चि-
 मायान्दिशि पोङ्गेवि ताल्लुवायराकेरी पश्चिमोत्तरस्या दिशि पुणुसेया
 गोङ्गेगाला कळ्कुप्पे उत्तरस्या दिशि सामगेरेया पोळ्ळदा पेर्म्मुरिक्कु उत्तर-
 पूर्व्वस्या दिशि कळ्म्बेत्ति-गट्टु इमान्यन्यानि क्षेत्रान्तराणि दत्तानि दुण्डुस-
 मुद्रदा वयल्लुर् किर्रुदारीमेगे **पदिर्कण्डुगं** मण्ण **पळेया एरेनळ्ळूरा**
 ऊर्प्पालु ओर्कण्डुग **श्रीवुरदा दु** (Vh) **ण्डुगामुण्डरा** तोण्टदा पडु-
 वायोन्दुतोण्ट श्रीवुरदा वयल्लुर् कर्मर्गङ्गिनिळ्ळि इर्कण्डुग कळ्ळनि पेर्गेर्रेया
 केळ्गे आर्रुगण्डुगमेरे पुल्लिगेर्रेया कोयिल्लगोडा एडे इर्पत्तुगण्डुग व्वेडे
 आदुवु श्रीवुरदा वडगण पडुवण कोणुळ्ळण् **देवङ्गेरि** मदमने ओन्द

मूयत्ता-ओन्दु मनेय मनेनाणमस्य दानसाक्षिणः अद्यादश प्रकृतयः ॥
 (VIa) अस्य दानस्य साक्षिणः पण्णवतिसहस्रविपयप्रकृतयः योऽस्या-
 पहर्त्ता लोभात् मोहात् प्रमादेन वा स पञ्चभिर्महद्भिः पातकैस्सयुक्तो
 भवति यो रक्षति स पुण्यभाग्भवति अपि चात्र मनु-गीताः श्लोकाः

स्वदत्ता परदत्ता वा यो हरेत वसुन्धराम् ।
 पष्टिं वर्षसहस्राणि विष्टाया जायते कृमिः ॥
 स्व दातुं सुमहच्छक्य दुःखमन्यस्य पालनम् ।
 दान वा पालन वेति दानाच्छ्रेयोनुपालनम् ॥
 बहुभिर्व्यसुधा भुक्त्वा राजभिस्सगरादिभिः ।
 यस्य यस्य यदा भूमिः तस्य तस्य तदा फलम् ॥
 देवस्य तु विप वोरं न विप विपमुच्यते ।
 विपमेकाकिन हन्ति देवस्य पुत्र-पौत्रकम् ॥

सर्वकलाधारभूतचित्रकलाभिज्ञेन विश्वकर्म्मचार्य्येणोद जासन
 लिखित चतुष्कण्डुकत्रीहित्रीजायापमात्रं द्विकण्डुककङ्कुक्षेत्र तदपि ब्रह्म-
 देयमिव रक्षणीयम् ॥

[इस लेखमें सर्वप्रथम गङ्गनरेशोकी राजपरम्परा बताई गई है। वह
 निम्न भाँति थी.—

१ काण्वायनमगोत्रीय कोङ्गणिवर्म्म-धर्म्म-महाराजाधिराज ।

इनके पुत्र—

२ माधव-महाधिराज, ये दत्तकसूत्र-वृत्ति (टीका)के प्रणेता थे ।

इनके पुत्र—

३ हरिवर्म्म-महाधिराज ।

इनके पुत्र—

४ विष्णुरोप-महाधिराज ।

इनके पुत्र—

शि० ८

हृत-बलावलो-तप. ..यश्च अमृतमयो मृत्याना सुखमयो मित्राणा सुधामयो
 रामाणामुत्साहमयः प्रजाना विनयमयो गुरूणा नयमूत्सव (६ अ)
 लद्-वृत्तीना अग्रणी रसिकाना स्रष्टा काव्य-रचनाना उपदेष्टा नयाना
 द्रष्टा स्वामि-कार्याणा विद्वेष्टा कृन-दोषाणा यष्टा महा-मखाना परिमार्ष्टा
 पापाना प्रष्टा निर्माण-हेतूना परिकृष्टा श्रितागमाम् ।

अपि च ।

उदन्वानिच गाम्भीर्ये विचस्वानिच तेजसि ।
 जगलदमेच लावण्ये नभस्वानिच यो बले ॥
 मनोभूरिच सौरूप्ये मद्यवानिच सम्पदि ।
 सुरमन्त्रीच गाल्खार्थे उजनेच च यो नये ॥
 ग्रामे पुरे नदी-तीरे गिरौ द्वीपे सरोऽन्तिके ।
 प्रावर्त्तयत् स्व-कीर्त्याभा योऽनेऋ वसति प्रभुः ॥
 स मान्यनगरे श्रीमान् श्रीविजयोऽकार [य] च्छुभम् ।
 जिनेन्द्र-भवन तुङ्ग निर्मल स्व-महसु-समम् ॥

तस्य च प्रसाधिताशेष-सामन्त-चन्द्रस्य श्री-भारसिंहस्यानुज्ञया
 श्रीविजयो महानुभावः किपु-वेकूर-ग्राममादाय मान्यपुर-विनिर्मिताय
 भगवदर्हदायतनाय अदादिति तस्य च ग्रामस्य (यहाँ सीमाओंकी
 विस्तृत चर्चा आती है) ।

अपि च ।

आसीद(त्)-तोरणाचार्यः कोण्डकुन्दान्प्रयोद्धवः
 स तै [द] द्विपये धीमान् शादमलीग्राममाश्रित. ॥
 निराकृततमोऽरातिः स्थापयन् सत्पथे जनान् ।
 स्वतेजोदयोतित-क्षोणिः चण्डार्चिचरिच यो वभौ ॥

तस्याभूत् पुष्पनन्दीति शिष्यो विद्वान् गणाग्रणीः ।

तच्छिष्यश्च प्रभाचन्द्रः तस्येय वसति. कृता ॥

(३ पंक्तियोमें दानकी चर्चा है)

इदप शक-वर्ष एल्लनूरा पत्तोम्भतु वर्षमुं मूषु तिङ्गल्लमापाढ-
शुक्ल-पक्षदा पञ्चमियुमुत्तराभाद्रपतेमुं सोमवारमुं शासन निर्मित ।
अस्य दानस्य साक्षिणः पण्णवति-सहस्र-विपय-अकृतय- योऽस्यापहर्त्ता
लोभान्मोहात् प्रमादेन वा स पञ्चभिर्महद्भिः पातकैस्संयुक्तो भवति
यो रक्षति स पुण्यवान् भवति

अपि चात्र मनु-नीताः श्लोका.

खदत्तां पर-दत्ता वा यो हरेत् वसुंधराम् ।

(७ अ) पष्टि-वर्ष-सहस्राणि विष्टा [या जा] यते कृमि. ।

ख दातु सुमहच्छक्य दु खमन्यस्य पालनम् ।

दान वा पालन वेति दानाच्छ्रेयोऽनुपालनम् ॥

वहुभिर्वसुधा मुक्ता राजमित्सगरादिभि ।

यस्य यस्य यदा भूमिः तस्य तस्य तदा फलम् ॥

ब्रह्मस्व तु विष घोर न विष विप्रमुच्यते ।

विषमेकाकिन हन्ति देव-स्व पुत्र-पौत्रकम् ॥

सर्व-कलाधारभूत-चित्र-कलाभिज्ञेय-विश्वकर्म्म-चार्य्येणोद शासन
लिखित चतुष्कण्डुक-त्रीहि-त्रीजावाप-क्षेत्रं द्वि-कण्डुक-कङ्कु-क्षेत्र तदपि
देव-भोगमिति रक्षणीयम् ॥

[जाह्नवी (गङ्गा)-कुलके स्वच्छ आकाशमे चमकते हुए सूर्य; काण्वा-
यन-सगोत्रके

(१) श्रीमत्-कोङ्कणिवर्म-धर्म-महाधिराज थे ।

(२) उनके पुत्र श्रीमान् माधव-महाधिराज थे ।

- (३) उनके पुत्र श्रीमद् हरिवर्म-महाधिराज थे ।
 (४) ,, ,, श्रीमान् विष्णुगोप-महाधिराज थे ।
 (५) ,, ,, माधव-महाधिराज थे ।

(६) उनके पुत्र, जो कदम्ब-कुलवशीय कृष्णवर्म-महाधिराजकी प्रिय वहिनके पुत्र थे, अविनीत नामके श्रीमान् कोङ्गणि महाधिराज थे ।

(७) उनके पुत्र दुर्विनीत थे । इन्होंने अन्दरि, आलतूर, पोरुलणे, पेळ्न्गर और दूसरे स्थानोके युद्धोको जीता था । इन्होंने किराताज्जुंतीय के १५ सर्गोंपर टीका की थी ।

(८) इनके पुत्र सुष्कर थे ।

(९) उनके पुत्र श्रीविक्रम थे, ये चौदहो विद्याओसे पारङ्गत थे ।

(१०) उनके पुत्र भूविक्रम थे । इन्होंने विलन्दकी भयानक लडाईमें राजा पल्लवेन्द्रको जीता था, और सौ लडाइयोसे विजय लाभ करनेसे इनको 'राजश्रीवल्लभ' भी कहते थे ।

(११) उनका छोटा भाई नव-काम था ।

(१२) शिवमार-कोङ्गणि महाराजका नाती श्रीपुरुष था, उन्हें पृथिवी-कोङ्गणि महाधिराज भी कहते थे ।

(१३) उनके पुत्र, प्रसिद्ध गगवंशके स्वच्छ आकाशके सूर्य, कोङ्गणि-महाराजाधिराज परमेश्वर श्री-शिवमार-देव थे । इनकी बहुत-सी प्रशंसाका वर्णन है ।

(१४) उनके पुत्र, मारसिंह थे ।

जब वे अखण्ड गङ्ग-मण्डलपर राज्य कर रहे थे, उनका एक श्रीविजय नामका सेनापति था । उसकी प्रशंसा । उसने मान्य-नगरमें एक शुभ, विशाल जिनमन्दिर बनवाया । उसे श्रीमारसिंहसे किपु-वेङ्कूरु गाँव मिला था, वह उसने इसी अर्हत्-मन्दिरको भेंट कर दिया । इस गाँवकी सीमायें ।

शालमली गाँवमें रहनेवाले, कोण्डकुन्दान्वयके तोरणाचार्य्य थे । उनके शिष्य पद्मनन्दि थे । उनके शिष्य प्रभाचन्द्र थे, जिन्होंने अपना आवास यहीं बना लिया था । जडियके तालावोकी नीचेकी जो जमीनें उनको दी गई थीं उनकी विगत । यह शासन (लेख) शक वर्ष ७१९ के ३ महीने चाद, आपाह शुक्ला पञ्चमी, उत्तरभाद्रपद, सोमवारको निकला था ।

इस दानके साक्षी-९६००० के विद्यमान अफसर (अधिकारी गण) ।
वे ही श्रापात्मक श्लोक ।

विश्वकर्माचार्यने इस शासनको लिखा था । प्रभाचन्द्र देवको दी गई
भूमिकी विगत ।]

[EC, IX, Nelamangala, tl, n° 60]

१२३

मन्त्रे—संस्कृत ।

शक ७२४=८०२ ई०

[मन्त्रेमें, ज्ञानभोग नरहरियप्पके अधिकारके तान्नपत्रोपर]

(१ व) स वोऽव्याद् वेधसा धाम यन्नाभि-कमल कृतम् ।

हरश्च यस्य कान्तेन्दु-कलया कमलङ्कृतम् ॥

भूयोऽभवद् बृहदुरुस्थल-राजमान-

श्री-कौस्तुभायत-करैरुपगूढ-कण्ठः ।

सत्यान्वितो विपुल-त्राहु-विनिर्जितारि-

चक्रोऽप्यकृष्ण-चरितो भुवि कृष्ण-राजः ॥

पक्ष-च्छेद-भयाश्रिताखिल-महा-भूमृत्-कुल-भ्राजितात्

दुर्लभ्यादपरैरनेक-विपुल-भ्राजिष्णु-रत्नान्वितात् ।

यश्चालुक्थकुलादनून-विबुधा[...]श्रया [द्] वारिधेः

लक्ष्मीं मन्दरवत् स-लीलमचिरादाकृष्टवान् वल्लभः ॥

तस्याभूत् तनयः प्रता [प]-विसैरैराक्रान्त-दिङ्-मण्डलश्

चण्डाशोस्सदृशोऽप्य-चण्ड-करतःप्रह्लादित-क्षमाधरो ।

धोरो धैर्य्य-धनो त्रिपक्ष-वनिता-वक्त्राम्बुज-श्री-हरो

हारीकृत्य यशो यदीयमनिग दिङ्-नायिकाभिर्धृतम् ॥

ज्येष्ठोल्लवन-जातयाप्यमलया लक्ष्म्या समेतोऽपि सन्
 योऽभून्निर्मल-मण्डल-स्थिति-युतो दोषाकरो न क्वचित् ।
 कर्णाधिः-कृत-दान-सन्तति- (२ अ) भृतो यस्यान्य-दानाधिकम्
 दानं वीक्ष्य सु-लज्जिता इव दिशा प्रान्ते स्थिता दिग्-गजाः ॥
 अन्यैर्न जातु विजित गुरु-शक्ति-सार
 आक्रान्त-भूतलमनन्य-समान-मानम् ।
 येनेह वद्धमवलोक्य चिराय गङ्गान्
 दूरे स्व-निग्रह-भिवेव कलिः प्रयातः ॥
 एकत्रात्म-बलेन वारिनिधिनाप्यन्यत्र रुध्वा घनान्
 निष्कृष्टासि-भटोद्धतेन विहरद्-ग्राहातिभीमेन च ।
 मातङ्गान् मद-वारिनिर्झर-मुच. प्राप्यानतात् पल्लवात्
 तच्चित्र मद-ल्लेशमप्यनुदिन यस्सृष्टवान् न क्वचित् ॥
 हेला-स्त्रीकृत-गौड-राज्य-कमलान् चान्तःप्रविश्याचिराद्
 लन्मार्गे मरु-मध्यम-प्रतिवलैर्यो वत्सराजं वलैः ।
 गौडीय शरदिन्दु-पाद-धवल-च्छत्र-द्वय केवलम्
 तस्मादाहृत-तद्-यशोऽपि ककुभा प्रान्ते स्थित तत्-क्षणात् ॥
 लब्ध-प्रतिष्ठमचिराय कलिं सुदूरम्
 उत्सार्य्य शुद्ध-चरितैर्वरणी-तलस्य ।
 कृत्वा पुनः कृत-युग-श्रियमप्यशेषम्
 चित्र कथ निरुपमः कलि-वल्लभोऽभूत् ॥
 प्राभू-(२ ब)द् धर्म-परात् ततो निरुपमादिन्दुर्थथा वारिधेः
 शुद्धात्मा परमेश्वरोन्नत-शिरस्-ससक्त-पादस्तथा ।
 पद्मानन्दकर, प्रताप-सहितो निल्योदयस्सोन्नतेः
 पूर्वद्वैरिव भानुमानभिमतो गोविन्दराजः सताम् ॥

यस्मिन् सर्व्व-गुणाश्रये क्षितिपतौ श्री-राष्ट्रकूटान्वयो
 जाते यादव-वशवन्मधुरिपावासीद् अलङ्कृत् परं ।
 दृष्ट्वा सावधयः कृनास्तु-सदृशाः दानेन येनोद्धता,
 युक्ताहार-विभूषिता स्फुटमिति प्रत्यर्त्विनोऽप्यर्त्विनः ॥
 यस्याकारमनानुप त्रिभुवन-व्यापत्ति-रक्षोचितम्
 कृष्णस्यैव निरीक्ष्य यच्छति पठ यथाधिपत्य भुवः ।
 आस्ता तात तत्रेयमप्रतिहता दत्ता त्वया कण्ठिका
 किन्वाज्ञैव मया धृतेनि पितर युक्त स तत्राम्यधात् ॥
 तस्मिन् स्वर्ग-विभूषणाय जनने याते यशश्शेषताम्
 एकीभूय समुद्यतान् वसुमती-संहारमाधिन्सया ।
 विच्छायान् सहसा व्यधत् नृपतीनेकोऽपि यो द्वादश
 ख्यातानप्यधिक-प्रताप-विसरैस्सवर्त्त (३ अ) कोल्कानिव ॥
 येनात्यन्त-दयालुनोप्र-निगल-क्लेशादपास्यानतस्
 स्व देज गमितोऽपि दर्प-विसरद् यः प्रा []कूल्ये स्थितः ।
 लीला-भ्रू-कुटिले ललाट-फलके यावच्च नालक्ष्यते
 विक्षेपेण विजित्य तावदचिरादावद्-गङ्गः पुनः ॥
 सन्धायासि डिलीमुखान् स्व-समयात् वाणासनस्योपरि
 प्राप्त वद्वित-त्र्यु-जीव-विभव पद्माभिवृद्ध्यान्वितम् ।
 सर्व्व क्षेत्रमुदीक्ष्य यः शरद्-ऋतु पर्जन्यवद् गूर्जरो
 नष्ट कापि भयात् तथापि समय स्वप्नेऽप्यपश्यन् ... ॥
 यत्पादानति-मात्र क-शरणानालोक्य लक्ष्मी-विया
 दूरान् मालव-नायको नय-परो यत्रानिवद्वाञ्छलि ।
 यो विद्वान् बलिना सहाल्प-त्रलवान् स्पर्द्धां न धत्ते पराम्
 नीतेस्सूतिरसौ यदात्म-परयोराधिक्य-सम्बेदनम् ॥

विन्ध्याद्रेः कटके निविष्ट-कटकः श्रुत्वा चैर्य्यत्रिजैः
 स्व देग समुपागतः भ्रुवमिव ज्ञात्वा धिया प्रेरितः ।
 माराशर्व-महीपतिभृतमगादप्राप्त-पूर्वा (३ व) पैर
 व्यस्येच्छामनुकूल[.....]धनैः पाद-प्रणामैरपि ॥
 नीत्वा श्रीभवने घनाघन-घन-व्याप्ता परं प्रावृपम्
 तस्मादागतवान् सम निज-बलैरा-तुङ्गभद्रा-तटम् ।
 तत्रस्थः स्व-करागत प्रकृतिमिर्निर्गेषमाकृष्टवान्
 विक्षेपैरपि चित्रमानत-रिपुर जग्राह त पल्लवात् ॥
 लेखाहार-मुखोदितार्द्ध-वचसा यत्रा.....वेङ्गीश्वरो
 नित्यं किङ्करवद् व्यधादविरत मर्म स्वमात्मेच्छया ।
 बाह्यालि-वृत्तिस्य येन रचिता व्योमावलग्न्या रुचम्
 चित्र मौक्तिक-मालिकामिव धृताम्मूर्द्ध [न्] इ स्व-तारा-गणैः ॥
 सन्त्रासात् पर-चक्र-राजकमगात् तच्छुद्ध-सेवा-विधि-
 व्यावद्वाञ्जलि-शोभितेन शरण मूर्ध्ना यदङ्घ्रि-द्वयम् ।
 यथादत्त परार्द्ध-भूपण-गणैर्नालङ्कृत तत् तथा
 मा भैश्चिरिति सत्य-पालित-यज्ञसु-स्थित्या यथा तद्विरा ॥
 तेनेदमनिल-विद्युच्चञ्चलमवलोक्य जीवितमसारम् ।
 क्षिति-दानमपरपुण्य प्रवर्त्तित देव-भोगाय ॥

स (४ अ) च परम-भट्टारक-महाराजाधिराज-परमेश्वर-श्रीमद्-धारा-
 वर्षदेव-पादानुध्यात-परम-भट्टारक-महाराजाधिराज-परमेश्वर-पृथिवी-बल्लभ
 प्रभूतवर्ष-श्रीमत्-गोविन्दराजदेवः ।

भ्राताभूत् तस्य शक्ति-त्रय-नमित-मुचः शौचकम्भाभिधानो
 ज्येष्ठस्यागाभिमान-प्रभृति-गुण-गणाधः-कृतादि-क्षितीगः ।

राजा राजारि-ल्लोकास्थिर-तिमिर-घटा-पाटने शुद्ध-वृत्तः

स श्रीमान् दिक्षु कीर्तिशशिविशद-रुचिस्थापिता येन भूयः ॥

तेन शौच-कर्म-देवेन रणावलोक्यापर-नाम्ना राजाधिराज-परमेश्वर-
श्रीप्रभूतवर्षानुज्ञानुमतेन

क्रोण्डकुन्दान्वयोदारो गणोऽभूत् भुवन-स्तुत ।

तदैदत्-विषय-विल्यात शालमली-ग्राममावसन् ॥

आसीत् [.....]ता(तो)रणाचार्य्यस्तप.-फल-परिग्रहः ।

नत्रोपगम-सम्भूत-भावनापास्तकल्पमः ॥

पण्डित. पुष्पणन्दीति वभूव भुवि विश्रुत. ।

अन्तेवासी मुनेस्तस्य स-कलश्चन्द्रमा इव ॥

प्रतिदिवस-भवद्-वृद्धि-निरस्त-दोषो व्यपेत-हृदय-मल. ।

परिभूत-चन्द्र-विम्बस् तच्छिष्योऽभूत् प्रभाचन्द्रः ॥

(४ व) तस्य धर्मोपदेश-परितुष्ट-हृदयतया च सत्येन धर्म-तनयः
स्फुरत्प्रतापेन पद्मिनी-बन्धु दानेन सुर-द्विरट जयतितरा यद्विश्रयो भर्ता

विविशुरगुणा रिपूणाम् ।

हृदयान्यपि यस्य सत्य-शौर्याद्या. ॥

तेषामुरस्थल-स्थित-

कमलामाक्रष्टुमि [व] रम्यम् ॥

तस्य विष्णोरिव बलि-प्रताप-निर्वापणोद्यत-पराक्रमस्य पराक्रम-बलो-
क्तस्य प्रताप-निरन्तरतयाक्रान्त () समस्त-सुभट-लोकस्य केसरिण इव
विक्रमैकर [स] स्य श्री-वृष्पय्य-इति-सु-गृहीत-नाम्नः कुमारस्य वीर-
श्री-लतारोहण-कल्पवृक्षायमानभुजदण्ड-दण्डितारते.प्रियात्मजस्य विज्ञा-
पना कर्णोपजात-कुतहलतया च । राजाधिराज-परमेश्वर-श्री-निरुपमदेव
प्रभूतवर्ष-प्रसादोपलब्ध-महा-सामन्ताधिपत्यालङ्कृत-महानुभावेन भगवद-
र्हा [द्]-भटारक-चरण-परिचरण-प्रणत-पवित्रितोत्तमाङ्गेन महा-विजय-विक्षे-

धापति-श्री-श्रीविजयराजेन निर्मापिता-(५ अ) य जिन-भवनाय
मान्यपुरीपश्चिम-दिगङ्गना-ल्लाम-भूताय चतुर्ग्विशत्युत्तरेषु सप्त-
शतेषु शक-वर्षेषु समतीतेष्व्वात्मनः प्रवर्द्धमान-विज [य] संवत्सरे
मान्यपुरमधिवसति विजयस्कन्धावारे सोम-ग्रहणे पुष्य-नक्षत्रे शु [भ]
लये वार-विलासिनी-विरचित-नृत्त-गीत-त्रा(वा) य-त्रलि-विलेपन-देव-
पूजा-नव-कर्म-प्रवर्त्तनार्थ एदेदिण्डे-विषय-मध्य-वर्त्ति-पेर्वीडियूर-नाम
ग्राम सर्व्व-बाध-परिहार उदक-पूर्व्व दत्तः तस्य सीमान्तर (यहाँ सीमाये
आती है) पादरि-रुरुळ् पत्तु-भागदोलोन्दु-भाग देवर्गे कोट्टु
(हमेशाके चे ही अन्तिम श्लोक) ।

[विष्णुसे रक्षाकी कामना ।

पृथ्वीपर कृष्ण-राज विद्यमान थे । उनके धोर नामका एक पुत्र था ।
उसके दूसरे नाम कलि-वल्लभ, वत्सराज, निरुपम थे ।

गुणी निरुपमसे गोविन्दराज उत्पन्न हुआ । जब यह राजा हुआ तो राष्ट्र-
कूट-वज्र दूसरे लोगो (वंशो) की प्रतियोगितासे ऊपर उठ गया । उसने
गगाको बन्धनसे छुड़ाया था, लेकिन अपने वमण्डी स्वभावके कारण शीघ्र
ही पुन बाँध लिया गया । उसकी बहुत-सी प्रशंसा । उसके पराक्रमोका
वर्णन । उसने देव-भोग (मन्दिरके लिये दान) रूपसे भूमिदान किया ।
उसके बड़े भाईका नाम शौच-कम्भ था । इसी शौच-कम्भका दूसरा
नाम रणावलोक था ।

- 1) इस-विषय (देश) में प्रसिद्ध शाबमली नामक गाँवमें कोण्डकुन्दा-
न्वयके उदारगणमें तोरणाचार्य्य हुए । पुष्पनन्दि-पण्डित उनके शिष्य थे ।
उनके शिष्य प्रभाचन्द्र थे । उनके एक वप्पय्य नामके भक्त श्रावक थे ।
उनका पुत्र शत्रुओका दण्ड देनेवाला था । अपने प्रिय पुत्रकी प्रार्थना
सुनकर उन्होंने, मान्यपुरके पश्चिममें जो जिनमन्दिर खड़ा हुआ था उसके
लिये, उसके शासक श्रीविजय-राजकी कृपासे शक सं० ७२४ के वीतने पर,
अपने ही विजय-वर्षमें, मान्यपुरमें पड़े हुए अपने विजयी कैम्प (स्कन्धा-

वार) में एदेदिण्डे-विषयका पेर्वडियूर नामका गाँव, सर्वे करोसे मुक्त करके, जलधारापूर्वक दानमें दिया । इस गाँवकी सीमायें । पदरियूरमें पंच भाग दानमे दिया गया । वे ही शापात्मक श्लोक ।]

[NC, IX, Nelamangala tl n° 61]

१२४

कडव—संस्कृत तथा कन्नड ।

(सन्देहास्पद)

[शक ७३५=८१२ ई०]

राष्ट्रकूटवंशोद्भव द्वितीय प्रभूत्वर्ष महीपतिका दानपत्र ।

- १ ॐ स्वस्ति [II] विस्तृत-विशद-यशो-वितान-विशदीकृताशाचक्र-
वाल करवाल-प्रवालावतंस-विराजित-जयलक्ष्मी-समालि-
- २ गित-दक्ष-दक्षिणा-भूरि-भुजार्गल. गलित-सार-शौर्य-रस-विस-
र-विसखलीकृतोग्रा-
- ३ रि-वर्ग. वर्ग-त्रय-वर्गौक-निपुणोऽचलाभार-चाव्वी-विशेष-
निर्जितोवर्गी-मण्डलोत्सवोत्पादनपर.
- ४ पर-भूपाल-मौलि-माला-लीटाङ्घ्रि-द्वन्द्वारविन्दो गोविदराजः ॥
तस्य-सू-
- ४'नु. सुतरुण-भावोदय-दया-दान-दीनेतर-गुण-गण-समर्पित-बन्धु-
जन सक-
- ६ ल-कलागम-जलधि-कलशयोनि मनुदर्शितमागर्गानुगामी राष्ट्र-
कूट-कुला-
- ७ मल-गगन-मृगलाञ्छन. बुधजन-मुख-कमलाशुमाली मनोह-
- ८ र-गुण-गणालकार-भार ककराज-नामधेय. [II] तस्य पुत्रः
ख-वंशानेक-नृ-
- ९ प-सवात-परम्पराभ्युदय-कारण. परम-ऋषि-ब्राह्मण-भक्ति-

नात्पर्य-

- १० कुशलः समस्त-गुण-गणाधिष्णो^१ विल्यात-सर्व-लोक-निरुपम-
स्थिर-भाव-नि(वि)जिता-
- ११ रि-मण्डल. यस्यैममासीत् ॥ जित्वा भूपारि-वर्गान्य-कुशल-
तया येन रा-
- १२ ज्य द्द्वन यः कष्टे मन्वादिमार्गे स्तुत-धवल-यशा न क्वचिद्
यागपूर्वः^२ [१] सप्रामे यस्य जेषा
- १३ स्व-मुज-कर-वल-प्रापिता या जयश्रीर्यस्मिञ्जाते स्ववशोभ्युदय-
धवलता यातवान्कर्कतेजः [॥ १] अ-
- १४ साविन्द्रराज-नामधेयः [॥] तस्य पुत्रः स्व-कुल-ललामायमानो
मानधनो दीनाना-

दूसरा पत्र; पहली वाजू.

- १५ थ-जनाह्लादनकर-दान-निरत-मनोवृत्ति हिमकर इव सुखकर-
करः कुलाचल-समु-
- १६ टाय इव सुधाधार-गुण-निपुण हिमशैल-कूट-तट-स्थापित
यशस्तम्भलिखिता-
- १७ नेक-विक्रम-गुणः [१] अध-संघात-विनाशक-सुरापगा यस्य
सघशो विशद [१] गायन्तीव तरङ्ग-प्रभव-
- १८ रैर्व्वहति जन-महिता ॥ [२] असौ वैरमेघ-नामधेयः [॥]
तस्य पितृव्यः हृदय-पद्मा-

१ 'गणाधिष्णो' इति राडममहोदय । २ 'यातपूर्व' पाठ ठीक मालूम
पडता है ।

- १९ सनस्थ-परमेश्वर-शिरश्शिशिरकर- [कर-]निकर-निराकृत-तमो-
वृत्तिः सविशेषस्य जगन्नय-
२० सारोच्चयेनेव विरचितस्य चतुर्थ-लोकोदय-समानस्य कृतयुग-
शतैरिव निर्मि-
२१ तस्य यस्य यशसः पुञ्जमिव विराजमानः^१ ॥ प्रदग्ध-कालागरु-
२२ धूप-धूमैः प्रवर्द्धमानोपचयाः पयोदा. [१] यस्याजिर स्वच्छ-
सुगन्ध-तोयैः
२३ सिञ्चन्ति सिद्धोदित-कूट-भागाः ॥ [३] न चेदृश प्राप्यमिति
प्रलोभात् भवोद्भवो भावि- [यु] गा-
२४ वतारे [१] अवैमि यस्य स्थितये स्वयं तत् कल्पान्तरं नैव च
भाव्यतीति ॥ [४] तारा-ग-
२५ षेष्णन्त-कूट-कोटि-तटार्ण्यतासूज्ज्वल-दीपिकासु [१] मोमुह्यते
रात्रि-विभेदभा-
२६ वः निशात्ययः पौरजनैर्निशाया ॥ [५] आधारभूताहमिदं
व्यतीत्य मा वर्द्धते
२७ चायमतिप्रसङ्ग [१] यस्यावकाशार्थमितीव पृथ्वी पृथ्वीव
भूतेति च मे वि-
२८ तर्कः ॥ [६] विचित्र-पताका-सहस्र-सञ्छादित उपरि परिच-
रण-भयात् लोकै-
२९ क-चूडामणिना मणि-कुट्टिम-संक्रान्त-प्रतिविम्ब-व्याजेन स्वयमव-
तीर्य

१ 'पुञ्ज इव विराजमान' ऐसा पढ़ना चाहिये ।

- ३० परमेश्वर-भक्ति-युक्तेन नमस्क्रियमाणमिव विराजमान प्रहृत-पुष्कर-
मन्द्र-निनादा-
- ३१ कर्णनोदितानुरागैः प्रावृडारम्भ-काल-जनितोत्सवारम्भैः मयूरैः
प्रारब्ध-वृत्त-नृ-
- ३२ क्षान्त धूम-त्रेला-लीला-गत-विलासिनी-जनाना कर-तल-किसलय-
रस-भाव-सद्भाव-प्रक-
- ३३ टन-कुशल-शशिवदनाङ्गना-नर्त्तनाहृत-पौर-शुवति-जन-चिन्ता-
न्तर समस्त-सिद्धान्त-साग-
- ३४ र-पारग-मुनि-शत-सङ्कुल देवकुलमासीत् कृष्णोश्वरनाम स्व-
नामधेयाङ्कित असा-
- ३५ वकालवर्ष इति विख्यात [॥] तस्य सूनुः आनत-नृप-मकुट-
मणि-गण-किरण-जाल-रञ्जित-
- ३६ पद-युगल-नख-मयूख-प्रभा-भासित-सिंहासनोपान्त कान्ताजन-
कटक-खचि-
- ३७ त-पद्मराग-दीधिति-विसर-शुम्भत्-कुसुम्भ-रस-रञ्जित-निज-धवल-
वीज्यमान-चारु-चा-
- ३८ मर-निचय-विख्यात-प्राज्य-राज्याभिषेकान्तैरैकैश्वर्य्य-सुख-समनुभ-
वस्थि-
- ३९ तिः निज-नुरङ्गमैक-विजयानीत-राजलक्ष्मी-सनायो महीनायो यः
कल्पाङ्गिपः ससेव^१

१ 'सखमेव' ऐसा शुद्ध पाठ मालस पडता है ।

- ४० चिन्तामणिरिति ध्रुव य वदन्त्यर्थिनः । नित्य प्रीत्या प्राप्तार्थ-
सम्पदसौ प्रभूतवर्ष इति वि—
- ४१ ख्यातो भूपचक्रचूडामणिः [॥] तस्यानुजः धारावर्ष-श्री-पृथ्वी-
वल्लभ-महाराजाधि—
- ४२ राजपरमेश्वरः खण्डितारि-मण्डलासि-भासित-दोर्दण्ड^१ पुण्डरीक^२
इव वल्लिरिपु-मर्दना—
- ४३ क्रान्त-सकल-भुवनतल सुकृतानेक-राज्य-भार-भारोद्वहन-समर्थः
हिमशैल-वि—
- ४४ शालेर स्थलेन राजलक्ष्मी-विहरण-मणि-कुट्टिमेन चतुराङ्गनालि-
गन-तुङ्ग-कुच—
- तीसरा पत्र; पहली बाजू
- ४५ सग-सुखोद्रेकोदित-रोमाञ्च-योजितेन ख-भुजासि-धारा-दलित-
समस्त^३ गलित-मुक्ताफल-वि—
- ४६ सर-विराजितारि-त्रल-हस्ति-हस्तास्फालन-दन्त-कोटि-घटित-धनी-
कृतेन विराजमान त्रिपुर—
- ४७ हर-वृषभ-ककुदाकारोन्नत-विकटास-तट-निकट-दोधूयमान-चारु-
चामर-चयः फेन-पिण्ड—
- ४८ पाण्डुर-प्रभावोदित-च्छविना वृत्तेनापि चतुराकारेण सितातपत्रे-
णाच्छादित-समस्त-दिग्-त्रिव—
- ४९^१ रो रिपुजनहृदयविदारणदारुणेन सकलभूतलाधिपत्यलक्ष्मीली-

१ 'पुण्डरीकाक्ष' पदो । २ 'दलितमस्त' पदो । ३ आगे ४९ वीं पक्तित्से प्राचीन लेखमाला, प्रथम भाग, लेख ११ परसे लिया है ।

लामुत्पादयता प्रहतपटहढक्कागम्भीरध्वानेन घनाघनगर्जनानुकारिणा
अस्याचितो विनोदनिर्गम. (?) स्वकीया साञ्चलता (?) परनृपचेतोवृत्तिपु
दातुमित्रोच्चैराविलोलप्रकटितराज्यचिह्न (?) तुरङ्गमखरखुरोत्थितपाशुपट-
लमसृणितजलदसचयानेकमत्तद्विपकरटतटगलितदानधाराप्रतानप्रशमित-
महीपराग. ।

यस्य श्री चपलोदया खुरतरङ्गालीसमास्फालना-

त्रिभिन्नद्विपयानपात्रगतयो ये सञ्चलञ्चेतसः । (?)

तस्मिन्नेव समेत्य सारविभवं सत्यज्य राज्य रणे

भग्ना मोहवगात् स्वय खलु दिगामन्त भजन्तेऽरय ॥

इद कियद्भूतलमत्र सम्यक् स्थातु महत्सकटमित्युदग्रम् ।

स्वस्यावकाशं न करोति यस्य यज्ञो दिशा भित्तिविमेदनानि ॥

अनवरतदानधारावर्षागमेन तृप्तजनतायाः धारावर्ष इति जगति
विख्यातः सर्वलोकवल्लभतया वल्लभ इति । तस्यात्मजो निजभुजवलसमा-
नीतपरनृपलक्ष्मीकरधृतधवलगतपत्रनालप्रतिकूलरिपुकुलचरणनिबद्धखलख-
लायमानधवलगृह्णलारववधिरीकृतपर्यन्तजनो निरुपमगुणगणाकर्णनसमा-
ह्लादितमनसा साधुजनेन सदा संगीयमानशशिविशदयशोराशिराशावष्टब्ध-
जनमन परिकल्पनत्रिगुणीकृतस्वकीयानुष्ठानो निष्ठितकर्तव्य प्रभूतवर्ष-
श्रीपृथ्वीवल्लभराजाधिराजपरमेश्वरस्य प्रवर्धमानश्रीराज्यविजयसव-
त्सरेषु वदत्सु । चारुचालुक्यान्ययगगनतलहरिणालञ्छनायमानश्रीव-
लवर्मनरेन्द्रस्य सन्तु स्वविक्रमावजितसकलरिपुनृपशिर शेखरार्चितचरण-
युगलो यशोवर्मनामधेयो राजा व्यराजत । तस्य पुत्रः 'सुपुत्रः
कुलदीपक' इति पुराणवचनमवितथमिह कुर्वन्नतितरा धीराजमानो

१ 'वहत्सु' पाठ मालूम पडता है ।

मनोजात इव मानिनीजनमनस्थलीय. (?) रणचतुरश्चतुरजनाश्रय
श्रीसमालिङ्गितविशालवक्षस्थलो नितरामशोभत । असौ महात्मा

कमलोचितसद्गुजान्तरश्रीविमलादित्य इति प्रतीतनामा ।

कमनीयवपुर्विलासिनीना भ्रमदक्षिभ्रमरालिवक्रपद्म ॥

य प्रचण्डतरकरवालढलितरिपुनृपकारिघटाकुम्भमुक्तमुक्ताफलविकीर्णि-
तरुचिरक्ताध्विकान्तिरुचिरपरीतनिजकलत्रकण्ठ शितिकण्ठ इव महितम-
हिमामोद्यमानरुचिरकीर्तिरशेषगङ्गमण्डलाधिराज श्रीचाकिराजस्य भागि-
नेय भुवि प्रकाशत यस्मिन् कुनुन्गिलनामदेशमयश.पराङ्मुखं मनुमार्गेण
पालयति सति श्रीयापनीयनन्दिसंघपुंनागवृक्षमूलगणे श्रीकित्या-
चार्यान्यये बहुध्याचार्येष्वतिक्रान्तेषु व्रतसमितिगुप्तिगुप्तमुनिवृन्दवन्दित-
चरणकूविलाचार्याणामासीत् (?) तस्यान्तेवासी समुपनतजनपरिश्र-
माहार स्वदानसंतर्पितसमस्तविद्वज्जनो जनितमहोदय विजयकीर्तिनाम-
मुनिप्रभुरभूत् ।

अर्ककीर्तिरिति ख्यातिमातन्वन्मुनिसत्तम ।

तस्य शिष्यत्वमायातो नायातो वशमेनसाम् ॥

तस्मै मुनिवराय तस्य विमलादित्यस्य शणेश्वर (?)पीडापनोदाय
मयूरखण्डिमधिवसति विजयस्कन्धावारे चाकिराजेन विज्ञापितो बल्ल-
मेन्द्र. इडिगूर्विषयमव्यवर्तिन जालमङ्गलनामधेयग्राम शकनृपसंवत्सरेषु
शरशिखिमुनिषु (७३५) व्यतीतेषु ज्येष्ठमासशुक्लपक्षदशम्यां
पुष्यनक्षत्रे चन्द्रवारे मान्यपुरवरापरदिग्विभागालकारभूतशिलाग्रामा-
जनेन्द्रभवनाय दत्तवान् तस्य पूर्वदक्षिणापरोत्तरदिग्विभागेषु स्वस्तिमङ्गल-

१ 'प्रकाशते यस्मिन्' यह पाठ मालम पड़ता है । २ 'पराङ्मुखे' यह अपेक्षित है । ३ 'श्रीकीर्त्याचार्य' जान पड़ता है । ४ 'जिनेन्द्र' ऐसा पाठ मालम पड़ता है ।

वेह्लिन्द-गुडुनूरत्तरिपाल इति प्रसिद्धा ग्रामाः एव चतुर्णां ग्रामाणां मध्ये व्यवस्थितस्य जालमङ्गलस्याय चतुरावधिक्रमः पुनस्तस्य सीमा-विभाग ईशानतः मुकूडल्दक्षिणदिग्विभागमवलोक्य एतत्तगकोडल-मूडग-केल-वन्दु इर्पेय-कोपदे-पल्लद्-ओलगण उलिअलरिये कोटेयालि-बेलने सयकने-वन्दु पोल पुणसे एव कीले अन्ते पोयिए विदिरूगरे मुकूडल् तत पश्चिमत. पुलिपदिय तेङ्गण पेर् ओल्वेये पेर्विलिक्रे एल-गल-करणडलो मुकूडल् अन्ते सयकने पोगि नायूमणिगेरेय तायूगण्डि मुकूडल् तत उत्तरत. वल्लगेरेय पडुव गजगोड पळम्बे पुणुसेये आने-दलो गेरेए पुल्पडिये एलगळे पुलिगारद गेरे मुकूडल् तत. पूर्वतः निडु विलिङ्के दविन पुल्पडिये कञ्चगार गळे पोल एळे पुणुसये वडुपु-णुसये वेळ्ने वन्दु ईशानद मुकूडलोल् कूडि निन्दत्तु । राचमल्लगाम-ण्डनु गीरनु गङ्गगामुण्डनु मारेयनु वेल्गेरेय् ओडेयोर् मीदवागे-एल्पदि-म्बरु कुनुगिगल्-अयसार्वरु साक्षियारो कोट्टत्तु । नमः ।

अद्विर्दत्त त्रिभिर्भुक्त पड्भिश्च परिपालितम् ।

एतानि न निवर्तन्ते पूर्वराजकृतानि च ॥

स्व दातु सुमहच्छक्र्य दु खमन्यस्य पालनम् ।

दान त्वा पालन वेति दानाच्छ्रेयोऽनुपालनम् ॥

स्वदत्ता परदत्ता वा यो हरेत वसुधराम् ।

पष्टिं वर्षसहस्राणि विष्टायया जायते कृमिः ॥

देवस्त्र[हि] विप घोर कालकूटसमप्रभम् ।

विपमेकाकिन हन्ति देवस्त्र पुत्रपौत्रकम् ॥

(इण्डियन् एण्टिकेरी १२।१३-१६)

[एपियाफिका इण्डिका, ४।३४०-३४५]

[इस शिलालेखमें बताया है कि राजा प्रभूतवर्ष (गोविन्द तृतीय) ने जब कि वे मयूरखण्डीके अपने विजयी विश्रामस्थलपर ठहरे हुए थे, चाकिराजकी प्रार्थनापर शक सं० ७३५ में जालमद्गल नामका गाँव जेन मुनि अर्ककीर्तिको भेंट दिया । यह भेंट शिलाग्राममें स्थित जिनेन्द्रभवनके लिये दी गई थी । कारण यह था कि कुनुन्गल जिलेके शासक विमलादि-त्यको उन्होंने (अर्ककीर्ति मुनिने) शनैश्चर (?) की पीड़ासे उन्मुक्त किया था ।

इस लेखमें पं० १-६४ तकमें राष्ट्रकूट राजाओकी प्रशासामात्र है । इसमें उनकी वशावली इस प्रकार दी हुई है:—

लेखप्रस्तुत नाम	ऐतिहासिक नाम
(१) गोविन्द	=गोविन्द प्रथम
(२) कर्क	=कर्क प्रथम
(३) इन्द्र	=इन्द्र द्वितीय
(४) वैरमेघ	=इन्तिदुर्गा या इन्तिवर्मन् द्वि०
(५) अकालवर्ष	=कृष्ण प्रथम
[वैरमेघका चाचा (पितृव्य)]	
(६) प्रभूतवर्ष	=गोविन्द द्वितीय
(७) धारावर्ष श्री पृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर, द्वितीय	
नाम—वल्लभ=ध्रुव (प्रभूत वर्षका छोटा भाई)	
(८) प्रभूतवर्ष श्रीपृथ्वीवल्लभ [महा] राजाधिराज परमेश्वर,	
द्वितीय नाम वल्लभेन्द्र	=गोविन्द तृतीय

३४ वीं पंक्तिमें कहा गया है कि अकालवर्षने अपने ही नामसे 'कणेश्वर' नामक मन्दिर बनवाया था । पंक्ति २९-३० से ऐसा मालूम पड़ता है कि यह मन्दिर शिवके लिये अर्पण किया गया था । पं० ८१ में बताया

गया है कि दानके समय गोविन्द-तृतीय मयूरखण्डीके अपने विजय-स्कन्धावार (पड़ाव) में ठहरे हुए थे।

पक्ति ६५-७५ से विमलादित्यकी वशावलीका उल्लेख हुआ है। उनके पिता राजा यशोवर्मा थे और उनके दादा नरेन्द्र बलवर्मा थे। चालुक्योसे इस कुलका संबन्ध था; लेकिन वर्तमानमें चालुक्यवंशी राजाओंमें इन नामोंके राजा नहीं मिलते हैं, इसलिए प्रो० भाण्डारकरने उन्हें एक स्वतन्त्र शाखाका माना है। विमलादित्य कुनुन्गिल् देश (जिले) का राजा था। विमलादित्यको चाकिराजकी बहिनका पुत्र बताया गया है। चाकिराजको गङ्गो (अशेष-गङ्गमण्डलाधिराज) के समूचे प्रान्तका शासक कहा गया है। इसीकी प्रार्थनापर दान किया गया था।

पक्ति ७५-८० से दानपात्रका विशेष वर्णन है। उनका नाम अर्ककीर्ति था, ये क्वविल आचार्यके शिष्य विजयकीर्तिके शिष्य थे। यह सुनि श्री यापत्तीय नन्दिसधके पुनागवृक्षमूलगणके श्रीकीर्त्याचार्यके अन्वय (परम्परा) के थे। इनका एक विशेषण 'व्रतसमितिगुप्तिगुप्तसुनिवृन्दवन्दितचरण' है।

लेखके अन्तिम भागका सार ऊपर दे दिया गया है। लेखके अन्तिम भागमें कुछ साक्षियोंके नाम भी दिये गये हैं जिनके सामने यह दान किया गया था। अन्तके चार वे ही साधारण शापात्मक श्लोक हैं।]

१२५

नौसारी—संस्कृत।

[शक ७४३=८२१ ईस्वी]

यह शिलालेख सम्भवतः श्वेताम्बर सम्प्रदायका है।

[H. H. Dhruva, Zeitschr d deut morg Gesell, XL,
p 321, n° VII, a]

१२६

कांगड़ा—संस्कृत।

[लौकिक वर्ष ?]=८५४ ई० ? (बूहर)

श्वेताम्बर सम्प्रदायका।

[EI, I, n° XVIII (p 120), t & tr]

१२७

कोशूर(जिला धारवाड)—संस्कृत ।

[शक सं० ७८२=८६० ई०]

श्रियः प्रियस्संगतविश्वरूपस्सुदर्शनच्छिन्नपरावलेपः ।
 दिश्यादनन्तः प्रणतामरेन्द्रः श्रिय ममाद्यः परमां जिनेन्द्रः ॥ १ ॥
 अनन्तभोगस्थितिरत्र पातु व. प्रतापशीलप्रभवोदयाचलः ।
 सु-राष्ट्रकूटोर्जितवशापूर्वजस्स वीर-नारायण एव यो विभुः ॥ २ ॥
 नदीयभूपायतयादवान्वये क्रमेण वार्द्धाविव रत्नसञ्चयः ।
 व्रभूव गोविन्दमहीपतिर्भुवः प्रसाधनो पृच्छकराज-नन्दनः ॥ ३ ॥
 इन्द्रावनीपालसुतेन धारिणी प्रसारिता येन पृथु-प्रभावित्ना ।
 महौजसा वैरितमो निराकृत प्रतापशीलेन स कर्कर-प्रभुः ॥ ४ ॥
 ततोऽभवद्वन्तिघटाभिर्मर्दनो हिमाचलाद्दुर्जित-सेतु-सीमतः ।
 खलीकृतोद्धृतमहीपमण्डलः कुलाग्रणीः यो भुवि दन्तिदुर्ग-राट् ॥ ५ ॥
 स्वयम्बरीभूतरणाङ्गणे ततस्स निर्व्यपेक्ष शुभतुङ्गचलभः ।
 चकर्ष चालुक्यकुलश्रिय वलाद्विलोल-पालिध्वज-माल-भारिणी ॥ ६ ॥
 जयोच्चसिंहासनचामरोर्जितस्सिनातपत्रो प्रतिपक्ष राज्य(ज)हा ।
 अकालवर्षोर्जितभूपनामको व्रभूव राजर्षिरशेषपुण्यतः ॥ ७ ॥
 ततः प्रभूतवर्षोऽभूद्भारावर्षसुतश्शरैः ।
 धारावर्षायित येन सग्रामभुवि भूभुजा ॥ ८ ॥ तस्य सुतः—
 यज्जन्मकाले देवेन्द्रैरादिष्ट वृषभो भुव ।
 भोक्तेति हिमवत्सेतु-पर्यन्ताम्बुधिमेखलाम् ॥ ९ ॥
 ततः प्रभूतवर्षस्सन् स्वयम्पूर्णमनोरयः ।
 जगत्तुङ्गस्तुमेरुर्वा भूभृतामुपरि स्थितः ॥ १० ॥

बन्धूना बन्धुराणामुचितनिजकुले पूर्वजाना प्रजाना

जाताना वल्लभानां भुवनभरितसत्कीर्त्तिपूर्त्ति-स्थिताना ।

त्रातु कीर्त्ति स-लोक कलिकल्लुषमथो हन्तमन्तो रिपूणा

श्रीमान् सिंहासनस्थो भवनवनिमतो **ऽमोघवर्षः** प्रशास्ति ॥ ११

यस्याज्ञा परचक्रिणः स्रजमित्राजस्र शिरोभिर्व्वह-

न्यादिग्दन्तिघटावलीमुखपटैः कीर्त्तिप्रतानस्स तैः ।

यत्रस्थः स्वकरप्रतापमहिमा कस्याप्यदूरस्थितः

तेजःक्रान्तसमस्तभूमृदिव एवासौ न कस्योपरि ॥ १२ ॥

चतुस्समुद्रपर्य्यन्त (१) स्वमुद्र यत्प्रसाधित ।

भग्ना समस्तभूपालमुद्रा गरुडमुद्रया ॥ १३ ॥

राजेन्द्रास्ते वन्दनीयास्तु पूर्व्वे, येपा धर्म पालनीयोऽस्मदीये ।

ध्वस्ता दुष्टा वर्त्तमानास्सधर्म्माः प्रार्थ्या ये ते भाविनः पार्थिवेन्द्राः ॥१४॥

भुक्तं कश्चिद्विक्रमेणापरेभ्यो

दत्त चान्यैस्स्यक्तमेवापरैर्य्यत् ।

कास्थानिल्ये तत्र राज्ये महद्वि

कीर्त्या (त्त्यै १) धर्म. केवल पालनीयः ॥ १५ ॥

तेनेदमनिलविद्युच्चञ्चलमवलोक्य जीवितमसार ।

क्षितिदानपरमपुण्यः प्रवर्त्तितो देवदायोऽयम् ॥ १६ ॥

स एव परमभट्टारक-महाराजाधिराज-परमेश्वर-श्री-जगतुङ्गदेव-पादा-
नुध्यान(त)परमभट्टारक-महाराजाधिराज-परमेश्वर-श्री-पृथ्वीवल्लभ-श्रीमद्-
मोघवर्ष-श्रीवल्लभनरेन्द्रदेवः सव्वनिव यथासम्बध्यमानकान्-राष्ट्रविषय-

१ 'हन्तु' पठो . २ 'भवनमिदमतो' या 'भवनमनमितो' ।

पतिग्रामकूटायुक्तक-नियुक्ताधिकारिकमहत्तरादीन् समादिशत्यस्तु वस्तवि-
दित यथा ॥

विक्रमविलासनिलयो मुकुल-कुले पूर्व्वन्धुभिर्मान्यैः

एरकोटिनामधेयः प्रविकसितोऽभूत्प्रसूनसमः ॥ १७ ॥

आविरासीत्प्रमुस्तस्मात् प्रसूनात्फलसन्निभः ।

नाम्ना धोरः कुलाधारः कोलनूराधिपस्त्वयम् ॥ १८ ॥

सुतोऽस्य विजयाङ्कायामभूद्भुवनमानितः ।

प्रचण्डमण्डलातङ्को वङ्केशः से(चै)ल्लकेतनः ॥ १९ ॥

मदीयो विततज्योतिर्णिण(नि)शितोऽसिर्वापरैः ॥

उन्मूलितद्विपट्टक्षमूलो मौलबलप्रभु ॥ २० ॥

मत्प्रदेशेन संलब्ध-वनवासी-पुरस्सरान् ।

ग्रामान् त्रिंशत्सहस्राणि भुनक्त्यविरतोदयः ॥ २१ ॥

महाप्रतापादुच्छेदमुदयच्छन् मदिच्छया ।

मूलादुच्छेत्तुमुत्तुङ्ग गङ्गवाडी-त्रटाटवीम् ॥ २२ ॥

तन्त्रातरेऽस्मत्सावमन्तैर्मात्सर्याहितमानसै-

रुपेक्षितोऽपि कोपोचत्साहसैकसखः स्वयम् ॥ २३ ॥

वस्तारिपुनीतिमार्गो रणविक्रममेकवृद्धिमभिनीय ।

स मदीयहृदयसगतमवन्व्यकोपत्वमावहति ॥ २४ ॥ येन-

तत्-केदलाभिधान दुर्गं वप्रार्गलादिदुर्लङ्घ्य ।

मौल-त्रलाधिष्ठितमपि सद्यः प्रोलङ्घ्य हेलयाग्राहि ॥ २५ ॥

जनपदमद कृत्वा हस्ते विधूय विरोधिन

तलवनपुराधीश कृत्वा श्रुत रणविक्रमम् ।

मदरिविजयी भर्तुः श्लाघ्यस्समन्वितसगरः

समरसमये विद्विद्-चक्रैरधिकृतविक्रमः ॥ २६ ॥

कावेरीं गुरुपूरदुर्गमतमामुल्लङ्घ्य सिंहक्रमात्

प्रत्यग्र-स्फुरित-प्रताप-दहन-प्रोद्यच्छिखाश्रेणिभिः ।

निर्दह्यैकपदेन सप्तपदकान्विद्विट्टनोच्छेदिना

येनाकम्पि जगत्प्रकम्पनपटोत्रैराज्यमप्यूर्जितम् ॥ २७ ॥

तन्त्रान्तरे मदन्तिकमन्तर्वर्धेन जातसक्षोमे ।

प्रत्यागन्तव्यमिति त्वयेति मद्बचनमात्रेण ॥ २८ ॥

अप्राप्ते बह्लभेन्द्रो मयि जयति यदा विद्विप स्यान्तदाह

सन्यस्तागेपसङ्गो मुनिरथ विधिना विद्विप स्याज्जयश्रीः ।

तत्राप्युदामधूमध्वजविततशिखासूत्पतामि प्रतापा-

दित्यारूढप्रतिज्ञ कतिपयदिवसै प्रापदस्मत्समीपम् ॥ २९ ॥

मासत्रयस्य मध्ये यदि भोजयितु न शक्यते स्वामी ।

क्षीर विजित्य शत्रु तथापि वह्निं विशाम्येव ॥ ३० ॥

इत्युक्त्वा क्रमविक्रमोच्छिखशिखीज्ज्वालावलीढ (द)त्र(त्र) जे

धूमश्याम [लि] ते तिरोहिततनौ प्राय परप्रेषिते ।

ये ते मत्तनये स्थितान्यनृपतीन्निर्जित्य यो जित्वरो

वन्दीकृत्य रिपून्निहित्य च तदा तीर्णप्रतिज्ञोऽभवत् ॥ ३१ ॥

आविष्कृतकोपशिखानिर्दग्धारीन्धनो विनाप्यनिलात् ।

अज्वालितोऽपि यस्य प्रतापवह्निर्मुहुर्ज्वलति ॥ ३२ ॥

यस्य च कृपाण-वृारिणि]रुधिराकुलिता द्विपा महालक्ष्मी ।

मज्जत्युनमजति तु स्वाधिपते. कुङ्कुमा(१ भा)क्त्वेव ॥ ३३ ॥

हुत्वा येन रिपु विरोधिरुधिरप्राज्याज्यधाराहुति-

त्रात-प्रस्फुरित-प्रताप-दहने विद्विष्टशान्तेश्चिन्त ।

विप्रेणेव रणाध्वरे सुविहित-श्री-मन्त्रशक्त्यार्जित

कल्पान्तस्थिरवीरशासनमिद मद्बीरनारायणात् ॥ ३४ ॥

तेनैवम्भूतेन वङ्केयाभिधानेन मदिष्टमृत्येन प्रार्थितं सन् तत्प्रार्थनया
मान्यखेटराजधान्यामवस्थितेन मया [मा]नापित्रोराम्नश्चैहिकामुत्रि-
कपुण्ययज्ञोभिवृद्धये कोलनूरे तद्वङ्केयनिर्मापित-जिनायतन-परि-
पालननियुक्ताय

श्रीमूलसङ्घ-देगीयगण-पुस्तकगच्छत ।

जानस्त्रैकालयोगीशः क्षीराव्वेरिव कौस्तुभ ॥ ३५ ॥

नच्चारित्रवधूप(पु)त्र श्रीदेवेन्द्रमुनीश्वरः ।

सैद्धान्तिकाग्रणीस्तस्मै वङ्केयो[यामदान्मु]दा ॥ ३६ ॥

तद्वसतिसम्बन्धिनवकर्मोत्तरभाविखण्डस्फुटित-सम्मार्जनोपलेपनपरि-
पालनादिधर्मोपयोगिकर्मकरणनिमित्त मज्जन्तिय-सप्ततिग्राम-भुक्त्यन्त-
र्गत तलेयूरनामग्राम. तस्य चाघात (ट.) तत्कोलनूरात् पूर्वत.
वेन्दनूरु दक्षिणत सासवेवाटु तत्पश्चिमत पडिलगेरी उत्तरत कील-
वाडः पत्रमयं चतुराघाटनोपलक्षित मोन्द्रगस्स-परिकर मदण्डदशाप-
राधस्सम्भृतोपात्तप्रत्यय^१ सोप्यद्यमानविधिति (क) सधान्यहिरण्यदेय.
द्वादशपुष्पवाटः पञ्चाशदुत्तरशतहस्तविस्तार पञ्चशतहस्तप्रमाणायाम
गृहाणामाघाटस्समुदित प्रवेश्यस्सर्व्यराजकीयानामहस्तप्रक्षेपणीनः आच-
न्द्रार्कापर्णव-क्षिति-सरित्-पर्वत-समकालीन पुत्रपौत्रान्वयक्रमेण प्रतिपाल्य.
पूर्वप्रदत्त-देवब्रह्मदायरहितोऽह्य (भ्य)न्तरसि [द्] द्वया भूमिच्छि-
द्रन्यायेन शकनृपकालातीतसंवत्सरशतेषु सप्तसु द्वा(द्व्य)-
शीत्यधिकेषु तद्भ्यधिक-समनन्तर-प्रवर्त्तमान-त्रयो^२ शीतितम-
विक्रमसंवत्सरान्तर्गताश्वयुजपौर्णमास्यां सर्व्वग्रासि-सोमग्रहणे

१ 'सम्भृतोपात्तप्रत्यायम्' शब्द है । २ 'त्र्यशीतितम' पठना चाहिये ।

महापर्व्याणि बलिपक्षवैश्वदेवाग्निहोत्रातिथिसन्तर्पणाद्धारोदकातिसर्गेण प्रतिपादितः ॥ तथात्रैव तत्क्रोलनूरतद्भुक्तिमव्यवृत्त्यवरवाडि वेण्डनूरु मुदुगुण्डि किचैवोले सुछ मुस दधरे माविनूरु मत्तिकट्टे नीलगुन्दगे तालिखेड वेछेरु संगम पिरिसिङ्गि मुत्तलगेरी काकेयनूरु वेहेरु आलूगु [पार्व] नगेरी होसंजललु इन्दुगलु नेरिलगे हगनूरु उनलगरु इन्दगेरी मुनिवल्ली कोट्टुसे ओड्डिट्टेगे सि [किम-ब्रि ?] गिरि [पि] डलु नामधेयेष्वेतेषु कोलनूरुतं तद्भुक्तिवर्त्तिषु त्रिशत्स्वपि ग्रामेष्वेकैकग्रामे द्वादश निवर्त्तनानि भूमे प्रतिपादितानि [॥] अतोऽस्योचितया देवदायदायस्थित्या भुञ्जतो भोजयतः कृपत. कर्षयतः प्रतिदिशतो वा न कैश्चिदल्पापि परिपन्थना कार्या तथागामिभद्रनृपति-भिरस्मद्वश्यैरन्यैर्वा सामान्य भूमिदानफलमवेत्य विद्युल्लोलान्यैश्वर्याणि तृणाग्रलग्नजलविन्दुचञ्चल च जीवितमाकलय्य स्वदायनिर्व्विशेषोऽस्मदा-योऽनुमन्तव्य प्रतिपालयितव्यश्च ।

यस्त्वज्ञानतिमिरपटलावृतमतिराच्छिद्यमानक वानुमोदेत स पञ्चभि-
र्महापातकैरसोपपातकैश्च सयुक्तः स्यादित्युक्त भगवता वेदव्यासेन ॥

पष्टिव्वर्षसहस्राणि स्वर्गे तिष्ठति भूमिद. ।

आच्छेत्ता चानुमन्ता च तामेव नरके वसेत् ॥ ३७ ॥

विन्ध्याटवीधृतोयासु शुष्ककोटरवासिन. ।

कृष्णसर्पा हि जायन्ते भूमिदान हरन्ति ये ॥ ३८ ॥

अग्नेरपत्य प्रथम सुवर्ण भूर्वेण्णवी सूर्यसुतश्च गावः ।

लोकत्रयन्तेन भवेद्भि दत्त यः काञ्चन गा च महीं च दद्यात् ३९॥

बहुभिर्व्यसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभिः ।

यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ॥ ४० ॥

खट्वा परदत्ता वा यत्नाद्रक्ष्ये^१ नराधिप ।

महीं महीमता श्रेष्ठ दानाच्छ्रेयोऽनुपालनम् ॥ ४१ ॥

इति कमलदलाम्बुविन्दुलोल

श्रियमनुचिन्त्य मनुष्यजीवित च ।

अतिविमलमनोभिरामकै-

र्त्तहि पुरुषै परकीर्त्तयो विलोप्या ॥ ४२ ॥

लिखितञ्चैतद् बालभकायस्त्रवशजातेन धर्माधिकरणस्थेन भोगिकव-
त्सराजेन श्रीहर्षमृनुना ग्रामपट्टलाधिकृतलेखकरणहस्ति-नाग-वर्म्म-
पृथ्वीराम-भृत्येन ॥

वङ्केयराजमुख्यो गणपतिनामा महत्तर प्राज्ञ ।

राज्ञ. समीपवर्त्ती तेनेदमनुष्ठित सर्व्वम् ॥ ४३ ॥

मिथ्याभावभवातिदर्पपरतद्दु शासनोच्छेदक

प्राज्ञाज्ञावशवर्त्तमानजनतासन्सौख्यसम्पादकम् ।

नानारूपविशिष्टवस्तुपरमस्याद्वादलक्ष्मीपद

जेजीयाज्जिनराजगासनमिद स्वाचारसारप्रदम् ॥ ४४ ॥

सिद्धान्तामृतवाङ्मिदितारकपतिस्तर्काभ्युजाहर्षति

शब्दोद्धानवनामृतैकसरणिव्योर्गीन्द्रचूडामणि ।

त्रैविद्यापरसार्थनामविभव प्रोद्धूतचेतोभव

जीयादन्यमतावनीभृदशनि. श्रीमेघचन्द्रो मुनि. ॥ ४५ ॥

इडे हसीवृन्दमींठल्वगेदपुलुचकोरिचय
 चञ्चुविन्द कर्दुकल् सार्हपुडीय जडेयोळ इरिसल्येन्दिर्दप
 सेजेगीरल् पदेदप्प कृष्णनेम्नन्तेसेदु विमलमत्कन्दलीकन्दकान्त
 पुदिदन्ती मेघचन्द्रत्रितितिलकजगद्वर्त्तिकीर्त्तिप्रकाश ॥ ४६ ॥

वैदग्ध्यश्रीवध्दीपतिरखिलगुणालकृतिर्मेघचन्द्र-

त्रैविद्यस्यात्मजातो मदनमहिभृतो मेदने वज्रपान·

सिद्धान्तव्यूहचूटामणिरनुपमचिन्तामणिर्भूजनाना

योऽभूत्सौजन्यरुन्द्रश्रियमवति महौ वीरनन्दीमुनीन्द्र ॥४७॥

य अष्टत्त(१)-नभस्थली-दिनमणि काव्यज्ञचूटामणि-

र्यस्तर्कस्थितिऋमुदीहिमकरस्तूर्त्यत्रयाञ्जाकर ।

यत्सिद्धान्तविचारसारधिपणो रत्नत्रयीभूषण

स्थेयादुद्भवादिभूभृदशनि· श्रीवीरनन्दीमुनिः ॥ ४८ ॥

यन्मूर्त्तिर्जगता जनस्य नयने कर्पूरपूरायते

यद्वृत्तिर्विदुषा ततेऽश्रवणयोर्माणिक्यभूपायते ।

यत्कीर्त्ति ककुभा श्रिय कचभरे मल्लीलतान्नायते

जेजीयाद्भुवि वीरनन्दिमुनिप· सैद्धान्तचक्राधिप ॥ ४९ ॥

श्रीकोन्दकुन्दान्वयाम्बरद्युमणि विद्वज्जनशिरोमणि समस्तानवद्यविद्या
 विलासिनीविलासमूर्त्ति श्रीवीरनन्दि[सैद्धान्तिक-चक्रवर्तिगुलु श्रीमन्महा
 स्थान कोलनूर महाप्रभु हुलियमरसनुं मूरुपुरपञ्चमठस्थानङ्गलु ताम्र
 शासनम नोदि वरेयिसिमेनल्का आसनदोळन्तिर्दुदन्ती गीलशासनम वरे-
 यिसिदरु [II] मङ्गलमहाश्री श्री श्री नमो... . [III]

। [जिस पाषाणपर यह लेख है वह कोन्नूरके परमेश्वरके मन्दिरकी दीवालमे लगा हुआ है ।

इस शिलालेखपरसे	दूसरे ताम्रपत्रोंपरसे
१ थादव वंशसे, पृच्छकराजका पुत्र गोविन्द	गोविन्दराज प्रथम
२ राजा इन्द्रका पुत्र कर्कर	उसका पुत्र कद्वराज या कर्कराज
३ उसका पुत्र दन्तिदुर्ग	उसका पुत्र इन्द्रराज
४ शुभतुगवह्यम—अकालवर्ष	उसका पुत्र दन्तिदुर्ग
५ धारावर्षका पुत्र प्रभूतवर्ष	शुभतुग—अकालवर्ष (कृष्णराज प्रथम, जो कि कर्कराजका पुत्र है)
६ उसका पुत्र प्रभूतवर्ष जगत्तुग	उसका पुत्र प्रभूतवर्ष (गोवि- न्दराज द्वि०)
७ अमोघवर्ष	उसका पुत्र प्रभूतवर्ष जगत्तुग (गोविन्द)
	उसका पुत्र अमोघवर्ष]

[EI, VI, n° 4 (1st part)]

१२८

देवगढ (मध्यप्रान्त)—संस्कृत ।

[विक्रम सं० ९१९ तथा शक सं० ७८४=८६२ ई०]

- १ [ओ१] [II] परमभट्टार [क]-मह [I] राजाधिराज-परमेश्वरश्री-भो-
- २ जदेव-महीप्रवर्द्धमान-कल्याणविजयराज्ये
- ३ तत्प्रदत्त-पञ्चमहाशब्द-महासामन्त-श्री-[वि] ण [३]-
- ४ [र] म-परिसुज्यमां [क] लुअच्छगिरे श्री-आन्यायत [न]-
- ५ [स] निधे श्री-कमलदेवाचार्य-शिष्येण श्री-देवेन कारा-
- ६ [पि] त इद स्तम्भं ॥ संवत् ९१९ अस्व (ध्व) युज-शुक्ल-
- ७ पक्ष-चतुर्दश्यां वृ (वृ) हस्पति-दिनेन उत्तरभाद्रप-

१ 'माने' या 'मानके' । २ 'कारितोऽय स्तम्भ' यह शुद्ध रूप पढना चाहिये ।

८ दानक्षत्रे^१ इदं स्तम्भ समाप्तमिति ॥०॥ वाजुआ—

९ गगाकेन गोष्टिक-भूतेन^२ इदं स्तम्भं घटितमिति ॥०॥

१० [श]ककाल-[ब्द]-सप्तशतानि चतुराशीत्यधिकानि
७८४ [॥]

[इस लेखमें उल्लेख यह है कि परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर श्रीभोजदेवके राज्यमें जब लुअच्छगिरिपर (देवगढका ही एक नाम मालूम पडता है—[एफ० फीलहॉर्न]) महासामन्त विष्णुरमका शासन था, तब जिस स्तम्भपर यह लेख खुदा हुआ है वह आचार्य कमलदेवके शिष्य श्रीदेवके द्वारा श्री शान्तिनाथ मन्दिरके पास बनवाया गया था और यह विक्रम सं० ९१९ के आश्विन सुदी १४, बृहस्पतिवारके दिन उत्तर भाद्रपदा नक्षत्रके योगमें बनकर तैयार हुआ था। बनानेवालेका नाम गोष्टिक वाजुआगगाक था। इसके अतिरिक्त, अन्तिम पंक्ति शक संवत्, अक्षरो और अङ्क दोनोंमें, ७८४ का निर्देश करती है।]

[El, IV, n° 44, A]

१२९

वड़नगर—संस्कृत।

[सं० ९३२=८७५ ई०]

- १ तर प्रसिद्धम् श्री * * * क राज्ये यदु-कुल म्ल कु *
- २ कस्यत्रयिविद्यनो तत्क्षेत्रे भिर्त्रिभाषित अङ्गोदेः श्री *
- ३ दिग्हागो धनपतेः क्रकुभिर्निर्य मार्गः अस्य मुदङ्गन् *
- ४ मिमस्य जशाङ्क तपनस्थितेः उमनेय नवहङ्क।

१ '०त्रेऽयं स्तम्भ-समाप्त इति' ऐसा पढो। २ 'भूतेनायं स्तम्भो घटित इति' पढो। ३ प्रो० बूल्हर्की राज्यमें 'गोष्टिक' लोग धर्मदानोंका प्रबंध करनेवाली समितिके सदस्य थे, जिनको आजकलकी भाषामें 'ट्रस्टी' कह सकते हैं।

५ स्यम् स ९३३ वैशाखो सुदि १४ ॥

[पथारिसे दक्षिणकी ओर करीब ३ मीलपर ज्ञाननाथ पर्वतकी तलहटीमें एक झीलके किनारे वारो या बडनगरके ध्वसावशेष सुन्दर रीतिसे अवस्थित है। वहाँपर एक 'गडर-मर' नामका मन्दिर है, जो कि किसी गडरियेका बनवाया हुआ था।

इस गडरमर मन्दिरकी पश्चिम दिशासे छोटे-छोटे जैन मन्दिरोंका एक समूह है। उसके चतुष्कोण प्राङ्गणके बाहर एक चतुष्कोण छोटे पत्थरपर उक्त शिलालेख मिला था।]

[A Cunningham, Reports, X, p 74]

१३०

सौदत्ति—संस्कृत तथा कन्नड ।

[शक ७९७=८७५ ई०]

लेख

द्वादशप्रामाधिष्ठानस्य सुगन्धवर्तिसम(सम्भ)न्धिनि ॥ ग्रामे मूल-
गुन्दाख्ये । सीवटे पट्ट निवर्त्तन । देवस्य (ख) चि(गु)खे दत्त ।
नमश्च (स्य) कन्नभूसुजा ॥ तस्य दक्षिणे भागे । तित्तिणीवृक्षयो-
र्द्वयोः । मध्ये या स्थिता भूमिद्व (ई) त्ता श्रीकन्नभूसुजा । सुगन्ध-
वर्तिय सीमेयिन्द पट्ट (डु) वल् पिरियकोल्ल मत्तर ६ ॥

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाछन ॥ जीयार्त्रे(त्रै)लोक्यना-
थस्य शासन जिनशासन ॥ श्रीमन्मैलापतीर्थस्य गणे कारेयनामनि
॥ वभूवोप्रतपोयुक्तः मूलभट्टारको गणी ॥ तच्छिष्यो गुणवान्सूरिः

† दुर्भाग्यसे यह लेख दोनों ओर (प्रारम्भ और अन्तमें) अधूरा ही है, इसलिये कर्निधम साहब इवर-उधर कुछ शब्दोंकी पूर्तिके वजाय इसके पूर्णरूपसे समझनेमें असफल रहे हैं। अतएव इसका विशेष सारांश भी नहीं दिया जा सका।

गुणकीर्त्तिमुनीश्वरः [I] तस्याथाली (सीटिं) द्रुकीर्त्तिसामी कामम-
 दापहः ॥ तच्छात्रः पृथ्वीरामः लक्ष्मीरामविराजितः [I] सत्यरत्नप्ररो-
 हाट्टिः (मे)चडस्याग्रनन्दनः ॥ श्रीकृष्णराजदेवस्य लक्ष्मीलक्षितवक्षसः [I]
 नम्रभूपालवृन्दस्य पादाङ्गुर्ह (रुह)सेवक ॥ यस्य वालप्रतापा-
 ग्निय्वालानिकरयोपितस्समुद्री (द्र) त्पासुहृद्वर्षरसो निष्केपको यथा ।
 यस्य राजन्वती भूमिर्जितानन्दकरैः करैः [I] राज्ञो यो धीमतो नीति-
 मार्गो दुर्गभयकरः ॥ यस्य लक्रीडते कीर्त्तिहसी लोकसरोवरे [I]
 यद्वाख्य प्रश्र(त्त)न जात प्रणतारातिभूपते ॥ सप्तस(श)त्या
 नवत्या च समायुक्त (क्ते) स (पु) सप्तपु [I] स(श)
 ककालेश्व (श्व) तीतेषु मन्मथाह्वयवत्सरे ॥ ग्रामे सुगन्धवर्त्तार्ये तेन
 भूपेन कारित [I] जिनेन्द्रभवनं दत्त तस्याष्टदशनिवर्त्तन ॥ स्वस्ति
 समस्तभुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवल्लभ (भ) महाराजाधिराज (ज) परमे-
 श्वर (र) परमभट्टारक राष्ट्रकूटकुलतिलकं श्रीमतकृष्णराजदेवविजय-
 राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कतार वर सलुत्तमिरे [I] तत्पाद-
 पद्मोपजीवि ॥ स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाग्वन्दमहासामन्त वीरलक्ष्मीकान्त
 विरोधिसामन्तनगेवज्रदण्ड विद्वज्जनकमलमार्त्तण्ड सुभटचूडामणि भृत्य-
 चिन्तामणि श्रीमन्महासामन्तेन पृथ्वीरामेण (न) स्वकारितजिनेन्द्र-
 भवनाय चतुर्षु स्थलेषु स्थितमष्टादशनिवर्त्तन सर्व्वनमश्य (स्य) दत्त ॥
 पृथ्वीरामेण (न) यदत्त निवर्त्तन कार्त्तवीर्येण भूयः स्वगुरवे दत्त सर्व्ववादा
 (धा) विवर्जित ॥ सूर्योपरागसक्रान्तो (तौ) कार्त्तवीर्याग्रकान्तया ।
 श्रीभागला(ला)विकादेव्या नमश्य (स्य) कृतमजसा ॥

[सौदत्तिमे जिसका पुराना नाम सुगन्धवर्त्तौ है, एक छोटे जिनमन्दिर-
 की बाईं ओर दीवालमें जडे हुए पापाण-शिलापरसे यह लेख लिया गया
 है । लेखमें अनेक विशेष दान हैं । यह बहुत-कुछ राजाओंकी वशावलीका

हाल भी बताता है। हम देखते हैं कि रट्टोमें प्रथम जिनने कि प्रमुख अधिकारी होनेका पद पाया था मेरडका पुत्र पृथ्वीराम था। उमको यह प्रमुख अधिपति होनेका पद राष्ट्रकूट राजा कृष्णकी अधीनतामें मिला था। इससे पहिले वह पूज्य ऋषि मैलापतीर्थके कारेय गणमें सिर्फ एक वार्मिक विद्यार्थी था। इस शिलालेखमें कृष्णराजदेवकी उपाधियाँ चालुक्य राजाओंके समान ही हैं तथा चक्रवर्तीकी उपाधियाँ हैं, और हम यह भी देखते हैं कि शक ७९८ में, जो मन्मथ संवत्सर था सुगन्धवर्तिने उसने एक जिनमन्दिर बनवाया, और इसके लिये १८ 'निर्वर्तन' भूमि दी। किन्तु यह लेख किसी उत्तरवर्ती समयमें खोदा गया होगा, क्योंकि प्रथम चार पक्तियोंमें राजा कन्नके जो कि पृथ्वीरामके ५ या ६ पीढी आगे हुआ है, पुरु दानका उल्लेख आता है। यह दान सुगन्धवर्तिके मुल्लुगुन्दके 'सीवट' में किया गया था।

लेखका वशावलीका भाग लेख न० २३७ की 'रट्टवशोद्भव रयातो' पक्तिसे शुरु होता है। प्रथम नाम नन्नका आया है। उसका पुत्र कार्तवीर्य था जो चालुक्य राजा आहवमल्ल या सोमेश्वरदेव प्रथमके अधीन था। सोमेश्वरदेव प्रथमका काल सर डब्ल्यू इलियट (Sir W. Elliot) ने शक ९६२ (ई० १०२०-१) से लेकर शक ९९१ (ई० १०६९-७०) दिया है और इसी लेखसे यह पता चलता है कि कार्तवीर्यने ही कुण्डुण्डी (जो कि उत्तरवर्ती लेखोंका 'कुण्डी तीन हजार' है) की सीमाये निर्धारित की थीं। इसके बाद तीन पीढी बीतनेपर चौथी पीढीमें कार्तवीर्य द्वितीयका नाम आता है। यह चालुक्यराजा त्रिभुवनमल्लदेव, पैर्माडिदेव या त्रिकुमाडित्य द्वितीय था।]

[JB, X, p 194-198, ins n° 2, 1st part]

१३१

विलियूर—कन्नड ।

[शक ८०९=८८७ ई०]

भद्रमस्तु जिनशासनाय (I) शक-नृपातीना (त) काल-संवत्सरगळे-

१ मूल लेखमें, "शक कालके ७९७ वर्ष व्यतीत होने पर" है।

नुनूर्गेम्बत्तनेय वर्ष 'प्रवर्त्तिसुत्तिरे खस्ति सत्यवाक्यकोड्डुणिवर्म्म-
धर्म्म-महाराजाधिराज कुवलाल-पुरवरेखर नन्दगिरि-नाथ श्रीमत्-
पेर्म्मनडिय राज्याभिषेक गेय्द पडि नेण्टनेय वर्षदन्दु पा (फा) ल्गुण-
मासद श्री-पञ्चमे यन्दु शिवणान्दि-सिद्धान्तद-भटारर शिष्यर् स्सर्व्व
(वै) णान्दि-देवर्गे पेण्णे-गडङ्गद सत्यवाक्य-जिनालयके पेड्डोर्रे-
गरेय विलियूर्-प्पन्निर्पक्कियुम सर्व्व-पाद-परिहार पेर्म्मनडि कोट्टो तोम्
भट्टरु-सासिर्व्वरु अय्-सामन्तरु वेड्डोर्रेगरेय एल्पडिम्बरु एन्तोक्कलु इदक्के
साक्षी मले-सासिर्व्वरु अय्मुर्व्वरुम (अय्नुर्व्वरु) अय्-दामरिगरु इदक्के
कापु इदनक्कित्तो वारणासियुम सासिर्व्वर्पार्व्वरुम सासिर कविले युम-
नक्कित्तोम् पञ्चमहापातकनक्कु सेदोजन लिखित्त (त) वैलियूर् ऐम्बट्टु-
गद्याण पोन्न एण्टु-नूरु-वट्टमु तेरुवोम् ।

[यह दान शकवर्ष ८०९ के चालू रहते हुए फाल्गुन महीनेके पाँचवें दिन, जिस वर्ष पेर्म्मनडिके राज्याभिषेकका १८ वा वर्ष चालू था, उन्होने शिवनन्दि सिद्धान्त- भट्टारके शिष्य सर्व्वनन्दि-देवको पेड्डोर्रेगरेके अन्तर्गत विलियूरके १२ छोटे गाँव, हमेशाके लिये लगान बगैर. से मुक्त करके, दिये । यह दान पेन्ने कडङ्गके सत्यवाक्य जिनचैत्यालयके लिये दिया गया था । ऐसा दीखता है कि 'सत्यवाक्य-कोड्डुणिवर्म्म-धर्म्म-महाराजाधिराज' पेर्म्मनडि-की ही उपाधि या विरुद है । ये दोनों एक ही व्यक्ति है, अलग-अलग नहीं । ये कुवलाल-पुरके प्रभु तथा नन्दगिरिके नाथ थे ।

आगे लेखमें साक्षियों तथा सरक्षकोका परिचय है । इस दानको भङ्ग करनेवालेको अमुक-अमुक पापका भागी बताया है । यह लेख सेदोजका लिखा हुआ है ।

विलियूर की आसदनी ८० गद्याण सोना और ८०० (नाप) तन्दुल (चावल) की है ।]

१३२

हुम्मच—कन्नड ।

शक ८१९=८९७ ई०

[हुम्मचमे गुड्डद वस्तिकी वाहरी दीवालपर]

स्वस्त्यनवद्य-दर्शन महोग्र-कुल-तिलक नय-प्रताप-सम्पन्न पर-चक्र-
गण्ड गोण्ड वल्लात कार्मुक-राम श्रीमत्-तोलापुरुष-विक्रमादित्यशा-
न्तरं शक-वर्ष येण्टनूर यिप्पत्तनेय वर्ष प्रवर्त्तिसुत्तिरे श्रीमत्-कोण्डकुन्दा-
न्वयद मोनि-सिद्धान्तद-व (भ) टारगें कल्ल वसदिय माडिसियदके
पोम्बुल्लचद (यहाँ टानकी विशेष चर्चा तथा वे ही अन्तिम वाक्यावयव
आते हैं) ।

इष्टनोर्व्वनधिदेवतेगेन्दोसेदित्तुदम् ।

दुष्टनोर्व्वनदर फलय तवे तिम्ववम् ।

सिष्टिमैले परमात्मने वन्द् . . ।

कष्टव् . विदिरन्ते कुल-क्षय मागुगुम् ॥

[स्वस्ति । जिनका दर्शन (मत) अनवद्य (निर्दोष) है, महोग्र-कुल-
तिलक, न्याय करनेमें प्रसिद्ध, विदेशी राज्योंके शूरवीरोको पकड़नेमें चतुर,
धनुषको पकड़नेवाले रामकी तरह टिखनेवाले, तोलापुरुष विक्रमादित्य-
शान्तरने, (उक्त सित्तिको), कोण्डकुन्दान्वयके मोनि-सिद्धान्त-भट्टारके
लिये एक पापाणकी वसडि बनवाई, और इसके लिये (उक्त) टान
किये । शापात्मक श्लोक ।]

[EC, VIII, Nagar tl, n° 60]

१३३

वल्लीमल्लै (जिला नार्थ आर्कट)—कन्नड ।

[बिना काल-निर्देशका]

१ स्वस्ति श्री [:] [II] शिवमार-आत्मजा (ज)-वरना प्रवर-
श्रीपुरुषनाम-

२ नातन तनय । सुवनीश रणविक्रमन्नवन मका (ग) नू रा-

३ जमल्लन् अमल्लिनचरितन् [॥ १] कण्डु गिर [f] वरमना

भूम-

४ डलपति राजमल्लन् अभयनुदारम् [] पण्डितजन-

५ प्रिय कैय्-कोण्डान् कोण्डन्ते वसतियम्माडि-

६ सिद्धान ॥ [२]

अनुवाद—(श्लोक १) गिवमारके पुत्रोमें सवसे अच्छा पुत्र श्रीपुत्प नामका (राजपुत्र) था । उसका पुत्र लोकप्रभु रणविक्रम हुआ । उसका पुत्र अमलचरित राजमल्ल हुआ ।

(श्लोक २) इसको मघसे अच्छा पर्वत समझकर, भूमण्डलपति, अभय पुत्र उदार तथा पण्डितजनप्रिय राजमल्लने इन्ने अपने अधिकारसे कर लिया, और तत्पश्चात् इसपर एक वसति (मन्दिर) बनवाइ ।

[LI, IV, n° 15, A]

१३४

चलीमलै—कन्नड़ ।

[विना काल-निर्देशका]

(यह लेख दाहिनी तरफसे पहली प्रतिमाके नीचेका है)

१ स्वस्तिश्री [II] बालचन्द्र-भटारक

२ शिष्य अञ्जनन्दि-भटारक

३ माडिसिद प्रतिमे गोवर्धन्

४ भटाररेन्दोडमवरे [III]

अनुवाद—यह प्रतिमा भटारक बालचन्द्रके शिष्य भटारक अञ्जनन्दि (आर्यनन्दि) के द्वारा बनवाई गई; और प्रतिमा 'गोवर्धन भटारक' की है ।

[LI, IV, n° 15, D]

१३५

बल्लीमल्लै—कन्नड़ ।

[विना काल-निर्देशका]

व—यह लेख बाईं तरफसे दूसरी प्रतिमाके नीचेका है ।

श्री [II] अज्जनन्दि-भटारक प्र [ति] म [] म [I] ड [] दा
[७] [III]अनुवाद—स्वस्ति । भटारक या भटार अज्जनन्दि (आर्यनन्दि)ने
(इम) प्रतिमाको बनाया ।

[EI, IV, n° 15, B]

१३६

बल्लीमल्लै—कन्नड़ ।

[विना काल-निर्देशका]

- १ स्वस्ति श्री [III] वाणरायर
- २ गुरुगल्प भवणन्दि-म-
- ३ टारर शिष्यरप्प देवसेन-
- ४ भटारर प्रतिमा [II]

अनुवाद—स्वस्ति श्री । यह प्रतिमा भटारक देवसेनकी है । ये
देवसेन वाणरायक गुरु भटारक भवणन्दि (भवनन्दि)के शिष्य है ।

[EI IV, n° 15 C]

१३७

मूलगुण्ड (जिला धारवाड); संस्कृत ।

शक ८२४=९०३ ई०

लेख

श्रीमते महते शान्त्ये श्रेयसे विश्ववेदिने [I] नमश्चन्द्रप्रभाख्याय
जैनशासनमृद्वये [II] शकनृपकालेष्टशते चतुरुत्तरविंशदु (त्यु)

त्तरे संग्रगते दुन्दुभिनामनि वर्षे प्रवर्त्तमाने [I] जनानुरागोत्कषे
 श्रीकृष्णवल्लभनृपे पाति मही विततयज्ञसि सकला तस्मात् पालयति
 महाश्रीमति विनयाम्बुधिनाम्नी धवलविपय सर्व [I] तस्मिन् मुळगुन्दा-
 ख्ये नगरे वरवैश्यजातिजात (त.) ख्यात चन्द्रार्यस्तत्पुत्र-
 श्चिकार्यो चाकर (रत) जिनोन्नतभवन तत्तनयो नागार्यो
 नान्ना [II] तस्यानुजो नयागमकुण्ड अरसार्यो दानादिप्रोद्युक्तस-
 म्यक्त्रसक्तचित्तव्यक्त [III] तेन दर्शनाभरणभूषितेन पितृकारितजिनाल-
 याय चण्डिकवाटे शेनान्वयानुगाय नरनरपतियतिपतिपूज्यपादकुमार-
 शे(से)नाचार्यमी (मे) खवीरशे (से) नमुनिपतिशिष्यकनकशे
 (से) नसूरिमुख्याय कन्दवर्ममालक्षेत्रे ए (ऐ) (छे) कमणिव-
 कनकुळार्ये (१ य्ये) (र्य्य) क**वम्मानाहस्तात्सहस्रवल्लीमात्रक्षेत्रं
 द्रव्यसिन्दु (दु) ना गृहीत्वा नगरमहाजनविदेगे दत्त [III] तजिना-
 लयाय त्रिशतपट्टिनगरै चतुर्भिः श्रेष्ठिभिः पिळ्ळग (छे) क्षेत्रे सह-
 स्रवल्लीमात्रक्षेत्र दत्त [III] तजिनभवनाय त्रिंशतिमहाजानुमताद्वेळ्ळ-
 चिकुलब्राह्मणैश्च तन्कन्दवर्ममालक्षेत्रे सहस्रवल्लीमात्रक्षेत्र दत्त [III]
 एवं त्रीण्यपि नागवल्लिभ्रेत्राणि सर्वावाधा

[यह शिलालेख जिस पत्थरके टुकड़ेपर है वह धारवाड जिलेके डम्बळ-
 तालुकाके मूलगुण्डकी दीवालमें लगा हुआ है। इस टुकड़ेका जेप अश
 अभीतक नहीं मिला है। मगर सौभाग्यसे इसी वचे हुए टुकड़ेमें लेखका
 महत्त्वपूर्ण भाग आ जाता है। लुप्त भागमें सिर्फ थोड़े-से अन्तिम वे ही
 श्लोक हैं जिनमें लेखके रक्षण और मिटानेपर क्रमशः अनुग्रह (पुण्य)
 और शापका वर्णन मिलता है। लेख पुराने टाइपके प्राचीन कनड़ीके
 अक्षरोमे खुदा हुआ है। ये प्राचीन कनड़ीके अक्षर गुफा-वर्णमाला (Cave-
 alphabets) से बहुत-कुछ मिलते-जुलते हैं।

यह लेख धारवाड जिलेके मूलगुण्डमें वैश्य जातिके चन्द्ररायके पुत्र चीकार्यके द्वारा एक जैनमन्दिरके निर्माणका तथा उस मन्दिरकी तरफसे कुछ भूमिदानका उल्लेख करता है। यह निर्माण और दान दुन्दुभि सवत्सर शक ८२५ में किया गया था। उस समय राजा कृष्णवल्लभ राज्य कर रहे थे। लेखगत 'धवल' जिलेसे देशके किस भागसे मतलब है, यह स्पष्ट नहीं है। यद्यपि यह लेख लघु है, पर महत्वपूर्ण है। इसमें सन्देह नहीं है कि इस लेखका 'राजा कृष्णवल्लभ' वही है जो राष्ट्रकूट या रट कुलके राजा कृष्णराजदेव है और जो इसी पुस्तकके शिलालेख नं० १३० के अनुसार शक ७९८में राज्य कर रहे थे। बादके अन्य शिलालेखोंमें इन्हे ही रटवशका प्रथम राजा कहा गया है।

पूर्ववर्ती चालुक्य राजाओंके उत्तराधिकार और कालके विषयमें बहुतसे सन्देह उत्पन्न होते हैं, लेकिन हम जानते हैं कि उनमेंसे तीन चालुक्य राजा राष्ट्रकूट युवराजोंके साथ बहुत ही सीधे और वातक सधर्म आये हैं। वे तीन राजा जयसिंह प्रथम, तैलप प्रथम और तैलप द्वितीय थे। राष्ट्रकूटवश और चालुक्यवशके पूर्ववर्ती राजाओंकी वशावली यदि काल-सहित संग्रह की जाय तो वह इस विषयमें बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध होगी।]

[J.B., X, p 190-191, ins n° 1]

१३८

क्यातनहल्लि—कन्नड ।

[विना काल-निर्देशका (सभवतः लगभग ९०० ई०)]

भद्रमस्तु जिनशासनायानवरत • दखिलसुरासुरनरपतिमौलि-
माला • गारविन्द-युगल अरवल्ल-श्रीराज्य-युवराज [रप्प भद्र]
श्राहु-चन्द्रगुप्त-मुनिपति-चरण-मुद्राङ्कित-विशाळशि मान-जगल्ल-
ता(ला)मायितश्रीकल्वप्पु-तीर्त्त-सनाथ-वेल्गोळ-निवासि- • • श्रवण-
सद्ध-स्याद्वादाधारभूतरप्प श्रीमत्सस्ति सत्यवाक्यकोङ्गणि-[व]-म्म-

† मूलमें "शक राजाके कालमें ८२४ वर्ष व्यतीत होनेपर" ऐसा पाठ है।

वरेदोम् नागवर्म्म देवारके कोइ केय् ग अबुतवूर्गं कालान्तरदोळ्
मोह-सन्दोम् पञ्च-महा-पातकनक्कु

यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ।

(वाज्रमें) ई-कल्ल सन्दिगर कुळि ...मुद्दन् निरिसिदोम्....

वेलेयम्मन मगम्

[जब प्रजापति सवत्सर शक वर्ष ८३४ में, महाराजाधिराज परमेश्वर परमभट्टारक कन्नर-देवका राज्य प्रवर्धमान था,—जिस समय कालिक देव-यसर-अन्वयके महासामन्त कलिविद्वरस वनवासि १२००० का शासन कर रहे थे,—नागरखण्ड सत्तरके 'नाळ-नावुण्ड' के पदको धारण करने-वाले सत्तरस नागार्जुनके मर जानेपर राजाने जक्रियव्वेको आवुतवूर और नागरखण्ड-सत्तर दे दिया। जक्रियव्वेने भी जकळिमें मन्दिरके लिये ४ मत्तल चावलकी भूमि दी। एक वीमारीके समय उसने शक, सं० ८४० में, बहु-धान्य वर्षमें, पूर्ण श्रद्धासे वसदिमे आकर समाधिमरण ले लिया।]

१४१

गिरनार—संस्कृत-भग्न ।

(काल लुप्त)

[यह लेख नेमिनाथ मन्दिरके दक्षिण तरफके प्रवेशद्वारके पासके प्राङ्गणके पश्चिम दिशाकी तरफके एक छोटे मन्दिरकी दीवालपर है। पापाण द्रटा हुआ है।]

॥ स्वस्ति श्रीधृति

॥ नमः श्रीनेमिनाथाय ज

॥ वर्षे फाल्गुन शुदि ५ गुरौ श्री

॥ तिलकमहाराज श्रीमहीपाल

॥ वयरसिंहभार्या फाउसुतसा

॥ सुतसा० साईआ सा० मेलामेला

॥ जसुतारूडीगांगीप्रभृती
 ॥ नाथप्रासादा कारिता प्राताष्ट
 ॥ ... द्रसूरि तपडे श्रीमुनिसिंह
 ॥कल्याणत्रय

अनुवादः—स्वस्ति श्री धृति... श्री नेमिनाथको नमस्कार...
 ...वर्ष... फाल्गुन सुदी ५, वृहस्पतिवार, श्री ... श्रीमहीपाल,
 महाराज और... के तिलक... फाऊ नामकी वयरसिंहकी
 भार्या, उसका पुत्र माननीय ... उमके पुत्र माननीय साईआ और
 मेलामेला... उसकी पुत्रियाँ रूडी, गागी इत्यादि। इन सबने
 एक नेमिनाथका मन्दिर बनवाया —जिसकी प्रतिष्ठा . . . द्रसूरिके
 पदपर विराजमान श्रीमुनिभिंहने की ... कल्याणत्रय ।

[ASI, XVI, p 353-354, n° 11

१४२

सुदी (जिला-धारवाड़) संस्कृत और कन्नड़ ।

शक सं ८६०=९३८ ई०

लेख

पहला ताम्रपत्र

१ श्रीर्विभाति सुवि (धी)र्यस्य निरवद्य [I] निरत् (व्) अया
 तस्मै नमोऽर्हते

२ लोक-हित-धर्मोपदेशिने ॥ जित [-] भगवता [गत]-वनग-
 [ग]नामे-

३ न पद्मनाभेन [II] श्रीमज्जाह्वीय-कुला[म]ल-व्योभावभासन-
 भास्करः ॥

- ४ स्व-खड्गैक-प्रहार-खण्डित-महा-शीलास्तम्भ-लब्ध-वळ-पराक्रमो
दारुणा-
- ५ रि-गण-विदारणोपलब्ध-त्र (त्र)ण-विभूषण-भूपितः क[१]ण्मा-
- ६ यन-सगोत्र [ः] श्रीमत्-कोङ्कुणिवर्म-धर्ममहाराजाधिराजः [॥]
- ७ तत्पुत्रः । पितुरन्वागत-गुण-युक्तो । विद्या-विनय-विहित-वृत्तिः
- ८ सम्यक्-प्रजा-पालन-मात्रा-वि(धि)गत-राज्य-प्रयोजनो विद्वत्-क-
वि-का-
- ९ अन्न-निकषोपल-भूतो नीति-शास्त्रस्य वक्तृ-प्रयोक्तृ-कुशलो दत्तक-
- १० सूत्र-वृत्ते(ः)-प्रणेता श्रीमन्माधवमहाधिराजः । (॥) ओ तत्पुत्रः[ः]
पितृ-पैता-
- ११ महगुणयुक्तोऽनेक-चा(च)तु[१] इन्[१] अ-युद्ध[१]वाप्त-चतु-
द्वितीय ताम्रपत्र, दूसरी वाजू
- १२ रुदवि-सूलीळाश्वाटिल्यगाह श्रीम[१]न् हरिवर्म-महाधिराजः [॥]
- १३ तत्पुत्रः श्रीमान् विष्णुगोप मह[१]धिराजः [॥] ॐ तत्पुत्र.
- १४ स्व-भुज-वळ-पराक्रम-क्रय-क्र[१]तराज्यः कलियुग-वळ-पङ्काव-
- १५ सन्न-धर्म-वृपोद्धरण-निते(त्य)सन्नद्धः श्रीमान् माधव-महाधिराजः ।
(॥) ओ
- १६ तत्पुत्रः[ः] श्रीमत्-कदम्ब-कुल-गगन-गभस्तिमालिनः ।
कृप(ष्ण)वर्म-स(म)-
- १७ हाधिराजस्य प्रिय-भागिनेयो विद्या-विनय-पूरिता-
- १८ न्तरात्मा निरवग्रह-प्रधान-शौच्यो विद्वत्पुं प्रथम-गण्यः[ः]श्रीमान्

- १९ कोङ्कुणिवर्म-त्र (ध)र्ममहाराजाधिराज-पु(प)रमेश्वरः श्रीमद्-
अविनीत-प्रथम-
- २० नामज (धे) य [॥] तत्पुत्रो विजृम्भमाण-शक्ति-त्रय. अन्द-
रि-आलत्तूर-पुरुळरे-पेण्ण-
- २१ गराधनेक-समर-मुख-मख-ह(यु)त-प्रहत-शूरपुरुष-पशूप-हार-
विद्य-
- २२ स-विहस्ति(स्ती)कृत-कृतान्ताग्निमुखः किरातार्जुनीयस्य पञ्चदश-
सर्ग-टीकाकारः[]
- दूसरा ताम्रपत्र, दूमरी बाजू
- २३ श्रीमद्-[द]ुध्विनीत-प्रथम-नामधेयः [॥] ओ तत्पुत्रो दुर्दान्त-
श(वि)मर्द-मृदिते(त)-विश्व[]भरा-
- २४ रि(धि)प-मो(मौ)लि-माल(1)-मकरन्द-पु[']ज-पि[']जरीश्र (क्रि)-
यमाण- चरणयुगल-नलिन श्री [मुष्क]र-
- २५ प्रथम-नामधेय । [॥] ओ तत्पुत्रश्चतुर्दशविद्यास्थानाधिगतेरमल-
मतिर्विशेषतो [नि] र-
- २६ वशेषस्य नीति-शास्त्रस्य वक् [त्]प्रया (यो) क्त-कुशलो रिपु-
तिमिर-निकर-सरकरुणोदय-मा-
- २७ स्वर श्री-विक्रम-[प्र]थम-नामधेय [॥] ओ तत्पुत्रा(त्रो)ऽनेक-
समर-सप्राप्त-विजय-
- २८ लक्ष्मी-लक्षित-वक्षस्थल. समधिगत-सकल-शालार्थः[]श्री-भूवि-
क्रम-प्रथम-
- २९ प्रथम-नामधेय. [॥] ओ तत्पुत्रः स्वकीय-रूपातिशय-विजी-
(जि) त-नल-भूपा-

- ३० कारादिशिवमा[र-प्रथम-ना]मध[े]यः [॥] ओं तत्पुत्रः प्रतिदिन-
प्रवर्द्धमान-महादान-जनित-पुण्यो
- ३१ हसुल-मुखरित-मन्दरोदराः श्री कोङ्कुणिवर्म्म-धर्म्ममहाराजाधि-राज-
परमेश्वरः
- ३२ श्रीसु(पु)रुप-प्रथम-नामधेयः।(॥) तत्पुत्रो विमल-ग[']गान्धव-
नभ[ः]स्थलः र(ग)भस्तिमाली श्रीक्रों-
- ३३ गुणिवर्म्म-दा(ध)र्म्ममहाराजाधिराज-परमेश्वरः श्री श[ि]व-
मारदेव-प्रथम-नामधेयः ।
- ३४ शैगोत्तापरनामा [॥] तस्य कनीयान् श्री-विजयादित्यः । (॥)
र (त)त्पुत्रत्समविगत-राज्य-
- ३५ लक्ष्मी-प(स)मालिङ्गित-वक्षः सत्यवाक्य-कोङ्कुणिवर्म्म-धर्म्मम-
हाराजाधिरा-

तृतीय ताम्रपत्र; पहली बाजू

- ३६ ज-परमेश्वर[ः]श्री-राजमल्ल(छ)-प्र[थ]म-नामधेयस्तत्पुत्रः रामति-
(१ दि)-समर-संहा-
- ३७ लिप(रि)तोदार-त्रैरि-वि(वी)रपुरुषो नीतिमार्ग-कोङ्कुणि-धर्म्म-
धर्म्मराजाधिराज-परमेश्वर[ः]
- ३८ श्रीमद्-एळे(रे)गङ्गदेव-प्रथम-नामधेय[ः]ओ तत्पुत्रः सामिय-
समर-सञ्जनित-विज-
- ३९ [य]श्रीः श्री-सत्यवाक्य-कोङ्कुणिवर्म्म-धर्म्ममहाराजाधिराज-परमे-
श्वर[ः] श्री-राजमल्ल-

- ४० प्रथम-नामधेय । (॥)ओ तसु(स्य)कनीयान् निछोँरि(ठि)र्त-पल्लवा-
धिपः श्रीम[द]मोघवर्षदेव
- ४१ पृथ्वीवल्लभ-सुतया^१ श्रीमद्व्यलव्वायाब्ह(या.) प्राणेश्वरः[]
श्रीवृद्गुग-प्रथम-ना-
- ४२ मवेयः गुणदुत्तरङ्गः । (॥) ओ तन्पुत्रः । एळे(रे)यप्प-पट्टवन्व-
परिष्कृत-लला[मो]ज(? वं)-
- ४३ टेपेरुपेञ्जेरु-प्रभृति-युद्ध-प्रवन्ध-प्रकावि (टि) त-पल्लर(व)पराजय[.]
श्री-नी]व[ि म]र्ग-
- ४४ रंगिणिवर्म्म-र(ध)र्म्ममहाराजावि(वि)राज-परमेश्वर[] श्रीमदेळे
(रे)गङ्गदेव-प्रथम-नामधेय.
- ४५ कोमर-चेडेङ्गः । (॥)ओ तन्पुत्रः[]श्री-सत्यवाक्य-कोङ्गुणिवर्म्म-धर्म्म-
महाराजाधिराज-परमेश्वर[]
- ४६ श्रीमन्नरसि[]घदेव-प्रथम-नामव[]य वी(वी)रवेडङ्गः ॥ ओं
तन्पुत्रः कोट्टमरद
- ४७ तोण्णिरग-श्री-नीतिनार्गी-कोङ्गुणिवर्म्म-धर्म्ममहाराजाधिराज-परमे-
श्वरः[] श्री-र[ाजम]ल्ल-
- ४८ प्रथम-नामधेयः । कच्छेय-नाङ्गः । (॥) ॐ त्रि(वृ) [॥]
तस्यानुजो निजभुजाजित-सम्पदार्थो

तृतीय तान्नपत्र; दूमरी बाजू

४९ भूवल्लभ [-] समुपगम्य ल(ड)हाडदेगे श्री-वदेग तदनु त-

५० स्व सुता सहैव वाक्कन्यया व्यवहृत्तवि (म)-धीक्षिपु-

१ 'निर्लङ्कित' और भी शुद्धरूप होगा । २ 'सुताया' पद्ये ।

- ५१ र्था [॥] अपि च ॥ लक्ष्मीमिन्द्रस्य हर्तुं गतवति दिवि यद्
बोद्देगाङ्कि (के)
- ५२ महीशे ह [२]त्वा ल [ल् ?] एय-हस्तात्कारि-तुरग-सितच्छात्रनि
(सि)-
- ५३ हासनानि । प्रा[दा]त् कृष्णाय राजे क्षित [ि]-पति-गणनाश्व-
- ५४ प्रणीर्य्य(ः)प्रतापात् राजा श्री-वृट्टुगाख्यस्समजनि विजि-
- ५५ ताराति-चक्रः प्रचण्ड. ॥ कञ्चातः किन्नं नागादळ्चपुर-पति-
- ५६ कङ्कराजोऽन्तकस्य विज्जाख्यो दन्तिवर्म्मा युनि (धि) निज-
वनवासी त्व-
- ५७ म राजवर्म्मा ज्ञान्तत्व शान्तदेशो नुल्लु-गिरि-पतिर्दाम-रिर्द्वर्ष-
भङ्ग [-]

चतुर्थं ताम्रपत्र, पहिली बाजू

- ५८ मध्येऽन्त नागवर्म्मा भयमतिरभसाद् गङ्ग-गाङ्गेय-भू-
- ५९ पात् ॥ राजादित्य-नरेश्वर गज-वटाटोपेन सदरिपित (म्)
- ६० जित्वा देशत एव गण्डुगमहा निद्धोद्व्य^३ तञ्जापुरीं नाळ्कोटे-
- ६१ प्रमुखाद्रि-दुर्ग-निवहान् दग्ध्वा गजेन्द्रान् हयान् कृष्णा-
- ६२ य प्रयितन्वन स्वयमदात् श्री-ग[-]ग-नारायणः [॥]
- ६३ आर्य्या ॥ एकान्तमत-मदोद्धत-कुवादि-कुम्भीन्द्र-कुम्भ-सम्भेद ॥ (१)
- ६४ नैगम-नयादि-कुलिशैरकरोज्जयदुत्तरङ्ग-नृपः ॥ गद्यम् ॥
- ६५ सत्यनीतिवाक्य-फोड्डुणिवर्म्म-धम्ममहाराधिराज-परमेश्वर [.]

१ 'सितच्छत्र' पदो । २ सभवत यह पाठ 'किञ्चात् किन्तु' रहा होगा ।
३ 'निर्द्वाव्य' पदो ।

चतुर्थे तान्नपत्र, दूसरी चाञ्च

- ६६ श्री-व्रतुग-प्रथम-नामधेयो नन्निय-गङ्गः पण्णवति—
 ६७ सहस्रमपि गङ्ग-मण्डल [म्] प्रतिपाळ्या(य)न् पुरिकर-पुरे कृ-
 ६८ तावस्थान (:) स (श) क-वरि [श] पुं पष्ठ्युत्तराष्ट[श]
 तेषु अतिक्रान्तेषु विक्रा—
 ६९ नि(रि)-संवत्सर-क्रा[^१] त[^१ि] क-नन्दीस्व (श्व)र-सु(शु)
 क्ल-पक्षः अष्टम्यां आदित्यवारे
 ७० [खक]ीय-प्रियाया, सम्यग्द[^१]गन-विशुद्धतया प्रत्यक्ष-धै-(दै)
 ७१ वत्या. श्रीमद्दीवलास्त्रिकाया. चैत्यालयाय सुल्धाटवी-स—
 ७२ प्रति-ग्राम-मुख्य-भूतायान्नगर्भ्या सून्द्यां विनिर्मापिता—
 ७३ य खण्ड-स्पु(स्फु)टित-नवकर्म्मार्थं पूजाकरणार्थमाहारार्थं
 ७४ च पट् श्रा(श्र)मण्यो जनान् दानसन्मानादिना सन्तर्प्योत्तर-
 दिश्याया

पाँचवाँ तान्नपत्र

- ७५ राजमानेन दण्डेन पष्टि-निवर्त्तन श्रीमद्वाडि(? टि)युर्गण-मुख्य—
 ७६ स्व नागदेव-पण्डितार्थं स्व[य]मेव पादो (दै) प्रक्षाड्य(ल्य)
 सून्द्यां दत्तवान् [||]
 ७७ तस्यावट^३ पूर्वत. मानसिग-केय्-दक्षिणतः पन्नसिनभूमिः प—
 ७८ श्रिमत्. के (क्ते)परपोलमुत्तरतः बालुगोरिय वन्द पल्ल[||]
 अरुवण गद्या—
 ७९ ण-त्रय ग्रामो दीयते^४ ऽशेष-क्रम ग्रामो रक्षति ॥

१ 'वर्षेषु' इति शुद्धपाठ । २ 'पण्डितस्य' पदो । ३ 'आषाढ' पदो ।
 ४ 'ददास्यनेष' पदो ।

- ८० सामान्योऽयं धर्म-सेतु[^१]नृपानां काले-काले पालनीयो भवद्वि-
स्सवनि-
- ८१ तान् भाविनः पार्थिवेन्द्रो (न्द्रान्) भूयो-भूयो याचते रामभद्रः ॥
वहुभिर्व्वसु-
- ८२ धा भुक्ता राजभिस्सगरादिभि [ः] यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य
तस्य तदा फलम् ॥
- ८३ सुल्वाटवी-सप्तति-मुख्य-सून्द्यामचीकरं^१ जैन-गृहं प्रसिद्ध पट्-ग्रामणी-
- ८४ छि-विधान-पूर्वं श्री दीवल(१)म्वा जगदेकरम्भा । (॥)

ॐ । ॐ । ॐ

[J. F Fleet, EI, III, n° 25, f, S, t et tr]

भावार्थ

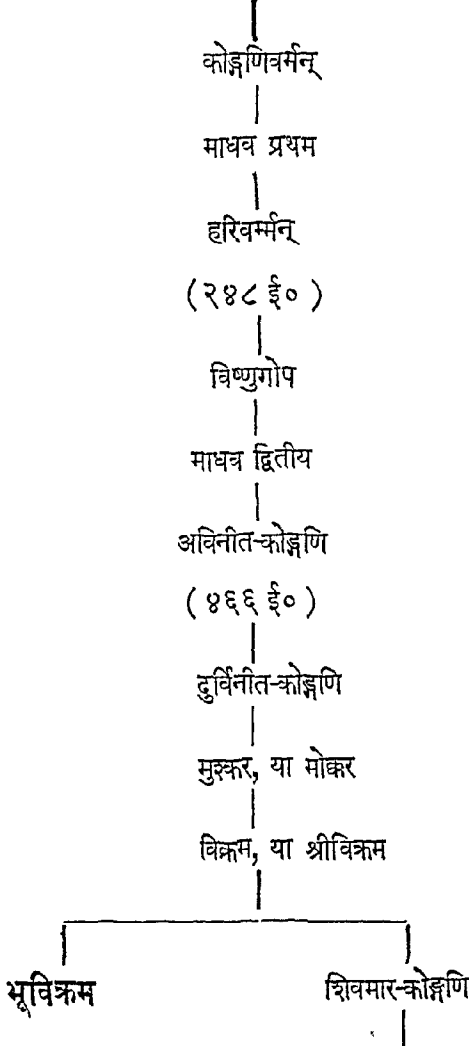
[यह शिलालेख अग्रेल, १९९२ ई० मे जे. एफ फ्लीटके देखनेसे आया । उन्होंने ही इसे, सबसे पहले, एपिग्राफिआ इण्डिका, जिल्ड ३, मे (पृ० १५८-१८४) छपाया । यह उन्हे सूदीके एक निवासीसे ताम्रपत्रों (Plates) पर मिला ।

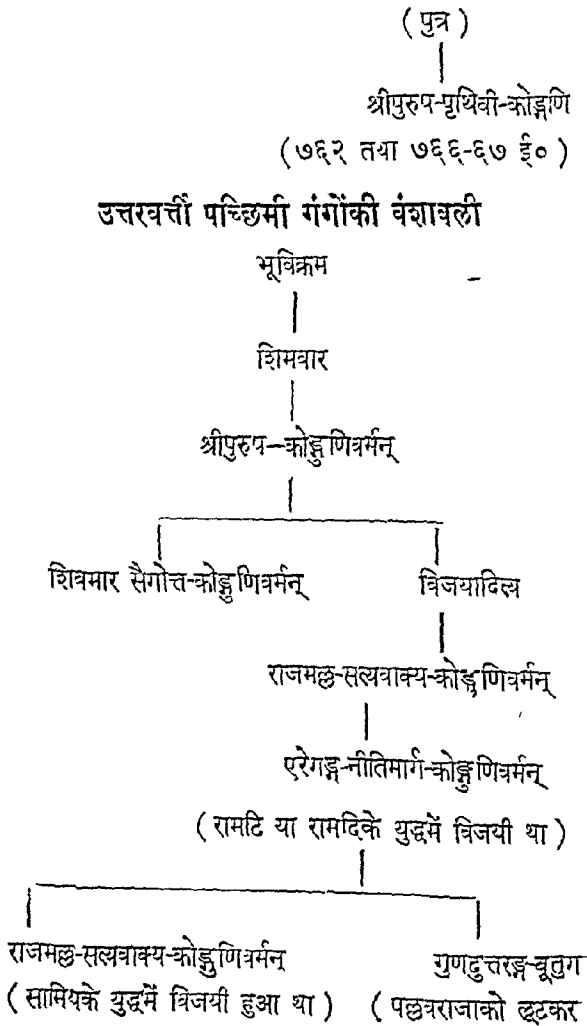
इस शिलालेखमें उस पच्छिमी गंग युवराज वृत्तुगका उल्लेख है जिसने चोलराजा राजादित्य और राष्ट्रकूट राजा कृष्ण तृतीयके बीचमें ९४९-५० ई० में या इससे पहले हुए युद्धमे चोल राजा राजादित्यको मार डाला था । इस अभिलेखका उद्देश्य उस जमीनके दानका लेखन है जो उसने अपनी पत्नीद्वारा सुन्दी, यानी सूदीमे निर्माण कराये गये जैनमन्दिरको दी थी । उसकी पत्नी का नाम दीवलाम्वा था । यह लेखन (Record) बनावटी है ।]

इस लेखपरसे फलित पूर्ववर्ती और उत्तरवर्ती पच्छिमी गंगोकी वंशावली इस प्रकार है —

१ 'अचीकरजैन' पढ़ो ।

पूर्ववर्ती पश्चिमी गंगोंकी वंशावली





अमोधवर्षकी - कन्या अब्बलव्वासे विवाह किया)

कोमरवेडङ्ग-एरेगङ्ग-नीतिमार्ग-क्रोङ्गणिवर्मन्
(एरेयप्पके, या द्वारा, पट्टवन्धसे उसका ललाट शोभित था;
और उसने जन्तेप्यरुपेञ्जेरुमे पल्लवोको हराया था)

वीरवेडङ्ग-नरसिंघ-सत्यवाक्य-क्रोङ्गणिवर्मन्

कच्छेयगङ्ग-राजमल्ल-नीतिमार्ग-क्रोङ्गणिवर्मन्

जयदुत्तरंग-गगगागेय-गगनारायण-नन्नियगुग-

वूतुग-सत्यनीतिवाक्य-क्रोङ्गणिवर्मन्

(९३८ ई०)

(इसने डहाल देशके त्रिपुरीमे, ब्रह्मेगकी पुत्रीसे विवाह किया था, ब्रह्मेगकी मृत्युपर कृष्णके लिये राज्य प्राप्त किया, -ल्लेय (?) के पञ्जेसे इसको निकाला; अळचपुरके ककराजको, बनवासीके विज्ज-दन्तिवर्मन्को, राजवर्माको, नुल्लुवुगिरिके ढामरिको, तथा नागवर्माको भय उत्पन्न किया; राजादित्यको जीता, तञ्जापुरीको घेरा, और नाळकोटेके पहाडी किल्लेको जला डाला । इसकी पत्नी दीवळाम्बा थी ।)

१४३

मदनूर—(जिला-नेल्लोर) सस्कृत ।

शक ८६७=९४५ ई० सन्

प्रथम पत्र ।

१ मद्रं स्यात्रिजगन्नुताय सतत श्रीमज्जिनेन्द्रप्रभोरुदामाततशासन[।]-

- २ य विलसद्भ्रमविलवाय च । सामर्थ्यात् खलु यस्य दुष्कलिकृता
दोषाश्च मिथोद्भवा (।) दु-
- ३ वृत्तानि च भूतलेन व्रितना शान्तिश्च नित्य क्षितेः] ॥१॥ खस्ति
श्रीमता सकलभुवनस-
- ४ स्तूयमानमानव्यसगोत्राणा हारितिपुत्राणा कौशिकिवरप्रसाद-
लब्धरा-
- ५ ज्यानाम्मातृग[ण]परिपालिताना स्वामिमहासेनपादानुध्यायिनाम्
भगव-
- ६ नारायणप्रसादसमासादितवरवराहलञ्छनेक्षणक्षणवशिकृताराति
मण्ड[ला]-
- ७ नामश्रमेधावभृयस्नानपवित्रीकृतवपुषाम् चालुक्यानां कुलमल-
कारिणोस्सत्या[श्र]-
- ८ यवल्लभेन्द्रस्य भ्राता कुब्जविष्णुवर्द्धनोष्ट[।]दशवर्षाणि वैगि-
मण्डलमपालयत् । तदात्म-

प्रथम पत्र, दूसरी ओर ।

- ९ जो जयसिंहखयखिशतम् । तदनुजेन्द्रराजनन्दनो विष्णुवर्द्धनो
नव । तत्सूनुम्मंगियुवराज-
- १० × पचविंशतितत्पुत्रो जयसिंहखयोदश । तदवरजः]कोक्कि-
लिष्पणमासान् । तस्य ज्येष्ठो भ्राता
- ११ विष्णुवर्द्धन[स्त]सुच्चाव्य[स]त्त्रिंशत्तम् वर्षाणि[।]तत्पुत्रो विज-
यादित्यभट्ट[।]रकोष्टादश । तत्सुतो

- १२ विष्णुवर्द्धनस्पदत्रिंशत् । नरेन्द्रमृगराजाख्यो मृगराजपरा-
क्रमः[॥]विजयादित्य-भूपालश्चत्वारिंशत्समाष्टमिः
- १३ [॥२]तत्पुत्रः कलिविष्णुवर्द्धनोव्यर्द्धवर्ष । त-
- १४ पुत्रः परचक्ररामापरनामधेयः[॥]हृत्वा भूरिनोडं वराष्ट्रनृपति-
मंगिमहासग-
- १५ रे गंगानाश्रितगंगकूटशिखरानिर्जिल्य सङ्ग[ह]लाघीशं संकि-
लमुग्रबल्लभयुत यो भ [॥]-
- १६ ययित्वा चतुश्चत्वारिंशत्तमन्दकाश्च विजयादित्यो ररक्ष क्षितिं ।
[३] तदनुजस्य लब्ध-

दूसरा पत्र; दूसरी ओर ।

- १७ यौवराज्यस्य विक्रमादित्यस्य सुतश्चालुक्यभीमार्क्षिंशतं[॥]
तस्याग्रजो विजयादित्यः
- १८ षण्मासान् [॥] तदग्रसूत्ररम्मराजत्सप्तवर्षाणि । तत्सूनुमाक्रम्य
वाल चालुक्यभीमपि-
- १९ तुव्ययुद्धमल्लस्य नन्दनस्तालनृपो मासमेक । नाना-सामन्तव-
गैरधिकवल्युतैर्म-
- २० त्तातगसेनैर्हृत्वा त तालराजं विपमरणमुखे सार्द्धमत्युग्रते-
- २१ जाः [॥] एकाव्द सम्यगम्भोनिधिवलयवृतामन्वरक्षद्वरित्री श्रीमा-
श्चालुक्य-
- २२ भीमक्षितिपतितनयो विक्रमादित्यभूपः । [४] पश्चादहमह-
मिकया विक्रमादित्यास्त-
- २३ म [य]ने राक्षसा इव प्रजानाधनपरा दायादराजपुत्रा राज्याभिला-
षिणो युद्धमल्लरा-

२४ जमार्त्तण्डकण्ठि ऋविजयादित्यप्रभृतयो विप्ररीभूता आसन् [I]
विप्र—

तीसरा पत्र, पहली ओर ।

२५ हेणैय पंचत्रपाणि गनानि [I] तनः [I] योऽग्धीट् [I] जमा-
र्त्तण्डन्तेप[I] येन रणे कृतौ [I] क—

२६ णिठ्ठाविजयादित्ययुद्धमल्लौ विदेगौ । [५] अन्ये मान्यमही-
भृतोपि वहवो दु—

२७ ष्टप्रवृत्तोद्धता (:) देगोपद्रवकारिण. प्रकटिनाः कालालय प्रापिताः
[I] दोर्दण्डेरि—

२८ तमण्डलाप्रलया यस्योप्रसप्रामकात्राजौ^१ तंपरभूतृष्व

२९ गिरसो मालेय सन्धार्यते । [६] नाटग्वा विनेरुत्ते रिपुकुलं
कोषाग्निरामूल—

३० तः शुभ्र य [त्य] यशो न लोकरखिल सन्तिष्टने न भ्रमत् [I]
द्रव्याभोधररागिरप्यनुदिनं

३१ सन्तप्यमाने भृग दारिद्र्योप्रत्ररातपेन जननासत्ये न नो वर्षति ।
[७] स चालुक्यभीमनप्ता वि—

३२ जयादित्यनन्दन[I] द्वादशावत्समास्तम्पग् राजभीमो धरा-
तलं । [८] तस्य महेश्वरम्—

तीसरा पत्र, दूसरी ओर ।

३३ चैहमासमानाकृते. कुनाराभः[I] लोकरमहादेव्याः खलु यस्सम-
भवदम्भ[रा]—

३४ जालयः ॥ [९] जलजातपत्रचामरकलशाकुशलक्षणा[क]करचर-

१ शायद °साग्रामिकस्याज्ञा° पदो ।

- णतलः [I] लसदाजा—
- ३५ न्यत्रलविनभुजयुगपरिघो गिरीन्द्रसानूरस्कः ॥ [१०] विदितधरा-
धिपविद्यो विविधायु—
- ३६ धकोविदो विञ्जीनारिकुठः [I] करितुरगागमकुशलो हरचरणांभोज-
युग—
- ३७ लमधुपञ्चश्रीमान् ॥ [११] कविगायककरपतरुर्द्विजमुनिदीनान्ध-
बन्धुजन-
- ३८ सुरभि. [I] याचकगणचिन्तामणिरवनीशमणिर्महोप्रमहसा धुमणिः
॥ [१२] गिरिर्सर्वसु—
- ३९ संख्याढ्दे शक्रसमये मार्गशीर्षमासेस्मिन् [I] कृष्णत्रयोदश-
दिने भृगुवारे भैत्रनक्षत्रे [॥ १३]
- ४० धनुषि रवौ बटलन्ने द्वादशवर्षे तु जन्मनः पट्ट [I] योधाहुदय-
गिरीन्द्रो रविमित्र लोका—
- चतुर्थं पत्र, पहली ओर ।
- ४१ नुरागाय ॥ [१४] स समस्तभुवनाश्रयश्रीविजयादित्यमहाराजा-
धिराजपरमेश्वरपरम[धा]—
- ४२ निम्नोम्भराजकृष्णनाण्डुविप्रयनिवासिनो राष्ट्रकूटप्रमुखान् कुट्ट-
म्बिनस्सर्व्व[ः] नित्यमाज्ञापयति [I]
- ४३ आर्या[ः] । किरणपुरमन्वाक्षीत्कृष्णराजास्थितं यत्त्रिपुरमिव महै-
शपा(ण्डु?)रंग[ः]प्रतापी [I] तदिह [सु]—
- ४४ खसहस्रैरन्वितस्याप्यगन्ध गणनममलकीर्तस्तस्य सत्साहसानाम् ॥
[१५] तस्य[ः]त्म-

- ४५ जो निरवद्यधवलः] कटकराजपट्टशोभितल्लाटः [I] तत्तनयो
विजयादित्यकट-
- ४६ काधिपति[.] । वृत्त । तत्पुत्रो दुर्गराजः प्रवरगुणनिधिर्द्धर्मिक-
स्सत्यवादी त्यागी भो[गी]
- ४७ महात्मा समितिषु विजयी वीरलक्ष्मीनिवासः [I] चालुक्यानां च
लक्ष्म्या यदसिरपि सदा रक्षणा[यै]-
- ४८ व वश[] ख्यातो यस्यापि वेंगीगदितवरमहामण्डलालवनाय ।
[१६] तेन कृतो धर्मपु[रीद]-
- ४९ क्षिणदिशि सज्जिनालयश्चारुतरः [I] कटकाभरणशुभाकितनाम
र्चं पुण्यालयो वसति [॥ १७]

चतुर्थ पत्र, द्वितीय ओर ।

- ५० [श्री] यापनीयसंघप्रपूज्यकोटिमडुवगणेशमुख्यो यः [I] पुण्या-
हर्नन्दिगच्छो जिननन्दिमुनीश्वरो [थ] ग-
- ५१ [ण] धरसदृशः । [१८] तस्याग्रशिष्यः प्रथितो धरायाम् (I)
दिव[I]कराख्यो मुनिपुगवोभूत् [I] यत्केवलज्ञाननिधि-
- ५२ र्महात्मा स्वयं जिनानां सदृशो गुणौघैः ॥ [१९] श्रीमान्दि-
रदेवमुनिस्सुतपोनिधिरभवदस्य शिष्यो धीम[I]न् [I] य-
- ५३ म्प्रातिहार्यमहिम्ना संपन्नमिवाभिमन्यते लोक. [॥ २०] तद-
विष्टितकटक[I]भरणजिनालय[I]-
- ५४ य कटकराजविज्ञप्ते खण्डस्फुटनवकृत्याबलिप्रपूजादिसत्रसिद्ध्यर्थमु-

१ इस सम्पूर्ण समाससे 'कटकाभरणशुभनामाङ्कित' अपेक्षित है, जिसके रख-
नेसे छन्दोभङ्ग हो जाता ।

५५ त्तरायणनिमित्ते मलियपूण्डिनामग्रामटिका सर्वकरपरिहार(म्)
मुदक-

५६ पूर्व कृत्वा दत्ता । अस्य ग्रामस्यावधयः पूर्वतः मुंजुन्यरुं ॥
दक्षिणतः यिनिमिलि ॥ पश्चिम-

५७ तः कल्वकुरु ॥ उत्तरतः[] धर्मवुरमु ॥ एतद्ग्रामस्य क्षेत्रा-
वधयः पूर्वतः गोल्लनि-

५८ गुण्ट ॥ आग्नेयतः[] रावियपेरिय ॐ वु । दक्षिणतः स्थापित-
शिला ॥ नैर्ऋत्या स्थ[] पितशिलैव []

पञ्चम पत्र ।

५९ पश्चिमतः मल्कप ॐ को ॐ वीयुतट[] कश्च ॥ वायव्यतः
ॐ

स्थापितशिलैव । उत्तरत. दुव[चे] ॐ वु []

६० ऐशान्याम् (।) कल्वकुरि ऐव्वोक्चेनि सीमैव सीमा ॥

[चूँकि लेखमे एक जैनमन्दिरके दानका उल्लेख है, अतः इसका प्रारम्भ जैनधर्मके मंगलाचरणसे किया गया है । पक्ति ३ से लेकर ४१ में पूर्वी चालुक्य वंशकी 'समस्तभुवनाश्रय' विजयादित्य (छटे) या अम्मराज (द्वितीय) तक की वंशावली है । वंशावलीके भागमें ऐतिहासिक महत्त्वके दो स्थल हैं, पहिला (पं० १३-१६) विजयादित्य तृतीयके राज्यका वर्णन करता है और दूसरे (पं० २०-३२) में चालुक्यभीम द्वितीयका अभिषेक अर्थात् राजतिलक है ।

जिलालेखमे वर्णित महि नोलम्बेवाडिका एक पल्लव राजा और सङ्किल दाहल (या चेदि) का प्राचीन सरदार मालूम पडता है । अन्तमे इस शासन (लेख) में विजयादित्य तृतीयका एक नया उपनाम परचक्रराम (पं० १४) आता है । विक्रमादित्य द्वितीयकी मृत्युके बाद बराबर पाँच वर्षतक युद्ध-मल्ल, राजमार्त्तण्ड और कण्ठिका-विजयादित्यमें लडाई होती रही । अन्तमें राजभीम (या चालुक्यभीम द्वितीय) राजमार्त्तण्डका वधकर, कण्ठिका-

१ या सम्भवतः 'मुंजुन्यरु' ।

विजयादित्य और बुद्धमल्लको हराकर या देशनिकाला देकर व्यवस्था एवं शान्तिके स्थापनमें सफल हुआ ।

उल्लिखित दान उत्तरायणमें (पं० ५४) किया गया था । दानपात्र एक जिनमन्दिर था, जो धर्मपुरी (श्लोक १७) के दक्षिणमें तथा यापनीयसवके एक मुनिके अधिकारमें था । इसकी स्थापना 'कटकराज' (पं० ५४) दुर्गराज (श्लो० १६) ने की थी और उन्हींके उपनामसे वह कटकाभरण-जिनालय (श्लो० १७ तथा पं० ५३) कहलाया । उसकी प्रार्थना पर (पं० ५४) ही दान किया गया था, और दानके वर्णनका भाग उसके कुटुम्बकी वंशावलीके वर्णनसे शुरू होता है । कहा गया है कि उसके पूर्वज पाण्डुरंगने कृष्णराज (श्लो० १५) के निवासस्थान किरणपुरको जला दिया था, और तदनुसार वह विजयादित्य तृतीयका कोई सैनिक अधिकारी होना चाहिये । उसके पुत्र निरवद्यधवलको 'कटकराज' का पद दिया गया था (पं० ४४) । उसका पुत्र 'कटकाधिपति' विजयादित्य (पं० ४५) था, और उसका पुत्र दुर्गराज (श्लो० १६) था ।

दान की गई चीज मल्लियपूण्डि (पं० ५५) नामका एक छोटा गाँव था, यह कम्मनाण्डु (पं० ४२) जिलेमें था । इसकी सीमाएँ पंक्ति ५६ में दी गई हैं । उत्तरकी सीमा धर्मद्वुरसु (धर्मपुरी) के दक्षिणमें यह जिनालय था ।]

[EI, IX, n° 6]

१४४

कलुचुम्बरू (जिला अत्तीली)—संस्कृत तथा तेलुगू ।

[विना कालनिर्देशका (ई० सन् ९४५ से ९७० के लगभग)]

ओ स्वस्ति श्रीमता सकलभुवनसस्त्यमानमानव्य-सगोत्राणां
हारिति-पुत्राणा कौशिकीवरप्रसादलब्धराज्यानाम्मातृगणपरिपालितानां
स्वामिमहासेनपदानुध्याताना भगवन्नारायणप्रसादसमासादित-वर-वराह-
लञ्छनेक्षणक्षणवशीकृतारातिमण्डलानामश्रमेधावभृतस्नानपवित्रीकृतवपुषं
चालुक्यानां कुलमलकरिणोस् सत्याश्रयवल्लभेन्द्रस्य भ्राता []

श्रीपतिर्विक्रमेणाद्यो दुर्जयाद्वलितो हृतां

अष्टादशसमाः कुञ्ज-विष्णुजिष्णुर्महीमपालयत् ॥(II)

तदात्मजो जयासिंहहृत्त्रयस्त्रिंशत् [I] तद्—

दूसरा पत्र; प्रथम ओर

नुजेन्द्रराज-नन्दनो विष्णुवर्धनो नव । तत्सुनुर्मङ्गी-युवराजः
पञ्चविंशतिं । तत्पुत्रो जयासिंहहृत्त्रयोदश ॥ तस्य द्वैमातुरानुज-कोकिलिः
पण्मासान् [I] तस्य ज्येष्ठो भ्राता विष्णुवर्द्धनस्तमुच्चाढ्य सप्तत्रिंशत् ।
तत्सुतो विजयादित्यभट्टारकोऽष्टादश । तत्सुतो विष्णुवर्द्धनः पद्-
त्रिंशत् । तत्सुतो नरेन्द्रमृगराजस्साष्टचत्वारिंशत् । तत्पुत्रः कलि-वि-
ष्णुवर्द्धनोऽध्वर्द्ध-वर्ष [II] तत्सुतो गुणग विजयादित्यश्चतुश्चत्वारिं-
शत् । अथवा ।

सुतस्तस्य ज्येष्ठो गुणग-विजयादित्य-पतिरं—

ककारस्साक्षाद्बल्लभनृप-समभ्यर्चितभुजः

प्रधानः शूराणामपि सुभट—

दूसरा पत्र; दूसरी तरफ

चूडामणिरसौ

चतस्रश्चत्वारिंशतिमपि समा भूमिमभुनक् ॥

तद्भ्रातुर्युवराजस्य विक्रमादित्यभूपतेः ।

शत्रुवित्रासकृत्पुत्रो दानी कानीनसन्निभः ॥

जित्वा संयति कृष्णवल्लभमहादण्ड सदायादकन् (?)

दत्त्वा देव-मुनि-द्विजातितनयो धर्मार्थमर्थम्सुहुः ।

कृत्वा राज्यम[क]ण्टकनिरुपमं संवृद्धमृद्धप्रजं

मीमो भूपतिरन्वभुंक्त भुवनं न्यायात् समाश्लिंशत् ॥

तदनु विजयादित्यस्तस्य प्रियतनयो महा-
 नधिकधनदस्सख-त्याग-प्रताप-समन्वितः ।
 परहृदयनि[र्]मेदी नाम्नैव कोल्लविगण्ड-भू-
 पतिरकृत षण्मासान् राज्यत्रयस्थितिसयुतः ॥

तस्याग्रसूनुरपराजितशक्तिरम्म-

राजः पराजितपरात्रनिराजराजिः ।

राजाभवद्विदितराजमहेन्द्रनामा

वर्षाणि सप्त सरणिः करुणारसस्य ॥

तस्यात्मजविजयादित्यवालमुच्चाद्य श्रीयुद्धमल्लत्मज-
 स्तालपराजो मासमेकमरक्षीत् ॥ तमाहवे विनिर्जित्य चालुक्य-
 भीमतनयो विक्रमादित्यो विक्रमेणाक्रमे निक्षिप्य नव मासान-
 पालयत् ॥ ततो युद्धमल्लस्तालप-राजाग्रजन्मा सप्त वर्षाणि गृही-
 त्वाऽतिष्ठत् ॥

तत्रान्तरे विदितकोल्लविगण्ड-सूतो

द्वैमातुरो विनुत-राजमहेन्द्र-नामः

भीमाधिपो विजितभीमवलप्रतापः

प्रार्चीं दिशं विमलयन्नुदितो विजेतुम् ॥

श्रीमन्तं राजमध्यन्-धळग-सुरुत्त(त)रन् तातविकिं प्रचण्डं
 विज्जं स[ज्ज च] युद्धे वलिनमतेतरामद्यपं भीमसुग्र
 दण्ड गोविन्द-राज-प्रणिहितमविक चोळपं लोवविकिं
 विक्रान्तं युद्धमल्लं घटितगजघटान् सञ्चिहल्यैक एव ॥
 भीतानाश्चासयन् सञ्चरणमुपगतान् पालयन् कण्टकानुत्-
 सनान् कुर्वन् सुगृह्णन् करमपरमुवो रञ्जयन् ख जनौघ ।

तन्वन् कीर्त्ति नरेन्द्रोच्चयमवनमयत्तार्जवन् वत्पुरागी-
नेव श्रीराजमीमो जगदखिलमसौ द्वादशाब्दान्वरक्षत् ॥

तत्त्व नहेश्वरमूर्तेरुमासमानाकृते कुमारसमानः

लोकमहादेव्याः खलु यत्तमभवद्म्मराज इति विख्यातः ॥

यो रूपेण मनोज विभ्वेन महेन्द्रमहिनकरं

उरुमहसा हरमारे-पुरदहनेन न्यङ्कुर्वन् भाति विदितनिर्मलकीर्त्तिः [III]

यद्वाहुदण्डकरत्रालविदारितारे-

नत्तेभङ्गुम्भगलिनानि विभान्ति युद्धे

मुक्ताफलानि सुभट-शटजोभितानि

वीजानि कीर्त्ति-विततेरेव रोपितानि । (II)

स समस्तनुवनाश्रयश्रीविजयादित्यमहाराजाधिराजपरमेश्वरपरममहा-
रक्ष परन्महत्प्रयोऽत्तिलिनाण्डुविनयनिवासिनो राष्ट्रकूटप्रमुखान् कुटुम्बि-
नरत्समाहूयेत्यमाज्ञापयति ॥ अङ्ककलि-गच्छ-नाना । बल-

चतुर्थपत्र, दूसरी बाजू

हारिगणप्रतीनविख्यातयज्ञा[.] । चातुर्वर्ण्य-श्रमण-विशेषानश्राणना-

भित्तिधिन-मनस्क ॥ श्रीराजचालुकयान्वयपरिवारिन पट्टवर्द्धिकान्व-

यतिलका । गणिकाजनमुखकमलद्युमणिद्युतिरिह हि चामेकाम्बाभूत्

सा । (II) जिनधर्मजलविवर्धनशशिरुचिरसमानकीर्त्तिलाभविलोला ।

दानदयाशील्युता चारुश्रीः श्रावकी बुधश्रुतनिरता ॥

यस्या गुरुपंक्तिरुच्यते—

सिद्धान्तपारद्वया प्रकटितगुणसकलचन्द्रसिद्धान्तमुनि ।

तच्छिष्यो गुणवान् प्रभुरनेनयशात्सुमतिरय्यपोटिसुनीन्द्रः ॥

तच्छिष्याऽर्हन्वङ्कितवरमुनये चामेकारवा सुभक्त्या ।
 श्रीमच्छ्रीसर्वलोकाश्रयजिनभवनख्यातसन्नार्थमुच्चै ॥
 वैङ्गिनाथाम्मराजे क्षितिभृति वलुचुम्बरुसुग्रामिष्ठ ।
 सन्तुष्टा दापयित्वा बुधजनविनुता यत्र जग्राह कीर्तिं ॥

उत्तरायणनिमित्तेन खण्डरफुटितनवकर्म्मार्थं सर्व्वकरपरिहार शास्त्रनी-
 कृत्य दत्तमस्वावधय. [I]

पूर्व्वत. आरुविह्लि । दक्षिणतः कोरुकोलनु । पश्चिमत यिडि-
 युरु । उत्तरतः युह्लिकोडमण्डु । तस्य क्षेत्रावधयः । पूर्व्वत. शर्करा-
 कर्क । दक्षिणतः ईरुलकोलु । पश्चिमतः इडियूरि पोल्गरसु ।
 उत्तरतः कञ्चरिगुण्डु ॥ अस्योपरि न केनचिद्वाधा कर्त्तव्या य. करोति
 स पञ्चमहापातकसंयुक्तो भवति । (II)

बहुभिर्व्वसुधा दत्ता (त्ता) बहुभिश्चानुपालिता ।

यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ॥

खदत्ता परदत्ता वा यो हरेत वसुन्धराम् ।

पष्टिवर्षसहस्राणि विष्टाया जायते कृमिः ॥

अस्य ग्रामस्य ग्रामकूटत्व कड्डुलाम्वात्मज-कुसुमायुधाय दत्त शाश्वतं ॥

अस्य ग्रामस्य [क?] प्याभिधान करवर्जितं ॥

आज्ञप्तिः कटकाधीशो भट्टदेवश्च लेखक ।

कविः कविचक्रवर्त्ती शासनस्साशुयुक्त् ।

पेड्डु-वलुचुवुरिति शासनम्बुशेसिन भट्टदेवनिकार्हणन्दिभटारुल्ल
 गुम्भिसमिय रेड्डेड्डुगाम्बुलनुण्डिपनु(पने) ण्डु तूमुन नि वुट्टुल विट्टु-पड्डु
 नसादञ्चेसिरि [II]

[यह लेख प्राच्य चालुक्यराजा अम्म द्वितीय अपरनाम विजयादित्य षष्ठकी प्रशस्ति है। इसका काल नहीं दिया है। लेकिन दूसरे प्रमाणोंसे पता चलता है कि इसका राज्याभिषेक शुक्रवार, ५ दिसम्बर, ९४५ ई० को हुआ था और उसने २५ वर्षतक राज्य किया था।]

अत्तिलिनाण्डु प्रान्त (दिपय) के कल्लुन्दरु नामके गावके दानका इसमें उल्लेख है। यह दान बलहारि गण और अड्डकलि गच्छके अर्हनन्दि जैन गुरुको किया गया था। दानका प्रयोजन सर्व्वलोकधन्य-जिनभवन नामके जैनमन्दिरके धर्माटिकी भोजनशाला (या भोजनभवन) की मरम्मत वगैर कराना था। यह दान स्वय अम्म द्वितीयने किया था, लेकिन पट्टवर्धिक वंशकी और अर्हनन्दिकी एक शिष्या चामेकाम्वाकी ओरसे दिलवाया गया था। प्रशस्तिके अन्तका तेलुगू भाग स्वय अर्हनन्दिके द्वारा प्रशस्तिके लेखकको दिये गये एक इनामका जिक्र करता है।]

[EI, VII, n° 25, f 5]

१४५

हुम्मच—संस्कृत।

[काल लुप्त, संभवतः लगभग ९५० ई० (लु० राइस)।]

[पार्श्वनाथवस्तिके दरवाजेकी पश्चिम ओरकी दीवालपर]

श्रीमत् स्वस्त्यनवद्य-दर्शन-महोग्रह प्रताप-सम्पन्न पर-चक्रगण्ड....
य्युत्तिरे शक-वर्षमेष्टु-नू..... ..नाड नाळ्गासुण्ड मळ्ते-
 यर म.....सर्गतन्नाळ्गासुण्ड वी...ळिळोळ् किषुकवे
 सर्गतन वाणसिगेयाकेय पिरिय-मगं...ळियकं तोलापुरूप-सान्तरन
 वळ्येयाके तम्मव्वेय सन्या... लुत्तमी-कळ वसदियुमोन्दु-देवारसुम माडि-
 सिदळ्... श्रीसामियव्वे सेदेगोड्डे सान्तरन विन्ननप्प मोगम नोडेनेन्द-
 रसि...पपिट्टु प्रभावति-कन्तियरेन्दु पेसर कोण्डु सन्यासन गेय्दोडे...
 कुक्कस-नाड किपिय-सालेयुरं वसदिगित्त वळक-नाड सुळ्ळिगोड देवा-
 रके...भटारगे वळिय नदि वसदिग देवारक कोड्डळ् पाळियक वोळि-

यक पुनु...णकेय्य ...इक्कण्डुग-वित्तवुठ कोइळ् कुन्दय्य कोन्दरोळ्...
 ...येम्बुदु मणिककण्डुग ... इ पोरयकनु सेम्बकमनु पालियकन केळ-
 दिये पुलियण्णवी-धम्म नडयिसु ...री-नाडरसं रणविक्रम पालियकन
 वसदिगे वदरीनाडानन्दु प्पनेरड वण्ण तम्म वाणसिगेय वयल कोइ
 ईधम्मम श्रीसामियव्वे गेल्लुगान मुन्नमे सालिय् ...र ने डि पालियकन
 वसदिगित्तल् गेल्लुगान धम्म कावोनु नडयिसुवोनु... गळ महा श्री ॥
 श्री-माधवचन्द्रत्रैविद्य-देवर शिष्यरप्प नागचन्द्र-देवर पुत्र मादेय-
 सेन्वोव ...स पुन-प्रतिष्ठेय माडिटनु मङ्गळ महा श्री श्री-चीनरा[ग] ॥

[स्वन्ति । जिस समय अनवद्यदर्शन, महोद्य, प्रतापक्षम्पन्न, परचक्रगण्ड,
 ...शासन कर रहा था,—(उक्त मितिको), प्रत्यक्षरूपसे
 तोलापुरुष-ज्ञान्तरकी पत्नी पालियकने, अपनी माताकी मृत्युपर, पालि-
 यक वसदि नामकी एक पाषाण-वसदि खड़ी की और बहुतसे दान इसके
 लिये किये गये ।]

[EC, VIII, Nagar tl, n° 45]

१४६

कुम्भी—संस्कृत तथा कन्नड—भग्न ।

[वर्ष साधारण ९५० ई० (७० राइस)]

[कुम्भीमें, किलेके भण्डार-गृहके पासके पाषाणपर]

श्रीप्रपरमगभीरस्याद्वादामोवलाञ्जनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासनम् ॥

तनगेन्दु व...नन्- ।

द...पुत्रङ्गति-भीतिय...मतावष्टम्भदिं माडि को- ।

डनो जाम ...सोम्युवेत्त पोळलोळ् कुम्भशिकैयोळ् माडिदम् ।

जिन-गेहङ्गवाशेयिं पलवु... ॥

.....धिणेन्द्र..... तृङ्गाद्रिय ।

दोरेय भक्ति-मनदिं पुम्बुचुमिपन्नेगम् ।

..... . . लोकियव्वेय जिन-भोहम माडिदम् ।

धरेयेल्ल पोगळवन्नेग वि अवनीपाळकम् ॥

जिनदत्त-रायं श्रीमन्महा धिपति-बोम्मरस-गौडर
मक्कळु .. . ति-दत्त तन्न अनुज मानिभद्र-गौडर मक्कळु रायविभाड
राज... रेवन्त नडे-गौड सुरितण्ण हिरिय-तम्मगौडरु मुख्यवाद आतन
अनुज पन्नयनु आतन तम्म चिक्क-तम्म-गौडरु आतन अनुज होन्नण-
गौडरु धर्म-शासनव साधारण-संवत्सरद् कार्तिक-सुद्-पुन्नमि-सो....
.....सेट्टि सोक्कि-सेट्टि पट्टम-सेट्टि वाद आ-
दिव्य-स्थानके..... . सन्दायव्वेन्दु . देरिगे येन्दु विट्टि येन्दु केळ-
सल्लदु ईधम्मव नडसिदवरिगे खर्गपदव पडेवरु ईधर्मके तप्पिदवरु
एळनेय नरकके होहरु जिन-रभिपेक-निमित्त । धन-पूर्णा कुम्बकेन्दु
**कुम्बसे-पुरमम् । जिनदत्त-रायनित्त । कनक-कुळोद्भवुरु कलस-
राजान्वयरुम् ॥** सन्नकोप्पद वस्तियिन्द वडगल्ल वेळल कोप्पद केरे .
कल्ल सरुहु सह विट्टरु वीजवरि कोट्टरु प्रतिपालिसुवदु

[जिनशासनकी प्रशसा । पोल्लु और कुम्बसिक्केमे, पोम्बुच
जवतक जिन्दा रहे तवतक उन्होने जिनमन्दिर बनवाये, जिनमन्दिरमे लोकि-
यव्वेकी स्थापना की । और जिनदत्त-राय [की स्वीकृतिसे], शासक
बोम्मरस और अनेक गौडोने (जिनके नाम दिये हैं),— तथा कुछ सेट्टि
लोगोंने उक्त मितिको इसके लिये वार्षिक दान दिया । शापात्मक श्लोक ।

जिनदत्तराय, जिसने जिनके अभिपेकके लिये कुम्बसे-पुरका दान किया
था, कलस राजाओके खानदानके कनककुलमे उत्पन्न हुआ था । उसने कुछ
जमीन भी दी थी ।]

१४७

खजुराहो—संस्कृत

(विक्रम संवत् १०११=९५५ ई०)

- १ ॐ [॥] सवत् १०११ समये ॥ निजकुलधवल्लोयं दि-
 २ व्यमूर्त्तिं स्वसी (शी) ल स (श) मदमगुणयुक्त सर्व्व-
 ३ सत्त्वा (त्त्वा) नुरूपी [॥] स्वजनजनिनतोपो धांगराजेन
 ४ मान्य प्रणमति जिननाथोय भव्यपाहिल (ल) -
 ५ नामा । (॥) १ ॥ पाहिलवाटिका १ चन्द्रवाटिका २
 ६ लघुचन्द्रवाटिका ३ स (श) करवाटिका ४ पंचाड-
 ७ तलवाटिका ५ आन्नवाटिका ६ ध (ध?) गवाडी ७ [॥]
 ८ पाहिलभंसे (गे) तु क्षये क्षीगे अपरवसो (गो) यः कोपि
 ९ तिष्ठति [॥] तस्य दासस्य दासोय मम दतिस्तु पाल-
 १० येत् ॥ महाराजगुरुस्त्री (श्री) वासवचंद्र [॥] वैसा (श) ष (ख)
 ११ सुदि ७ सोमदिने ॥

[एपिग्राफिआ इण्डिका, जि० १, पृ० १३६]

[Ep 1, p 135-136]

[यह शिलालेख खजुराहोमें जिननाथके मन्दिरके बायें दरवाजेपर उत्कीर्ण है। इसमें ११ पक्तियाँ हैं। इसमें बताया गया है कि राजा धङ्ग या धाङ्गके राज्यकालमें विक्रम सं० १०११ या ९५४ ई० में भव्य पाहिल या पाहिलने जिननाथके मन्दिरको बहुत तरहकी वाटिकाओं (छोटे उद्यानों-या बगीचों) का दान किया। दानोंके निम्नलिखित नाम हैं. —

१. पाहिल वाटिका, या पाहिल बगीचा
२. चन्द्र-वाटिका, या चन्द्र बगीचा
३. लघु चन्द्र-वाटिका, या छोटा चन्द्र बगीचा
४. शकर-वाटिका, या शकर बगीचा

५. पञ्चाङ्गतल वाटिका ?

६. आम्र वाटिका, या आमके पेड़ोंका घगीचा

७. धन्न वाडी, या धन्न उद्यान-भवन ।

ए० कनिष्कमने सम्प्रत् १०११ को सुधारकर और युक्तिपूर्वक सिद्ध कर इसको सं० ११११ पढ़ा है । गिलालेखका पूरा श्लोक प्रो० एफ् कीलहोर्नने इस तरह शुद्ध किया है —

निजकुलधत्रलोय दिव्यमूर्तिः सुशीलः

शमदमगुणयुक्त सर्वसत्त्वानुरुम्पी ।

सुजनजनिततोपो धङ्गराजेन मान्य

प्रणमति जिननाथ भव्यपाहिल्लनामा ॥ १ ॥]

१४८

सुहानिया [ग्वालियर]—संस्कृत ।

[सं० १०१३=९५६ ई०]

संवत् १०१३ माघसुतेन महिन्द्रचन्द्रकेनकभा (खो ?) दिता
[सुहानियामे माघके पुत्र महेन्द्रचन्द्रने एक जैन मूर्ति प्रतिष्ठापित
की । संवत् १०१३ ।]

[JASB, XXXI, p 399, a, p 410, t]

[ई० ए० जितट ७, पृ० १०१-१११ नं० ३८ १-५१ की पक्तियों]

१४९

लक्ष्मेश्वर—संस्कृत ।

[शक ८९०=९६८ ई०]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनं ।

जीयन्नैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

१ यह 'प्रतिष्ठिता' का अपभ्रंश मालूम पड़ता है ।

स्वस्ति जित भगवता गतघनगगनामेन पद्मनाभेन [1] श्रीमज्जाह-
 वीयकुलामलव्योमावभासनभास्करः खखड्गैकप्रहारखण्डितमहाशिलास्त-
 म्भलव्यवलपराक्रमो दारुणारिगणविदारणोपलव्यव्रणविभूपणविभूपितः
 कण्वायनसगोत्रः श्रीमान् कोङ्गाणिवर्मधर्ममहाराजाधिराजपरमेश्वर-
 श्रीमाधवप्रथमनामधेयः ॥ तत्पुत्रः पितुरन्वागतगुणयुक्तो विद्याविनय-
 विहितवृत्तः सम्यक्प्रजापालनमात्राधिगतराज्यप्रयोजनो विद्वत्कविकाञ्चन्-
 निकषोपलभूतो नीतिशास्त्रस्य वक्तृप्रयोक्तृकुशलो दत्तकसूत्रवृत्ते प्रणेता
 श्रीमन्माधवमहाराजाधिराज ॥ तत्पुत्रः पितृपितामहगुणयुक्तो(S)नेक-
 चतुर्दन्तयुद्धावाप्तचतुरुदधिसलिलास्त्रादितयशः श्रीमद्भरिवर्ममहाराजा-
 धिराजः ॥

अपिच ॥ वृत्त ॥

आसीज्जगद्गहनरक्षणराजसिंहः

क्षमामण्डलाब्जवनमण्डनराजहसः ।

श्रीमारसिंह इति वृंहितवाहुकीर्ति-

स्तस्यानुज कृतयुगाक्षितिपालकीर्तिः ॥

आदेशाद्देवचोलान्तकधरणिपतेर्गगचूडामणिस्त्वा
 वेगादभ्येति योद्गु त्यज गजतुरगव्यूहसन्नाहदर्पम् ।
 गङ्गामुत्तीर्य गन्तु परत्रलमतुल कल्पयेत्पाप दूतै-
 र्विज्ञप्त गूर्जराणा पतिरकृति तथा यत्र जैत्रप्रयागे ॥
 पद्माम्भोरुहभृङ्गभृत्यभरणव्यापारचिन्तामणि,
 संत्रासग्रहविह्वलीकृतरिपुदमापालरक्षामणिः
 विद्वत्कण्ठविभूपणीकृतगुणप्रोद्गासिमुक्तामणि-
 र्देवस्सज्जनवर्णनीयचरितश्रीगङ्गचूडामणि ॥

मन्दाकिन्या जिनेन्द्ररूपनविधिपयस्स्यन्द्रसम्पादिनायाः

कालिन्द्याश्चण्डैरिप्रहृतगजमदधेतनिर्व्वर्त्तितायाः ।

तन्मेढे श्रीनिकेताङ्गणभुवि भवतो गङ्गकन्दर्पभूर्प-

व्यातन्यो दिग्बधूना विधुविजयी (वि) यद्यो हारमाचन्द्रतारम् ॥

अपि च ॥ वृत्त ॥

निष्वादिञ्ज्वलत्रोधपोनवलनस्मिद्धान्तरवाकरम्

चारित्रोन्प्लुनयानपात्रवलनस्तगारमीनाकरम् ।

उत्तीर्णास्ममुदीर्णाभक्तिविननर्वन्धाभिधानो बुधै-

रासीद् देवगणाप्रणीगुणनिधिर्देवेन्द्रभट्टारकः ॥

उदामकामकालिनिर्दलनैकवीर-

स्तस्यैकदेव इति योगिषु देव एकः ।

शिष्यो ब्रभूव हृदि यस्य दधाति भव्यो

रत्नत्रय गिरसि यच्चरणद्वय च ॥

महितस्य तस्य महितैर्महता, प्रथमस्य च प्रथमशिष्यतया ।

जयदेवपण्डित इति प्रथित, प्रथमानशास्त्रमहिमद्रविणः ॥

अपि च ॥ गद्य ॥

तस्मै स भुवनैकमङ्गलजिनेन्द्रनित्याभिषेकरत्नकलशः स तु सत्य-

वाक्य-क्रोङ्गणिवर्म्म-धर्म्ममहाराजाधिराजपरमेश्वरश्रीमारसिंहदेवप्रथम-

नामधेयः गङ्गकन्दर्पः ॥ शकनृपकालातीतसंवत्सरशतेश्वष्टेसु-

नवत्युत्तरेषु प्रवर्त्तमाने विभवसंवत्सरे शङ्खवसति-तीर्थव-

सतिमण्डलमण्डनस्य गङ्गकन्दर्पजिनेन्द्रमन्दिरस्य दानपूजादेवभोग-

निमित्तं पुलिगेरे-नगरात्पूर्व्वस्या दिशि तल-वृत्तिं दत्ते स्म [॥] तस्या-

स्तीमा समाख्यायते तद्यथा ।

१ शुद्धपाठ सम्भवत 'भूपस्यातेने' होना चाहिये ।

शि० १३

कुमारीसरसः पूर्वस्यामाशायामेकनिवर्त्तनान्तराद्दुपलयुगलादक्षिणस्यां दिशि वेल्कनूरग्रामपश्चिमसीम्नः पावकदिशि कोशितटाकपुरोवर्त्तिन-
 दिशलासरसस्समीरणदिक्रोणे हस्ति-प्रस्तरात् पश्चिमस्या दिशि बट-तटाक-
 पुरोनिकटनिम्नोत्तरदिग्वर्त्तिनः कृष्णपापाणादुत्तरस्यां दिशि नागपुरग्राम-
 मार्गादक्षिणस्या दिशाया मळिगमार्त्तण्डगृहक्षेत्रादैशान्या दिशायामानी-
 लशिलायाः पुनः पश्चिमस्या दिशि कृष्णसरस उत्तरजलप्रवाहनिर्गमा-
 दुत्तरस्या दिशि नीलिकार-तटाकागतप्रवाहाद्दुत्तरस्यामाशायामेकनिव-
 र्त्तनान्तरे वायव्यदिक्रोणवर्त्तिरक्तपापाणपार्श्ववर्त्तिन्याश्शम्याः । पूर्वदि-
 ग्मुखेनागत्योत्कीर्णादरुणपापाणान्नागपुरग्राममार्गस्योत्तरपार्श्वे पूर्वदि-
 ग्मुखेन गत्वोत्तरदिश प्रति निवृत्तात्पश्चिमदिशायामेकनिवर्त्तनान्तरे
 पूर्वोत्तरदिशि कृष्णपापाणादक्षिणस्यामाशायामशमी-कन्यारीगुल्मान्त-
 र्गतानीलशिलायाः पश्चिमतः पुरोक्तव्यक्तपापाणयुगले सङ्गता सीमा
 [11] प्राक्प्रकाशितकृष्णसरःपुरोभागवर्त्तिनि पण्निवर्त्तनान्यभ्यन्तरी-
 कृत्य सुष्टि(स्थी)कृतानि पष्टि-शत निवर्त्तनानि ॥ तस्मादेव नगरा-
 द्दरुणदिग्भागवर्त्तिन्यास्तलवृत्तेस्सीमा समान्नायते तद्यथा । देशग्रामकूट-
 क्षेत्राद्वायव्या ककुभि त्रिशमीरक्तोपलाद् वायव्यामाशायामेकशम्या आख-
 ष्डलदिशायामेकदण्डान्तरादरुणपापाणादाग्नेयकोणवर्त्तिनो विगालशमी-
 कन्यारीजालात्पश्चिमस्या दिशि श्रेष्ठितटाकदक्षिणजलप्रवाहनिर्गमाद् वल्ल-
 भराजमार्गात् पूर्वस्यामाशायामकन्यारीगुल्मात् सवसी-ग्राममार्गादक्षि-
 णतश्शमीकन्यारीकुञ्जात् कुबेरककुभो वायव्यायामाशायामज्येष्ठलिङ्ग-
 भूमेर्निर्ऋत्या हरितकृष्णपापाणात् पूर्वस्या दिशि वल्लभराजमा-
 र्गात् पश्चिमस्यामाशायामुत्तरदिग्मुखप्रवृत्तमहाप्रवाहान्तर्गतकिन्नर-
 पापाणाद् दक्षिणस्या दिशायामन्धकारक्षेत्रात् पश्चिमसीम्नि प्राक्प्र-

कटीकृतादेशग्रामकूटक्षेत्राद् वायव्या दिशि त्रिशमीशोणप्रापाणे सीमा समागता । एव पश्चिमदिग्दर्शानि चत्वारिंशच्छतं निवर्त्तनानि ॥ शङ्ख-
वसतेर्वासवदिशि निवर्त्तनमात्रः पु५प(पुष्प)वाटः पश्चिमदिशि च
निवर्त्तनद्वय-द्वयदो (?) पु५प(पुष्प)वाटः ॥ तस्य चैत्यालयस्य पुरप्रमा-
णमाख्यायते [1] पूर्वतः **वाळवेश्वर**पश्चिमप्राकारः पावकदिशि **चर्म-**
कारदेवगृहसीमान्तम् [1] तत्पश्चिमतः वारिवारणसीमा कृत्वा दक्षिणस्या
दिशि पु५प(ष्प)वाटाङ्ग(?)जचैत्यपुरपुरः **श्रीमुक्करवसतेः** पश्चिमस्यां दिशि
गोपुरपर्यन्तात् पश्चिमदिग्दर्शितदेवगृहद्वयमभ्यन्तरीकृत्य **मरुदेवी**देवगृहस्य
पश्चाद्भागदुत्तरस्या दिशि **चन्द्रिका**म्बिकादेवगृहात् पूर्वतः मुक्करव-
सतिं प्रविष्टीकृत्य **रायराचमल्लवसतिं(ति)**दक्षिणप्राकारः ततः
पूर्वतः **श्रीविजयवसति**दक्षिणप्राकारः ई (ऐ)शान्या दिशि **कर्म्म-**
टेश्वरदेवगृहं तद्दक्षिणतः पूर्वोक्त**वाळवेश्वर**पश्चिमसीमा [1] देवनगरा-
त्पश्चिमदिशि पु५प(ष्प)वाटद्वयनिवर्त्तनक्षेत्रं दत्तम् ॥ तस्य सीमा पृथक्क्रि-
यते [1] **परवसरसः** पूर्वदिशि **तपसी**ग्रामपथादुत्तरतो पु५प(ष्प)वाटनिव-
र्त्तनमेक । **गङ्ग-पेर्माडि**चैत्यालयपु५प(ष्प)वाटादुत्तरतो निवर्त्तनमेक
नागवल्लीवनम् । एवं **गङ्गकन्दर्पभूपाळजिनेन्द्रमन्दिर**देवभोगनिमित्त
निवर्त्तनशतत्रयमात्रक्षेत्रं पु५प(ष्प)वाटत्रयमुर्वीशदेशग्रामकूटाकारविष्टिप्र-
भृतिवाधापरिहारं मनोहरमिदम् ॥ श्लोक ॥

बहुभिर्वसुधा दत्ता राजाभिस्सगरादिभिः ।

यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ॥

महदशंजाः परमहीपतिवशजा वा

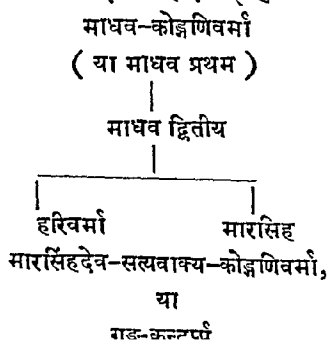
पापादपेतमनसो भुवि भाविभूपाः ।

ये पालयन्ति मम धर्ममिम समस्तं
तेषा मया विरचितोऽञ्जलिरेष मूर्ध्नि ॥

[यह शिलालेख धारवाड जिलेके दक्षिण-पूर्व कोनेकी ओर मिरज रिया-सतके लक्ष्मेश्वर तालुकेके प्रसिद्ध शहर लक्ष्मेश्वरके शङ्खवसति नामके मन्दिरमे पत्थरकी एक लम्बी शिलापर है। इसमे ८२ पक्तियाँ हैं। अक्षर दशवी शताब्दीकी पुरानी कर्णाटक (कन्नड़) लिपिके है। इसमे तीन विभिन्न शिलालेख समाविष्ट हैं।

पहला भाग—१ से लेकर ५१ वी पक्तितक गङ्ग या कोड्डु वंशका शिलालेख है। इसमें उल्लिखित दान, ८९० शक वर्षके व्यतीत होनेपर और जब विभव संवत्सर प्रवर्तमान था, मारसिंहदेव-सत्यवाक्य-कोङ्गणिवर्मा, के द्वारा जिन्हें गङ्ग-कन्दर्प भी कहते थे, जयदेव नामके एक जैन पुरोहित (पण्डित) को किया गया था। विभव संवत्सर शक ८९० ही था और शक ८९१ शुक्ल संवत्सर था, इसलिये शिलालेखका समय ठीक दिया हुआ है। यह दान पुलिगोरे (जिसका अर्थ होता है नीतेके तालाबका नगर) नगरकी कुछ भूमियोंका था। इस 'पुलिगोरे' नगरको मिस्टर फ्लीटने लक्ष्मेश्वरका ही पुराना नाम माना है। यह दान एक जैनमन्दिरके लिये, जिसे इसमे 'गङ्गकन्दर्प जिनेन्द्रमन्दिर' कहा गया है, किया गया था। इस मन्दिरको स्वयं मारसिंहदेवने बनवाया या उसका जीर्णोद्धार किया था।]

वंशावली इस तरह दी गई है:—



[ई० ए०, जिल्द ७, पृ० १०१-१११, न० ३८ (१-५१ की पक्तियों)]

१५०

कङ्कर—कन्नड़

[शक ८९३=९७१ ई०]

[कङ्करमे, किलेके दरवाजेके एक स्तम्भपर]

(पश्चिममुख) स्वस्ति श्री-कोण्डकुन्दान्वय देशिय-गण-मुख्यर देवे-
न्द्रसिद्धान्त-भटार-रवर पिरियशिष्यर चान्द्रायणदभटाररवर-शिष्य-
गुणचंद्र-भटाररवर-शिष्यर श्रीमदभयणन्दि-पण्डित-देवर नाण-
व्वे-कन्तियर शिशिनित्यर्पडियर-दोरपय्यन पिरियरसि पाम्बव्वे
तले-वरिदु मूवर्-वरिस तप गेय्यद नोन्तुच्छम-ठाणमेरिदवेरेदोन-
वर मग विडि.....

(उत्तरमुख) परसे महा-असाददोळोरेवकनिम्मडि-धोरनोल्दु-
तन्न् ।

अरसुममौल्य-वस्तुगल्लुम कुडे वूतुगनक्कनेन्दु विस् ।
तरिसे धरिन्नि जीय वेसनेनेने सन्दिवु सन्दवळेविन्दु ।
अरसु दलेन्दु पाम्बवेगळ्न्तु तपो-नियमस्तरादोर् (आदोर्) आर् ॥

स्वस्ति यम-नियम-स्वाध्याय-ध्यान-मोनानुष्ठान-परायणे(यणे)यरप्प
श्री-पाम्बव्वे-कन्तियरय्यद नोन्तुच्छम-ठाण-मेरिदु । वरेदोनवर मगनर्हद्-
भक्तम् ।

(दक्षिण मुख) [ऊपरका श्लोक, जो 'परसे' इत्यादिसे शुरू होता है,
यहाँ दुहराया गया है ।]

त्रका-काल ८९३ य प्रजापति-संवत्सरदन्तर्गत मार्गशिर-
मासद शुद्ध-त्रयोदशियु गुरुवार[द]न्दु अयं नोन्तुच्छम-द्वारा
मेरिदर वरेदोनवर मग वि

[पडियर-दोरपय्यकी ज्येष्ठ राती पाम्बय्येने,—जो कोण्डकुन्दान्वयके
देशिय-गणके मुरय देवेन्द्र सिद्धान्त-भटारके ज्येष्ठ शिष्य चान्द्रायणदभटा-
रके शिष्य गुणचन्द्र-भटारके शिष्य अभयनन्दि-पण्डित-देवकी (शिष्या)
नाणय्ये-कन्तिकी शिष्या थी,—केशलोच करनेके बाद, तपके पूरे ३०
साल पूर्ण किये, और पाँच अणुवर्तोंको धारण करके उच्च अवस्थाको
पहुँची । उसके पुत्र विडि से लिखा हुआ ।

आगेके श्लोकमे उसके त्याग और तपकी प्रशंसा है । दक्षिण और पूर्व
मुखकी तरफ भी ये ही लेख कुछ मेटके साथ, उसके अन्य दो पुत्रों,
अर्हद्वक्ति और वि.....के द्वारा लिखाये गये हैं ।]

[EO VI, Kadur tl., n° 1]

१५१

श्रवण वेलोलोला—कन्नड

[विना काल-निर्देशका]

[देखो, जैन शिलालेखसंग्रह, प्रथम भाग]

१५२

श्रवण वेलोलोला—संस्कृत तथा कन्नड

[विना काल-निर्देशका, लगभग ९७५ ई० (फ्लीट)]

[देखो, जैन शि० ले० सं० प्रथम भाग]

१५३

[सुहानिया (ग्वालियर)—संस्कृत

[सं० १०३४=९७७ ई०]

सन्ततः । १०३४ श्री वज्रदाममहाराजाधिराज वडसाखवदि
पाचमि * * *

संवत् १०३४ की वैशाख वदी ५ को महाराजाधिराज वज्रदाम (शेष-
लेख स्पष्ट नहीं है ।) ।

[JASB, XXXI, p 399, a, p 411, t.]

१५४

पेगूर—कन्नड

[शक ८९९=९७७ ई०]

[पेगूर (किग्गद्-नाइमे)में एक पाषाणपर]

स्वस्ति शक-नृप-कालातीत-संवत्सर-सतङ्ग ८९९ त्तनेय ईश्वर-[सं]
वत्सर प्रवर्त्तिसे सत्या(त्य)वाक्य-क्रोद्धि णिवर्म्म-धर्म्म-महाराजाधि-
राज कौळाळ-पुरवरेश्वर नन्दगिरिनाथ श्रीमत् राचमल्ल-पर्मनडिगळ्
तद्वर्षा[]म्यन्तर पा(फा)ल्गुण(न)-शुक्ल-पक्षद नन्दीश्वरं तल्प-देवसमागे
स्वस्ति समस्तवैरिगजघटाटोपकुम्भिकुम्भ-स्तळ-स्फुटितानर्घ्य-मुक्ताफल-
ग्रहण-भीकर-करासे-निवासित-दक्षिण-दोर्दण्ड-मण्डित-ग्रचण्ड अण्णन-
वण्ट वडवर-नण्ट श्रीमत् रक्स वेद्दोरेगरेयनाळुत्तिरे भद्रमस्तु
जिनशासनाय श्री-वेळ्गोळ-निवासिगळप्प श्री-वीरसेनसिद्धान्त-
देवरं वर-शिष्यर् श्री-गोणसेन-पण्डित-भट्टारकर वर-शिष्यर्
श्रीमत् अनन्तवीर्यय्यङ्गळ पे[र्]र्गादूरुं पोस-वादगमुमन् अम्यन्तर-
सिद्धियागे पडेदरदके साक्षी तोम्भत्तरुसासिर्र्वरुम्य्-सामन्तरु वेद्दोरेगरे-
येळपदिम्बरुमेण्टोक्कळुमिद कावर्त्ताल्वर् म्मलेपरुम्य्-नूर्वरुम्य्-दामरिगरु
श्रीपुरुष-महाराजरदत्तियनावोनोर्व्वनळिदोम् वाणरासियु सासिर्र्व-ब्राह्म-
णरु सासिर-कविलेयुमनळिद पञ्चमहापातकनक्कु इदनारोर्व्वर् कादरवर्गे
पिरिदु पुण्य चन्दणान्दियय्यन लिखितम् ॥ पेर्गादूरु वसदिय शासनम् ।

[शक नृपके सैकडो वर्ष बीतने पर जब ईश्वर नामका संवत्सर ८९९
वाँ चालू था:—

१ ये दोनों शब्दसमूह 'देवरवर शिष्यर्' तथा 'भट्टारकरवर शिष्यर्' भी पढ़े
जा सकते हैं ।

और जिस समय सत्यवाक्य-कोट्टिणिवर्म-धर्म-महाराजाधिराज रावमह्ल पेर्मनडिका, जो कोळाळपुरके ईश्वर तथा नन्दगिरिके नाथ थे, राज्य था, उस समय श्रीमत्-रक्स वेद्दोरेगरेपर राज्य कर रहा था। उससे श्री-वेल्गोलके निवासी श्रीमत् अनन्तवीर्य्ययने पे[र]ग्गदूर तथा नयी खाई प्राप्त की। अनन्तवीर्य्यय गणसेन-पण्डित भट्टारकके शिष्य थे और ये वीरसेन-सिद्धान्त-देवके शिष्य थे। यह लेख चन्द्रणन्दिय्यका लिखा हुआ है।]

[EC, I, Coorg ms, n° 4]

१५५

श्रवण-वेल्गोला—कन्नड

[विना काल निर्देशका]

१५६

श्रवण-वेल्गोला—कन्नड तथा तामिल ।

[विना काल निर्देशका]

१५७

श्रवण-वेल्गोला—कन्नड

[विना काल-निर्देशका]

[देखो जैनशिलालेखसंग्रह, भाग १]

१५८

विदरे—कन्नड

[शक ९०१=९७९ ई०]

[विदरे (चेळूर परगना) में, तालावके व्यर्थ पड़े हुए बाँध-परके एक पाषाणपर]

खलि स(श) क-वर्ष ९०१ नेय प्रमातिक-संवत्सरद
कार्तिक-मासदोळ त्रिलोकचन्द्र-भटारर शिष्य रविचन्द्र- भटारर
सन्यसन गेय्हु मुडिपिदर कोण्डकुन्दान्वयद देसिग- गणद भानुकीर्ति-
भटारर परोक्षविनय माडिसिदर

[स्वस्ति । (उक्त मितिको), त्रिलोकचन्द्र-भट्टारके शिष्य रविचन्द्रभट्टार ने 'सन्यसन' धारण किया और मृत्युको प्राप्त हुए । कोण्डकुन्दान्वय तथा देसिग-गणके भानुकीर्त्ति-भट्टारने उनकी स्वर्गयात्राका यह सारक वनवाया ।]

[EC, XII, Gubbī tl n° 57]

१५९

चरुण—कन्नड़-भञ्ज

...१९० (काल लुप्त)=सभवत. लगभग ९८० ई०

[चरुण गोंवमें, वसवगुडीके सामनेके स्तम्भपुर]

..... १९०...स्य सकळ-सममेन्दु दर्म्म गेय्दु सन्यसद.....

.....निज-स्तिति.....

[मुनिव्रत धारण करके दिवगत होनेवाले एक जैन यतिका सारक ।]

[EC, III, Mysore tl, n° 40]

१६०

सौदत्ति—कन्नड़

[शक ९०२=९८० ई०]

रङ्गकुळान्वयनृपरु पड्ड पत्तवर्म्म नेगळेनिप गावुण्डुगळु विट्टर्जि-
नेन्द्रपूजेगे नेट्टने धान्यगळोळगे पो(दिद) कुळम ॥ रट(ट्ट)र
पट्टजिनालय किट्टळावदय्यतोक्कलनुमतदिन्द कोट्टर्जिनेन्द्रपूजेगे नेट्टने
..... घ(प) ॥ दीपावलिय (प) वीक्के देवर सोडरिंगे गाणद लोम्मा-
नेण्णे ॥ श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छन जीयात्त्रैलोक्यनाथस्य
शासन जिनशासन ॥

स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्रीप्रि(पृ)थ्वीवल्लभं महाराजाधि-
राज-परमेश्वर-परमभट्टारक सत्याश्रयकुळतिळक चालुक्य(क्या)
भरण श्रीमत्तैलपदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धियिं सल्लुत्तमिरे ।

तत्पादपद्मोपजीवि । समधिगतपंचमहाशब्दमहासामन्तं समरविजय-
लक्ष्मीकान्त वै (चै १) सान्त्रयसरोजवनमार्तण्डं नुडिदंतोगण्डं ह्यवत्स-
राजं रूपमनोज परबळ-सूरेकारं वैरिवंगारं नरस(श)कमीम
चळदंकराम गण्डरगण्ड वैरिभेरुण्ड प्रतिपन्नमन्दरं शरणागतत्रजपजर
श्रीमत् शान्तिवर्म्मरसर वशावतरमेन्तेन्दोडे [॥] श्रीमदमरेन्द्रविभवो-
द्दाम संग्रामरामनूर्जिततेज भीमपराक्रमनेनिसिदनी महियोळ् पृथ्वीराम-
ननुपरूप ॥ तत्सुत ॥ आरूड(ढ)वत्सराजनुदारगुण विनुतकन्दुका-
दिस्य श्रीनारीकान्त निर्जितवैरिप्रजनेनसि पिट्टगं सले नेगर्द ॥ वृ ॥ अन्त-
कनन्ते बन्दिदिरोळान्तजम(व)र्म्मन नोडिसुत्ते मारान्तोरनेकरं तविसि
वस्तुगळं मदवारणगळ कान्तेयरं तुरगचयमं पिडिदित्तोडे मेच्चिराभय
दन्तियनित्तनन्तदुवे पेळदे पिट्टग निन्न गेल (छ)म ॥ तदग्रपत्ति ॥
वृ ॥ पोगळळुम्बमप चरित मिगे वण्णिसलब्जसंभवंगगणितमप
रूपविभवं पतिभक्तियोळोन्दि सज्जनीकेगे नेलेयाद मान्तनद पेपु
समन्तळवट्ट नीजिकब्बरसिगे सन्दरुन्धति पेष् द्वोरेयेन्ददे दोस(प)
चल्लदे ॥ तत्तनूज । क ॥ श्रीमदुदयाद्रिशिखरोद्दामोदयतपनविभवरूप कीर्ति-
श्रीमहिमातिशय जयरामारमण जितारि शान्तनृपाल ॥ दयेयिन्दोळिपिन
तेळिपिनि गुणगणाळकारदिं मार्गनिर्णयदिं तत्व(त्त्व)विचारदिं गमक-
दिंदाहारभैषज्यसाभयशालामळदानदिन्दधिकनेन्दन्दोळिपिनि शान्ति-
वर्म्मन विख्यातियनोन्दे नाळिभोयोळिन्ने वण्णिपं वण्णिप ॥ तदग्रपत्ति ॥
श्रीवनिते ताने वन्दु महीवनितेगे तिळकमेनिसि शान्तन ललितश्रीवनि-
तेयाद विभवमने वोगळवुदो चन्दिकब्बेयरसिय पेप ।

यत्तितारकापरीतः कण्डूरगणोरुकन्धिवृद्धिकरः । बाहुबलिदेवचन्द्रो
जिनसमयनभस्तले भाति ॥ व्याकरणतीक्ष्णदष्टृस्सिद्धान्तनख(खः)
प्रमाणकेसरभारः । बाहुबलिदेवसिंहं (हः) प्रवादिगजतीव्रमदहरस्स-

एरकमल्लदे पोल्लदागेरगि दोरेकाण्मे कोब्ब तेरनल्लदे ।
 नेरेये वरल् तक्कडियल्लि विसुवल्लिये विस अरिदयिल्ल ।
 परियना दिट्ठि मुरिवल्लि कडुपिनोऴ् मुरिदयिल्लिल्लिय विन्नणवन् ।
 नेरेये कल्पदे वीरर वीरन गिडेगळाभरणन नेडिकल्ल ॥
 आसुवत्तं कूसुवत्तुम् ।
 वीसुवत्तु गडेय नेगळ्द तक्कडियोळ्ळेतुत् ।
 आसदेयु कुङ्कदेयुम् ।
 वीसन्देयु विद्द मेळ्ळेगुमेळेव-वेडङ्गम् ॥
 एरगळ्ळरियदे मेण्टुकम्मगुळ्दु वरलणमरियदे तप्पा पिन्दम् ।
 तेरेननरियदे भागमानिकियु मूरेडेगल्लदे कड्डडियु मुरिये पायिसिद ।
 तुरुय कोन्दु धरेगेडेतेगे गेडेयिवनेनिसद ।
 नेरेये कड्डु-जाणनेनिसल्के बर्कुमे गडेगळाभरणन कल्लदत्तम् ॥
 काल्गळ कय्गळ तुरगद ।
 कोल्गळ तिण्णिवुगळ्ळोळ्ळि बच्चिसुतेळेगुम् ।
 गेल्लुमेने नेगळ्द मार्गदे ।
 गेल्लुमे वणेदल्लि कीर्त्ति-नारायणनम् ॥

वनधि-नभो-निधि-प्रमित-संख्य-स(श)कावनिपाल-कालर्म ।
 नेनेयिसे चित्रभानु परिवर्त्तिसे चैत्र-सितेतराष्टमी-

दिन-युत-भौमवारदोळनाकुळ-चित्तदे नोन्तु ताळ्ददम् ।

जन-सुतनिन्द्र-राजनखिलामर-राज-महा-विभूतियम् ॥

[एरेव-वेडङ्गम्, कीर्त्ति-नारायणके युद्धमें शौर्यके कायौका वर्णन । (उक्त मितिको) अनाकुळ चित्तसे व्रतोको पालते हुए, प्रसिद्ध

इन्द्रराजने स्वर्गकी विभूति पाई—(अर्थात् मर गये) ।]

[EC, XII, Sira tl., n° 27]

१६५

श्रवण वेलोला—संस्कृत

[विना काल-निर्देशका]

[जै. शि. ले. सं, भा. १.]

१६६

अङ्गडि—संस्कृत तथा कन्नड़-भग्न

[काल लुप्त, पर लगभग ९९० ई० का]

[अङ्गडि (गोपीवीडु परगना) में, वसदिके पासके पाषाणपर]

(सामने) सुद पञ्चमी-चूहस्पति वारदन्दु
स्वस्ति . . यम-स्वाध्याय-ध्यान-मौनानुष्ठान-परायणरूप द्रविल-संघद....
अद श्री-कोण्डकुन्दान्वयद त्रिकालमौनि-भट्टारक शिष्यर् श्रीमदिरिव-
वेडेङ्ग ... लन गुरुगळ् विमलचन्द्र-पण्डित-देवर् सन्यासन-विधियि
मुडिपि मुक्तियनेय्दिदर् ॥ (पीछे) श्रुत-विमळादिचन्द्र
श्रीमनु.... पण्डिताह्वयसु-विमळचन्द्र-मुनिः ॥

नमो विमळचन्द्राय कळाकळित-मूर्तये ।

सत्त्वात् सद्-शुभसेव्याय शान्तामृतमयात्मने ॥

श्री-विमळचन्द्र-पण्डित-देवर गुड्डी हवुम्बवेया तङ्गे शान्तियब्बे
तम्म गुरुगळ् परोक्ष-विनय गेय्दर् ॥

[(साधु-गुणोसहित), द्रविल-संघ, कोण्डकुन्दान्वय तथा पुस्तक-
गच्छके त्रिकालमौनि-भट्टारकके शिष्य, —श्रीमद् ईरिव-वेडेङ्ग...के गुरु,—

१ उसका काल और अतिमावस्थाका कथन वही है जो श्रवणवेलोला नं० ५७ के शिलालेखमें हैं । इन्द्रराज अन्तिम राष्ट्रकूट राजा था ।

विमलचन्द्र-पण्डितदेवने, सन्यास-विधिले मरण कर, मुक्ति प्राप्त की ।
पण्डित पदके साथ विमलचन्द्रमुनिकी प्रशंसा ।

विमलचन्द्र-पण्डित-देवकी गृहस्थ दिग्वा ह्युम्बेकी छोटी बहिन
शान्तिवम्बेने अपने गुरुके स्वर्गवासके उपलक्ष्यसे स्मारक खड़ा किया ।]

[EC, VI, Mudgere tl, n° 11]

१६७

पञ्चपाण्डवमलै—तामिल

[काल लगभग ९९२ ई०]

श्री

१ स्वस्ति

[II]

२ [को] विराजराज [क] [सर] 'व [न्] मर्कु याण्डु ८ आ
[व]दुपडुवूर्क [ो] इत्तुप्पेरुन्-तिमिरिनाडुत्तिरुप्प[]न्मलैप्पो-

३ गमागिय कूरग[न्]पोडि [ड] रैयिलि प[ळ]ळिच्चन्दत्तै की [ळ]-प्-
[प]ग[ला]ड[ड]लाडर[]जर्गळ कर्पूर-विलै को [ण्डु इ] द्द[र्]मड्डे

४ इत्तुपोगि[न्]रडेन् [रु उ]डैयार् इला[ड]राजर् पु[ग]ळिच-
प्पवर्- [ग] ण्डर् मग[ना]र् [वी]रशोळर्तिरु[प्पान्]मलैदेवरै-
त्तिरुव-

५ [डित्तो]ळु [देळुन्]द[रु]ळि ड [र]उक्क ड[व]र् देवियार्
इलाडमह[]देवि[य]ार् कर्पूर-विलैयुमन्निया[य]वावद[ण्ड]विरै [यु]
म [ो]-

६ ङ्ळिन्द[रुळ] वेण्डुमेन्ऱु विण्णप्पञ्जेय् [य उ]डै[या]र् [वी]
र-शोळर् कर्पूर-विलैयुमन्निया[य] वावदण[ड]विरै-

७ युमो [ळ] िञ्जोमेन्ऱुच्चैय्य अरि[यु]ऊर् किळ [वन्] ।
गि[य वी] र-शोळवि-लाड-प्पेर [र] य[न्]डैयार् [क] न्मियेया[]-

८ णत्तियागविदु^१ कर्पूर-विलैयुमन्नियाय-[वा] वदण्ड[व्]-इरैयुमोळि
ञ्जु शासनाञ्चेय्द-पडि [I] इदु [व]-

९ छ [द्] उ कर्पूर-विलैयुमन्नियाय-वावदण्डव्-इरैयुमिप्पळ्ळिञ्चन्द-
त्तैक्कोळ्[व्]न् गङ्गैयि-

१० डै [क्कुमारिय्] डडैचेय्दार् शे[य्] द पा [व]ङ्कोळ्ळारिदुवळ्ळदिप्प-
ळ्ळिञ्चन्दत्तै केडुप्प्यार वळ्ळव[रै]

११ ·· [न]रु[व] [I] [इ]-द्ध [र्मत्] तै [र]क्षिप्पान् पादधूळिय्
एन्-[रलै] मे[ल]न [I] अर[म]रवर्क अरमळ्ळ तु[ण] यिळ्ळै [I]

[यह शिलालेख तमिल गद्यकी ११ पक्तियोंका है । लेखकी दूसरी पक्ति-
में राजराज-केशरीवर्मनके राज्यका ८ वा साल इसका काल बताया गया
है । प्रस्तुत लेख महाराजा राजराज चोलके राज्य-कालका है । यह ९८४-
८५ ई० में गद्दीपर बैठे थे । इस लेखमें किसी विजयका वर्णन नहीं है ।
इस शिलालेखके नीचे एक पशु बनाया गया है, वह चीता होना
चाहिये, क्योंकि चोल राजाओंका वह चिह्न रहा है ।

लेखमें (पक्ति ३) लाटराज वीरचोलका एक शासन है । वह चोल
राजा राजराजका कोई अधीनस्थ राजा होना चाहिये, क्योंकि राज्यकाल
उसीका (राजराजका) दिया हुआ है । लाटराज वीर-चोल पुगळ्ळिवप्पवर
गण्डका पुत्र था । वीर-चोल और उनके पूर्वजोंके नामके पहले लाटराज
ऐसा विरुद लगा रहनेसे मालूम पड़ता है कि ये लोग पहले किसी समय
लाट (गुजरात) से आये थे ।

यह अभिलेख इस बातका उल्लेख करता है कि अपनी रानीकी प्रार्थना
पर वीर-चोलने तिरुप्पान्मलैके देवताके लिये (पं० ४) कूरगन्पाडि
गाँवसे कुछ आमदनी बाँध दी थी ।

यद्यपि चैत्यालयका नाम सिर्फ 'तिरुप्पान्मलैका देवता' दिया गया
है, परतु 'पल्लिचन्दम्' इस शब्दसे मालूम पड़ता है कि यह कोई जैन

१ 'इन्द' पदो ।

चैत्यालय होना चाहिये । शिलालेख नं० ११५ से भी यह निर्णीत होता है । उसमें यक्षिणी और नागनन्दि गुरुकी प्रतिमा है । यद्यपि यक्षिणियोंको बौद्ध और जैन दोनों ही मानते हैं, परन्तु नागनन्दि यह जैन नाम है ।]

लेखमें कूरगम्पाडिके 'पल्लिचन्दं' की आमदनी दो तरहकी बताई गई है — एक तो कर्पूरविलै (कपूरके खर्च) की, दूसरी 'अन्नियाय वावदण्ड-विरै' की । कपूरखर्चकी बात तो ठीक समझमे आ जाती है, लेकिन उत्तरकी आमदनी 'अन्नियाय-वावदण्डविरै' का क्या अर्थ है, सो स्पष्ट नहीं है । इसके भी दो अर्थ किये जाते हैं: एक तो अन्याय वावदण्ड (जुलाहोंका करवा) हरै (कर) । इसका अर्थ होगा 'अनधिकृत करघोपरका कर' (The tax on unauthorised looms) । दूसरा अर्थ इसका यह हो सकता है अन्याय + आव + दण्ड + हरै । 'आव'का अर्थ होता है वाणोंका तूणीर । इसका तात्पर्य यह है कि बिना अधिकारपत्र पाये जो धनुष-वाणका प्रयोग करते थे उनपर जुर्माना (दण्ड) किया जाता था ।

[El, IV, n° 14, B.]

१६८

श्रवण-बेल्लोला—कन्नड

[विना काल-निर्देशका]

[जै. शि. ले. सं., भा. १.]

१६९

कुम्बरहल्लि—कन्नड—भद्र

[विना काल-निर्देशका, पर सम्भवतः लगभग १००० ई०]

[कुम्बरहल्लि (कूडनहल्लि परगना) में, बसवगुडिकी दक्षिणी दीवालपर]

स्वस्ति श्रीमदजितसेनपण्डितदेवर शिष्यण ना...क पुणि-समय

[इसमें अजितसेन-पण्डितके शिष्यका वर्णन है ।]

[EC, III, Mysore tl, n° 31.]

१७०

मुत्सन्द्र—कन्नड़

[विना काल-निर्देशका, पर सम्भवतः लगभग सन् १००० ई० का]

[मुत्सन्द्र (देवलापुर परगना) में, गाँवके पूर्वमें एक गोल बटिया
(Boulder) पर]

श्रीमत्तु कलुकर्रे-नाड् आळ्वरु चोक-जिनालयके मत्तिकेरैय
नट्ट कल चतुस्सीमान्तरेपु त्रिट्ट दत्ति इद किडिसिदवं कविले बाह्यणनुव
कोन्द ब्रह्म.....एन्दुगु

[कलुकर्रे-नाड्के शासकने चोक जिनालयके लिये मत्तिकेरैका दान दिया ।]

[EC, IV, Nagamangala tl, n° 92]

१७१

तिरुमलै—(नार्थ बर्काट)—तामिल

[१००५ ई०]

- १ स्वस्ति श्री [II] तिरुमगळ् पोलप्पेरु निलच्चे—
- २ त्रियुन् तनके युरिमै पूण्डमै मनकोळ क्कान्दळ्ळु च्चालै कलम-
रुत्तरुळि वेङ्गैनाडुड् गङ्गपाडियु
- ३ नुळ्वपाडियु न्तडिगै पाडियुड् कुडमलैनाडुड् कोळमुड् कलिङ्गुं
एण्डिशै पुगळ्त्तर विळमण्डलमु तिण्डरल् वेन्नि त्त—
- ४ ण्डारकोण्ड[त्ते]ळिल् वळरुळि एल्लयाण्डु तोळुतेळ विळङ्गुयाण्डै
चेळिजारैत्तेचु कोळ् श्रीकोवि—
- ५ राज इराजकेशरिपन्मरान श्रीइराजइराजदेवर्कु याण्डु २१
आवदु अलंपुरियु पुनर् पोन्नि आरुडैय चोळन्
- ६ अरुमोळिक्कु याण्डु इरुपत्तोन्नावदेन्ऱुळ्ळै पुरियुमतिनिपुणन् वेण्
किळान्

- ७ गणिशेखरमरुपोरचुरियन् नामत्ताल् वामनिलै निररकुड्-
 ८ कलिञ्चिड् नीमिर् वैय्यौमलैकु नीडुळि इरुमरुड्डुं नेल् विळ्ळैय-
 ९ कण्डोन् कुलै पुरियु पडै औरचर कोण्डाडुं पादन गुणवीरमा-
 मुनिवन्

१० कुळिर् वैय्यौक्कोवेय् [III]

[यह अभिलेख कोविराजाराजकेसरिवर्मन्, उर्फ राजराज-देवके २१ वें वर्षमें अभिलिखित है, तथा पोन्न, अर्थात्, कावेरी नदीके स्वामी 'शोरन् अरुमोरी' के इक्कीसवें वर्ष में (शब्दों में) ।

लेख बताता है कि किसी गुणवीरमामुनिवन्ने एक नहर या मोरी (Sluice) गणिशेखर-मरु पोर्चुरियन् नामके उपाध्यायके नामसे बनवाई थी । तिरुमलै चट्टानका उल्लेख "वैय्यौमलै" नामसे है ।]

[South Indian Ins, I, n° 66 (p. 94-95), t & tr.]

१७२

बेल्लूरु—कल्लड-भञ्ज

[शक ९४४=१०२२ ई०]

[बेल्लूरु (कोत्तत्ति परगने)में, तालावपर दुर्गा-देवीके पीछेके पाषाणपर]

स्वस्ति समस्त-रिपु-नृप-कुम्भि-कुम्भ-दळ्ळ-पञ्चास्य समुदित-श्रीम.....
 ल-विमुक्त-चोळ-भूपाळ.....लित ...जित-वीर-लक्ष्मी आश्रित-भक्त-मला-
 पकर्षण भूमिसञ्चरण जय-मूल-स्तम्भं श्रीमद् अ.....गङ्गमण्डलेश्वर प्रभु-
 पद्म-युग्माशोक-भोगिकाश्रित-भ्रमद्-भ्रमर जित-रिपु संसित-समर-प्रताप
 राज्य-भार-धुरन्धरं अमात्य-समिति-विराजमानम् सत्यत्व-नाभि-कानीनम्
 समर-जित-भूप-जीव-प्रदनु अतिपूताचरणम् रिपु-खरकिरणम्.....
 तिगाञ्जनेयं सौच-गाङ्गेयं शरणागत-वज्र-पञ्जरम् रिपु-कञ्ज-कुञ्जरम्
 तन्न-रक्षामणि मन्त्री-चिन्तामणि विनेय-विळासम् श्रीमत्-पेर्गडे-हासम्

विश्व-विस-हासर् प्पतिहिताभरणम् ॥ शक-नृप-कालातीतसंवत्सर-
शतङ्गळ् ९४४ नेय दुर्मुखि (दुर्मति) संवत्सरद फाल्गुण-मास-सुद्ध-
पञ्चमी-सोमवार पुनर्वसु-नक्षत्रदन्दु गङ्ग-पेर्मनडिगळु कर्नाटनाळुत्त-
मिरे तम्म ख-दोराळ्दन्दुनव जिनालयके पेर्मनडि जीवितम्
.....द बलोर-कट्टलाळ्वाद केरेंय मेडुकं वोय्सि कट्टेय कट्टिसि
व्वनिरसि मुन्न तव.....कोळ्वा मण्णु विट्ट दोन्द.....केरेंगे.....मुम
विट्ट मिदनळ्दि कोटि-कविल्लेय ब्राह्मणरु काशियुमनळ्ळिकिरे

बहुभिर्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभिः ।

यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ॥

[इस लेखमें 'पेर्गडे-हासम्' के द्वारा, उक्त मितिको, बलोर-कट्टके
गहरे तालावकी सीढियोंके बनवाने, बांधके निर्माण कराने, नहर या
मोरीके बनाये जाने, तथा..... एक 'कोलग' भूमिके देनेका जिक्र
है । उसके समयमें कर्णाट (कर्नाटक) पर गङ्ग पेर्मनडि शासन कर रहे
थे । यह पुण्यकार्य पेर्मनडिके दीर्घजीवनकी कामनाके लिये उसकी
सरकारके स्थानमें एक नये जिनालयके रूपमें किया गया था ।]

[EC, III, Mandya II, n° 78]

१७३

मथुरा—संस्कृत

[संवत् १०८०=१०२३ ई० सन्]

१ ओ श्रीजिनदेवः स्वरिस्तदनु श्रीभावदेवनामाभूत् ।

आचार्यविजयसिङ्ग-

२ स्तच्छिष्यस्तेन च प्रोक्तैः ॥ [१ ॥]

सुत्तावकैर्नवग्रामस्थानादिस्थै स्वसक्तितः ।

१ संवत्सर 'दुर्मुखि' दिया हुआ है: यह स्पष्टत गलतीसे लिखा गया है ।
इसकी जगह 'दुर्मति' होना चाहिये जो शक ९४४ से मेल खाता है ।

३ वर्द्धमानश्चतुर्विंशः कारितोयं सभक्तिभिः ॥ [॥ २]

संवत्सरे १०८० थंभकप-

४ प्पकाम्या घटितः ॥ ओ^१

अनुवादः— ॐ । श्री जिनदेवसूरि हृष्ट, उसके बाद श्री भावदेव हृष्ट । उनके शिष्य आचार्य विजयसिद्ध (विजयसिंह) हैं । उनके उपदेशसे नवग्राम, स्थान आदि (शहरों) में रहनेवाले सुश्रावकोने स्वशक्ति और स्वभक्तिके साथ वर्द्धमानकी चतुर्विंश (सर्वतोभद्र) प्रतिमाका निर्माण करवाया । यह प्रतिमा १०८० [विक्रम] सवत्में थंभक और प्पक शिल्पियोंके द्वारा बनकर तैयार हुई थी । ओं ॥

[EI, II, n° XIV, n° 41]

१७४

तिरुमलै - तामिल

[१०२३ ई०]

- १ स्वस्ति श्री [॥] तिरुमन्नि वळरविरु निलमडन्दैयुं पोर्च्चयप्पावैयुञ्
चीरत्तनिच्चैल्वियुन् तन् परुन् देवियराकि इन्पुरु नेडु तियल्
ऊळियुळ् इडैतु-
- २ रैनान्दुन्तुडर् वनवेलिप्पडर् वनवासियुञ् चुळ्ळिच्चुळ् मदिट्को-
ळ्ळिप्पाकैयु नण्णरुकरु मुरण् मण्णैक्कडक्कमुं पोर् कडल्
ईळत्तरशर् तमुडियुं आड्ग-
- ३ वर् देवियरोड्केळिन् मुडियुमुनवर् पक्कल्त्तेन्नवर् वैत्त सुन्दर-
मुडियुं इन्दिरनारमुन्तेण्डिरै ईळमण्डलमुळुवदुं एरि पडैक्के-
रळर्

१ यह लेख श्वेताम्बर सम्प्रदायका माळम पड़ता है ।

- ४ मुरैमैयिरुशुडकुलतनमाकिय पल्लु पुगळ् मुडियुञ्चेड्कदिर्
मालैयुञ् चड्कदिर् वैलैतोल् पेरुड्कावर् पल पळ्ळन्तिवुञ्
चेरुविरु चैन-
- ५ विल् इरुपत्तोरु कालैरैचुकळै कट्ट परशुरामन् मेवरुञ् शान्ति-
मत्तिववरण करुति इरुत्तिय चैम् पोऱरिरुत्तकु मुडियुं भयड्कोडु
पळि मिग मुशङ्गियिल् मु-
- ६ दुकिट्टोळित्त जयसिङ्गान् अळप्पेरु पुगळोडु पीडियल् इरडु-
पाडि एळरै इळक्कमु नवनेदिक्कुल प्पेरुमलैक्कुलु विकिरमवीरु
शकरकोट्टुमु-
- ७ मुदिरपडवळै मदुरमण्डलमु कामिडैवलैय नामणैक्कोणमुं
वेञ्जिलैवीरु पञ्चप्पळ्ळियुं पाचुडैप्पळनन् माशुणिदेशमु
अयर्वि-
- ८ ल् वण् किरुत्तियातिनगर वैयिर् चन्दिरन् रोल् कुळत्तिरतरनै
विल्लैयमर्क्कळुत्तुक्कळैयोडु पिडित्तुप्पल तनत्तोडु निरै कुळ
तनक्कुवै-
- ९ युञ् चिदरुञ्चेरि मिळैयोडुडविपैयमु भूशुरु चेर नड्कोशलै-
नाडुन्तन्मपालनै वेम् मुनैयळित्तु वण्डुरै चोलैत्तण्डयुत्तियु-
मिरण
- १० शूरनै मूरनूर ताक्कि त्तिक्कणै किर्त्तित्तक्कणलाडमुड् गोविन्द-
चन्दन् माविळ्ळित्तोडत्तड्गाद चारल् वड्गाळदेशमुन्तोडु
कडरुशङ्गुकोट्टुन् महीपालनै
- ११ वेञ्जम वळाकत्तञ्चुवित्तरुळि ओण्टिरल् यानैयुं पेण्डरु पण्डार-
मुनित्तिल नेडुड्कडळुत्तिरलाडमु वैरि मणरुर्त्तित्तोरि पुनरुगड्गै
युमाप्-

- १२ पोरु तण्डारकोण्ड कोप्परकेशरिपन्मरान उडैयार् श्रीरा-
जेन्द्रचोलदेवरकु याण्डु १२ आवदु जयङ्गोण्डचोलम-
ण्डलत्तु पङ्गाळनाट्टु नडुविल्
- १३ वगैमुगैनाट्टुप्पळ्ळिच्चन्दं वैगवूर् त्तिरुमलै श्रीकुन्दवैजिनाल
यत्तु देवरकु प्पेरुवाणपाडिकरैवळिमल्लियूर् इरुक्कुं-
व्या-
- १४ पारि नन्नप्पयन् मणवाट्टि चामुण्डप्पै वैत्त तिरुनन्दाविळ-
क्कु [॥] ओन्निरुक्कुक्काशु इरुपदु तिरुवमुदुक्कु वैत्त काशु
पत्तुम् [॥]

[यह अभिलेख कोपरकेशरिवर्मन्, उर्फ उडैयार् राजेन्द्र-चोल-देवके वारहवें वर्षका है। इसके आरम्भमें उन सभी देशोंके नाम दिये हुए हैं जिनको इस राजाने जीता था। उनमें हमें ७॥ लाख भूमिकरवाले 'इरट्ट-पाडि' का पता चलता है जिसे राजेन्द्रचोलने जयसिंहसे लिया था। इस देशको उन्होंने अपने राज्यके ७ वें और १० वें वर्षके मध्यमें जीता होगा। इस अभिलेखका जयसिंह 'पश्चिमी चालुक्य राजा जयसिंह तृतीय' (लगभग शक ९४० से लगभग ९६४ तक) के सिवाय और कोई नहीं हो सकता। जब कि राजेन्द्र-चोल और जयसिंह तृतीय दोनों एक दूसरेको जीतनेकी डींग मारते हैं, तब हमें यह मान लेना चाहिये कि या तो सफलता दोनोंको क्रमशः मिली होगी, या चिर विजय किसीको भी नहीं मिली होगी।

दूसरे दो देश, जिन्हें राजेन्द्र-चोलका जीता हुआ कहा जाता है, 'इडैतु-रैनाडु' और 'वनवासि' है। पहला 'इडैतोरे' देश है, जोकि मैसूर जिलेके एक तालुकेका हेड-क्वार्टर है, दूसरा बम्बई प्रान्तके 'नॉर्थ केनारा' जिलेका 'वनवासि' है।

“कोळिलप्पाकै” सि० फ्लीटके अनुसार, पश्चिमी चालुक्य राजा जयसिंह तृतीयकी राजधानियोंसे एक था ।

‘ईरम्’ या ‘ईर-मण्डलम्’ से मतलब सीलोन (लङ्का) से है । तेन्न-वन्—‘दक्षिणका राजा’ से प्रयोजन पाण्ड्य राजासे है । उसके विषयमें अभिलेख कहता है कि उसने पहिले ‘सुन्दर’ का मुकुट सीलोनके राजाको दे दिया था जिससे राजेन्द्र-चोलने पुनः वह सुन्दरका मुकुट ले लिया । वर्तमान लेखमें ‘सुन्दरका मुकुट’ से मतलब ‘पाण्ड्य राजाका मुकुट’ मालूम पडता है । यहाँ ‘सुन्दर’ कोई पाण्ड्य-वंशका राजा मालूम पडता है । उसका नाम लेखके कर्त्ताने नहीं दिया और न सीलोनके राजाका नाम जिसे राजेन्द्र-चोलने जीता था । आगे लेख यह भी बताता है कि राजेन्द्र-चोलने ‘केरळ’ अर्थात् मलबारके राजाको जीता था । उसने ‘शक्कर-कोट्टम्’ के राजा विक्रम वीरको भी हराया था । लेखका ‘मदुरा-मण्डलम्’ पाण्ड्य देश है, जिसकी राजधानी मदुरा थी । ‘ओडु-विषय’ उडीसा है । ‘कोशलैनाडु’ दक्षिण कोसल है, जो जनरल कनिंघमके अनुसार, महानदी और इसकी सहायक नदियोंकी ऊपरकी घाटी है । ‘तक्कणलाडम्’ और ‘उत्तिरलाडम्’ से मतलब क्रमशः दक्षिणी और उत्तरी लाट (गुजरात) से है । पहला किसी ‘रणशूर’ से लिया गया था । आगे बताया जाता है कि राजेन्द्र चोलने ‘बङ्गालदेश’ अर्थात् बङ्गाल को किसी गोविन्दचन्द्रसे जीतकर उसका विस्तार गङ्गातक किया था । शेष देश और राजाओंके नाम, ई हुल्ज (E. Hultzsch) कहते हैं कि, वे पहचान नहीं सके ।

लेखसे तिरुमलै, अर्थात् ‘पवित्र पहाड’ का वर्णन है, और वह इसके ऊपरके मन्दिरको जिसे ‘कुन्दवै-जिनालय’ कहा गया है, दिये गये दानका उल्लेख करता है । यह ‘कुन्दवै’ कौन थी, इसके विषयसे ऐतिहासिकोंके दो मत हैं ।

इस शिलालेखके अनुसार, तिरुमलै पहाडकी तलहटीमें जो गाँव है उसका नाम ‘वैगवूर्’ है । यह ‘मुगैनाडु’ का है, जो ‘जयङ्कोण्ड-चोल मण्डलम्’ के ‘पङ्गलनाडु’ का एक डिवीजन (भाग) है ।

१७५

चिक-हनसोगे—संस्कृत

[बिना काल-निर्देशका, पर सम्भवतः लगभग १०२५ ई० का]
 [चिक हनसोगे (हनसोगे परगना)में, जिन-वस्तिके दरवाजेके ऊपर]

(ग्रन्थ और तामिल अक्षर)

श्री-राजेन्द्र-चौळन जिनालय देशिगण वसदि पुस्तक-गच्छम्
 [राजेन्द्र चोळ जैनमन्दिर, देशि-गण और पुस्तक-गच्छकी वसदि]

[EC, IV, Yedatore tl, n° 21]

१७६

खजुराहो—संस्कृत

(सं० १०८५=१०२८ ई०)

संवत् १०८५ । श्रीम् आचार्य पुत्र श्री

ठाकुर श्री देवधर सुत । श्री सिवि

श्री चन्द्रयट्टेव. श्री शान्तिनाथस्य प्रतिमा कारी ।

[इस लेखमें स्थापित प्रतिमाका नाम शान्तिनाथ है, सेतनाथ नहीं,
 जैसा कि लोगोंमें प्रसिद्ध है । संवत् (विक्रम) भी साफ १०८५ दिया
 हुआ है ।]

[A. Cunningham, Reports, xx 1 p, 61.]

१७७

मुद्गूर—संस्कृत

[बिना काल निर्देशका । लगभग १०३० ई० (६०० राइस) ।]

[मुद्गूरमें, वस्ति मन्दिरमें शान्तीश्वर वस्तिके सामने पादद कल्लू पर]

गुणसेन-पण्डितस्य गुरोः पुष्पसेन-सिद्धान्त-देवस्य श्री-पादम् ।

[गुणसेन-पण्डितके गुरु पुष्पसेन-सिद्धान्त-देवके पवित्र पदचिह्न या पादु-
 काएँ ।]

[EC, IX, Coorge tl, n° 41]

१७८

अङ्गडि—कन्नड़-भद्र

[विना काल-निर्देशका, पर संभवतः लगभग १०४० (?) ई०
(ल० राइस) ।]

[अङ्गडि (गोणीबीडु परगना)में, हरमक्कि दोड्डु-उडवेमें पाषाणपर]

.....राज्यं गेये... द्रविणान्वयद मूल-सं.....

... पण्डित.....तु तर्काच्चाळितामा....जलधि-यशो...कुत्त-

हल...शय वज्रपाणि पण्डित-चरण ॥ एनिसि सले गङ्गावाडिये ।

मुनि-वररिं राजमल्ल-भूपालकनीमनु-नीति-मार्गनभयं । जन-पति-सम्य-

क्त्व-भार-नृपतिय गुरुगळ् ॥ वृ ॥ इरदापन्निगळ्ङ्गळिं तळ...व्यत्त

हो....। दुरितारण्यमनेय्ये सुदु सोसवूरोळ् विळ्द कालान्तदोळ् ।

रे सन्यास-विधानार्दे मुडिपि पूज्य वज्रपाणि-व्रतीश्वररत्युत्तम-मुक्तिय

पडेदेरेम् पुण्यक्कवर् नो.... ॥

(बायीं ओर) रविकीर्तिमुनीन्द्रनेन्दु पट्टळ्ळिगे

पेळ्देनेळ्व कलनेले-देवर साहसोक्तियम् ॥ श्रीमत्-कलनेले-देवर्त्तम्म

गुरुगळ्गे निपिधिगेयं माडिसिदर् मङ्गळ

[द्रविणान्वय, मूलसंघके ..पण्डितके शिष्य वज्रपाणि-पण्डितके चरणोसे

जव राज्य कर रहा था -गङ्गावाडिके मुनियोमें प्रसिद्ध राजा राजमल्ल था ।

इसके गुरु वज्रपाणि-व्रतीश्वरने सोसवूरमें अपना जीवन व्यतीतकर अन्तमे

सन्यास-भरण धारण किया और उन्हींका यह स्मारक है ।]

[EC, VI, Müdgera tl, n° 18]

१७९

व्या(वया)ना (राजपूताना)—संस्कृत

[सं० ११००=१०४४ ई]

[1A, XIV, p 8-10 n° 151, t & a]

१ यह शिलालेख श्वेताम्बर सम्प्रदायका है ।

१८०

दोड्ड-कणगालु—कन्नड़ ।

[वर्ष तारण=१०४४ ई० ? (ल० राइस) ।]

[दोड्ड-कणगालुमे, गौडके खेतमें एक दूसरे पाषाणपर]

श्री-मूलसंघ देसिय-गण पुस्तक-गच्छ कोण्डकुन्दान्वय इङ्गलेश्वरद
वल्लिय... शुभचन्द्र-देवर प्रियाग्र-शिष्यरुमप्प प्रभाचन्द्र-देवर
निसिधि तारण-संवत्सर-चैत्र-शुद्ध-पञ्चमी-शुक्रवारदन्दु मुक्करादरु ।

[श्री-मूलसंघ देसिय-गण पुस्तक-गच्छ कोण्डकुन्दान्वय और इङ्गलेश्वर
वल्लिके...शुभचन्द्र-देवके प्रिय ज्येष्ठ शिष्य प्रभाचन्द्र-देवकी समाधि
(निसिधि) । (उक्त वर्षमें) उन्हें छुटकारा मिला, अर्थात् स्वर्गगत हुए ।]

[BC, IX, Coorg tl., n° 56]

१८१

बेलगामि—कन्नड़

[शक ९७०=१०४८ ई०]

[सोमेश्वर मन्दिरके पासके एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासनम् ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर
परम-भट्टारक सत्याश्रय-कुळ-तिळकं चालुक्याभरण श्रीमत्-त्रैलोक्यमल्ल-
देवर विजय-राज्यं प्रवर्त्तिसे तत्पाद-पल्लवोपशोभितोत्तमाङ्ग स्वस्ति सम-
धिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वरं वनवासि-पुर-वरेश्वरं महाल-
क्ष्मी-लब्ध-वर-असादं त्याग-विनोदमायदाचार्य्यनसहाय-शौर्य्यं गण्डर
गण्ड गण्ड-भेरुण्ड मूरु-रायास्थान-कलि विरुद-मण्डलिक-वृषभ-शकरं
कलिगळ मोगद कथि विरुदरादित्यम् प्रत्यक्ष-विक्रमादित्य जगदेक-दानि-

नामादि-समस्त-भ्रशस्ति-सहित श्रीमन्महा-मण्डलेश्वरं चा-ण्ड-रायरसर
वनवासि-पन्निर-च्छासिरमनाल्लुत्तमिरल् राजधानि-वळ्ळिगावेय नेले-
वीडिनोळ् शक-वर्ष ९७० नेय सर्व्वधारी-संवत्सरद ज्येष्ठ-शुद्ध-
त्रयोदशी-आदित्यवारदन्दु जजाहुति-श्री-शान्तिनाथ-सम्बन्धियप्प
वळगार-गणद मेघनन्दि-भट्टारकर-शिष्यरप्प केशवनन्दि-अष्टो-
पवासि-भळा(ट्टा)रर वसदिगे पूजा-निमित्तादिं धारा-पूर्व्वकं जिड्डुळिगे
७० र वळ्ळिय राजधानि-वळ्ळिगावेय पुल्लेय-त्रयलोळ् मेरुण्ड-गळ्ळ्योळ्
कोट्टे गळ्ळे मत्तरय्यु अदर सीमे (सीमावोंकी चर्चा)

धर्मेण गौर्य्य-सत्येन त्यागेन च महीतले ।

गण्ड-मेरुण्ड-सादृश्यो न भूतो न भविष्यति ॥

(हमेशाके अन्तिम श्लोक)

वनवासे-देसदोळ्गण ।

जिन-निळय विष्णु-निळयमीश्वर-निळयम् ।

मुनि-गण-निळयमिव रा- ।

यन वेसदिं नागवर्म्म-विभु माडिसिदम् ॥

[जिस समय, (हमेशाकी चालुक्य उपाधियो सहित), त्रैलोक्यमह
देवका विजयराज्य प्रवर्द्धमान था —वनवासि-पुरवरका ईश्वर, महालक्ष्मीसे
जिसने वर प्राप्त किया था, 'गण्ड-मेरुण्ड' 'जगदेकदानी' इन और दूसरे पदो
सहित, महामण्डलेश्वर चामुण्डराय रायरस वनवासी १२००० पर शासन
कर रहा था,—वळ्ळिगावे राजधानीमें, (उक्त मितिको), जजाहुति शान्ति-
नाथके साथ सम्बद्ध वळगार गणके मेघनन्दि-भट्टारकके शिष्य केशवनन्दि
अष्टोपवासि-भट्टारकी वसदिमें पूजा करनेके लिये, जिड्डुळिगे-सत्तरमें, राज-
धानी वळ्ळिगावेके मृगवनमें, 'मेरुण्ड' दण्ड (माप) अनुसार, ५ मत्त
धान (चावल)-क्षेत्रका दान किया । (भूमिकी सीमाएँ) ।

गण्ड-मेरुण्ड' की प्रशंसा । हमेशाके अन्तिम श्लोक ।
बनवासे देशमें, जिन-निवास, विष्णु-निवास, ईश्वर-निवास और मुनिगणके
लिये निवास । ये, रायकी छात्रासे, नागवर्मा-विभुने बनवाये ।]

[EC, VII, Shikarpur tl, n° 120]

१८२

कल्भावी—संस्कृत तथा कन्नड़ ।

शक २६१ (?)

ॐ (॥) श्रीमत्परमगमीरस्याद्वादामोघलाञ्छन

जीयात्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासनम् ॥

स्वस्त्यमोघवर्षदेव-परमेश्वर-परमभट्टारक-विजयराज्यमुत्तरोत्तरामिवृद्धि-
प्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कतारंवरं सलुत्तमिरे [।] तत्पादपद्मोपजीवि समधिग-
तपञ्चमहाशब्द-महामण्डलेश्वर कुवलालपुरवरेश्वर पद्मावतीलब्धवरप्रसा-
दित कोङ्कुणि-पट्टवन्धविराजित शासनदेवीविजयमेरीनिर्घोषण भगवदर्ह-
न्मुमुक्षुपिञ्जलध्वजविभूषण सकलभूपालमौलिमाणिक्यचूडारत्नरञ्जितचरण
विद्विष्टमनोरमालङ्कारहरण सारस्वतजनितभापात्रयकविताललितवाग्ललना-
लीलाललाम गजविद्याधाम श्रीमत्-शिवमाराभिधानसैगोडूगङ्ग-पेर्मान-
डिगल् मरदलुमेतेयागे गङ्गवाडि-तोम्भत्तारु-सासिरम सुखसङ्कथाविनोददिं
प्रतिपाठिसुत्तिब्दु कादलवल्लि-मूवत्तरोळगण कुम्मुदवाडदोल् जिनेन्द्रम-
न्दिरम माडिसिदनदे दोरेयदेन्दोडे ॥ वृ ॥

इदु गङ्गाधीश्वर-श्रीगृहमिदु विलसद्गङ्गाभूपालाराम्नायद

कीर्तिश्रीविहारास्पदकरमिदु गङ्गावनीनाथरौदार्यद

जन्मस्थानमेम्बन्तिरे विबुधजनानन्दम भव्यसंपत्पदम

सैगोडू-पेर्मानडि जिनगृहम माडिद भक्तिविन्दम् ॥

आ जिनमन्दिरके । वृ० ।

विमळश्रीगुणकीर्तिदेवरवरंतेवासिगळ-
नागचन्द्रमुनीन्द्रर्तदपल्यरुद्धजिनचन्द्राल्य-
र्तदीयात्मजर्दमिताघश्शुभकीर्तिदेवरेसेद-

र्तच्छिष्यरुद्धचोरमणीयस्सले देवकीर्तिगुरुगळ्वादीभकण्ठीरव[३ ॥]

आ परमेश्वरर्परवादिबिध्वसिगळु विदितागेपशाखरं मैलापान्वय
मेनिसिद [क]रेयभणगगनचूडामणिगळुमप्य देवकीर्तिपण्डित-
देवर काल कर्त्ति ॥ ॐ शक्रवर्ष २६१ नेय विभवसंवत्सरद पौष्य
(ष)-बहुल-चतुर्दशीसोमवारमुत्तरायण-संक्रान्तियन्दु सैगोड्-गङ्ग
कुम्मुदवाडमेन्वूर विट्टनल्लिये मत्त दानसाल्गे पोलनुम कुम्मुदव्वेय देगुलदिं
वडग पोगि मूळ मुख केरितुमं वसदियिं मूडल्ल दानसाल्गे पन्निर्कियि-
निवेसणमुम । ऊरिं मूळ सपसिं(?)गे-गर्दियु वयल्लमं विट्ट-॥-ना ग्रामद
सीमेयेन्तेन्दोडे । आलिगोण्डदिं । सिडिलनेरिलिं । समेयदातनकेरेयिं ।
मल्लप-वूदनिं । तोळप-वळप-विल्लियळरियिं । गङ्गरोळादुव-सकिय-केरेयिं ।
हिच्चलगेरेय कोडियिं । निन्दवेलिं । सिन्दगिरि-वोवर्भागदिं । सून्दिगेरेय
नीर तट-वोवर्भागदिं । सिङ्गस-गेरेयिं । कदिकोड्-वळिवळि-गर्दियिन्दोळ-
गुळ्ळ भूमि कुम्मुदवाडके ॥ मत्तमूरिं तेङ्ग दानसालेय पोलके एरप-
केरेय मूडण कोडिय वडगण गुत्तिय तेङ्ग मुखदे मूडल्लमेरे । तेङ्ग [छ]
वळिवळि-गर्दियु । आलिगोण्डमु मेरे । वडगल्लिविन-केरेय मध्य मेरे ।
पडुवल्लु विक्रिय-वेट्टद तेङ्गण वागोळगागि मेरे ॥ (१) इल्लिन्दोळ्ळुल्ल
भूमि दानसाल्गे ॥ ओम् [॥]

ॐ स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द-महामण्डलेश्वर कुवलाल-पुरवरेश्वर
पद्मावतीलब्धवरप्रसादित कोङ्गुणिपट्टवन्धविराजित शासनदेवीविजय-

मेरीनिर्घोषण भगवदर्हन्मुमुक्षुपिच्छध्वजविभूषणनुमप्य श्रीमत्कञ्चरस-
 सैंगोदृ-गङ्गनि वन्द धर्मम समुद्धरिसिदिनिदन्तपदे प्रतिपालिसिदातं
 वारणासियोळ् सासिर्वरु ब्राह्मणगर्गे सासिर कविलेय[म्] कोदृ फलम् ।
 इदनळिदात वाणरासियोळ् सासिर कविलेयुम सासिर्वर्त्तपोधनरुम
 सासिर्वर्त्तब्राह्मणरुमनळिद पातकमक्कु [॥] ओम् [॥]

सामान्योऽय धर्मसितु नृपाणाम्
 काले-काले पालनीयो भवद्भिस्-
 सव्वनितान् भाविनः पार्थिवेन्द्रान्
 भूयो-भूयो याचते रामभद्रः । (॥)

खदत्ता परदत्ता वा यो हरेत वसुन्वराम्
 षष्टि-वर्ष-सहस्राणि विघ्नायां जायते कृमिः ॥
 न विष विषमित्याहुः देवस्व विषमुच्यते
 विषमेकाकिनं हन्ति देवस्व पुत्र-पौत्रिकम् ॥
 बहुभिर्वसुधा दत्ता राजभिस्सगरादिभिः ।
 यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ॥

ॐ [॥]

[कलभावी वम्बई प्रान्तके बेलगाँव जिलेके सम्पगाँव तालुकेके मुख्य-
 शहर सम्पगाँव (Sampgaum) से दक्षिण-पूर्व करीब ९ मीलदूर एक
 गाँव है । इसका पुराना नाम इसी शिलालेखकी पक्ति ८, १५, और २१
 में 'कुम्मुदवाड' दिया हुआ है । लिपिकी लिखावटसे यह लेख ई० ११
 चीं शताब्दिका मालूम पड़ता है ।

लेख प्रकट करता है कि किसी अमोघवर्ष नामके राजाने मैलाप अन्वय
 और कारेय गणके देवकीर्त्ति नामके जैन गुरुके पादो (चरणों) का प्रक्षाल-
 न किया था । उस अमोघवर्षके सामन्त, गङ्ग महामण्डलेश्वर सैंगोद-
 पेर्मानडि या सैंगोदृ-गङ्ग-पेर्मानडिने, जिनका दूसरा नाम शिवमार था,

कुम्मुडवाड (कलभावीका ही पुराना नाम) गाँवमें एक जिनेन्द्रका मन्दिर बनवाया और इसके लिये गाँव दानमें दे दिया । इस दानका काल शक संवत् २६१, विभव संवत्सर दिया हुआ है । लेकिन, जे० एफ० फ्लीटकी रायमें, यह काल जाली है और वास्तविक उल्लेख लेखके उत्तरार्ध में सन्निहित है (ॐ स्वस्तिसे लेकर), जिससे मालूम होता है कि उपर्युक्त दान बीचमें या तो जट्ट कर लिया गया था या असावधानीके कारण बन्द कर दिया गया था और उसे कञ्जरस नामके किसी दूसरे गङ्ग महामण्डलेश्वरने फिरसे चालू किया । भले ही तमाम लेख बनावटी हो, पर, जे० एफ० फ्लीटकी मान्यतानुसार, इसका उत्तरार्ध तो सच्चा है । मौलिक दानपत्रके खो जानेसे ही स्वयं लेखगत दानकी बनावटी तिथि देनी पडी है । लेखमें खाली 'अमोघवर्ष' ऐसा नाम देनेसे यह पता नहीं चलता कि 'अमोघवर्ष' नामके राष्ट्रकूट राजाओंमेंसे कौन सा अमोघवर्ष इस समय शासन कर रहा था । मौलिक दानका काल मैलाप अन्वय तथा कारेय गणके आचार्य गुणकीर्ति, नागचन्द्र, जिनचन्द्र, शुभकीर्ति और देवकीर्तिके वर्णनसे निकाला जा सकता है । प्रथम दान देनेके समयका काल शक सं० २६१ गलत है, क्योंकि विभव संवत्सर चालू शक सं० २३१ पडता है ।]

[Ind. Ant, Vol XVIII, pp 309-13]

१८३

नल्लूर—संस्कृत तथा कन्नड

[विना काल-निर्देशका, लगभग १०५० ई० (लर्ड राइस)]

[नल्लूर (हत्तुगट्टनाड) में, तीतरमाडके घरके पास सर्वे (Survey) ११७ नं. के तालाबके बाँधपर एक पाषाणपर]

भद्रं भूयाज्जिनेन्द्राणा शासनायाधनाशिने ।

कु-तीर्थ-ध्वान्त-सघात-प्रमिन्न-धन-भानवे ॥

स्वस्ति श्री

प.....धन परत्र-हित-कारणकं परमोपकारकम् ।

कुडे त.....ताब्दि.....य तिग.....मतिग.....भया.....दन्तम.....।

क्रि० १५

तडेयदे मुक्तियं पडेवेनेन्दु विचारिसि वन्धु-वर्गव.....।

त्रिडिसि समाधिय पडेदुदेहियुमच्चरि जक्कियब्बेय ॥

कस्तूरि-भट्टारगें अवर श्रावकि चन्दियब्बे-गावुण्डि.....यर
मत्रकि जक्कियब्बे सन्यसन गेय्दु मुडिपिदळ् ॥ आकेय गण्ड परम-
श्रावक एडय्य मङ्गळम्

[जिनशासनके लिये कल्याण-कामना । स्वस्ति । भयके साथ यह सुनकर कि दाय-तिगमति परलोककी इच्छासे मृत्युको प्राप्त हुई—तथा इस बातको न सहन कर, अपने सम्प्रन्धियोंकी सम्मति लेकर जक्कियब्बेने, जो चन्दियब्बे-गावुण्डिकी 'मत्रकि' और कस्तूरी भट्टारकी 'श्राविका' थी, संन्यसन विधि की और स्वर्गगत हुई । उसका पति श्रावक एडय्य था ।]

[EC, IX, Coorg tl., n° 31]

१८४

नल्लूरु—कन्नड़

[विना काल-निर्देशका, लगभग १०५० ई० ? (लुडे राइस)]

[नल्लूरु (हत्तुगट्टुनाड) में, तीतरमाडु मादर्यके घरके पश्चिमकी तरफ
हित्तल्लमे]

.....कोडङ्गळ 'ए मग.....दिले आळदडे
मेन्दु यति-वरगेंल सादरदि वीळि पा [द]दोळेरमि ताळिदनी-
सुर-कीर्त्ति भद्रमस्तु जिन-शासनाय श्रीम मदुवङ्गनाड् दोर किविरि-
यय्यङ्गळ् चाङ्गळद बसदियोळ् पनेरड नोन्तु मुडिपि नवर मक्कळ्
वाकियु वुक्किय निरिसिदर

[...जन्म कोटङ्गालुवका पुत्र शासन कर रहा था, वीळिय-सेट्टिने देवोके यज्ञका लाभ किया । जिनशासनका कल्याण हो ।

मदुवङ्गनाडुका स्वामी, किविरिके अर्यने १२ दिन तक चाङ्गळ बसदिमें
घर रक्खा और स्वर्गगत हुआ । उसके पुत्र वाकि और वुकिने इसकी
स्थापना की ।]

[EC, IX, Coorg tl., n° 30]

१८५

अङ्गडि—कन्नड

[शक ९२४, वर्ष जय (ठीक शक ९७६=१०५४ ई०) लईं राइस]

[अङ्गडि (गोणीवीडु परगना) मे, वसदिके पासके पाषाणपर]

खस्ति सक-वर्ष ९२४ नेय जय-संवत्सरद् चैत्र-मासद् सुद्ध-
दशमीवार पुष्य नक्षत्रदन्दु विनयादित्य-पोय्सळन
राज्य प्रवर्त्तिसे सूरस्त-गणद् श्री-वज्रपाणि-पण्डित-देवर ...गन्तियरप्प
जाकियव्वे-गन्तियर् (पीछे) सोसवूरोळे नाडे पोपणद् दिसेयनरसर्गे
वोक्कल्ग पोन्नरे कोट्टु मण्णरेकोण्डु सोसवूर-वसदिगे विट्टर् निसिदिगे
यडेवळ्ळेय . पूण आरतारगे ...एरडु-हळ्ळद् मेगण गण्ण नाळ्ळु
मकर-जिनालयके विट्टर् (हमेशाका अन्तिम श्लोक)

[(उक्त मितिको) जिस समय विनयादित्य पोय्सळका राज्य प्रवर्त्तमान
था—सूरस्त-गणके वज्रपाणि पण्डितकी शिष्या जाकियव्वे-गन्तिये सोस-
वूरमे नाडकी ओर जानेवाली दिशामे निवासस्थानके लिये पूरा रूपया
राजाको देकर और पूरी जमीन लेकर उसे स्मारकरूप सोसवूरकी 'वसदि'
के लिये छोड़ दिया । और यडेवळ्ळे की ण्णने दो खड्डो (ravines) के
ऊपर चार गण्णमकर-जिनालयके लिये दिये ।]

[EC VI, Müdgere tl, n° 9]

१८६

होन्वाड—संस्कृत तथा कन्नड

[शक ९७६=१०५४ ई० सन्]

ॐ [||] भद्रमस्तु जिनशासनाय सभद्रता प्रतिविधानहेतवे [||]

अन्यवादिमदहस्तिमस्तक्रत्स्फाटनाय घटने पटीयसि [||]

१ शक ९२४ जय वर्ष दिया हुआ है । लेकिन शक ९२४ प्लव संवत्सर है,
जय शक ९७६ है, और यही ठीक मिति मालूम पडती है ।

ओं स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय श्रीपृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराज पर-
मेस्वर परमभद्रारक्त मत्याश्रयकुलतिलकं चालुक्याभरण श्रीमत्
त्रैलोक्यमल्लदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्धमानमाचन्द्रार्कतारं
वग मल्लत्तमिरे [I] तद्विशाखोरःस्थलनिवासिनिपरस्प श्रीमत्-केतलदेवि-
यत् तर्द्धवाडि-सासिर-श्रेयगणरुनरुं-वाडद स्वम्पण वागेयवत्तर
वलिप्रमुत्तम-मग्रहारं पोन्नवाडमं त्रिभोगाम्बन्तरसिद्धिचिन्दाळुत्तमिरे [II]
तपादपद्मोपजीतो गणकचूडामणियु [३] वाणसकुलाम्बरभानुवं अर्ह-
पडाभन-भूलन्त-भधु कलिकाल-श्रेयासनु सम्यक्त्वरत्नाकरनुमप ॥

वानमवंशकूर्मनिभक्तो म्मजगद्विनुतात्तिकाश्विका-भूनुहदात्तकी-
त्तिधयनीरुनर्दिगिजनयोगिराणमहासेनमुनीन्द्रपादकमलभ्रमरं

परिपूर्णचारविद्यानिधिचाद्धि राजविमुराश्रितशिष्टजनेष्टतुष्टिः ॥

गम्भारो बहुशक्तमन्यमकरश्रीमत्तल सात्त्विके

लक्ष्मीजनमगृहसमस्तयसुधान्यावेष्टनोद्यधजः

अन्तर्धोनिनचाररत्नानिवतो निर्द्वैतकल्पापको

तीजानन्दरमाकरो विजयते सम्यक्त्वरत्नाकर. ॥

प्राणारभ्यभयप्रशासकानि तथा पर ।

चाङ्गणार्थन्यमो (आर्थ्यममो) नास्ति न भूतो न भविष्यति [III]

प्रोग [III] श्रीमूलमंथे जिनधम्ममूले गणाभिधाने वरसेननात्रि

गच्छेष्टु नुच्छेष्टि पोगर्ह्यभिर्यं नल्लयमानो मुनिगर्ह्यसेनः ॥

धनेरुभूगणरत्नादिग्वशोगाशुचान्दातपजालकेन ।

श्रेष्ठुभिन्नश्रीचरणान्द-श्रीव्रह्मसेनप्र(श्र)विनायशिष्य. ॥

न्यार्थमेनम्य मुनीश्वरम्य

शिष्ये महामेनमगामुर्नान्दः ।

सम्यक्वरत्नोज्ज्वलितान्तरङ्गः

संसारनीराकरसेतुभूतः[ः] ॥

तज्जैनयोगीन्द्रपदाब्जभृङ्गः

श्रीवानसाम्नायवियत्पतङ्गः ।

श्रीकोम्मराजात्मभवस्सुतेज-

स्सम्यक्वरत्नाकरचाङ्किराजः[ः] ॥

कलङ्कमुक्तस्सततैकरूपो

दोषेतरश्रीनिलयस्समस्त-

भव्याब्जसंदोहविकासहेतुः[ः]

विराजते नूतनचाङ्किराजः ॥

तन्निर्मित भुवनद्युम्भुकमत्युदात्त

लोकप्रसिद्धविभवोन्नत-पोन्नवाडे

रंरम्यते परमशान्तिजिनेन्द्रगोह

पार्श्वद्वयानुगतपार्श्वसुपार्श्ववासम् ॥

महासेनमुनेच्छात्र^१ चाङ्किराजेन निर्मितं

द्रष्टुकामाघसहारि शान्तिनाथस्य विम्बकम् ॥

महासेनमुनीन्द्रस्य छात्रेण जिनवर्मणा

छत्रीकृतमहानागं रचित पार्श्वदैवतम् ॥

जनकस्य कोम्मराजस्य^२ धर्मोद्देशाद्विनिर्मिता

राजते चाङ्किराजेन सुपार्श्वप्रतिमोत्तमा [॥]

ॐ ॐ शकवर्ष ९७६ नेय जयसंवत्सरद वैशाखदमा-
वास्ये सोमवारदन्दिन सूर्यग्रहणनिमित्तिदिं भीमनदिय तडिय

१ "मुनि-च्छात्र-चाङ्कि" पदो । २ 'जनककोम्म' पदो ।

मणियूर-अप्पयणवीडिनोळ् पोन्नवाडदोळ् चाङ्गिमय्यन माडि-
सिद श्रीशान्तिनाथदेवर त्रिभुवनतिलक-चैत्यालयदलर्षि ऋषियराजिय-
राहारदानके सर्व्वनमस्यवागि श्रीमत्रैलोक्यमल्लदेवर् श्रीकेतलदेवियर
विन्नपदि मूवत्तुणेण गळ्योळ् विट्ट नेळ मत्त [३] ३५ तोण्ट मत्त [३]
१ निवेसणदगळमा गळ्योळ् गळे ४ गेणु १७ नीळ गळे ९ वळम्बे-
निवेसण मूडण वेळदोळा गळ्योळ्गळ गळे ३ नीळ गळे ७ गोपुरद
मूडण अङ्गडिगं गाण १ अल्लि वेस-गेव्व कळ्कुटिगर मने १ सावगारिर्ष्य
पोलेमने १ [II] ॐ अल्लिय सुपार्श्वदेवर वसदिगे आ गळ्योळ् मत्तर
सल्लिके अरुवणद लेक्कडे विट्ट नेळ मत्त[३] ३५५ आ गळ्योळ् तोण्ट
मत्त [३] १ गाण १ [II] ओ तम्म जिनवर्म्मय्यन माडिसिद पार्श्वदेवर
वसदिगे करहड-नाल्लंशिरदोळगण कळम्बडि-३००२२ वळिय
कन्नडिगेय सह्वरसन मग मनेय वज्जरसन गुड्डे-मान्य ५०० मत्त-
केरोळ्गे मूवत्तु-णेण गळ्योळ्सर्व्वनमस्यमागि चाङ्गिमय्यं मारुगेण्डु
विट्ट नेळ मत्त[३] ३५ [II]

[यह लेख पश्चिमी चालुक्य राजा सोमेश्वर प्रथमका, जो यहाँ अपने विरुद्ध 'त्रैलोक्यमल्लदेव' से वर्णित हुए हैं, उल्लेख करता है और उसकी रानी केतलदेवीका भी जो पोन्नवाड 'अग्रहार' पर शासन कर रही थी। यह एक जैन शिलालेख है, इसका उद्देश्य यह बताना है कि किस तरह चाङ्गिराज, चाङ्गणार्थ, या चाङ्गिमय्यने, जो कि वानस या वाणस वंशके तथा केतलदेवीके अर्धभ्राता थे, शान्तिनाथ, पार्श्व, और सुपार्श्वकी वेदियोंको पोन्नवाडमें त्रिभुवन-तिलक नामके चैत्यालयमें बनवाया और किस तरह उन वेदियोंके लिये कुछ जमीन और सकानात दान किये गये ।];

[IA 19, p 268-275, n° 190]

१ लेखमें वर्णित पोन्नवाड, वास्तवमें, वर्तमान होन्वाड ही है ।

१८७

बङ्गापुर—कन्नड

[मन्मथ संवत्सर=शक ९७७=१०५५ ई०]

[इस लेखका परिचयमात्र मिलता है, लेख नहीं । बङ्गापुर धारवाड़ जिलेके वर्तमान शिगगौम या बङ्गापुर तालुकेसे दक्षिण-पश्चिम छह मील पर है ।

यहाँके सारे लेख किलेमें है । यह लेख एक दीवालके सहारे है जो कि पूर्वकी तरफसे किलेमे घुसते समय दाहिने हाथकी तरफ है । एक विशाल चिकने पत्थरपर ५९ पक्तियोंका यह एक लेख है, हर एक पंक्तिमें करीब ३७ अक्षर पुरानी कनडी लिपि और भाषामे हैं । शिलालेखका अधिकांश अच्छी स्थितिमें है; लेकिन चौथी पक्ति जानबूझकर मिटा दी गई है और उस शिलापर दरारें पडी हुई हैं जिनसे ऐसा मालूम पडता है कि यदि इस शिलाको किसी सुरक्षित स्थानपर ले जानेका प्रयत्न किया जायगा तो वह टूट जायगी । शिलाके अग्रभागके चिह्न चालाकीसे मिटा दिये गये हैं; लेकिन निम्नलिखित फिर भी कुछ चिह्न मिलते हैं—मध्यमे लिङ्ग है; इसके दाईं ओर एक बैठी हुई या घुटने टेकी हुई मूर्ति; उसके ऊपर सूर्य है और इसके बाहरकी ओर एक गाय और बछड़ा है, और इसके बाईं ओर एक स्थानापन्न पुरोहित या पुजारी, उसके ऊपर चन्द्रमा और उसके बाहर बसवकी मूर्ति बनी हुई है । लेखका काल शकवर्ष ९७७ (१०५५-६ ई०), मन्मथ 'संवत्सर' दिया हुआ है, जब कि चालुक्य राजा गङ्गपेर्मान्दि-विक्रमादित्यदेव,—जो कि त्रैलोक्यमल्लका पुत्र; कुवलाल-पुरका अधीश्वर; नन्दगिरिका स्वामी, और जिसके मुकुटमे क्रुद्ध हाथीका चिह्न था,—गङ्गावाडि ९६००० और बनवासि १२००० पर शासन कर रहा था, तथा जब कि महाप्रधान हरिकेशरीदेव, जो कादम्ब-सम्राट् मयूरवर्माका कुलतिलक था, उसके अधीन बनवासि १२००० पर शासन कर रहा था । हरिकेशरीदेवकी उपाधियाँ अधिकतर उम्मी तरहकी हैं जैसी कि अन्य कादम्ब राजाओंकी । लेखमे कुछ भूमिके दानका उल्लेख है । यह भूमि निडगुन्दगे वारह, की थी जो पानुङ्गल ५०० का एक 'कम्पण' था । यह भूमि-दान एक

जैनमन्दिरको हरिकेशरीदेव और उसकी पत्नी लबालदेवी तथा बङ्गापुरके पाँच मतोंको आश्रय देनेवाली जनता, नगरमहाजनोंकी गिटड (कम्पनी) तथा 'सोलह' वर्गोंने किया था ।^१]

[1A, IV, p 203, n^o 1, a, ASI, XVI, p 133, a.]

१८८

मुल्लूर—संस्कृत तथा कन्नड़

[विनाकाल-निर्देशका, पर लगभग १०५८ ई०]

[मुल्लूरमें, पार्श्वनाथ वस्तिकी उत्तरी दीवालपर]

स्वस्ति श्री-राजाधिराज कोङ्गाळ्वनव्वे पोचव्वरसियर् द्रविळ-गणद नन्दि-सधद अरुङ्गळान्वयद गुणसेन-पण्डितदेवर गुड्डि माडि-सिद वसदि मङ्गळ महा ।

[स्वस्ति । द्रविळ गण, नन्दिसंघ, तथा इरुङ्गळान्वयके गुणसेन पण्डित-देवकी गृहस्थ-शिष्या, राजाधिराज-कोङ्गाळ्वकी माँ पोचव्वरसिने इस वस्तिकी बनवाया । महा मङ्गळ ।]

[EC, IX, Coorg tl, n^o 37]

१८९

मुल्लूर—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक ९८०=१०५८ ई०]

[मुल्लूरमें, पार्श्वनाथ वस्तिके पश्चिममें दूसरे पापाणपर]

धम्म-सेट्टि वरेद स्वस्ति शक-वर्ष ९८० तेनेय विलम्बि-संव-त्सरद उत्तरायण-संक्रान्तियन्दु श्री-राजेन्द्र-कोङ्गाळ्वं तम्मव्य माडिसिद वसदिगे कोट्ट हारुवनहळ्ळि अरकनहळ्ळि निडुतद गोडल खण्डुगम् ३ के (दूसरे गावोंमें ऐसे ही दान) श्रीराजाधिराज-कोङ्गाळ्वनव्वे पोचव्वरसियर् तम्म गुरुगळ्ळु द्रविळ-गणद नन्दि-

१ 'बङ्गापुरद पद्ममत्त(ठ)स्थानसु नगरमहाजनसु पदिनस्वरुम्' ।

संघटरुङ्गळान्वयद गुणसेन-पण्डित-देवर्गे माडिसि धारा-पूर्वकं कोट्टरु ॥ (वही अन्तिम श्लोक) ।

[धर्म-सेट्टिके द्वारा लिखित ।

स्वस्ति । (उक्त मितिको), राजेन्द्र-कोङ्गाळवने, अपने पिता द्वारा निर्मित बसट्टिके लिये हेरुवनहळ्ळि, अरकनहळ्ळि, तथा निडुत गोडळुमें तीन खण्डु-गका दान दिया, और इसी तरह दूसरे गाँवोमे (जिनके नाम दिये हैं) ।

और राजाधिराज कोङ्गाळवकी माँ पोचव्वरसिने अपने गुरु द्रविल-गण, नन्दि-संघ, तथा अरुङ्गळान्वयके गुणसेन-पण्डित-देवकी प्रतिमा बनवाकर जलधारापूर्वक इसे समर्पित की । श्राप ।]

[EC, IX, Coorg tl, n° 35]

१९०

मुल्लूर—संस्कृत तथा कन्नड

[विना काल-निर्देशका, पर लगभग १०५८ ई० का]

[मुल्लूरमे, पार्श्वनाथ वस्तिके नीचे देहलीमें]

स्वस्ति श्री राजेन्द्र-चोळ-कोङ्गाळवन पुत्र श्री-रा...कोङ्गाळव...
वास-स्थानम तम्म गुरुगळ् तिवुळ-गणदरुङ्गळान्वयद नन्दि-संघद गुण-
सेन-पण्डित-देवर्गे धारा-पूर्वक कोट्ट मङ्गळ महा श्री श्री ।

[स्वस्ति । राजेन्द्र-चोळ-कोङ्गाळवके पुत्र रा कोङ्गाळवने तिवुळ-गण, अरुङ्गळान्वय और नन्दि-संघके अपने गुरु गुणसेन-पण्डित-देवको रहनेके स्थानके रूपमें...दिया ।]

[EC, IX, Coorg tl, n° 38]

१९१

मुल्लूर—कन्नड

[विना काल-निर्देशका, पर लगभग १०५० ई०]

[उसी वस्तिके प्राङ्गणमें एक पाषाणपर]

स्वस्ति श्री गुणसेन-पण्डित-देवर् अगळिसिद नागवावि नकारद धर्म

[स्वस्ति । नाग-कुआँ जिसको गुणसेन-पण्डित देवने नकर याने व्यापारी संघके धर्मके रूपसे खुदवाया ।]

[EC, IX, Coorg tl, n° 42]

१९२

सोमवार—कन्नड

[विना काल-निर्देशका, लेकिन संभवतः लगभग १०६० ई०]
[सोमवार (मल्लिपट्टण परगना) से, बसवण्ण मन्दिरकी बाहरी दीवाल के पाषाणपर]

धरेयोळ्गोचल-देविगे ।

गुरुगळ् गुणसेन-पण्डितर्द्रविळ-गणम् ।

वर- नन्दि-संघमन्वय-।

मरुङ्ग... नगदेन्दडेम्प्रणिणपुडो ॥

भद्रमस्तु ।

[एचलदेविके गुरु,—द्रविळ गण, नन्दि-संघ और अरुङ्गल-अन्वयके, गुणसेन-पण्डित, जो इतने प्रसिद्ध हैं, उनका वर्णन इस सप्ताहमें कैसे हो सकता है ? कल्याण हो ।]

[EC, V, Arkalgud tl, n° 98]

१९३

कडवन्ति—कन्नड-भद्र ।

[विना काल-निर्देशका पर संभवतः लगभग १०६० ई०]

[कडवन्तिमें, मेलु-कडवन्तिकी चट्टानपर]

भद्रमस्तु जिनशासनाय श्रीमत्-दान ... खचर-कन्दर्प्य सेनमार
पृथुवी-रोज्य गेय्युत्तमिरे देव-गणद पाषाणान्वयद महेन्द्र-वोळळं पडेद
अङ्कदेव-भटारर शिष्यर्महीदेव-भटारर गुड्ड निरवघय्यं मेळसरय
मेगे निरवघ-जिनालयमं माडि खचर-कन्दर्प-सेनमारन दयगेये निरव-
घय्य मानिय पडेदु जूक्कि-मानियेन्दु पेसरनिडु निरवघ-जिनालयके कोट्ट

एडेमलेय सासिर्वरु गळ्देय मेक्कळ तम्म तम्म गळ्देय मेगे एल्ला-कालमु पळ दप्पदे जक्कि-गोळ्गमेन्दित्तर्कडमन्तियोम् मादेर रचिपन्दूरुग एञ्जलिग सिरिपुरसन्नुमित्तुवु मूगण्डग-भत्तं पोक्कुळि-भक्किय पलिसिन तार-नित्तरुञ्जेनियोळ नाल्-गण्डग भगमनित्तरईवाडियोळपिन्दगर-ण्डुग मूगण्डुग मित्तमुळ्ळि-भागदोळ् मूगण्डुगमित्तं शालादि-त्तर क्कप्पिगमिर्क्कण्डुग.....मुळियर कुन्द कोण्टार्पन्दियो सार.....
 मेदुकय्य किरगादण्ण मू-गण्डुग मण्ण...म् इक्कुळ-भत्तमुमन ..
न्ददणिकिग देपण्ण मूगण्डुमित्त् योळ श्री-व . .

[जिस समय खचर-कन्दर्प सेनमार पृथ्वीपर राज्य कर रहे थे — निरवद्यने, जो देवगण और पाषाणान्वयके अङ्कदेव-भटारके शिष्य मही-देव भटारका गृहस्थ-शिष्य था और जिसने महेन्द्र-बोळलुको पाया था,— मेल्स चट्टानपर निरवद्य जिनालय खड़ा किया; और खचरकन्दर्प सेनमारकी कृपा प्राप्तकर निरवद्यको एक 'मान्य' मिला, जिसे उसने जक्कि-मान्यका नाम देकर निरवद्य-जिनालयको भेंट कर दिया ।

और एडेमले हजारने अपनी हरएक धान्यके खेतोकी फसलसे कुछ धान्य (चावल) दानरूपमे हमेशा के लिये दिया ।

और मी जिन लोगोने अनाजका दान किया उनके नाम लिये हैं ।]

[EC, VI, Chikmagalur tl, n° 75]

१९४

अङ्गडि—कन्नड़

[बिना काल-निर्देशका, पर सभवतः लगभग १०६० ईसवी]

[अङ्गडि (गोणीवीडु परगना) मे, छठे पाषाणपर]

(ऊपरका हिस्सा टूट गया है) सोसवूर सेडिगळ लोकजितनिगे निषिधिय कळ नखर-समूह नदरु

[सोसवूरके व्यापारी लोकजितके इस स्मारकको उस नगरके व्यापारी लोगोने खड़ा किया ।]

[EC, VI, Mūdgere tl, n° 16]

१९५

चिक-हनसोगे—कन्नड

[विना काल-निर्देशका, पर संभवतः लगभग १०६० ई० का]

[चिक-हनसोगे (हनसोगे परगना) में जिन-त्रस्तिके दरवाजेके ऊपर]

श्री-वीर-राजेन्द्र नन्नि-चङ्गाळव-देवम्माडिसिद पुस्तक-गच्छद
वसदि

[वीर-राजेन्द्र नन्नि-चङ्गाळव-देवने पुस्तकगच्छती वसदि वनवाडें]

[EC, IV, Yedatore tl, n° 22]

१९६

चिक-हनसोगे—कन्नड ।

[विना काल-निर्देशका, पर सम्भवतः लगभग १०६० ई०]

[जिन-त्रस्तिमें, दरवाजेपर पडे हुण पत्थरोपर]

दशाशिर-प्रहारियप्प रामस्वामि त्रिष्ट परमेश्वर-दत्तियं शकनोड
विक्रमादित्यं पडिसलिसि-तान.....मुन्निनन्ते वडगण-तूम्विन
नीर्वीरिदनिंतु नेलन ख..... ताम्म-शासन-पूर्वक कोट्टरदं
मारसिंह-देव पडिसलिसलेन्ता-परमेश्वर-दत्तिय वडगण तूम्विन
नीर्वीरिदनिंतु.....मुन्निनन्ते कादना-रामर दत्तिय ताम्म-शासन
पडिय ...मडि ईयक्कर वरेदवद नन्नि-चङ्गाळव-देवर्पुनर्णव
माडिसिद वसदिय तूम्विनलक्करवु प्रतिमेयु माडिद तप्पिदग्गे कविलेगे
तप्पिद पाप

[पहलेकी ही तरह, उत्तरीय नहरसे, सीची गई सारी जमीन,—दशाशिर
(रावण) के वधक रामस्वामीके द्वारा जो छोड दी गई थी, परमेश्वरने
जिसे दिया था, और जिसे इनामके तौर पर शक तथा विक्रमादित्यने भी
दिया था,—ताम्बेके शासन (लेख) पूर्वक.....दी । परमेश्वर-प्रदत्त तथा
उत्तरीय नहरसे सींची गई सारी जमीनका दान मारसिंह-देवने किया और
पहलेकी ही तरह उसका रक्षण भी किया ।

.....मडिने रामके डिये हुए इस ताम्ब्रेके शासनपर दानके अक्षर लिखे और बसदिके पानीकी राहके फाटकपर मूर्त्तियों और अक्षर खोदे । इस बसदिको नन्नि-चङ्गाळ-देवने फिरसे बनवाया ।]

[EC, IV, Yedotore tl , n° 25]

१९७

हुम्मच—कन्नड़

[शक ९८४=१०६२ ई०]

[सुळे वस्तिके सामनेके पाषाणपर]

खस्ति समस्त-सुरासुर-

मस्तक-मुक्ताशु-जाल-जल-धौत-पदम् ।

प्रस्तुत-जिनेन्द्र-शासन-

मस्तु चिरं भद्रमखिल-भव्य-जनानाम् ॥

खस्ति श्री पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारकं सत्याश्रय-कुळ-तिलक चालुक्याभरण श्रीमत्-त्रैलोक्यमल्ल-देवराज्य सल्लत्तमिरे ॥ खस्ति समधिगत-पञ्च-महाशब्द महामण्डलेश्वरनुत्तर-मधुरा-धीश्वर पट्टि-पोम्बुर्च-पुर-त्रेश्वरं महेश्वर-वग-ललाम पद्मावती-लब्ध-वर-प्रसादासादित-विपुल-तुलापुरुष-महादान-हिरण्यगर्भ-त्रयाधिक-दान वान-रध्वज-विराजित-राजमानं मृगराज-लाञ्छन-विराजितान्वयोत्पन्न बहु-कळा-कीर्णं शान्तरादित्य सकळ-जन-स्तुत्य कीर्ति-नारायण सौर्य-पारायण जिन-पादाराधक रिपु-त्रल-साधकं नीति-शास्त्रज्ञ विरुद-सर्वज्ञ श्रीमत्-त्रैलोक्यमल्ल-वीर-शान्तर-देवं सान्तलिगे-सायिरसुमनेकच्छत्र-च्छा-येयिन्दमालुत्तमिरे ॥ तत्पाद-पद्मोपजीवि स्वस्त्यनेकगुण-गणाभिमण्डन नखर-मुख-मण्डन शान्तर-राज्या-भ्युदय-कारणं कलि-युग-दोस(ष)-निवारण आहाराभय-भैषज्य-शास्त्र-दान-कानीन विशद-यशो-निधानरूप

श्रीमत्-पट्टण-स्वामि-नोक्कय-सेट्टि स (श) क-वर्ष ९८४ शुभकृत-
संवत्सरद कार्तिक-सुद्ध ५ आदित्यवारदन्दु तन्न माडिसिद
पट्टण-स्वामि-जिनालयके वीर-सान्तर-देवझे (यहाँ दानकी विस्तृत
चर्चा आती है) सर्व-वाधा-परिहार-मागि माडि तन्न सहधर्मिगळ् सक-
ल-चन्द्र-पण्डितदेवर्गे कोट्टम् (यहाँ वे ही हमेशाके अन्तिम वाक्याव-
यव आते हैं) ।

इष्टनोर्व्वनधिदेवतेगेन्दोसेदित्तुदम् ।
दुष्टनोर्व्वनदर फलव सले तिन्दवम् ।
सिद्धि-मेले परमात्मने वन्देडेगोवदम् ।
कट्टिकोण्ड विदिरन्ते कुल-क्षयमारुगुम् ॥

(वे ही अन्तिम श्लोक ।)

अकर ॥ ईवरेन्दत्ति पल्लिरिदेरदप ॥ तागि वेळ्दपर् ल्लेजेगेट्टु काव-
रेन्दळ् ॥ सरणेन्दु वन्दपर् चावञ्जि मरेवक्कुं वाल्वेमेन्दु साम-वङ्गदा
मरेवक्कुं वन् ॥ ॥ ॥ ॥ विडियु निदे पट्टियदन्दु

जीवम्जीवके तूकके वारदे, किळ्वट्टु वरवेके वीर-देव ॥

धुरदोळसि-लतेयनुच्चिदड् ।

अरि-नृप-युवतियर मुगुळ कङ्कणदा-कील् ।

तरतरदिनुच्चिददु निज- ।

कर-खळ्गमवर्के कीले शान्तर-नृपति ॥

वीरुगन दोरेगे दोरे पे- ।

रारु वन्दवरी-कृत-युग त्रेते द्वा- ।

पर कलि-युगदोळगण ।

वीरुदार-अ्रतापिगाळ् धर्म-परर ॥

वृत्त ॥ परम-श्री-जैन-धर्मकृतिशय-विभव मार्प विद्वज्जनका- ।
 दरदिन्द नन्तोस (प) माडुव मुनि-जनकाहार-भैपज्जम वि- ।
 स्तरदिन्द चिन्ते-नेखुन्नत-गुण-[*] युतं पट्टण-स्वामिनोक्कं- ।
 वरमारव्भव्यर्कञ्जन्ता-पुरुप-रतुनदिं वीरदेवं कृनात्थंम् ॥
 पुदिद तमम्-तम-यटलं ओन्दिद चिन्ते तगुब्बु तब्बु प- ।
 त्तिद रुजे पेच्चिं साच्चिद दरिद्रते वट्टेयोळाद सेदे वड्-
 गिदपुट्टु कण्ड काप्केयोळे तप्पट्टु पट्टण-नावि नोक्कनि- ।
 छट्टे वट्टट्टु वन्द बुध-मण्डलिगी-मले सू (शू) न्यमागटे ॥
 वल्ललनप्प पेव्वुसिय वय्किरो भाजनमाद दोळो वी- ।
 ळ् वरिवन्ते नेळ् नरे-गड्डुद दौडुर वेळ्वातुगळ् ।
 कोल्लुमवार्के केम्मनेडेयाडदिरोवेले शिष्ट वेडिको- ।
 ळ्ळेव्वडे नम्म धम्मद तवम्मने पट्टण-सामि नोक्कनम् ॥
 जिनन वण्णिप पूजिप ।
 जिनागमोक्तियाडे नेगव्व जिन-पदमं भा- ।
 वनेय निच्च ताळ्ळुवन् ।
 एने पट्ट [ण] -सावि ये जिनागम-निवियो ॥

वचनम् ॥ सम्यक्त्व-चारासियुमेनिसिद पट्टण-स्वामि नोक्कय्य....
 हुरदोळु देवर वल्लभरनेरगिसि रत्तङ्गळ्म् खच्चियिसि । पोन्न वेळ्ळिय
 पवळ्ळ महा-भागिय पञ्च-लोहदोळ प्रतिमेगळ माडिसिद । (यहाँ दानकी
 विस्तृत चर्चा है ।) सकळचन्द्र-पण्डितदेवर गुड्ड मल्लिनार्थ
 वरेदम् ॥

सुजन-जन-सुमुद-चन्द्रन ।

सुजन-जनानन-विलोक-मणिसुकरतना- ।

सुजन-जन-जन-हंसन ।

सुजनजन पोगळे मल्लिनाथ नेगळदम् ॥

गुडिवयलुम विट्ट (सिरपर) पट्टण-स्वामिय परि नेम-व्रतवेरेदन्दे
तुरवनित्तिदु...गेव्यद...येत्तिद य ...सा ..सन्तोस(प)-दान-
विनोद... ॥ श्री-पट्टण-स्वामिय गुरुगळ् श्रीमद्-दिवाकरणन्दि-सि
द्धान्त-रत्नाकर-देवरु श्री-विरुद-सर्वज्ञ वीर-शान्तर-देवम् ॥

पुसियदिरारोळव-नदि पर-नारिय त्तपोगे तप्प ।

एसगदिराव-जीवदेळ्मेवडेयेम्बुद-नेन्तुमोळ्दिस् ।

कुसियदिरायदि पोगर्दु तळ्तेडेयोळ् व्रतमेन्दु कोण्डुदम् ।

विसडदिरैम्बुदी-वरेद . सने शान्तर-वीर-देवनम् ॥

नेगर्दुग्रान्धय-पध्मिनी-दिनकरं श्री-शान्तरोर्वीशनु- ॥

दध-गुणाम्भोनिधि वीरुग विरुद-सर्वज्ञ धरा-मण्डळम् ।

पोग[ळ]ळ् कूर्म्मियिनीये निर्म्मळ-यश धर्माधिक ताळ्दिदम् ।

जगदोळ् पट्टण-स्वामि-वट्टमनिदेम् नोक्क यशो-भागियो ॥

पट्टणस्वामि-जिनालयद शासनम्

[जिनेन्द्रकी प्रशसा ।

जब, (उन्हीं चालुक्य-पदों सहित), त्रैलोक्यमल्ल-देवका राज्य प्रवर्त्त-
मान था—जब, (उन्हीं पदों सहित जिनसे अलङ्कृत नन्नि-शान्तर शि०
ले० नं० २१३ में हैं), त्रैलोक्य मल्ल वीर-शान्तर-देव शान्तलिगे हज़ार-
पर एकलत्र राज्य कर रहा था, —

तथादपन्नोपजीवी (उन्हीं पदों सहित जैसे कि पद शि० ले० नं०
२११ में है) । पट्टण-स्वामि नोक्कय सेट्टिको (उक्तमित्तिको) अपने
वनवाये हुए पट्टण-स्वामि जिनालयके लिये वीर-शान्तर-देवको सोने के १००
गद्याण मेट करने पर, मोलकरेका दान मिला; इस गाँवकी सीमाये । इसने

(नोक्क्य-सेट्टिने) अपना गाँव कुक्कुडवळिळ भी दानमें दे दिया, और इसको (उक्त) सब करोसे मुक्त कर दिया, और अपने सह-धर्मी सकल-चन्द्र-पण्डितदेवको सौंप दिया ।

शापात्मक और वे ही अन्तिम श्लोक ।

राजा वीर शान्तर और 'सम्यक्त्व वारासि' नामसे प्रसिद्ध पट्टण-स्वामि नोक्ककी प्रशंसामें श्लोक । माहुरमें प्रतिमाको रत्नोंसे मढ़ दिया और उसके पास सोना, चादी, मूगा (Coral), रत्नो और पद्मधातुकी प्रतिमायें थीं । शान्तगेरे, मोळकेरे, पट्टण-स्वामिगेरे और कुक्कुडवळिळके तळेविण्डेगेरे—ये सब तालाब उसने बनवाये थे । और सौ सुवर्ण गद्याण देकरके उसने उगुरे नदीका सौळंगके पाणिमगल तालाबमें प्रवेश कराया ।

सकलचन्द्र-पण्डित-देवके गृहस्थ-शिष्य मल्लिनाथने इसे लिखा, उसने गुडिवयल्का दान किया । पट्टण-स्वामिके गुरु दिवाकरनन्दि-सिद्धान्त-रत्नाकर-देव और सर्वज्ञ-पदलान्छित वीर-शान्तर-देवकी प्रशंसा]

[EC, VIII, Nagar tl, n° 58]

१९८

हुम्मच, —कन्नड

शक ९८४=१०६२ ई०

[पार्श्वनाथवस्तिमें मुखमण्डपके स्वम्भोपर]

(दक्षिण-स्तम्भ)

(पूर्व-मुख) ***पृथुवी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारक सत्याश्रय-कुळ-तिळक चालुक्याभरण श्रीमत्-त्रैलोक्यमल्ल-देवर् चतु-रसमुद्र-पर्यन्त पृथ्वी-राज्यानुष्ठानदिनिरे ॥ तत्पादपद्मोपजीवि ॥ समधि-गत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वरनुत्तर-मधुरावीश्वर पट्टि-पोम्बुर्च-पुर-वरेश्वर महोग्र-वश-ल्लाम पद्मावती-लब्ध-वर-प्रसादासादित-विपुल-तुला-पुरुष-महादान-हिरण्यगर्भ-त्रयाधिक-दान वानर-ध्वज-विराजित-राजमान-मृगराज-लाञ्छन-विराजितान्वयोत्पन्न बहु-कलाकीर्णा सान्तरादित्य सक-

ल-जन-स्तुत्य कीर्त्ति-नारायण सौर्य-पारायण जिन-पादाराधक रिपु-
वळ-साधक नीति-शास्त्र विरुद-सर्वज्ञ नामादि-समस्त-ग्रशस्ति-सहित
श्रीमत् त्रैलोक्यमल्ल-वीर-सान्तर-देवं सान्तळिगे-सासिरमं निइ-दा-
यादम निष्कण्ठकम निराकुळमु माडि निजान्वय-राजधानि-पोम्बुर्चदोळ्
सुख-संकथा-विनोददिनरसु-गेय्युत्तिब्हु स(श)क वर्ष ९८४ नेय
शुभकृतसंवत्सरं ग्र ...

(उत्तर-मुख) जिनदत्तं तनगन्दु देवतेय कारुण्य पोदब्दिर्षिनम् ।

दनु-पत्रगतिभीतिथ निज-भुजावष्टम्भदिं माडि को-।

ड निजाम्नायद पेम्पु-वेत्त पोळलोळ् पोम्बुर्चदोळ् माडिदम् ।

जिन-गेहङ्गळनर्त्तियिं पलवुम श्रीवीर-भूपाळकम् ॥

सुरसैलेन्द्रमो मेण् कुवेरगिरियो मेण् तुङ्ग-ताराद्वियो ।

दोरेयेम्बन्तिरे तन्न भक्ति मनदिं पोण्मुत्तमिर्षिन्नेगम् ।

परमोत्साहदे नोक्कियव्वेय जिन-श्री-गेहमं माडिदम् ।

घरेयेह पोगव्वन्नेग विरुद-सर्वज्ञावनीपाळकम् ॥

वचन ॥ अन्तु नेगब्द वीर-शान्तरन मनो-

नयन-वळ्भेयेनिसिद चागलदेवि ॥

वृत्त ॥ गुणदोळ् रूपिनोळोळ्पिनोळ्

सुव्रगिनोळ् शृङ्गारदोळ् सौम्यल-।

क्षणदोळ् मैमेयोळोजेयोळ्

विभवदोळ् शीलङ्गळोळ् मृत्थ-पो-।

षण्दोळ् भोगढोळ्पिनोळ्

विमुतेयोळ् कारुण्यदोळ् पोलिसलक्-।

एणेयाद् गोल्व वेडङ्गिगेन्दसुदिन

विद्वज्जनं वणिणकुम् ॥ .

(उत्तरस्तंभ)

(दक्षिणमुख) कन्द ॥ जयदङ्ककात्ति दान-।
 प्रिये शान्तर-देवनोष्पुवद्धाङ्गद-ल-।
 क्षिमयेनिष्प पुण्यवतियम् ।
 जय-देवतेयन्नदुन्ते पेरतेनेम्ब्र ॥
 श्री-वनितेगे वीरन वाक्-।
 श्री-वनितेगे कीर्त्ति वधुगे सान्तर-विजय-।
 श्री-वनितेगधिके चागल-।
 देविये भाविसुवदखिल-विश्वम्भरेयोळ् ॥
 सल्लोगे साम्यक्केगे ।
 पल्लकेम मतियरहितरं गेल्वेडेय्.....।
 गेल्व वेडङ्गिये वीरन ।
 वल्लद मुजा-दण्डदल्लि केलदोळ् निस्वळ् ॥
 पतिय वञ्चिसि सले निज-।
 कृतकदिनद्धावल्लोकनाक्षिगळिं भ्रु-।
 लतेयोळ्मोळ्पोय्वी-दुर-।
 व्रतेयर् प्पोल्लतपरे चागियच्चरसियरम् ॥
 सङ्गत गुणनमळ-लसत्-।
 तुङ्गाखिळ्-कीर्त्ति-वीर-सान्तर-नृपन-।
 द्धाङ्ग-स्थित-लक्षिमयेनल्क् ।
 एङ्गळ् पोल्लतपरे चागियच्चरसियरम् ॥
 नेत्रावळि-दोच्छर्दि-वि-।

चित्राम्बर-कनक-रजत-मणि-मौक्तिकमम् ।

पात्रमरिदीव-गुणकति-।

मात्रेयरेण्डिपरे चागियञ्चरसियरम् ॥

(पूर्वमुख) वृ ॥ अतिशयमप्य रूपिनोळुदारतेयोळ् विनयोपचारदोळ् ।
पतिगतिभक्तिनोळ् विपुळ्-भोगदोळिं पेरतेननेम्बे माण् ।
रतिगनुसारि पाव्वतिगे तोड्डु कुजातेगे पाटि नोडरुन्-।
धतिगेणे वासवाङ्गनेगे पासटि चागल-देवि धात्रियोळ् ॥

येनिसिद् चागल-देवि निज-ब्रह्मं वीर-शान्तरन कुळ-देवते नोक्कि-
यव्वेय वसदिय मुन्दे मकर-तोरणम माडिसि ॥ मत्त बळ्ळिगावेयले
चागेश्वरमेम्ब देगुलम माडिसि पलवुरु ब्राह्मणर कन्ने-दानम माडिसि
महादानङ्गेण्डु वन्दि-वृन्दक्कवाश्रितर्गं पोन्नु बुट्टिगेयुमं वेर्पन्नेगमित्तु चा-
गम मेरेदळ् ॥ अन्तु नेगर्द चागल-देविय तायेनिप अरसिकव्वे प्रसि-
द्धकेसेदळ् सान्तरन मनेय सर्व्व-प्रधान ब्रह्माधिराज कालिदासय्य-
वगेद (पश्चिम मुख) श्री-लोकिय वसदिगे देकरसं जम्बहळ्ळिय
विट्टि श्री-माधवसेन-देवङ्गे धारा-पूर्व्वक माडि कोट्टम् ॥

[जब, (उन्हीं चालुक्य पदों सहित), त्रैलोक्यमल्ल देव समुद्र-पर्यन्त
दुनियाके राज्यपर शासन करनेमे लगे हुए थे —

तत्पादपक्षोपजीवी (नं० २१३ वाले लेखमे जो नलि-शान्तरके पद है
उन्ही पदों सहित) त्रैलोक्यमल्ल वीर-शान्तर-देव, सान्तलिगे हजारको
मुक्त करके, अपने वशकी राजधानी पोम्बुर्चमे शासन कर रहा था:—
(उक्त मितिको),— अपने वशके प्रसिद्ध नगर पोम्बुर्चमें वीर-भूपालकने
बहुतसे जिनमन्दिर बनवाये । इसी पोम्बुर्चमे जिनदत्तने देवी (संभवतः
पद्मावती देवी) के प्रसादको प्राप्त करके एक राक्षसके पुत्रको अपने
भुजबलसे भयभीत कर दिया था । वीर-भूपालने नोक्कियव्वे जिनमन्दिर
बर्दी शोभाके साथ खडा किया था ।

वीर-शान्तरकी पत्नी चागल-देवी थी । उसकी प्रशंसामें बहुत से श्लोक दिये हैं । अपने पति वीर-शान्तरके कुल-देवतारूप नोकियब्बेकी बसदिके सामने उसने 'मकर-तोरण' बनवाया था और बल्लिगावैसे चागेश्वर नामका मन्दिर बनवाया था और बहुत-से ब्राह्मणोंको कुमारिकायें भेंटकर उसने 'महादान' पूर्ण किया था, तथा प्रशंसको और आश्रितोंकी भीड़को यथेच्छक दान देकर अपनेको दानी प्रसिद्ध किया था । (तथा) चागल-देवी की माँ अरसिकब्बेकी भी बहुत प्रसिद्धि हुई । (और) शान्तरके घरका 'सर्व-प्रधान' ब्रह्माधिराज कालिदास विख्यात हुआ था ।

लोकिय बसदिके लिये, देकररसने जम्बहळिळि प्रदान की, इसका दान माधवसेन-देवको किया था ।]

[EC, VIII, Nagar, tl, n° 47]

१९९

श्रवण-त्रेलोल्ला;—संस्कृत-भग्न

[सं० १११९=१०६२ ई०]

(जैन शि० ले० सं०, भा० १)

२००

अङ्गडि—कन्नड-भग्न

[शक ९८४=१०६२ ई०]

[अङ्गडि (गोणीवीडु परगना) में, ७ वें पाषाणपर]

.....;.....विनयादित्य.....पोयसळ..... भट्टार

गुरुगळ...

सक-कालं गति-नाग-रन्ध्र-शुभकृत्-संवत्सरापाढदोळ् ।

सुकर पौर्णमि-भौमवार मोसेदिळ्दा-श्रावण ..

कटिन्दे वरे शान्तिदेवरमळ् सन्यासन गेय्दु भक्त् ।

ति करं कै-वशमागे गेय्दु पडेदर निर्व्वाण-साम्राज्यमम् ॥

(पीछे)शान्ति-देवर् श्रीमत् सो[सिवू]र...नकर-समूह तम्म
गुरुगळ्मो परोक्ष-विनयं गेय्दु निषिदिगे मङ्गळमहा

[..... विनयादित्य..... पोय्सळके गुरु(उक्त मितिको)
शान्तिदेवने, अपने धर्मके फल स्वरूप निर्व्वाणको प्राप्त किया ।

नगर (व्यापारी संघ)के लोगोंने अपने गुरु शान्ति-देवकी मृत्युके
उपलक्ष्यमें यह स्मारक खडा किया ।]

[EC, VI, Mūdgera tl, n° 17]

२०१

अङ्गडि—संस्कृत तथा कन्नड़-भग्

[शक ९८४=१०६३ ई०]

[अङ्गडि (गोणीवीडु परगना)में, वसदिके पासके पाषाणपर]

..... तन्त्र-प .. . च्वरसिय .. .
.....साम्पराय..... (७ पक्तियोंमें
दानकी चर्चा है) पोय्सळन विद्यावन्त पोय्सळाचारि आतन मग
माणिक-पोय्सळाचारि आत माडिद वसदि उळि-वळ्ळि-पिडिवर चड
(पीछे) इन्तिनितु भूमियुम कोड्डु शक-वर्ष ९८४ नेय शुभकृत-सं-
वत्सरद फाल्गुन-सुद्ध-पञ्चमी-बुधवारं रोहिणी-नक्षत्रदन्दु प्रति-
ष्ठे-गेय्दु पूजेय माडि तिरु-नन्दीश्वरदन्दु दान-माडेयु पोय्सळन गुरुगळ्
मुळूर श्री-गुणसेन-पण्डित-देवर्गे धारा-पूर्वकर्ति स्थानम कोड्डु ॥

श्री-वनितेगे धरणिगे वाग्-देविगे रुग्मिणिगे रतिगे रम्भगे सीता- ।
देविगे कोन्तिगे परियल- । देवियिमिल्लि गुणके वप्परुमुण्टे ॥
श्रीमदभिमानपिण्डः । पर-गण्ड-ग्रलय-काल-यम-दण्डः ।

सद्गुणरत्नकरण्डः । स जयतु भुवि मलेपरोळ् गण्डः ॥

रक्षस-चोय्सलनेम्वा- । इ-अक्करव वरेदु पटमनेत्तिदडिदिरोळ् ।

लकद सत्र-लेकद मरु- । वक्क निन्दपुवे समर-संगट्टनदोळ् ॥

(हमेशाके अन्तिम श्लोक)

[प्रथम भाग बहुत घिसा हुआ है और अन्तिम पक्तियोंमें दानकी विशेष चर्चा है ।

छेनी और बल्लिको पकड़नेवालोंमें प्रधान, अर्थात् पाषाणशिल्पियोंमें प्रधान विद्यावान पोयसळाचारिके पुत्र माणिक-पोयसळाचारिने यह वसदि बनवाइ ।

इतनी भूमि देकरके, उन्होंने (उक्त मितिको) भगवान्की प्रतिष्ठा की, और पूजाकर तिरु-नन्दीश्वरके कालमें दान देकर मन्दिर पोऽसळेके गुरु मुल्लूरके गुणसेन पण्डितदेवको सौंप दिया ।

परियल-देवी और मलेपरोळ् गण्डकी प्रशंसा । “रक्कल-होयसळ” इन ६ अक्षरोंको अपने झण्डेपर लिखकर यदि वह उसे उड़ाता है, तो लक्षावधि शत्रु भी क्या उसका युद्धमें सामना कर सकते हैं ? (हमेशाके अन्तिम श्लोक)]

[EC, VI, Müdgera tl., n° 13]

२०२

मुल्लूर—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक ९८६=१०६४ ई०]

मुल्लूर (निडुत परगना) में, बस्ति मन्दिरमें पार्श्वनाथ बस्तिके पश्चिममें प्रथम पाषाणपर]

(पहली ओर) स्वस्ति शक-नृप-कालातीत-संवत्सर-शतङ्गळ् ९८६ नेय क्रोधि-संवत्सरं परिवर्त्तिसुत्तिरे तच्-चैत्र-बहुल-नवमी मङ्गळवारं पूर्वाभाद्रपद-नक्षत्रम्भिनोदयदल् ॥

स्वस्ति समस्त-सुरासुरेन्द्र-मकुट-तट-घटित-मणि-मयूख-रेखालङ्कृत-चा (दूसरी ओर) रु-चरणारविन्द-युगल भगवदर्हत्-परमेश्वर-परम-भट्टारक-मुख-कमल-विनिर्गतागमासृत-गम्भीराम्भोराशि-पारगरुप श्रीमद्-गुणसेन-पण्डित-देवस्मोक्ष-लक्ष्मी-निवासके सन्दर् (तीसरी ओर)

गुरुगळ् सिद्धान्त-तत्त्व-प्रवचन-पट्टगळ् पुष्पसेन-व्रतीन्द्र ।
 वर-सङ्घ नन्दि-सङ्घ द्रविळ-गण-महारुद्र-जाम्नाय-नायम् ।
 परमार्हन्त्यादि-रत्न-त्रय-सकल-महा-शब्द-शास्त्रागमादि- ।
 स्थिर-षट्-तर्क-प्रवीणर् व्रति-पति-गुणसेनार्थ्यरार्थ्य-प्रणूत्र ॥

[(उक्त मितिको), आगमरूपी अमृतके गहरे समुद्रके पार जाने वाले श्रीमद् गुणसेन-पण्डित-देवने मोक्ष-लक्ष्मीका निवास प्राप्त किया । उनके गुरु पुष्पसेन-व्रतीन्द्र थे । गुणसेन-पण्डित-देव द्रविळ गणके नन्दिसंघके तथा महा अरुद्रलाम्नायके नाय थे । ये सब विद्याओ—न्याकरण, आगम, तर्क—में प्रवीण थे ।]

[EC, IX, Coorg tl n° 34]

२०३

हुम्मच—कन्नड

[शक ९८७=१०६५ ई०]

[हुम्मचमे, चन्द्रप्रभ वस्तिकी बाहरी दीवालपर]

भद्रमस्तु जिन सा (शा) • • स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-
 पृथिवी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारक सत्याश्रय-कुळति-
 ल्लकं चालुक्याभरण श्रीमत्-त्रैलोक्यमल्ल-देवर् चतुस्समुद्र-पर्यन्त-
 पृथ्वी-राज्यानुष्ठानदिनिरे तत्पादपद्मोपजीवि । स्वस्ति समधिगत-पञ्च-
 महा-शब्द महा-मण्डलेश्वरनुत्तर-मधुरावीश्वर पट्टि-पोम्बुर्च-पुर-वरेश्वर
 महोप्र-वश-ललाम पद्मावती-लब्ध-वर-प्रसादासादित-विपुळ-तुळापुरुप-म-
 हादान-हिरण्यगर्भ वयाधिक-दान वानर्-ध्वज- विराजित-राजमान मृग-
 राज-लाञ्छन-विराजितान्वयोत्पन्न बहु-कलाकीर्णं सान्तरादित्य सकल-
 जन-स्तुत्य कीर्त्ति-नारायण सौर्य-परायण जिन-पदाराधकं रिपु-वल्ल-
 साधक नीति-शास्त्रज विरुद-सर्वज्ञ नामादि-समस्त-प्रशस्ति-सहित श्रीमत्
 त्रैलोक्यमल्ल-भुजबल-शान्तर-देव शान्तळिगे-सासिरम निर्द्वायादबु निरा-

कुळ माडि राज्य गेय्युत्तिब्दु स(श)क-वर्ष ९८७ नेय विश्वावसु-
संवत्सरं प्रवर्त्तिसुत्तमिरे निजान्वय-राजधानि-पोम्बुर्चदोळ् भुजवळ-शा-
न्तर-जिनालयके माघ-मामद सुद्ध-पञ्चमी-सोमवारमुमुत्तरायण-संक्रमण-
दन्दु तम्म गुरुगळ् कनकणन्दि-देवर्गे धारा-पूर्वक माडि हरवरिय विट्टम् ।
(यहाँ सीमाओंकी विस्तृत चर्चा आती है) ।

जिनशासनके कल्याणकी कामना । स्वस्ति । जघ, (उन्हीं चालुक्य पदो
सहित) चतुस्समुद्रपर्यन्त पृथ्वीके राज्यपर त्रैलोक्यमल्लदेव शासन कर
रहे थे—

तत्पादपद्मोपजीवी,—जिस समय, (उन शान्तरके पदों सहित जो कि
शि० ले० नं० १९७ में दिवाये गये हैं), त्रैलोक्यमल्ल भुजवळ-शान्तर-
देव, शान्तलिंगे हजारको उपद्रवों और कष्टोंसे मुक्तकर शासन कर रहे
थे,—(उक्त मितिको), अपनी राजधानी पोम्बुर्चमें भुजवळ-शान्तर जिना-
लयके लिये अपने गुरु कनकणन्दि-देवको हरवरिका दान किया था. इसकी
सीमायें । वसदिका ऐसा शासन (लेख) है ।]

[EC, VIII, Nagar tl, n° 59]

२०४

वलगाम्बे—संस्कृत तथा कन्नड ।

[शक ९९०=१०६८ ई०]

[वलगाम्बेमे, वडगियर-होण्डके पासके भागनमे पाषाण-खण्डोपर]

श्रीमन्परमगमीरस्याद्वादामोवलाञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनायस्य शासन जिनशासनम् ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर
... भट्टारक सत्याश्रय-कुल-तिलक चालुक्याभरण श्रीमत्त्रैलोक्य-
मल्लनाहवम् * * * * * सुख-संकथा-विनोददि राज्य गेय्युत्तमिरेयिरे ॥

वृत्त ॥ मलेपरू म्माराम्परिल्लक्रमदि * * * * * तराटर्परिल्लुकिं दकुन्- ।

दले-वाय्बुट्टुत्तरिल्लोड्जि-वेरसु कुरुम्बर्त्तरुम्बिर्परिल्ले- ।

त्तलु...वर्ष दळ्ळेन्दुरिव रिपुगळिछेम्बिन कुन्तळोर्वी- ।
 तिळक त्रैलोक्यमल्ल-क्षितिपतिगे धरा-चक्रदो...क-चक्र ॥
 लाट-कळिंग-गंग-करहाट-तुरुष्क-वराळ-चौळ-क- ।
 ण्णाट-सुराष्ट्र-माळव-दशार्णा-सुकुशल-केरळदि-दे- ।
 शाटविकाधिपर् म्मलेदु निल्लदे कम्पमनित्तु निर्मिता- ।
 घाटदोळिर्ष्य अळवी-दोरेताहवमल्ल-देवन ॥

कन्द ॥ इन्तु चतुरन्त-धात्री- । कान्तेयनळवडिसि चक्रवर्त्ति-श्रियम् ।
 ता तळेदु सुखदे पळ-क्रा- । लन्तव तव-निधिगधीशनाहव-मल्लम् ॥
 वृत्त ॥ म ... धावन्ति-वंग-द्रविळ-कुरु-खसाभीर-पाश्चाळ-लाळा

दिगळं पेसेळे कोन्दु कवर्दुमसदळं कोट्टज गोण्डुमाळो- ।
 ळिगे दण्डु तोळ-तीनु मनद तवकमु पोगदेन्दिन्द्रन का- ।
 डि गेळल् कप्प गोडल् वरिसि तळर्दनेकागदि सार्व्वभौमम् ॥
 गगन-नवाङ्क-सल्ये शक-काळदोळगिरे कीळकान्दकम् ।
 नेगळे तदीय-चित्र-ब्रहुळाष्टमियोळ् रविवारदोळ् जसम् ।
 मिगे कुरुवर्त्तियोळ् परम-योग-नियोगदे तुम् ... द्रेयोळ् ।
 जगदधिप त्रिविष्टपमनेरिदनाहवमल्ल-वल्लभम् ॥

कन्द ॥ आ-चालुक्य-ललाम-म- । हा-चक्रिय पेर्मग धरा-तळम गो-
 त्राचळ-जळधि-परीतमन् । आ-चन्द्र-स्थायि यागळाळ्व महात्म ॥

दित-च्योम-नवाङ्क-सल्ये सक-काळं वर्त्तिसल् कीळका-
 ब्दद वैशाखद सुद्ध-सप्तमियोळ् इज्य-ज्योतियोळ् शुक्रवा- ।
 वृत्त ॥ रदोळ्यन्त-कुळीर-ल्लगदोळिभाश्च-त्रात-रत्नातप- ।

च्छद-सिंहासन-पूज्य-राज्य-पदम सो[मे]श्वरं ताळिददम् ॥

वृत्त ॥ जयम धर्मके धर्मान्वयमनसदल साधु-वर्गके वर्ग- ।
 त्रयम तन्नन्तरङ्गकोडरिसि धरैयै कूडे सन्मान-दान- ।
 ब्रयदि सन्तप्से कालं कृत-युग-भयमाप्तेम्बिन तन्न राज्यो- ।
 दयदोळ् लोकके रागोदयमोदविदुदेम् धन्यनो सार्वभौमम् ॥
 आ-प्रस्तावदोळ् ॥

वृत्त ॥

नव-राज्य वीर-भोज्य पुगलिदवसर सुत्तुवे गुत्तिय मु- ।
 तुवेनेम्बी-गर्वदि चोळिकनधिक-वळ मुत्ति मार-गुत्तिय प- ।
 ण्णुवुद केळदेत्तेनुत्तेत्तिद तुरग-धळन् तागे सय्तागदप्रा- ।
 हवदोळ् वेङ्गोडु सोमेश्वर-नृपन वळक्कोडिद वीर-चोळम् ॥
 पेसरं केळदक्कि वेळ्कुर्त्तुदु पर-धरणी-मण्डल गण्डु-गेडाळ्- ।
 वेसनं पूण्दत्तु शौर्योन्नतिगगिदसुह्मण्डळ मेलपनावर- ।
 ज्जिसिदोन्दाज्ञा-विसेपकेळसिदुदु सुह्मण्डळ सन्तमिन्ता- ।
 देसकं कैगप्पे सोमेश्वर-नृपति मही-चक्रम पाळिसुत्तम् ॥
 अन्तःकण्ठकर पडल्वडिसि दुर्गाधीशरं दुष्ट-सा- ।
 मन्त-द्रोहरनुद्व्रताटविकरं निर्मूलनं गेय्दु वि- ।
 क्रान्तारातिगळ कळलिच धरेय निष्कण्ठक माडि नि- ।
 श्चिन्तं श्री-भुवनैकमल्ल-महिष राज्य गेयुत्तिर्पिनम् ॥

वचन ॥

तत्पादपद्मोपजीवि समधिगत-पञ्च-महा-शब्द-महा-मण्डलेश्वरनुदार-
 महेश्वर चलक्रे वलगण्ड शौर्य-मार्त्तण्ड पतिगेक-दाश सप्राम-गरुड मनुज-
 मान्घात कीर्ति-विल्यात गोत्र-माणिक्य विवेक-चाणिक्य पर-नारी-सहोदर

वीर-वृकोदरं कोटण्डपार्थ्यं सौजन्य-तीर्थं मण्डलिक-कण्ठीरव परचक्र-
भरव राय-दण्ड-गोपाल मलय-मण्डलिक-मृग-गार्दूल श्रीमत्-त्रैलोक्यमल्ल-
देव-पाद-पङ्कज-भ्रमर श्री-भुवनैकमल्ल-वल्लभराज्य-समुद्घरण पति-हिता-
भरण मण्डलिक-मकरध्वज विजय-कीर्ति-ध्वज मण्डलिक-त्रिनेत्र रिपु-राय-
मण्डलिक-यम-दण्ड जयाङ्गनालिङ्गित-दोह-दण्ड विसुच्छर-गण्ड गण्ड-भूरि-
श्रवनेन्ध्रिव मोदलागे पल्लवुमन्त्रत्याङ्क-मालेगळिनलकारिसि ॥

क ॥ त्रैलोक्यमल्ल-वल्लभन्- । आळेनिसिदरोळगे मिक्क पसयिततु मि-
क्काळु मिक्कण्मिन व- । छालु लक्ष्मणने पेररनरिवरुमोळरे ॥

भुवनैकमल्ल-देवन । भवनदोळ ताने मानस ताने महा- ।

व्यवसायि ताने विजय- । प्रवर्द्धकन् ताने पसयित लक्ष्म-नृपम् ॥

अन्तेनिसि ॥

वृत्त ॥ अणुगाल् कार्थद शौर्यदाळ् विजयदाळ् चालुक्य-राज्यके का-
रणमादाळ् तुळिलाळ्त्तनके नेरेदाळ् कदायदाळ् मिक्क म- ।
नणेयाळ् मान्तनदाळ् नेगळ्ते-वडेदाळ् विक्रान्तदाळ् मेळ्दाळ्
रणदाळाळ्दन नच्चुत्रावेडेयोळ विश्रामदाळ् लक्ष्मणम् ॥
एरडु राज्यदोळ प्रजा-परिजन कोण्डाडे चक्रेशरि- ।
व्वरु मोरन्दद कूर्मैयिन्दे वनवासी-देशम शासनम् ।
वरेदश्व-द्विप-पट्टसाधन-समेत कोट्ट कारुण्यदिम् ।
पोरेयळ्मण्डलिक-त्रिनेत्रनेसेट भू-भागदोळ लक्ष्मणम् ॥
किरियं विक्रम-गङ्ग-भूपनेनगा-पेम्माडि-देवङ्गे ने-
रिगारिय वीर-नोणम्भ-देवनेनगं पेम्माडिग सिङ्गिगम् ।
किरियै नी निनगेळ्ळरु किरियरेन्दगायिस कारुण्यदिम् ।
नेरे कोट्ट प्रतिपत्ति-वृत्ति-पदम लक्ष्मङ्गे सोमेश्वरम् ॥

मिगे वनत्रासे-नाळ्के विभु लक्ष्मणनागे नोळम्ब-सिन्दवा-
डिगे विभुवागे विक्रम-नोळम्बनळपुरमादियाद भू-
मिगे विभु गङ्ग-मण्डलिकनागे यमागेगे नीळ्द लाड-वि-
ण्डिगेयेने कण्डु कोडनवर्गा-नेलन भुवनैक-वल्लभम् ॥

मदवद्वैरि-नरेन्द्र-मण्डलिक-सेना-भञ्जन वीर-नी ।
रद-दुर्वार-समीरण वितरण-क्रीडा-विनोद प्रता-
प-दिलीपं रिपु-पुञ्ज-कञ्ज-वन-केळी-कुञ्जरं लञ्जिका-
मदनाञ्ज चलदङ्क-राम नृप-लक्ष्मी-लक्ष्मण लक्ष्मणं ॥

क ॥ वलिवलेत्र मलेत्र केलेत्रद-टलेत्र पळञ्चलेत्र मलेपरेत्र मुरिट ।
मलेयद केलेयद वलियद । मलेपरनिसुवेसके वेससिद लक्ष्म-नृपम् ॥

वृ ॥ धालियनिट्टु कोङ्कणमनङ्कणियोक्किदप तगुळ्दु कोम्ब-
एळुमनट्टि मुट्टि मले-येळुमना ॥ मुच्चिं मुक्कि नि-
मूर्त्तिसिदप्पनेन्दु मलेपत्तिले दोरदे रायदण्ड-गो-
पाळ-नृपङ्गे मुन्दुवरिदेन्दुःनेन्दपरेम् प्रतापियो ॥
आळ्वलमुळ्ळुडश्व-वलमिल्ल मटाश्व-वलङ्गळुळुडम् ।
तोळ्वलमिल्ल भृत्य-हय-दोर-व्वलमुळ्ळुडमेर्वलङ्गळिल्ल ।
आळ् वेसगेय्यदेके वलिवर् मलेपर् म्मलेयेम्बुदेनदम् ।
वेळ्वलमागे मुन्तुळिदनल्लने लक्ष्मणनेम्ब कावणम् ॥
कवि दुग्ग चातुरङ्ग ववसे दळवुळ धालि सूळ्ळरेनिप्पा-
हवदोळ् चालुक्य-राम वेससे रिपु-वळ्ळक्रेन्ननिन्द्रारियन्नम् ।
भवनन्न भद्रनन्न सिडिल वळ्ळगदन्न ज्वळ-ज्वाळियन्नम् ।
जवनन्नम्मारियन्न समर-समयदोळ् लक्ष्मण रामनन्नम् ॥
कुदुरेय मेले विल् परसु श्ल्लिगे तीरिके भिण्डिवाळ्मे-

त्तिद करवाळमाटिडुव कर्कडे पारुव चक्रमेन्दोडेन्त् ।
 ओदरुवरेन्तु पायिसुवरेन्तु तरुम्बुवरेन्तु निल्परेन्त् ।
 ओदवुवरेन्तु लक्ष्मणनोळान्तु वर्दुङ्कुवरन्य-भूसुजर् ॥
 ईयल् वन्दडे कल्प-वृक्षमिदिरं वन्दान्त विद्विष्टरम् ।
 सोयल् वन्दडकाळ-मृत्यु शरणायातावनीपाळरम् ।
 कायल् वन्दडे वज्र-शैल-कृत-दुर्गं लौल्य-भाव पर-
 खियल् वन्दडे रावणात्मज-चमू-विद्रावण लक्ष्मणम् ॥
 विसुपळिदर्कनुक्कुडिगुमिन्दुव कान्ति कळ्ळुगुमागसम् ।
 कुसिगुमिञ्ज-तळ तळ्ळुमम्बुधि वत्तुगुमिळ्ळि लक्ष्मणम् ।
 पुसिटोडमार्गे टेप्परमनोड्ढिदोड मनमोल्दु कूडि छि-
 दिसिदोडमन्य-नारिगे मरुदोडमाहवदोळ् मरल्दडम् ॥
 शत्रुन्न हरि-शौर्यनङ्गद-भुज सुग्रीवनात्मेश-सौ-
 मित्र रामनपामरं नर-वर दुर्ध्याधन भीम-गान-
 त्र भीष्म युधिष्ठिर गुरु कृप सत्-कर्णनेन्दन्दे दल् ।
 चित्र भाविसे लक्ष्म-भूप-चरित रामायण भारत ॥
 कलितनमिळ्ळ चागिगे वदान्यते मेयगलिगिळ्ळ चागि मेय् ।
 गलियेनिपङ्गे शौच-गुणमिळ्ळ कर कलि-चागि-शौचिगम् ।
 निले-नुडि-त्रोजे यिळ्ळ कलि चागि महा-शुचि सत्य-वादि म-
 डलिकरोळीतनेन्दु पोगळ्ळु बुध-मण्डलि लक्ष्म-भूपन ॥
 कं ॥ मुनियिं किसुकञ्चुवरोसे- । दु नगुवरिन्तितिते पेरर मुनिसु मेन्चु ।
 मुनियिसे मुनिड जव ह- । र्धनागे हर्षं गवृषभ-लक्ष्मं लक्ष्मम् ॥
 एने नेगळ्द लक्ष्म-भूप । विनमित-रिपु नृपति-मकुट-वद्वितचरणम् ।
 वनवसे-पन्निच्छासिर- । मनाळ्ळुत सुखदिनरसु-भोय्युत्तिळ्दम् ॥

- इरे वनवसे-पन्निर्छा- । सिरकमर्त्याधिकारियु कार्य्य-धुर- ।
 न्धरतुं तद्-राज्य-समु- । द्वरणनुमेने नेगळ्द मन्नि मन्नि-निधानं ॥
- वृ ॥ कविता-चूताङ्कर-श्री-मद-कळ-कळकण्ठोपम काव्य-सौधा- ।
 ण्णव-त्रेळा-पूण्ण-चन्द्रं सम-विषम-महा-काव्य-बल्ली-तलान्तो-
 त्सव-चञ्चच्चञ्चरीक वसुधेगोसेदनुर्वी-नुत दण्डनाथ- ।
- प्रवरं श्री-शान्तिनाथं** परम-जिन-मताम्भोजिनी-राजहसम् ॥
 कुनयङ्गळ् जैन-मार्गामृत दोळिरे जल-धीरदन्तलि सद्-वा- ।
 क्य-निशातोच्चञ्चुविन्द कुमत-कळप-पानीयम त्त्विद्वि जैना- ।
 नन-निर्यत्-तत्त्व-दुग्धामृतमनखिळ-भव्योत्करं मेच्चलास्त्रा- ।
 दने-भोव्योळ्पिन्दमाद परम-जिन-मताम्भोजिनी-राजहंस ॥
- परमात्म निष्ठितात्मं जिनपति परम-स्वामि तद्-धर्ममार्मम् ।
 गुरु-बन्धं वर्धमान-व्रति-पति जनकं सन्द गोविन्द-राजम् ।
 पिरियण्णं कृन्नपार्य्यं तनगधिपति लक्ष्म-क्षमापालनात्मा- ।
 वरजं वाग्भूषणं रेवणनेने नेगळ्दं धात्रियोळ् शान्तिनाथम् ॥
- क ॥ सहज-कवि चतुर-कवि निस्- । सहाय-कवि सुकवि सुकर-कवि
 मिथ्यात्वा-
 पह-कवि सुभग-कवि नुत-महा-कवीन्द्रं सरस्वती-मुख-मुकुरम् ॥
 सुकर-रसमावर्दि व- । ण्णकदि तत्त्वार्थ-निचयदि सूक्तमेनल् ।
 सुकुमार-चरितमं पेळ् । द कवीन्द्राप्रणि सरस्वती-मुख-मुकुर ॥
 असहायनागियुं सुज- । न-सहायं मद-विहीननागियुमर्थि- ।
 प्रसरोत्कट-दानाधिक- । नसद्द्रुश-विभवं सरस्वती-मुख-मुकुर ॥
- वृ ॥ हरहासाकाश-गङ्गा-जळ-जळरुह-नीहार-नीहार-धात्री- ।
 धर-नीहाराशु-तारावनीधर-शरदम्भोधर-क्षीर-नीरा- ।

- कर-तारा-भारती-दिग्-रदन-रदन-पीयूष-डिण्डीर-मुक्ता- ।
 कर-कुन्देन्द्रे-म-हंसोज्ज्वल-विशद-यगो-वल्लभं शान्तिनाथ ॥
 ओडवेयनोळिपनिं पडेदु पुञ्जिसि पूजिसि कोण-नाणदोळ् ।
 मडगढे शिष्टरिड्डेगे वन्धुगळिल्ल मेगप्पुदेन्दुमे- ।
 न्नेडमे शरीरमेन्नदु नियोगद पर्वमिदेन्नदेन्दु मे- ।
 ळपडदिरिमेन्दु गोसने तोळ्ळुदु..... ..शान्तिनाथन ॥
- कं ॥ एने नेगळ्द शान्तिनाथं । जिन-शासन-सत्-सरोजिनी-कलहंसम् ।
 विनयदे निजाधिपति-ल- । क्षम-नृपङ्गे सु-धर्म-कार्यमं विन्नविकुं ॥
 चञ्चामीकर-र । त्वाञ्चित-जिन-रुद्र-बुद्ध-हरि-विप्र-कुलो-
ह-सङ्कुळदिं । पञ्चमठ-स्थानमेनिसुगु वळि-नगर ॥
- व ॥ अन्तु समस्त-देवता-निवास-पवित्रीभूतमप्प राजधानियोळ्द
 जिनधर्म-प्रभावम पेळ्वडे ॥
- वृ ॥ सले जम्बू-द्वीपमोळ्प तळेदुदु पल्लु.....भारतोर्वी-
 वळ्य तद्-द्वीपदोळ् रञ्जिसुगुमेसेगुमा-क्षेत्रदोळ् कुन्तळं कु-
 न्तळदोळ् सन्त वसन्त वनवसे वनवासोर्वियोळ् भव्य-सेव्यम् ॥
 वळि-नाम-ग्राममा-ग्रामदोळ्मर-नुत शान्ति-तीर्थेश-वासम् ॥
- क ॥ अ धर्म-निर्मित-मड शिला-कर्ममार्गे माडिसु कोळ्वो-
 दुदु निनगे धर्ममेव्दुदुम् । अदक्के वगेदन्दु धर्म-निर्मळ-चित्तम् ॥
- वृ ॥ जिननाथावासम वासव-कृतमेने मुन्न शिला-कर्मदिं शा-
 सनमप्पन्तागिरल् माडिसि वळिके शिस्तम्भम तृज्-
 जिनगेह-द्वारदोळ् निर्भिसि विलिखित-नामाङ्क-मालावळी-शा-
 सनमं चन्द्रार्क-तार निले निलिसिदनेम् धन्यनो लक्ष्म-भूपम् ॥
- कं ॥ मिगे मूल-संघदोळ् दे- । सिग-गणदोळ् मन्द कोण्डकुन्दा-
 न्दान्वयमं ।

जगती-त.....न्त् । इरे नेगळिचदर नेगळ्द-वर्द्धमानमुनीन्द्रर् ॥
 वृ ॥ पडेदडे पेम्पनेष्टे वडेयर् श्रुतमं श्रुतदोन्दु मय्येयम् ।
 पडेदडे दिव्यमप्प तपमं पडेयर् तपमं निरन्तरम् ।
 पडेदडे कीर्त्तियं पडेयरी . . गुणङ्गळम् ।
 पडेवडे वर्द्धमान-मुनिपुङ्गवरन्तिरे मुन्ने नोन्तु.....॥
 सन्ततमोन्दि निन्द तपदोळ् श्रुतदोळ् गुणदोळ् विशेषरि-
 न्निन्तिवरेल्लरिं पिरियरिन्तिवर् अगळ्दप्रगण्यरोइ-
 अन्तिवरेन्दु कीर्त्तिपुदु कूर्त्तु.....देव-सि-।
 द्वान्त-मुनीन्द्रं नत-नरेन्द्ररनविध-परीत-भूतळम् ॥
 मुनिसणमागलाग मुनिसें मुनियुं मुनि-वन्ध्यनागना-।
 मुनिष्ठु ममत्वदिं ममते मायेथिनन्तदु लोभदिं प्रव-।
 र्द्धनकरमेन्दुवीत-कपायराद स-।
 न्मुनि मुनिचन्द्र-देवरे धरित्रिगे देव.....देवरल्लरे ॥
 सार-कञ्ज-प्रवोधित-सुदारकरूज्जित-साधु-सध-नि-।
 स्तारकर. . जात-महीजात-विदारकरुप्र-कर्म-सम्-।
 हारकरत्युदार..... सर्व्वणन्दि-भ-।
 द्वारकरल्ले भव्य-सुकुमारक-कैरव . धिपर् ॥
 उरग-पिशाच-भूत-विहगोप्र-नव-ग्रह-शाकिनी-निशा-।
 चर-भयचरदोळ्दुतदिं विपरीतमाडदम् ।
 वरेदुदे यन्नमो . . तन्नम्।
 ॥

जित-कुसुमाखरूज्जित-यज्ञो-वनरार्जित-पुण्य-कर्मर-।
 न्वित-बहु-शाखराहुत-सुगीळरधःकृत-किल्त्रिसर प्रवो-।
 शि० १७

धिन-बुध ।

..... ॥

....अभिविनुतर श्री-माघनन्दि-देवर प्पलवु जिन-निळयङ्गळमनखिळा-
 वनि वण्णिसे वळ्ळिगा जिन-पूजाभि
 ... ईना-निरतनाहारादि-ठान-प्रवर्द्धन-शीळ नुत-भव्य.....हा-
 मण्डलेधरं लक्ष्मरसं श्रीमल्लिकामोद शान्तिनाथ-जिकीलक-
 संवत्सरद भाद्रपदद पुण्णमे-सोमवारददेसिगगणद
 ताळकोलान्वयद माघनन्दि-भङ्गार र्गे मुत्त श्रीमज्जगदे-
 कमल्ल-देवर व्वळ्ळिगावेयळ्ळे
 मत्तर प्पत्तेरडु अल्लिय गौळपय्यन वसदिगे
 श्रीमच्चालुक्य-गङ्ग-पैर्म्मार्तडि-विक्रमादित्य- देवर
सुम नन्दन-वनद वसदिगे पूर्वदिनडेवभूप
 समुचित-विनय विन्नप रोय्येदर्प-देवम् ॥ अनघ-
 श्री-शान्तितीर्थेश्वर-पद विधि-सहित जासन माडि कोट्ट
 (ह्मेजाके अन्तिम वाक्यावयव तथा श्लोक) ... जिङ्गुळ्ळिगे
 गुळ्ळिद नाळ्कारु पोम्मानिगर्द्धम् .. एरडक्कु कृष्ण-भूमक्कदररे
 किमु .. अडररेयु नोडि सिद्दायमक्कुम् ॥ ... ग दासोजं खण्ड-
 रिसिदं मंगळ महा श्री ॥

[जिन शासनकी प्रशमा ।

जिय समय (चालुक्य उपाधियो सहित) त्रैलोक्यमल्ल आहवमल्ल-देव
 शान्ति और बुद्धिमाननीने राज्य कर रहे थे —उन्हें लाट, कलिंग, राग,
 वरहाट, नुदक्क, वराड, चोळ, कर्णाट, सुराष्ट्र, मालव, दशार्ण, कोशल,
 केरल ये मत्र राजा भेंट देते थे । मगध, आन्ध्र, अवन्ति, वग, द्रविळ,
 कुट, रास, आमीर, पाञ्जाळ, लाल और दूमरे देशोका उन्होने नाश कर

दिना था। शक म. ९९० में उक्त मितिको उन्होंने प्रधान योगका उत्सव किया और वे तुगमद्रामें स्वर्गवासको सिधार गये।

इनका प्येष्ट पुत्र सोमेश्वर था। उसका दूसरा नाम 'भुवनैकमल' था। वह जब राज्य कर रहा था —

तत्पादपद्मोपजीवी लक्ष्मण था। उसकी बहुत-सी प्रशसा। जिस समय यह बनवसे १२००० पर राज्य कर रहा था —

उसका टण्डनाय शान्तिनाथ था। उसकी प्रशसा। बलिनगर, या बलिग्राम (बलनाम्ये)में सभी धर्मोंके मन्दिरोंके होनेकी बात। राजा लक्ष्मणने भी वहां मन्दिर (जिन भगवान्का) बनवाया।

मूल संघ, देमिग गण और कोण्डकुन्दान्वयके वर्द्धमान मुनीन्द्र। मुनि-चन्द्र-देव सिद्धान्त। इन दोनोंकी प्रशसा। इन्होंने भी जैनमन्दिर बनवाये। महामण्डलेश्वर लक्ष्मणसने, मल्लिकामोद शान्तिनाथ-मन्दिरके लिये, (उक्त मितिको) देमिग-गण तालकोलान्वयके माघनन्द-मट्टारको कुछ जमीन दानमें दी। दामोजने इस लेखको उत्कीर्ण किया।]

[EC, VII, shikarpur tl., n° 136]

२०५

साँदत्ति—कन्नड-भग्न

[काल लुप्त ?]

भद्रनल्लु जिनशासनाय ॥ श्रीमन्परमगर्भारस्याद्दामोवलाच्छनं [I]
 जीयात्रै(त्रै)लोक्यनायस्य आसनं जिनशासनं [II] स्वस्ति समस्त-
 भुवनाश्रयं श्रीपृथ्वीवल्लभमहाराजाधिराज-परमेश्वर-परमभट्टारक सत्याश्रय-
 कुञ्जतिलकं चालुक्याभरणं श्रीमद्भुवनैकमल्लदेववर विजयराज्यमुत्तरोत्तरा-
 भिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कनार सल्लत्तमिरे [I] तत्पादपद्मोपजीवि [II]
 समविगतपत्र-महा-शब्द-महामण्डलेश्वर लत्तल्लूर्पूरवरेश्वर त्रिवलीतूर्य्य
 निर्गोपणं वैरिकुञ्जविलयान्तकविभीषणं सिन्दूरलाञ्छनं समस्तविद्या-
 विरिचनं सुवर्णगरडध्वजं विदग्धमुग्धाङ्गनामकरध्वजं रङ्कुळवनज-

वनमार्त्तण्डं कदनप्रचण्डं रिपुसमरवीरवृकोदर परनारीसहोदरं साह-
 सोत्तुग सेननसिंग नामादिसमस्तप्रशस्तिसहित श्रीमन्महामंडलेश्वरं
 कार्थवीर्यसर वंशावतारमेन्तेन्दडे ॥ श्रीरमणनतुळविजयश्रीरमणं विपुळ
 विमळ समुदित कीर्ति श्रीरमणं चतुरवचःश्रीरमणं नन्नभूपननु-
 परूप ॥ आतन तनय । स्थिरनुडिव कलिननदोळपोरेदाळि
 मुन्नमिरिवनेन्दडे सकळोर्व्वरेयोळ् कत्तन सखद दोरेग गौर्यद
 पोगळ्केगं समनोरे ॥ अन्तेनिसिद वीरकत्तरसर्नि पिरिय ॥ वृ ॥
 वसुधा चक्रदोळेन्तु वणिसुवदं तन्न(न्ना) [व्के] तन्नेळो
 तन्नेसक तन्न पोगत्ते तन्न विभवं तन्नोजे तन्नुद्वसाहससंपन्नतेयि
 धरावळ्यम नानाविध (ध) कूडे मुद्रिसिद रडर मेरु डायिम महीपाळं
 नृपाळोत्तमं ॥ तदनुज ॥ सुरकुजम पळचल्लुवु[दी]वगुण सले संद वज्र
 पजरमननागतं पळिवुत्तिर्पुट्टु [का]वगुणं परीक्षिसल् सराधियनेय्दे रेग-
 पुट्टु तन्न गभीरगुण समस्तदिवपरिवृड(ट)वेळ्ळोयं नगुवुदुद्वगुण(ण)
 कलिकन्नभूपन । तत्सुत ॥ क ॥ निरुपम समस्त कडेयोळरसिज
 भवनेसेव वाद्यविद्याधरनोळ्ळरसंकसंकर कप्परवर्पनेरेगे नेगईनेरेग
 महीश ॥ तदनुज ॥ वृ ॥ कदनदोळान्तरातिगहि[यल्ल]ट राहुवि-
 जाति रूपनल्लद विनतासु [ह्गोयु]र्व्व(र्वै) दळ्ळुरियल्लद देहिकालन-
 ल्लद जवन ॥...म (?) वे गतनल्लद वादव(न)न्त मानविल्लध (द)
 रवियेन्दोडापदटरा[रु रणा]प्रदोळकभूपन ॥ तदप्रजनप्पेरगभूपा-
 त्मज ॥ असुह्दूपकिरीउताडितपद वीरागनाल्लि(ळि)गनोळ्ळसि[ता]
 ग हरहासकाशशिकान्ताकाशगंगाजळप्रसरामोघदिगतकीर्ति तपनप्र-
 चोतसन्मूर्ति सन्द सु(सा)जद्दुणदीपवर्ति नेग[र्दी] श्री सेन-
 भूपाळक ॥ तत्तनय ॥ अरिभूपाळ कृशान्तनुद्धतरिपुक्षमापाळसंदोह

शीकर काळानळु (ने).....तदप्प (१) भयंकरवि[द्धि]ड्महिपाळ
 मेघलयकाळोत्पातवातं क्षितीश्वर-चूडाम[णि]..... [॥] श्रीवनि-
 तेशं कीर्तिश्रीवनिताधीशनुदित संशुद्धवच(चः)श्रीरमणीशं वीर (श्री)
[॥ जिन] नाराधिपदेवनुद्धचरितर्विद्यावन.....
 टासनधर्मा (१) रुगळ्विरो.....जनकनुर्विजाते प्रत्यक्ष गोमिनि तायि
 मैळलदेवियेन्दधिक.....नोळ्दमतक्किवर्प (१) री क्षितिपति
 सैनि (१) र वधूप्रकर.....दिति..... आतन कुळंगने [॥] श्री
 वनिते ताने वन्दु मही वनितेगे तिळ्कमेनिसि कत्तन वक्ष (क्षः) श्रीव-
 निते नेगई [भाग]लदेवी जगज्जननि सज्जनाग्रणियेनिकु ॥ आ दपति-
 गळ्गे गिरिसुतेगं हरगमनुरागदे पण्मुखनेन्तु पुट्टुवंत(वि)रे नेगई रुग्मि-
 णिगमा ह[रिगं] स्परनेन्तु पुट्टुवन्तिरे सले कान्तिग रविगमर्कतनूभव नेतु-
 पुट्टुवन्तिरलवगोलुट्टु पुट्टिदनु रगु कलि सेनभूसुज ॥ अवनीपालानत
 श्री[पद]कमलयुग तत्वनिर्णिक्तराद्धान्तविद चारित्ररत्नाकरनमळ-
 वच(चः)श्रीवधूकान्तन गोद्भवदर्पारण्यदावानळनुदितलसद्वोधसशुद्धनेत्र
रविचन्द्रस्वामि भव्याम्बुजदिनपनघौघाद्रिसद्वज्रपात ॥ क ॥ कङ्क-
 र्गणाब्धिचन्द्रन खण्डितसुतपोविभासिखण्डितमदनं डिंडीरपिंड सुर-
 वेदण (ण्ड)[य]शगप्रपिण्डनर्हणंदि मुनीन्द्र ॥ मल्लिकामाले ॥ कन्तु-
 राजगजेन्द्रकेसरि भ[व्यलोकसुखाकर कान्तवाग्ग्वनितामनोरमनुप्रवी-
 रतपो]मय शान्तमूर्ति दिगन्तकीर्तिविराजि द्रडा (ढामिमानी रणभू-
 सेनानि रट्टान्वयश्रीनेत्र बुधमित्र नुज्व (ज्व) लयगइपात्रं नृपं रजिपं
 आ सेनावनिपगमप्रतिमलक्ष्मीदेविगं पुट्टिद । भूसंरक्षणदक्षदक्षिणसुज
 विध्वस्तशत्रुत्र (त्र) जं त्रासानम्रनृपालपाळितजयश्रीस(श)स्तान्विता

भास सूत्रतवाग्विळासनवनीनायोत्तमं क्ततमं ॥ आ विभुविन वधु पद्मलदेवी
 कळारूपविभवजिनमतदोव्वाग्देवी रतिदेवी लक्ष्मीदेवी शचीदेवियेनिसि
 मिगे सोगयिसुवळ् ॥ श्रीपति ना विष्णुः पृथुवीपति येने लक्ष्मीदेवनो-
 गेदु वसुदेवोपमक्तमविभुगं श्रीपद्मलदेवियेन्त्र मुतदेवकिग ॥ प्रकटि-
 ततेजनन्वयसरोजसमूहविकासि(शि) सज्जनप्रकररथाग सम्मदकर (रं)
 नियताभ्युदयप्रगोभिताधिकनिजमण्डळ जितकळंक पवित्रचरित्रनागि
 चन्द्रिकेगधिनाथनादनिदु विस्मयन्त प्रभुलक्ष्मीभूभुज ॥ श्रीयुवतीग्रहेम-
 गरुडध्वजमडितमण्डलेश्वरनारायणलक्ष्मणंगे तनुजम्भुजदन्ते धरोरु-
 भारधौरेयरनून दानजयधर्मधरव्विभुकार्तवीर्यलक्ष्मीयुतमल्लिकार्जुन
 महीश्वररादरतर्क्यविक्रमरू ॥ परचक्र निजविक्रमवक्रगिदु तेजःच
 (जश्ज) क्रम विदु कोवर चक्रक्केणे र्याप्पनन्तिरेविनं टिकचक्रमं
 व्यापिसुत्तिरे

[यह लेख भी एक टुकड़ा है और उस पाषाण-तलसे लिया गया है जो
 मि० फ्लीटको उस मन्दिरके आँगनमें आधा गड़ा हुआ मिला था जिसमें
 कि पूर्वके दो लेख (नं १३० और १६०) मिले थे । इसमें नन्नसे ले कर
 कार्तवीर्य द्वितीय तककी वंशावली मिलती है । का० द्वि० को चालुक्य
 राजा भुवनैकमलदेव या सोमेश्वर द्वितीय बतलाया गया है । इसका काल
 सर डब्ल्यू इलियट (Sir W Elliot) ने शक ९९१ ? (१०६९-
 ७० ई०) से लेकर शक ९९८ (१०७६-७ ई०) तक बताया है । इसमें
 उसके पुत्र सेन द्वितीयका नाम भी आता है, लेकिन लेखकी वंशावलिके
 भागका मुख्य उद्देश्य स्पष्टत ७ वीं पक्तिमें है जिसमें कार्तवीर्यकी
 सन्तान-परम्पराका उल्लेख है । यही कार्तवीर्य उस समय अपने कुटुम्बका
 प्रतिनिधि था, उसका पुत्र सेन नहीं, क्योंकि वह उस समय निरा बच्चा
 रहा होगा । दानगत लेखका भाग लुप्त है ।]

[JB, X, p 172, a, p 213-216, t, p 217-219, tr (ms n° 4)]

२०६

मुल्लूर—संस्कृत तथा कन्नड

[काल लुप्त पर लगभग १०७० ई०]

[मुल्लूर (निडुत परगना)में, पार्श्वनाम वस्तिके पश्चिममे तीसरे पाषाणपर]

.....यानिधि सत्या . . . ल-देवि ॥ भूतल
 विनिर्गत..... लोक्यविह्याते . . . यण मोक्षदे
वर्णा.....द्यासुलं . . .पनिद . . . माळि.....
 नुर्वीपाळ-भूत . वरसिद कारुणियोदव . . . न वचन काय वदिग
 तुळ्ळिन . . . यम्बन्तिरे स . . . त दिविजलोक ॥ खं
पृथुविकोङ्गाळवनरसि . . .

[यह समस्त लेख बहुत बिगडा हुआ है । किसी मरे हुएका स्मारक है । और पृथुविकोङ्गाळकी रानी]

[EC, IX, Coorg tl, n° 36]

२०७

वन्दलिके—संस्कृत तथा कन्नड—भद्र

[शक ९९६=१०७४ ई०]

[वन्दलिकेमे, उसी वस्तिके उत्तरकी ओरके एक दूसरे पाषाणपर]

भद्रं समन्तभद्रस्य पूज्यपादस्य सन्मतेः ।
 अकलंक-गुरोर्बभूयात् शासनाय जिनेशिनः ॥
 श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाच्छनम् ।
 जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासनम् ॥
 स्वस्ति श्री-प्रमदा-प्रमोद-जनकं यस्योरु-वक्ष-स्थलम्
 यद्दोर्दण्ड-कृतान्त-वक्त्र-विवरे मग्नं द्विपट्-पार्थिवैः ।

यस्येय वसुधा चतुर्जलनिधिव्यविष्टिता प्रेयसी
 जीयाच्छ्री-भुवनैकमल्ल-चृपतिः सोऽयं नतानन्दनः ॥
 तेनेढ नरपाल-मौलि-विळसन्माणिक्य-लीटाङ्गिणा
 श्रीमद्-मल्ल-सुतेन आसनमहो दत्तं द्विपणमाथिना ।
 आहारादि-चतुर्विधं मुनिगणे दानं च यस्य प्रियम्
 तेनाप्त कुलचन्द्र-देव-मुनिना शुभ्राभ्र-सत्-कीर्तिना(म्) ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर
 परम-भट्टारक सत्याश्रय-कुळ-तिलकं चालुक्याभरण श्रीमद्-भुवनैकमल्ल-
 देवर विजय-राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि-प्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कितार-वरं सल्लत्त-
 मिरे वङ्गापुरद नेलेवीडिनोळ सुख-संकया-विनोददिं राज्यं गेय्युत्तमिरे ॥
 तत्पादपद्मोपजीवि स्वस्ति समस्त-भुवन-प्रस्तुत-ब्रह्म-क्षत्र-वीरान्वय श्री-
 पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वरं क्रोळाळ-पुरवरेश्वर विक्रम-गङ्ग
 जयदुत्तरङ्गं ... मणि मण्डलिक-मकुट-चूडामणि श्रीमच्छा
 पैर्माडि भुवनैक-वीरनुदयादित्यनुं चालु ल-स्तम्भं नर-वैद्यं
 कुमार-मण्डलिक बुद्धर .. गेय्यलु श्रीमद्-भुवनैकमल्ल-देवरु भर
 ऋवर्ति-नवीकृतमप्प वन्दणिके-य तीर्थं ज्ञान्ति-
 नाथ-देव..... 'त-नवीकार 'लाप्रवर्त्तन कालान्तरित-पु
 .. 'नव ... द कम्पणं नागरखण्ड ... वाड .
 शक-वष ९९६ रनेय आ द पुष्य-मासदुत्तरायण-सक्रमण ...
 ... श्री-मूल-संघान्वय-क्राणूर-गण..... च्छद श्रीमदुभय-
 सिद्धान्त-वार्द्धि-चूप्य राम(परमा)नन्दि-सिद्धान्त-देवर
 शिष्यरु कुळ..... देवर काल कर्त्वि सर्व्य-नमश्य धारा-पूर्व्व
 व्रशासनमु शिला-शासनमु माडि (हमेशाके अन्तिम वाक्यावयव

और श्लोक).....त रितोक्ति-सहित.....खं मुखाब्ज-लसित
.....मनोदयं सद.....मदनेन्द्रितं नेगळ्ढ.....(हमेशाका
अन्तिम श्लोक) ।

[जिनशासनके कल्याणकी कामना । श्रीमद् मल्लके पुत्रद्वारा यह शासन (दान) कुलचन्द्र-देव-मुनिको मिला था । जिस समय (चालुक्य पदों महित) भुवनैकमल्ल-देवका विजय-राज्य प्रवर्द्धमान था और वे वका-पुरमें रहते थे—तत्पादपश्रीपजीवी चालुक्य पेर्माहि भुवनैकवीर उदयादित्य शासन कर रहे थे;—भुवनैकमल्ल-देवने शान्तिनाथ मन्दिरके लिये, (उक्त मितिको), मूलसंधान्वय तथा काणूर-गणके परमानन्द-सिद्धान्त-देवके शिष्य कुलचन्द्र-देवको नागरखण्डमें भूमिदान किया ।]

[EC, VII, Shukarpur tl, n° 221]

२०८

चलगाम्बे—कन्नड़

[विना काल निर्देशका, पर संभवत लगभग १०७५ ई० ?]

[चलगाम्बेमें, चन्न वसत्रप्पके खेतमें भग्न जिन-मूर्तिपर]

(नागरी बक्षर)

सस्ति श्री चित्रकूटाम्नायदावलि मालवद शान्तिनाथ-देव-
सम्बन्ध श्री-चलात्कार-गण मुनिचन्द्र-सिद्धान्त-देवर गिसिनु अनन्त-
कीर्ति-देवरु हेगडे केशव-देवङ्गे धारा-पूर्वक माडि कोटेवु प्रथिष्टे
पुण्य सान्ति (यहाँ दानकी विगत दी हुई है) ।

[चलात्कार-गणके, मालवके शान्ति-नाथ-देवसे सम्बन्धित चित्रकूटा-
म्नायके मुनिचन्द्र-सिद्धान्त-देवके शिष्य अनन्तकीर्ति-देवने हेगडे केशव-
देवको दान दिया (यहाँ उसकी विगत है) ।]

[EC, VII, shukapur tl, n° 134.]

२०९

कुप्पुदूरु—कन्नड़

[शक ९९७=१०७५ ई०]

श्रीमज्जयत्यनेकान्त-वाद-सम्पादितोदयम् ।

निष्प्रत्यूह-नमपाकशासन जिन-शासनम् ॥

पदिनाल्लु आरूपदमा- ।

दुदशेष-लोकमल्लिर-पुदु मध्यम- एक-रज्जु-प्रमितम् ॥

आ-मध्यम-लोकद

.... नडुवण ।

पोम्बेइद तेङ्कलेसेव भरतावनि . . . ॥

... बुजवदनेय कुन्तळ्व ।

एम्बन्ते सेदत्तु ललित ॥

कुन्तळ-भूतळ्के तोडवादुदु ता वनवासि-देशमो- ।

रन्तेसेवग्रहार-पुर-पल्लिगळ्ळिन्दुरु-नन्दनाळियिन्- ।

दं तुरुगिर्दि शाळि-वनदिन्दू ।

क्रान्त-विरोधियिर्दु वनवासियोळ्न्वय-राजधानियोळ् ॥'

खस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वर वनवासि-पुर-
वराधीश्वर..... लब्ध-वर-प्रसाद कादम्ब-कुळ-कमळ-मार्तण्डने-

निसिद कीर्त्ति-देवन वश-वीर्य-प्रभावमेन्तेन्दडे ॥

विनुतानन्द-जिन-व्रतीन्द्र-भगिनी ।

वन-जैनाङ्घ्रि-सरोज-भृङ्गनधिकाभ्यस्ताल्ल-शाळ . . . ।

... नुतोर्वीज-तळ-प्रसूति-वर-वानप्रस्थ-तद्-योगि-पू- ।

जन-शीळं वनवासियागि..... . इन्द्रोत्तमम् ॥

शासन-देवियि कुडिसि राज्यमना..... * तद्-वनम् ।
 देशमदागि निर्मिसि नोसलिङ्गे पट्टमिदेन्दु पीलियम् ।
 वास् वटिका-विभुविङ्गवे नाममादुबुद्- ।
 भासि मय् वर्म्मनभिवन्ध-ऋदम्ब-कुळ त्रिलोचनम् ॥
 नयदा मयूरवर्म्मा-न्वय अलर्चिदं कुवळयमम् ।
 जय-लक्ष्मी-रमण * जय-भुज-वळनमळकीर्त्ति कीर्त्ति-नृपाल ॥
 असम-वितरण * स-भीम कीर्त्ति-देवनेम्बी-पेसरम् ।
 वसुधे कुडे पडेदेनेण्टु-देसेयानेगे कीर्त्ति कीर्त्ति-मुख्यवादुदरिम् ॥
 कि कर्णाः किं विज-पतिष् किं स्मरः कि विधाता
 दानी नून प्रतापी पृथु र-विभवश्चारु-रूपम् कला-वित् ।
 य यस्येति नित्य वितरण-विजय * न्दर्य-विद्या- ।
 वार्द्धिस् संस्तूयतेऽसौ सकळ-रिपु-कुलो * नः कीर्त्ति-देवः ॥
 चलदिं साधिसि सप्त-क्रोङ्कणमनाटन्दिक्कि विद्विष्ट-मण्- ।
 उच्चरा-वळयमद् केयूरमं पेतल् ।
 तळे दक्षिण-वाहु-दण्डदोलुदात्त कीर्त्ति-देवं यशो- ।
 मळ-मुक्ता-फळ * * * * * णोचित-लसद्-दिक्-कामिनी-सङ्कुळम् ॥

आ-कीर्त्ति-देवनग्रमहिषी ॥

परिवार-सुरभि जिनमत-। शरधि-सुधाकिरण-लेखे सुचरि ।
 भरणेयेने नेगळ्द नृप- सौन्-। दरि माळल-देवियेणेगे राणिय-रेणेये ।
 पुरु-जिन-पति कुल-देव्यं । गुरु वेद्द मुनि कीर्त्ति-नृपेश्वरम् ।
 आत्म-कान्तनेने वा-। पुरे माळल-देवि-राणियेणेयाद् स्ततियद् ॥
 सिरि गिरिजाते सीते रति भा रुक्मिणि-देवि रूप-सौन्द-
 रतेगे पेर्मेगुद्घ कधिकं सुवगिङ्गे सत्कळा-

करतेगण जिनेन्द्र-पद-भक्तिगे पासटि.....।
 सरि कलि-क्रीर्त्ति-देवन कुञ्जङ्गने माळल-देवि-राणियोळ् ॥
 मिळिर्व पताकेगळ् मकर-तोरण-मण्डलि मान-गम्भ्रमग्-।
 गळिसिरेचैत्य-गृहावळि लेक्किपङ्गे सङ्-।
 गळिपडे लक्केग मिगिलगेप-जन तणिवन्तु कोव्व पू-।
 मळेयोळे नोम्प नोम्पि सतकोटिये माळल.....॥

व ॥ आ-वनवासे नाडोळु ॥

वळेद सुगन्धि-शालि-वनदिन्दोळगोप्पुव नारिकेळ-का-।
 दळ-नव-पूग-नागलतिका-वनदिं परि.....ळदिम् ।
 वळयितमागि विप्र-सुर-चित्र-निकेतन-माळेयिन्दे कण्-।
 गोळिपुदु कुप्पटूर स्सकळ-विद्येगे तानेने जन्म-भूतलम् ॥
 नेगळदखिवळ ..ति-पुराण-कळा-वहु-तर्क-तन्न-पा-।
 रगरुचिताध्वरावभृय-सस्त्रपनाति पवित्र-भात्रर-।
 ल्यगणित-सत्य-शौच .. तिथि-पूजन-देव-पूजेयिम् ।
 सोगयिप कुप्पटूर विभु-विप्ररिदेम् भुवन-प्रसिद्धरो ॥
 धरेगे चतुस्समय-समु ।... ..शरणागतैक-रक्षामणिगळ् ।
 निरवद्य-चरितराज्ञा-। धररारी-कुप्पटूर सासिर्वरवोळ् ॥
 ब्रह्मैकश्चतुरा .. थ विबुधा देवाः कविर्भार्गर्गो
 येषामग्रत एव नान्य इति ये प्रस्तुत्य-विद्यार्णवाः ।
 उत्तङ्गाः कुळशैळवत्तरणिवत्तेजस्विनो वार्द्धिवत्
 गम्भीरा भुवि कुप्पटूर-व्विभु-वरा विप्रा जयन्ति स्थिरम् ॥
 प्राणुत वन्दणिका-सु ..कृत-सम्बन्ध जगक्केन्दे भू-।
 षणमी-ब्रह्म-जिनालयं दलेने पेळ्दी-कुप्पटूरोळ् गुणो-।

व्वने मु मा.....दी-स्थलकदेडे-नाडोळ् चल्नु-वेतिर्द - सिडु ।
डणियं माळल-देवि ता विडिसिदळ् श्री-कीर्ति-भूपाळनिम् ॥

अन्ता-वन्दणिका-तीर्थादि-सकळ-चैत्यालयकाचार्य्यं मण्डळाचा-
व्यरुमेनिसिद पद्मनन्दि-सिद्धान्त-देवर गुरु-कु न्वय-प्रभावमेन्ते-
न्दोडे ॥

दुरित-कुलान्तक चरम-तीर्थकरं विमु वीरनाथनी- ।
धरे तिळिवन्तु हेयमिद.....समस्त-तत्त्वमम् ॥
परिविडियिन्दे पेळ्दु जनमं वर-मोक्ष-पथके तिर्दि वित्- ।
तारिसिद मुक्ति-कान्तेय लताङ्गमनप्पिदनिन्द्र-वन्दि -॥
आ-नेगळ्दन्त्य-कश्यपनिनादुदु काश्यप-गोत्रमी-जनम् ।
ज्ञान-निधानना-जिनन सद्गण-नायकरप्रिमावधि- ।
ज्ञानिगळ्प गौतम-मुनि मु .. रे श्रुतकेवळ-प्रभा- ।
भानुगळ्प विष्णु-मुनि-मुख्यरुमा-पथम निमिर्चिदर ॥
यतिगळ्वरिन्दे पलवरुव् । अतीतवा .. वळिक्कमवतारिसि वहु- ।
श्रुतनागियुं वळ वि- । श्रुतनाद भद्रबाहु-यतिपिदुचित्रम् ॥

अवरिं वळिक्के ॥

श्रुत-पारगरनवद्यद् । चतुरङ्गुळ-चारणर्दि-सम्पन्नर् स्सं- ।
हृत-कु-मत-तत्त्वरेनिसिदर । अतर्क्य-गुण-जलधिक्कुण्डकुन्दाचार्य्यर् ॥
आ-कोण्डकुन्दान्वयदोळ ॥

श्री-कुण्डकुन्दान्वय-मूलसंघे काणूर-गणे गच्छ-सु-तित्रिणीके (य)

अम्भोनिधाविन्दुरिवोदपादि सिद्धान्ति-चक्रेश्वर-पद्मनन्दी ॥

शान्त-रसं पोतळ्-वरिदु सयमवल्लि मडल्लु पर्व्वि तो- ।

.... चराचर-त्रजमनात्म-त्रचोऽमृतदिं विनेयर ।

खान्तरजो-मळ तोळ्हेदु पोख्तेने पेळ् बुध-पद्मनन्दि-सि ।

द्वान्तिक-चक्रवर्तियनदारू पोगळ् ग्गुण-शील-मूर्त्तियम् ॥

आ-प्रतिष्ठाचार्य्यरेनिसिद श्री-पद्मनन्दि-सिद्धान्ति-देवरिं सु-प्रति-
ष्ठितमाद कुप्पटूर श्री-पार्श्वदेवर चैल्यालयम पद्म-मा-देवि माळल-
देवि नेरेये माडिसि खस्ति यम-नियम-स्वाध्याय-ध्यान-धारण-मौनानुष्ठान-
जप-समाधि-शील-गुण-सम्पन्नरूप श्रीमदनाटियग्रहार कुप्पटूरगेप-महा-
जनङ्गळ ययोक्त-विधियिं पूजिसियवरिं ब्रह्म-जिनालयमेन्दु पेसरिड्डुयल्लिय
कोटी वर-मूलस्थान-प्रमुख-पदिनेण्डु-स्थानदाचार्य्यरु वेरसु वनवसेय
मधुकेश्वर-देवराचार्य्यर वरिसि पूजेयं कोडु जोग-वड्डिगेय-निक्किसिया-
महाजनङ्गळिगेयनूरु-होन कोडु स्त (स्थ) ल-वृत्ति (आगेकी ३ पक्तियोमें
दानकी विस्तृत चर्चा है) गक-नृप-वर्षद ९९७ य पिङ्गल-संवत्सर
दक्षय-तदिगेयमावासे-आदित्यवार-संक्रमण-व्यतीपातवोन्दिद
दिनदोळु देवर नित्य-नैमित्त-पूजेग ऋपियराहार-दानकवेन्दु पद्मणन्दि-
सिद्धान्तिक-चक्रवर्त्तिंगळ् काल तोळ्हेदु धारा-पूर्वक माडि कोडुळु (हमेशा
के अन्तिम वाक्यावयव) आरुवणव नमस्यवागि विट्टरु ॥ (हमेशाके
अन्तिम श्लोक) वम्मरहरियण्ण हेळ्द शासन मङ्गळ महाश्री ॥

[मेरु पर्वत, भरत क्षेत्र, कुन्तल-देश, और वनवासिके उल्लेखपूर्वक.—
कादम्ब कुल-कमल मार्त्तण्ड कीर्त्ति-देव राज्य करते थे, जिनका वशावतार
निम्न प्रकार है—मयूरवर्मा नामके एक राजा या युवराज थे । शासन-
देवीकी कृपासे इनको राज्य मिला था, और एक वनको राज्यके रूपमें
रूपान्तरित किया गया था । एक मयूरके पङ्कोका बनाया हुआ पट्ट उनके
सिरपर रक्खा गया था, इसलिए उनका नाम मयूरवर्मा था । ये कदम्ब-
कुलके अभिवन्द्य थे । उन्हींकी साक्षात् सन्तान कीर्त्ति-देव थे, उनकी

प्रशंसा। उन्होने सप्त कोंकणोको, लीलामात्रमें ही वश कर लिया था। उनकी ज्येष्ठ रानी माळल-देवी थी, उसकी प्रशंसा।

उस वनवासे-नाइमें, (अनेक आकर्षणों सहित) कुप्पटूर था, जिसके हजार ब्राह्मण अपनी विद्या और भक्तिके लिये विख्यात थे। प्रसिद्ध बन्द-णिकेसे सम्बन्ध रखनेवाली चीजोंसे कुप्पटूरका ब्रह्म-जिनालय सबसे आगे था; इसके लिये माळल-देवीने राजा कीर्तिसे सिद्धुणे, जो एडे-नाइमें सर्व-सुन्दर स्थान था, प्राप्त किया था।

बन्दणिके तीर्थ तथा दूसरे चैत्यालयोंके मुख्य पुरोहित मण्डलाचार्य पद्मनन्दिसिद्धान्तदेवके आध्यात्मिक वंशका अवतार वर्णन:—भगवान वीरनाथ, गणधर गौतम (इन्द्रभूति) मुनि, तथा श्रुत-केवली विष्णुमुनि ये तीन ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने जिन-मार्गका विशेष रूपसे विस्तार किया। उनके बाद कई मुनियोंके गुजर जानेके बाद भद्रबाहु यति हुए। उनके बाद, जैनपरम्परामें परिपूर्णरूपसे निष्णात, चार अङ्गुल ऊपर जमीनसे चलनेवाले (चारणऋद्धिधारक) कुन्दकुन्दाचार्य हुए। उसी कुन्दकुन्दान्वयमें मूल-संघ, काणूर-गण तथा तिन्त्रिणीक-गच्छके सिद्धान्त-चक्रेश्वर पद्मनन्दि हुए, उनकी प्रशंसा।

उस पट्ट-महिषी माळल-देवीने कुप्पटूरके पार्श्व-देवचैत्यालयको उन पद्मनन्दिसिद्धान्त देवसे सुसंस्कृत कराके और उसका नाम वहाँके ब्राह्मणों (जिनमें साधुओं-मुनियोंके गुण थे) से 'ब्रह्म जिनालय' रखवाकर कोटी श्वर-मूलस्थान तथा वहाँके सभी अन्य १८ मन्दिरोंके पुरोहितोंके साथ, तथा वनवासि मधुक्वेश्वरको भी बुलवा कर उनकी पूजा करके और उन्हे ५०० 'होत्र' देकर, और उनसे (उक्त) भूमियाँ प्राप्त करके,—इन सबको तथा कीर्ति-देवसे प्राप्त सिद्धुणिवल्लिको (उक्त मितिको) प्राप्तकर, पद्मनन्दि सिद्धान्त-चक्रवर्तिके पाद-प्रक्षाल-पूर्वक दैनिक पूजा और ऋषियोंके आहारके लिये दान कर दिया।]

२१०

गुडिगेरी—कन्नड़-भग्न

[शक सं० ९९८=१०७६ ई०]

१ लवर वसदि [म्] ॥ वृ ॥ सर नय-मूकरनन्तदु माणो
वाग्न-

२ याकरनभयाकर द्विज-दिवाकरन्-
मीकरं बुध-निशाकरनुद्वयश प्रभाकरम् ॥ अन्तेनिसिद
पेर्गीडे

३ प्रभाकरय्यननुभवणेयल्ल ॥ ॐ स्वस्ति समस्त-भुवनवल्य-
निलय-निरतिशय-केवलज्ञान-नेत्रतृतीय-विराजमान-
भगवदर्हत्सर्वज्ञवीतरागपरमेश्वरपरमभट्टारकमुखकमलविनिर्ग-
तानेक-सदसदादिवस्तुस्वरूपनिरूपणप्रवीणसिद्धा-

५ न्तादि-समस्तशास्त्रामृतपारावारपारगरुमनेकनृपतिमकुटतटघटि-
तमणिगणकिरणजलधारावैतावदातपूतचर-

६ णारविन्दरु बुधजनमनःपुण्डरीकत्रनमार्त्तण्डरु पट्टर्कपण्मुखरु
परमतपश्चरणनिरतरु परवादिशरभभेरुण्डापर-

७ नामधेयरूप श्रीमत् श्रीनन्दिपण्डितदेवराचार्य्यरागि तपो-
राज्य-भोज्युत्तमिरे ॥ वृ ॥ जिनसमयागमाम्बुनिधिपारगरु-

८ प्रतपोनिवासिगळ मनसिज-त्रैरिगळ शम-दमाम्बुधिगळ बुध-
सज्जनस्तुतर्ब्विनतनरेन्द्ररुन्द्रमकुटार्चितपादपयोज-

९ युग्मरेभ्विनितु महत्तयदि सिरियनन्दि-मुनीन्द्रे देवरुब्धि-
योळ ॥ अवर शिर्षितियर् ॥ शम-दम-यम-नियमयुतर्ब्वि-

- १० मल-चरित्रर् जिनेन्द्रधर्मोद्धरणक्रामनिरतरेलेले लोकोत्तमरेसेवष्टो-
पवासिगान्तिरलेयोल् ॥ वृ ॥ अन्तवरेलु
- ११ मत्तरने पण्डितरीये नमस्यमागि कल्पान्तदिन वर पडेदु पार्श्व-
जिनेश्वर-पूजेग श्रुतात्यन्तसदानदान-
- १२ विधिग सले कोट्टरिद नितान्तवोरन्तिरे रक्षिप[३] ध्वज-
तटाकद पनेरडु-गवुण्डुगल् ॥ ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥
- १३ ॐ समस्तगुणसम्पन्ननप्प श्रीमत्सेनवोव सिद्धण्णङ्गे ॥
अरुहने नम्बिट देव्व गुरुगळु परवादि-गरभ-भेरुण्ड-
- १४ बुधरूपपर-हितमे तनगे चरित दोरे-वेत्तुदु सिद्धनेम् कृतार्थनो
जगदोळ् ॥ परमश्रीजैनधर्मकनवरतविशेषानदानक्के
- १५ मुन्न भरत श्रेयासनीगळु निज्जकुळतिलक जैनधर्माविचन्द्र
स्फुरदुघत्तेजनत्युन्नतनमलयग शिष्टरत्नाकरं-
- १६ वाप्पुरे सिद्धं भव्यसेव्य शुचि-शुभचरित धात्रियोळु पुण्य-
पुञ्जम् ॥ कन्द ॥ परहितचरित्रननुपमवरगुणनिल-
- १७ य प्रियम्बदं धर्मदनक्षरपक्षपाति यतिपति-सिरिणन्दित्र(त्र)ति-
पदाब्जभृङ्ग सिद्धम् ॥ अमलचरित्र बुधहृत्क-
- १८ मलाकरदिनकर कृतार्थ जैनक्रमनलिनेष्ट श्रीनन्दिमुनीन्द्र
सेनवोवसिद्धं धरेयोळ् ॥ अन्तेनिसिद ॥ ॐ ॥
- १९ शकवर्ष ९९८ नेय नल-संवत्सरद श्राहेयोळु स्वस्ति
श्रीमत् परवादि-गरभेरुण्डापरनामधेयरप्प
- २० श्रीनन्दिपण्डितदेवर्मुन्न श्रीमत् चालुव्य-चक्रवर्त्तिविजया-
दित्यवल्लभानुजेयप्प श्रीमत् कुङ्कुम-महा-
बि० १८

- २१ देवि पुरिगेरेयलु माडिसिदानेसेजेय-व्रसदिगे ताम्र (ताम्र)
शासन-मर्यादेयिन्दाळव गुडिगेरेय भूमियोळगे प-
- २२ डुवण पोलनोत्तु-त्रोगिळदडे कालदिय-नायिम्मरसगे शासनम
तोरि पडेद भूमियोळगे तम्म गुडु सिङ्गय्यंगे कारु--
- २३ प्यदिं सर्व्वनमस्यमागि पदिनाल्लु मत्तरं दये-नोय्हु कोड्डा-
यय्यना पदिनाल्लु मत्तरुम ऋपियगें गुडि-
- २४ गेरेयोळ आहारदान नडेवन्तागि विटनी केय्योळ पुट्टिदत्थ-
मन्त्रिल्लियाहारदानक्कल्लदे पेरतोन्दु धम्मकं
- २५ पेरतोन्देडेगमुप्यलागदिन्ती मर्यादियनरसुं पण्डितरु पन्निर्व्व-
गावुण्डुगळु धम्मवरिववरेल्ल-
- २६ रुवोडेयरागि परिरक्षे-नोय्हु खधम्मदिं नडसुवुदु ॥ कन्द ॥
गुडिगेरेयोळ धम्मगळिगोडारिसुववरेल्ल
- २७ वोडेयरी धम्म कावोडेयरेमोव्वरे वेनवेदुडुपति रवि जलधि धात्रि
निल्लपन्नेवर ॥ अन्तु सिङ्गणं विट्ट
- २८ केयो चतुस्सीमियेन्तेने मूळ वन्दि-गावुण्डन केयि तेक्क पुल्लुङ्गूर
वडे पडुव वसदिय केय्यु [म्]
- २९ नाकय्यन केयि वडग गावुण्डुगळ पसुगेय पोलनन्तु मत्तर्प-
दिनाल्लु ॥ मत्तमट्टोपवासि-कन्तियर
- ३० विट्ट केय्यगे चतुस्सीमियेन्तेने मूळ वडुगेरिय केयि तेक्क ग्रामचै-
ल्लालयद केयि पडुव पेर्गडे
- ३१ प्रभाकरय्यन केयि वडग पुल्लुङ्गूर वडेयन्तु मत्तरेल्लुमनिन्ती
येरडुं पय्यायद मत्तरिर्पत्तो

- ३२ न्दुम प्रतिपालिसुचवर्गे वारणासि कुरुक्षेत्रं प्रयागेयर्घ्यतीर्थ्य
मोदलागि पुण्यतीर्थङ्गलो-
- ३३ लु मूर्खग्रहणदोलु सासिर कविलेयनलङ्कारसहित चतुर्वेदपार-
गरप्प सासिर्व्वर्वाह-
- ३४ णर्गेयुभयमुखिगोद्रे प(फ)ळमकुवी धर्ममनळियलु मनदं-
दवर्गेयिन्ती पुण्य-तीर्थङ्गलोलु सासि-
- ३५ रकविलेयुम [म्] सासिर्व्वर्वाहणरुमनळिद पञ्चमहापातकनकु ॥
ॐ स्वस्ति श्रीमत् परवादि-शरभ-मे-
- ३६ रुण्डापरनामधेयरप्प श्रीनन्दिपण्डितदेवर्मत्तमा पडुववोल-
दोळगे पन्निर्व्वर्गावुण्डुगळ्ळे दये-गेय्दुम्बळियागि
- ३७ कोद्रे मत्तन्नूर पन्नोन्दु पेर्गडे प्रभाकरय्यन मग रुद्रय्यङ्गे दये-
गेय्दुम्बळियागि कोद्रे मत्तर्पदि-
- ३८ नाल्लु । सेनवोव हव्वण्णंगे दये-गेय्दुम्बळियागि कोद्रे मत्त-
र्पदिनाल्लु भूकियर-कावण्णंगे दये-गेय्दुम्बळि-
- ३९ यागि कोद्रे मत्तरेल्लु कन्तियर-नाकरय्यङ्गे दये-गेय्दुम्बळियागि
कोद्रे मत्तर्नाल्लु कम्मवरुनूरु श्रीमद्दुवने-
- ४० कमल्ल-शान्तिनाथ-देवर्गे सर्व्वनमस्यमागि पडेद मत्तरिर्पत्तु ॥
वहुभिर्व्वसुधा भुक्ता राजभिस्सगरादिभिः य-
- ४१ स्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा प(फ)ळम् ॥ खदत्ता
परदत्ता वा यो हरेत वसुन्धराम् पष्टिर्व्वर्षसहस्रा-
- ४२ या (णि) मि (वि) घाया जायते कृमिः ॥

[प्रभाकर (पक्ति २) या प्रभाकरय्य (पंक्ति ३) नामके 'पेर्गडे'
की जगहपर काम करनेवाले एक अधिकारीके वर्णनके साथ यह लेख शुरू
होता है । उसके समयमे श्रीनन्दि पण्डितदेव (प. ७) सिरियनन्दि

मुनीन्द्र (पं. ९), या सिरिणन्दि (पं. १७) नामके गुरु थे जो सर्व पदायोंके व्याख्यात करनेमें चतुर थे, जिनकी पटवी 'परवादि-शरम-मेत्तण्ड' (पं. ६) थी। जब ये आचार्य, श्रीनन्दिपण्डित, तपश्चर्यामें संलग्न थे, उनके शिष्य 'अष्टोपवासिगन्ति' (पं. १०), या अष्टोपवास-कन्ति (पं. २९) थे, जो जिनधर्मके उद्धार करनेमें बहुत प्रसन्न थे। और इनको श्रीनन्दि पण्डितसे सात 'मत्त' भूमिका 'नमस्य' दान मिला था और इस दानका उपयोग ध्वजतटाक (पं. १२) (गाँवके) १२ 'गाबुण्ड' सरदारोंकी छत्रछायाके नीचे, पार्श्वजिनेश्वरकी पूजा तथा शास्त्र लिखनेवालोंके भोजनके प्रबन्धके लिये किया। इसके बाद लेखमें एक 'सेनवोव' या पटवारी सिद्धण (पं. १३), सिद्ध (पं. १४), या सिद्धय्य (पं. २२) का उल्लेख आता है जो जिनधर्मभक्त था। यह सिद्ध श्रीनन्दिका पटवारी था।

इसके बाद कथन है कि अनल संवत्सर, जो व्यतीत शक सं. ९९८ था, की श्राही या आश्रहीमें श्रीनन्दिपण्डितको गुडिगेरीकी भूमिमें पश्चिम दिशाके खेतोंका अधिकार मिल गया था। ये खेत, एक तात्रपत्रके अनुसार, उस आनेसेज्येय बसदिके जैनमन्दिरके अधिकारमें थे, जिसको श्रीमत् चालुक्यचक्रवर्ती विजयादित्यवल्हभकी छोटी बहिन बुद्धमहादेवीने पहले पुरिगेरीमें बनवाया था। श्रीनन्दि पण्डितने इन खेतोंमेंसे अपने शिष्य सिद्धय्य (पं. २२) को, 'सर्वनमस्य' दानके तौर पर, १५ मत्त भूमि दी। सिद्धय्यने यह भूमि गुडिगेरीके मुत्तियोंके बाहारके प्रबन्धके लिये दे दी, और इस बातका ध्यान रखते हुए कि इसकी उत्पन्न इसी कार्यमें खर्च होती है, किसी दूसरे धर्म या कार्यमें खर्च नहीं होती, यह काम राजा, पण्डितों, १२ 'गाबुण्ड' लोग, और जोप सभी धार्मिक लोगोंको (पं. २५) सौंप दिया। जबतक चन्द्र, सूर्य और समुद्र तथा पृथ्वी हैं तबतक यह दान जारी रहे, यह बात भी निगाहमें रखनेके लिये इन लोगोंको कहा। इसके पश्चात् इस भूमिकी सीमायें दी हुई हैं।

उन्हीं पश्चिम दिशाके खेतोंमेंसे श्रीनन्दि पण्डितने, लगान-मुक्त जमीनके रूपमें, १२ गाबुण्डोंको १११ मत्त (पं. ३६), 'पेगडे' प्रभाकरच्यके पुत्र रत्नच्यको १५ मत्त; सेनवोव हच्यणको १५ मत्त (पं. ३८);

मूकियर-कावणको ७ मत्तर; कन्तियर-नाकय्यको ४ मत्तर और ६०० 'कम्म' (पं ३९), और 'सर्वनमस्य'-दानके रूपमें श्रीमद्भुवनैकमल्ल शान्तिनाथदेवको २० मत्तर (पं. ४०) दिये । भुवनैकमल्ल शान्तिनाथदेव नामका मन्दिर 'भुवनैकमल्ल' विरुदवाले पश्चिमी चालुक्य राजा सोमेश्वर द्वितीयने बनवाया था या उसमें शान्तिनाथकी प्रतिमा प्रतिष्ठित कराई थी ।]

[३० ए०, १८, पृ० ३५-४०, नं० १७३]

२११

मथुरा—संस्कृत

सं० ११३४=१०७७ ई०

[पद्मासनस्थ तीर्थंकरकी विशाल मूर्तिका लेख]

[इस मूर्तिका लेख साफ-साफपढनेमें नहीं आता । कुछ भाग पढा जाता है, कुछ नहीं । परन्तु लेख सिर्फ दो पक्तियोंका है । इस मूर्तिका लेख सिर्फ कालकी दृष्टिसे ध्यान देने योग्य है । डा० फूहरर (Dr. Fuhrer) के मतसे यह लेख बताता है कि इस मूर्तिका निर्माण मथुराके श्वेताम्बर सम्प्रदायकी तरफसे हुआ था । शेष लेख न० १६१ के अनुसार जानना ।]

[Antiquities of Mathura, (ASI, XX), p 53, t]

२१२

हुम्मच-कन्नड

[विना काल-निर्देशका, पर लगभग १०७७ ई० का]

[हुम्मचमे, सूळे वस्तिके सामनेके मानस्तम्भपर]

(पश्चिम मुख) श्री-वीर-सान्तरन पिरिय-भगं तैलह-देवं भुजव-
ल्लशान्तरनेन्दु पट्टमं कट्टिसि कोण्डु पट्टण-स्वामि माडिसिद तीर्थद-
वसदिगे वीजकन-वयलं विट्टन् (वे ही शापात्मक वाक्यावयव)
स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-कल्याणाष्ट-महाप्रातिहार्य-चतुर्ल्लिशदतिशय-

विराजमानं भगवदहर्त-परमेश्वर-परम-भङ्गारक-मुख-कमळ-विनिर्गत-सद-
 सदादिवस्तु-स्वरूप-निरूपण-प्रवीणरु सिद्धान्तामृत-वार्द्धि-वारुद्धौत-विशु-
 द्धेद्ध-बुद्धि-समृद्धरुभय-सिद्धान्त- रत्नाकररूप श्रीमद्-दिवाकरनन्दि-सि-
 द्धान्त-देवर गुड्ड स्वस्त्यनेक-गुण-गणाभिमण्डन नरवर-मुख-मण्डनं
 शान्तर-राज्याभ्युदय-कारण कलि-युग-दोष-निवारण शान्तलि-देश-
 कान्तारान्तर-जङ्गम-तीर्थ कलि-युग-पार्थ पोम्बुर्च-कुलोद्भव-दिवाकरं
 जिन-पाद-शेखरं आहाराभय-भैषज्य-शास्त्रदान-कानीन विशद-यशो-
 निधान सम्यक्त्व-वाराशियुमप्य श्रीमत्पट्टण-स्वामि-नोक्कय्य-सेट्टियर
 वृत्त ॥ जिन-तत्त्व व्याप्त-चित्त जिन-मत-तिळक जैन-कल्पावनीज ।

जिन-धर्माग्भोधि-चन्द्र जिन-समय-सरोजाकरोत्तस-हसम् ।

जिन-राज-स्तोत्र-माळाविळ-मुख-कमलोद्भासि सिद्धान्त-रत्ना- ।

कर-देव-श्री-पदाम्भोरुह-मधुपनेनल् पट्टण-स्वामि सन्दम् ॥

(उत्तरमुख) गुणिगळ् सिद्धान्त-रत्नाकररमळ-चरित्रर्महा-योगि-वृन्दा- ।

प्रणिगळ् श्री-शान्तिनाय-क्रम-कमळ-युगाराधकर् वभारती-भू- ।

पणबुद्धरु ज्ञानिगळ् देशिग-गण-तिळकरु जैन-सिद्धान्त-चूडा- ।

मणिगळ् श्री-पट्टण-स्वामिगे गुरुगळेनल् नोक्कनन्तारु कृतार्थरु ॥

परम-श्री-जैन-धर्मकृतिशय-विभव मार्ष विद्वज्जनका- ।

दरदिन्द सन्तोस माडुव मुनि-जनकाहार-भैषज्यम वि- ।

स्तरदिन्दं चिन्ते-नोखुन्नत-गुण-युत पट्टण-स्वामि नोक्कम् ।

वरमारु वभव्यर्कळ् अन्ता पुरुप-रतुनदि वीर-देवं कृतार्थम् ॥

हरि-संघातदे कट्टु-पेत्त वडव-ज्वाळाळियि वेन्द मी- ।

कर-पाठीन-तिमिद्धिळाळियिनतिक्षोभके सन्दिब्दग- ।

स्त्थारिनप्-प्राशनकेधे वारदति-तीक्ष्ण-क्षार-वारि-प्रभ- ।

गुर-त्राराशियोळन्तु पोलिपुदो पेळ् सम्यक्त्व-त्राराशियम् ॥
 सिरिगावासमनेकरत्त-निचयोत्पत्त्याश्रय भीरु-र- ।
 क्ष-रत चन्द्र-कळा-प्रवर्द्धन-मुद् पीयूष-पिण्डास्पदम् ।
 वर-वेळा-त्रळ्यामृत समतेयिं चारासि पोल्लु मनो- ।
 हर-दानत्वदिनेये पोलदे वल सम्यक्त्व-त्राराशियम् ॥

पट्टण-स्वामिय मग मल्लं वरेदम् ।

(पूर्वमुख) जडरु वाळकरु बुध-प्रकरमुं तत्त्रार्थमं कल्लतघम् ।
 किडे .सम्यक्त्वमनेष्टि सप्त-परम-स्ता(स्था)नाप्तियं निश्चयम् ।
 पडेयल् माडिदरोप्पे... तत्त्रार्थसूत्रके क- ।
 नडदिं वृत्तियनेल्लिग नेगळ्पिन सिद्धान्त-रत्नाकरम् ॥
 कन्तु-दर्प-हर जिन तनगात्तनाब्दनवार्य-वि- ।
 क्रान्तनोळ्गलि वीर-शान्तरनम्मणं गुणि तन्दे दिग्- ।
 दन्ति-वर्त्तित-कीर्त्तिगळ् गुरुगळ् दिवाकरणन्दि-सि- ।
 द्वान्त-देवरेनल्के पट्टण-सामिनोक्कने सन्नुत्तम् ॥
 स्नान पञ्चामृताख्यं पट्टु-पट्टह-रण झल्लरी-शब्द-रम्यम्
 पूजा पुष्पाभिराम मळयज-पयसा लेपन दिव्य-धूपम् ।
 निल्य कृत्वा जिनाना सकळ-जन-दया-जीव-रक्षान-दानम्
 योम्नुर्चाहृत्-प्रतिष्ठा तव भवति पर लोक-विद्या-विवेकः ॥
 दारिद्र्य-लोभ-मद-भय-नाशकरं एकमेव तत्क्षणतः ।
 पञ्चाक्षरमिड मन्न पट्टण-सामि ते जप-विबुधम् ॥
 पुसि नुडिव चपल-वित्तियोळ् ।
 असदळमेसगुव पराङ्गना-सङ्गतिगा- ।
 टिसुव तवगिल्लदोळ्पम् ।

पसरिप नररणम-नोक्कन पोल्तपरे ।

(दक्षिण मुख) चारु-चरित्ररी-दोरेयरारोनिपोक्किपन चन्द्रकीर्ति-भ- ।

डारकरग्र-शिष्यरघ-हारिगळार्हत-तत्त्व-वस्तु-वि- ।

स्तारिगळङ्गजारिगळोप-विशेष-गुणावली-मनो- ।

हारिगळेन्विन नेगळ्दरल्ते दिवाकरणन्दि-सूरिगळ् ॥

वचन ॥ उभयसिद्धान्त-चूडामणिगळु त्रैविद्य-देवरुमेनिसिद श्री-दिवाकर-
णन्दि-सिद्धान्त-रत्नाकर-देवर शिष्यर् ॥

सकलचन्द्र-मुनि नाथरुर्वरा- ।

सकलदोळ् परम-योग्यरेम्बुदम् ।

ककुम-दन्तिगळ दन्तदोळ् करम् ।

प्रकटमाणे वरेद पितामहम् ॥

वचन ॥ सम्यक्त्व-वाराशियुमेनिसिद पट्टण-स्वामिनोक्कय्य-सेट्टियर
मगम् ॥

सुन्दर-रूपदिं विनयदिन्दभिमानदिनोक्किपनिं जना- ।

नन्द-परोपकार-गुणदिं सुजनत्वदिनोजेयिं जगद्- ।

वन्दित-कीर्तिं पुण्य-निधिं तन्देयोळच्चिनोळोत्तिदन्ननेन्द- ।

अन्देले वैश्य-वग्न-तिलक नेगळ्दिन्दिरनेम् कृतार्थनो ॥

[वीर-शान्तरके ज्येष्ठ पुत्र तैलह देवने, जो भुजवल-शान्तर नामसे भी ज्ञात था, राजा होकर, पट्टण स्वामिके द्वारा निर्मित तीर्थद-वसदिके लिये मन्दिरके दानके रूपसे, वीजकन वयल्का, दान किया । (शाप)

भगवदहर्तृके द्वारा प्रतिपादित सत्य और असत्यकी प्रकृतिके प्रतिपादन करनेसे निपुण दिवाकरनन्दि सिद्धान्तदेव थे, जिनके गृहस्थ-शिष्य पट्टणा स्वामी नोक्कय्यसेट्टि थे । उनकी और उनके गुरुकी प्रशंसा । उसके द्वार-

वीरदेव भी सफल है। आगेके श्लोकोमें उनकी समुद्रसे तुलना की गई है। पट्टण-स्वामीके पुत्र मल्लने इसे लिखा।

सिद्धान्त-रत्नाकरदिवाकरनन्दिने मूर्खों या बच्चों तथा विद्वानोंके सबके अवबोधार्थ कन्नडमें तत्त्वार्थसूत्रकी वृत्ति लिखी। पट्टणस्वामीके इष्ट देव जिन थे, उसके शासक वीर-शान्तर थे, उनके पिता अम्मण, गुरु दिवाकरनन्दि सिद्धान्तदेव थे। (जिनकी पूजाके लिये दैनिक सामग्री तथा लोगोंके कल्याणका वर्णन करनेके बाद),—नोककी प्रशंसा।

चन्द्रकीर्ति-भट्टारकके मुख्य शिष्य दिवाकरनन्दिस्वरिकी प्रशंसा। उन्हींका अपर नाम सिद्धान्त-रत्नाकर था। उनके शिष्य सकलचन्द्र-मुनिनाथ थे।

पट्टण-स्वामीनोकव्य-सेष्टिके पुत्र वैश्य-वंश-तिलक इन्दरकी प्रशंसा।]

[EC, VIII, Nagar tl, n° 57]

२१३

हुम्मचः—संस्कृत तथा कन्नड

[शक ९९९=१०७७ ई०]

[हुम्मच में, पञ्चवस्तिके आंगनके एक पाषाणपर]

भद्रमस्तु जिन-शासनाय ॥

श्रीमत्परमगभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनायस्य शासन जिन-शासनम् ॥

शक-वर्ष ९९९ नेय पिङ्गळ-संवत्सरं प्रवर्त्तिसुत्तमिरे स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर परम-भट्टारक सत्याश्रय-कुळ-तिळक चालुक्याभरण श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल-देवर राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि-प्रवर्धमानमा-चन्द्रार्कतार सल्लुत्तमिरे । तत्पाद-पद्मोपजीवि ॥ समधिगतपञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वरनुत्तर-मधुरावीश्वर पट्टिपोम्बुर्च-पुर-वरेश्वर महोग्र-वंश-ललाम पद्मावती-लब्धवर-प्रसादासादित-त्रिपुळ-तुळापुरुष-महादान-हिरण्यगर्भ-त्रयाधिक-दान वानरध्वज

मृगराज-लाञ्छन-विराजितान्वयोत्पन्न वटु-कला-सम्पन्न मान्तर-कुल-
कुमुदिनीगणाक-मयूखाङ्कुर रिपु-मण्डलिक-पतङ्ग-रूपाङ्कुर तोण्ड-मण्ड-
लिक-कुलाचल-वज्र-दण्ड विरुद-भेरुण्ड कन्दुकाचार्य मन्दर-वर्ष्य कीर्त्ति-
नारायण सौर्य-पारायण जिन-पादाराधक पर-वन्द-साधक सान्तरादिन्यं
सकलजन-स्तुत्य नीति-शास्त्र विरुद-सर्वज्ञ श्रीमन्महा-मण्डलेश्वर नन्नि-
सान्तरदेव ॥

वृत्त ॥ चरण-विनमनागि तोदळेभ्विडि मुन्ने लळाट-पट्टदल् ॥
वरेट दुरक्षरायजिगळ तोळ्ळेदपुवु तामे निन्न मच्-।
चरण-रजङ्गणेन्दोडुळिदनिनगाधारे देव मण्डळे-।
श्वर-कळभैक-केसरि नरेन्द्र-शिखामणि नन्नि-सान्तरा ॥
प्रतिविम्ब रूपिनोळ् पोल्केम गुणटोळ्ळार पोल्नपर्निन्ननेम्बी-।
स्तुतियं निश्चयिस गोविन्दर वेमेयदिरेन्तेम्ब निन्नन्ते नोडु-।
नतियोळ् हेमाचळ क्षान्तियोळ्ळयनि-नळ मेरेयोळ् वार्धिं जौच-।
व्रतदोळ् सिन्धूद्वय सत्यदोलिन-तनेय सौर्यदोळ् भीमसेनम् ॥

अन्तेनिसिद नन्नि-सान्तर-देवरन्वयमदेन्तेने । उत्तर-मधुरावीश्वरानु
मुग्रवशोद्वयनुमेनिसिद राहनेम्ब मण्डलेश्वर कुरुक्षेत्रदोळ् भारतदल् कादि
गेल्वडे नारायण मेच्चि एक-सखमुमं वानर-ध्वजमुमं कोट्ट ॥ आतर्नि
पलवरु राज्य गेष्टु पोणे । सहकारनात नर-मास-व्रतनागे आतङ्ग
श्रिया-देविग पुट्टिद जिनदत्तनातन चरितके पेसि दक्षिणाभि-
सुखनागि वरुत सिंहस्थनेम्बसुरन कोन्दडे जक्कियव्वे मेच्चि
सिंहलाञ्छन कोट्टळ् ॥ अन्धकासुरनेम्बसुरन कोन्दु अन्धासुरमेन्दु
माडिद । कनकपुरके वन्दळि कनकासुरन कोन्द । कुन्दद कोटि-

योळिर्द करनु करदूपणनुमं कादि योळिसिदडे पद्मावती-देवी मेच्चि
 कनकपुरं एनिसिद पोम्बुर्चद लोक्किय मरदळ् नेलसि लोक्कियच्चेये-
 म्वेरडनेय पेसरं ताळ्दि पोम्बुर्चमातङ्गे राज्यस्थानमेन्दु पोळळ माळिदळ् ॥
 अळ्ळि जिनदत्तनुं पल्वरुमरसु-नेय्दु सले श्री-केशियुं जयकेशियुमा-
 दरा-श्रीकेशिग मुददि महादेविग रणकेसि पुत्रनादनातनिं पल्वररसु-
 नेय्ये । हिरण्यगर्भमिर्दु महादानं माळियधिवासद पल्वररसुगळ
 कोन्दु ओळिसियु तेङ्ग सूलद-होळे पडुव तवनसि वडग वन्दगे मेरेयागे
 सान्तलिगे-सायिर-नाडुमुमनेकायत्त माळि कन्दुकाचार्यनु दान-
 विनोदनु विक्रमसान्तरनुमेनिसिदम् । आतङ्गं वनवासियरस काम-
 देवन मगळ् लक्ष्मी-देविगं चागि-सान्तरं तनेयमादनात चागिस-
 मुद्रम माळिसिदन् । आतङ्ग (म्) आळ्वर नञ्जयन मगळेज्जल-
 देविगं वीर-सान्तरं सुतनादन् । आतङ्गमदेयूर शान्ति-वर्मन सुते
 जाकल-देविग कन्नर-सान्तरं तनूभवनादन् । आतनिं किरिय काव-
 देवङ्ग वीर-त्रयलूनायन मगळ् चन्दलदेविग त्यागि-सान्तरनात्मजना-
 दन् । आतग कदम्बर हरिवर्मनात्मजे नागल-देविगं नन्नि-सान्तरं
 तनूजनादम् । आतग पलसिगे-नाडरिकेसरिय नन्दने सिरिया-देविगं
 राय-शान्तरं पुत्रनादन् । आतगमक्का-देविग चिक-वीर-शान्तरं नन्दन
 नादन् । आतग विज्जल-देविग मम्मण-देवनात्मजनादन् । आतङ्गं
 होचल-देविग मगळ् वीरवरसियु मग तैल्पदेवनु पुट्टिदर ॥ आ-वीरल-
 देवि वड्कियाळ्वरङ्गे महादेवियादळ् । या-वड्कियाळ्वरनिं किरिय माङ्ग-
 व्वरसियु गङ्गवंश-तिलक पालय-देवन सुते केळेयव्वरसियु तैल्प-
 देवङ्गे वल्लभेयरादरळ्ळि मादेवि-केळयव्वरसिगे ।

वृ ॥ वर-ऋक्ष्मी-ऋक्ष्मण सान्तर-कुल-तिळक मूर्य-तेजःप्रभावं ।
 पर-नारी-दूरमावर्जित-गुण-निळयं वैरि-कालानल मन्- ।
 दर-वैर्यं नीति-पारायणनमळ-लसत्-कीर्ति-मूर्त्ती-वितानम् ।
 धरेय कायल् समर्थं सुरपति-विभव पुट्टिद वीर-देवम् ॥

क ॥ धुरदोळसि-खतेयनुच्चिदोड् ।
 अरि-नृप-युवातिपर मुगुळ कङ्कणढा-कील् ।
 तरतरदिनुच्चिदवु निज- ।
 कर-खङ्गमवर्के कीले शान्तर-नृपति ॥

वीरुगन दोरेगे दोरे पेरर् ।
 आरु वन्दपरे कृत-युग त्रेता-द्वा- ।
 पार-कलि-युगदोळगण वी- ।
 रुरुदारर् प्रतापिगळ् धर्म-परर् ॥
 आतननुजरु जगद्धि- ।
 ख्यातरु श्री-सिद्धि-देवतु रिपु-वळ-निर्- ।
 ग्घातनेने वर्म्म-देवतुम् ।
 आतत-कीर्त्ति-वितानरवनी-तळदोळ् ॥

व ॥ अन्तेनिसिद वीर-देवङ्गे काडव-मादेवियेनिसिद चड्डल-देवियि
 किरिय वीरल-मादेविय विवाहोत्सवदि कूडेया-वीर-मादेवियु नोळम्ब
 नारसिंग-देवन सुते विज्जल-देवियुमाळवर मगळचलदेवियु कुल-
 वधुगळवरोळगे वीर-महादेवियन्वय-क्रममदेन्तेने ॥ स्वस्ति समस्त-सुव-
 नाधीश्वरेक्ष्वाकु-कुल-गगन-गभस्तिमालिनीपराक्रमाक्रान्त-कन्याकुब्जा-
 वीश्वर-शिरो-विलग्न-निशित-शिळीमुख पार्थिव-पार्थस् समर-क्रेली-धनञ्जयो
 धनञ्जयः तद्-वळभा गान्धारी-देवी तत्सुतो हरिश्चन्द्रस्तदग्र-महिषी

मही-हय-त्रयोद्वयानु ज्योतिष्मती-पुरवरेश्वरानु मध्य-देशाधिपतियु एनिसि-
दरयण-चन्द्रसङ्गं पुष्टिद गावव्यरसिग अरुमुळि-देवङ्गम् ॥

क ॥ सरसतियुं सिरियु दिन- ।

करनु पुष्टिद्वेम्बिन चट्टलेयुम् ।

वर-त्रधु कञ्चलेयु सत्- ।

पुरुपोत्तमनेनिप राज-विद्याधरनुम् ॥

पुष्टे तनगन्दु राज्यद ।

पट्ट कै-साहुद्वन्दु रक्स-गङ्गम् ।

निष्टिसि तन्नरमनेयोळ् ।

नेष्टने तन्दिरिसिदं महोत्सवदिन्दम् ॥

व ॥ अन्तु सुखदिं वळेयुत्तिदं कन्या-रत्नङ्गळिर्वरिं पिरिय-चट्टल-
देवियं तोण्डे-नाडु नाल्त्रत्तेण्णसिरक्खिपतियुं कञ्ची-नायनुवीश्वर-वर-
प्रसादनुं वृपम-आञ्जननुमेनिसिद काडुवेट्टिगे रक्स-गङ्ग-पेम्मनिडि
विवाहोत्सवम माडि चट्टल-देविगे काडव-महादेवि-वट्टम काट्टि सुखदि
निरिसिदन् । आ-वीर-देवङ्ग कञ्चल-देवियेनिसियुं वेरडनेय पेसरं
ताळ्दिद वीर-महादेविगम् ॥

क ॥ दसरयन तनयरन्दमन् ।

एसेदिरे पोळ्निदं तैलनुं गोग्गिगानुम् ।

कुसुमाखनेनिसिदोडुग- ।

वसुधेसलुमन्तु चम्मन्तु तनयरवर ॥

पुष्टुळोडमात्म-गृहदोळ् ।

पुष्टिदुदैश्वर्यमोळ्पुमार्षु कूर्पुम् ।

नेडुनरि-नृपर गृहदोळ् ।

पुडिदुवुत्पात-भीति चेतो-विकळम् ॥

व ॥ अन्ता-कुमारः सुखदिं वळेयुत्तिरे यवरोळप्रज तैलप-देव-
नसहायसिंहनेनिसियु तन्न वाहा-वळमे चतुरङ्ग-वळमार्गे दायिगरुमनाट-
विकरुम राज्य-कण्टकरुम निःकण्टकं माडि तन्न दोर्व्वळ-विक्रमदि सान्तर-
वडुमनवटयिस भुजवळ-शान्तरनेनिसि सुखदिं राज्य गेय्द ॥

भुजवळ-शान्तर-नृपतिय ।

भुजवळदळवु प्रतापमुं और्थ्यतेयुम् ।

विजिगीषु-वृत्तियु निज- ।

विजयमुमी-लोकदोळगे भुम्भुकमेनिकुम् ॥

अन्तातननुज गोविन्दर-देवम् ॥

गोविन्दरन पराक्रमम् ।

आवगमवु तन्नोळेय्दे तोरिरे धरेय ।

काव पर-नृपरनळ्करे ।

सोव महा-गुणमे तनगे निज-गुणमेनिकुम् ॥

वृ ॥ देव समुद्र-मुद्रित-वसुन्धरेयोळ् नृपरादरेळरम् ।

भाविसि कण्डेनान्त रिपु-सन्ततिय नेलेगोड्डु पोपिनम् ।

सोव बुधाळिगार्त्तु पिरिदीव शरण्-चुगे काव सद-गुणक् ।

आवनो निन्नवोळ् नेरेद मण्डलिकारु कळि-नन्नि-शान्तर ॥

पिरिदेत्त मेरुग सागरमे जगदोळा-मेरुग सागरक्कम् ।

धरणी-चक्र कर भाविसुवडे पिरिदा-मेरुग सागरक्कम् ।

धरणी-चक्रकामाशालिये कडुविरिदा-मेरुग सागरक्कम् ।

धरणी-चक्रकामाशालिगमेले पिरियं शान्तरादित्य-देव ॥

ख्यातियनेनं पेळ्वुदो ।
 वूतुग-वेर्माडि पडेद महिमोन्नतियम् ।
 भूतळदोळ् शान्तरनुप- ।
 मातीतं चक्रि कुडळ पडेदनमोघ ॥
 अर्द्ध-पथमिदिर्गे वोन्दु तद्
 अर्द्धासनमेनिप लोह-विष्टरदोळ् सम्- ।
 वर्द्धित-शान्तरनेनिप ध- ।
 नुर्द्धरन चक्रवर्त्ति निलिसिदनेसेयल् ॥

व ॥ इन्तेनिसिदुन्नतिय ताळ्दि तन्न मण्डळदोळगण राज्य-कण्टकर
 निष्कण्टकं माडि तनगे नन्निये निज-गुणमप्य कारणदि नन्नि-शान्तरने-
 म्ब पट्टम ताळ्दि पल-कालदि परायत्तमाद भूमिय स्वायत्त माडि जग-
 देक-दानियेनिसि लोकदार्थि-जनक्के पिरिदन्तिु सम्यक्व-रत्ताकरनु
 जिन-पादाराधकनुमेनिसियुमेळा-समयगळ स्व-धर्मदि नडयिसुतुं परा-
 झना-सहोदरनेनिसि वीरदोळ वितरणदोळ धर्मदोळं गौचदोळ लोकदोळ
 पेररिछेनिसि नडेदु वन्धु-जनमुम स्व-देशमुम रक्षिसि चट्टल-देवियु
 कुमारर ओहमरसनु बर्म-देवनु तामु पोम्बुर्चदोळ सुखादि राज्य
 गेय्युत्तमिर्दु धर्मं प्रागेव चिन्तेदेम्ब वाक्यार्थ्यमुम भाविसियरुमुळि-देवङ्ग
 गावब्बरसिग वीरल-देविगं राजादित्य-देवङ्ग परोक्ष-विनयम माडले-
 न्दुवर्वा-तिळकमेनिसिद पञ्च-वसदिय मार्युद्योगमनेतिकोण्डु ॥

कं ॥ 'श्रीविजय-देवरुग्र-त- ।

पो-विभवर् गुरुगळखिळ-शास्त्रागम-स- ।

भावितरेनिसल् चट्टल- ।

देविये कृत-पुण्यवन्ते विश्वम्भरेयोळ् ॥

वृ ॥ जनक रक्स-गङ्ग-भूमिपति काञ्चीनाथनात्म-प्रियम्
विनुत् श्री-विजयर् सुगिक्षकरेनल् विद्विष्ट-भूपाळ-सं- ।
हण-विक्रान्त-यशो-विलास-भुज-खड्गोह्लासि ता गोगि-
नन्दनना-चड्डल-देविगेन्दोडे यशश्रीगिन्तु मुन्नोन्तराद् ॥

क ॥ केरे भावि वसदि देगुलम् ।

अरवण्टगे तीर्थ शत्रमारवे-मोदलाग् ।

अरिकेय धर्मादिगळम् ।

नेरे माडिसि नोन्तलेसेके चड्डल-देवि ॥

उत्तुंग-प्रासादमन् ।

उत्तर-मधुरेशनप्प गोगिय ताय् लो- ।

कोत्तरमेने माडिसिदळ् ।

वित्तरदि पञ्च-कूट-जिन-मन्दिरमम् ॥

देसेयागसमेव्वेरुदुमन् ।

असदळमेय्दिद्वेम्बिन पोस-गेरेयम् ।

वसदियुम माडिसि तन् ।

एसमं शान्तरन ताय् निमिर्चिदळेत्त ॥

वृ ॥ इन्तु समस्त-दान-गुणदुन्नतिग पेरारो मुन्नमेम् ।

नोन्तवरेम्बिन नेगर्द चड्डल-देवि चतुस्-समुद्र-प- ।

र्थन्तमनेक-विग्र-मुनि-सन्ततिगन्न-हिरण्य-त्रयमम् ।

सन्ततमिन्तु शान्तरन ताय् पडेदळ् पिरिदप्प कीर्त्तिय ॥

व ॥ अन्तु पोगर्त्तेग नेगर्त्तेग नेल्लेयेनिसि चड्डल-देवियु नन्नि-शान्तरनु

वोडेय-देवर गुड्डगळप्प-कारणदिं श्रीमत्-तियङ्गुडिय निडुम्बरे-ती-
र्थदरुङ्गळान्चयद सम्बन्धद नन्दिगणाधीश्वररेनिसिद श्रीविजय-भ-

द्वारकर नामोच्चारणदि शुभ-करण-तिथि-मुहूर्त्तदलवर शिष्यर श्रेयांस-
पण्डितरुर्वा-तिलकमेनिसिद पञ्च-वसदिगुत्ततमपेडेयल् करुवेनिसे केसर्क-
छिदरवराचार्य्यावळियदेन्तेने । श्री-वर्द्धमान-स्वामिगळ तीर्थ प्रवर्त्तिसे
गौतमर् गगन(ण)धररेने त्रि-ज्ञानिगळप मुनिगळ सले यवरिं चतुरङ्कुळ-
ऋद्धि-प्राप्तरेनिसिद कौण्डकुन्दाचार्य्यरिं केलव-काल पोगे भद्रवाहु-
स्वामिगळिन्दित कलिकाल-वर्त्तनेोयें गण-भेद पुट्टिदुदवर अन्वय-क्रमदिं
कलि-कालगणधररु शास्त्र-कर्तुगळुमेनिसिद समन्तभद्र-स्वामिगळवर
शिष्य-सन्तानं शिवकोट्याचार्य्यरवरिं वरदत्ताचार्य्यरवरिं तत्त्वार्थ-
सूत्रकर्तुगळेनिसिदार्य्य-देवरवरिं गङ्ग-राज्यम माडिद सिंहनन्दा-
चार्य्यरवरिन्देकसन्धि-सुमति-भट्टार हरवरिम् ।

वृ ॥ राजन् बुद्धोप्यबुद्धस्सुरगुरुरगुरुः पूरणोऽपूरणेच्छ ।

स्थाणुः स्थाणुस्त्वजोर्जोर्विरविरळधुमर्माधवो माधवस्तु ।

व्यासोप्यव्यास-युक्तः कणभुगकणभुग् वागवागेव देवी

स्याद्वादादामोघ-जिहे मयि विजति सति मण्डपं वादिसिंहे ॥

व ॥ एनिसिदकलङ्क-देवरवरिं वज्रणन्दाचार्य्यरवरिं पूज्यपाद-
स्वामिगळवरिं श्रीपाल-भट्टारकरवरिं अभिनन्दनाचार्य्यरवरिं कवि-
परमोष्ठिस्वामिगळवरिं त्रैविद्यदेवरवरिनकळङ्क-सूत्रके वृत्तिय वरेदनन्त-
वीर्य्य भट्टारकरवरिं कुमारसेन-देवरवरिं मौनि-देवरवरिं विमळचन्द्र-
भट्टारकरवरशिष्यर् ॥

क ॥ आदित्यन केलदोळ् चन्- ।

द्रोदयमेसेयदवोली-धरा-मण्डलदोळ् ।

वादिगळेम्बी-टुण्टुक- ।

वाडिगळेसेदपरे वादिराजन केलदोळ् ॥

व ॥ अन्तेनिसि राय-राचमल्ल-देवङ्गे गुरुगळेनिसिद कनकसेन-
भट्टारकरवर शिष्यर् शब्दानुशासनके प्रक्रियेयेन्दु रूपसिद्धियं माडिद
दयापालदेवरुं पुष्पपेण-सिद्धान्त-देवरुम् ॥

वृ ॥ अळवे दिग्-दन्ति-दन्त बरमेसेदुदु सद्-गद्य-पद्योक्तिविद्या-
बलवे सर्वज्ञ-कल्प विरुदनुल्लिबुदिन्नन्य-वादीन्द्रनि चा-
बल्लिसल् वेडोहो पत्र गुडदिरैदळळिर् वेन्दप पेळ्बोडिन्निन् ।
अळवल्ल वादिराज पर-मत-कुभृत् आभीळ-वाग्-वज्र-पातम् ॥

व ॥ इन्तेनिसिद पट्-तर्क पण्मुखनु जगदेकमल्ल-वाट्टियुमेनिसिद
वादिराज-देवर ॥ .रक्कस-गङ्ग-पेर्मानडिगळ चड्डल-देविय वीरदेवन
नन्नि-शान्तरन गुरुगळेनिसिद ॥

व ॥ यद्विद्या-तपसोः प्रगस्तमुभय श्री-हेमसेने मुनौ
प्राचिराभियोग-विधिना नीत परामुन्नतिम् ।
प्रायश्श्रीविजयेश-देव सकल तत्त्वाधिकाया स्थिते
संक्रान्ते कथमन्यथा...दृक् तपः ॥
शास्त्र बुधानामुपसेव् ...
य दातुकाम यत एव दाता ।
ततोपि हि श्रीविजयेति-नाम्ना
पारेण वा पण्डित-पारिजातः ॥

व ॥ एनिसिद श्री-विजय-भट्टारकरुमवर शिष्यर् चोळ्.....
शान्तादेवर गुणसेन-देवर दयापाल-देवर कमळभद्र-देवरजितसे-
नपण्डित-देवर श्रेयांस-पण्डितरन्तवरायुर्व्वी-तिल्लकमेनिसिद पञ्चकूट-
वसदिय शक-वर्ष ९२९ नेय पिङ्गळ-संवत्सरद जेष्ठ शुद्ध-विदिगे-
बृहस्पतिवारदन्दु प्रतिष्ठेय माडिया-ब्रसदिय खण्डस्फुटित-जीर्णोद्धारण-

कमल्लिर्द ऋषि-समुदायदाहार-दानक पूजा-विधानकमागे नञ्जि-सान्तर-
देवनुमोह्मरसतु वम्म-देवतु चट्टल-देवियुमाचार्य्यर कमळ-
भद्र-देवर काल कर्चि धारा-पूर्व्वकमासम्बन्धिय समुदाय-मुख्यमागे
माडि कोट्टि ग्रा..... (यहाँ दान और सीमाओंकी विस्तृत चर्चा है।)

[जिन शासनकी प्रशंसा। (उक्त मितिको), जब (हमेशाके चालुक्य पदो सहित) त्रिभुवनमल्लदेवका राज्य सब ओर प्रवर्द्धमान था— तत्पादपञ्चोपजीवी, महामण्डलेश्वर, उत्तर-मधुराधीश्वर, पट्टिपोम्बुर्च-पुर-
व्रेश्वर, महोग्र-वंशललाम, जिसने पद्मावती देवीके प्रसादसे 'तुलापुरुष,' 'महादान,' और 'हिरण्यगर्भ' ये तीन दान पूरे किये थे, सान्तर-कुल-कुमु-
दिनीके लिये प्रदीप्त किरणोवाला चन्द्रमा, जिनपादाराधक, सान्तरादित्य, नीतिशास्त्रज्ञ,—महामण्डलेश्वर नञ्जि-सान्तर देव था। इसकी प्रशंसा।
नञ्जि-सान्तर-देवकी वंश-परम्परा इसप्रकार थी.—

उत्तर-मधुराका अधीश, उग्र-वशोत्पन्न राह राजा था, जो [महा] भारतके युद्धमे कुरुक्षेत्रमे लडा था और जीतनेपर जिसे नारायणने प्रसन्न होकर एक शंख और वानर-ध्वज दिया था। इसके बाद बहुत-से राजा हुए, उन सबके बाद,—एक सहकार नामका राजा हुआ, जो अन्तमे नर-मांस-भक्षी हो गया। उससे और श्रियादेवीसे जिनदत्त उत्पन्न हुआ, जो अपने पिताके आचरणसे ग्लानि-प्राप्त होकर दक्षिणसे आया और जिसके सिंह्रथ नामके असुरके मारनेसे जक्कियब्बे (देवी) प्रसन्न हुई और प्रसन्न होकर उसने उसे सिंहका लान्छन (मुद्रा) दिया। अन्धकासुर नामके असुरको मारनेसे उसने अन्धासुर नामका नगर बसाया। कनकपुरमें आकर उसने कनकासुरका वध किया, तथा कुन्दके किलेमे रहनेवाले कर और करदूषणके भगा देनेसे पद्मावती देवी प्रसन्न हुई और प्रसन्न होकर उसने वहाँ कनकपुरमे, जो कि पोम्बुर्च (हुम्मच) का ही नामान्तर है, एक 'लोकिक' वृक्षपर वास करना शुरू किया तथा लोकियब्बेका नाम धारणकर उसके लिये एक राजधानीके रूपमे शहर बसा दिया। जिनदत्त तथा दूसरे और भी राजाओंके राज्य करनेके बाद श्रीकेसि और जयकेसि हुए। श्रीकेसि

और उसकी रानीसे रणकेसी पुत्र उत्पन्न हुआ। इसके बाद अनेकोंके शासन करनेके बाद हिरण्यगर्भ हुआ, जिसने 'महादान' नामका दान किया और जिसने सान्तल्लिगे-हजार-नाडका एक मित्र राज्य स्थापित किया,—इससे वह कन्दुकाचार्य, दान-विनोद, विक्रम-सान्तर, इन तीन नामोंसे प्रसिद्ध हुआ। उस और लक्ष्मीदेवीसे चागि-मान्तर उत्पन्न हुआ, जिसने चागि-समुद्रका निर्माण कराया। उस और जाकल-देवीसे कन्नर-सान्तर उत्पन्न हुआ। उसके छोटे भाई काव-देव और चन्दल देवीसे त्यागिसान्तरने जन्म लिया। उस और नागल-देवीसे नन्नि-सान्तरका जन्म हुआ। उस और सिरिया-देवीसे राय-सान्तरने जन्म धारण किया। उस और अक्का-देवीका पुत्र चिक्क-वीर सान्तर हुआ। उस और विज्जलदेवीका पुत्र अम्मण-देव हुआ। उस और होचल-देवीसे एक पुत्री वीरवरसि तथा एक पुत्र तैलप-देव हुआ। वह वीरल-देवी बङ्गियाळवकी रानी हो गई। उस बङ्गियाळवकी छोटी बहिन माङ्गव्वरसि, और गङ्गवंशललाम पालय देवकी पुत्री केलय-व्वरसि तैलपदेवकी पत्नियों हो गई। इनमेंसे, माटेवि केलयव्वरसिके वीर-देव उत्पन्न हुआ। उसकी प्रशंसा। उसके छोटे भाई विश्व-विख्यात सिङ्गि-टेव और बम्म-देव थे। उस वीरदेवसे जव काडवकी रानी चट्टल-देवीकी छोटी बहिन वीरल-मादेवीसे विवाह हो गया, तब उसके वीर-मादेवी, विज्जल-देवी और अचल-देवी ये तीन स्त्रियों और थीं। इनमेंसे, वीर-महा-देवीकी उत्पत्तिका वर्णन करते हैं।

इक्ष्वाकु कुलके सूर्य, कान्यकुब्ज (कन्नौज) के अधीश्वर धनञ्जय नामके राजा थे, जिनकी पत्नी गान्धारी देवी थी। उनका पुत्र हरिश्चन्द्र हुआ, जिनकी ज्येष्ठ रानी रोहिणी देवी थी। उनके दो पुत्र राम और लक्ष्मण थे, जिनके अपर नाम दडिग और माधव थे। उनका वंश गङ्ग-वंश था। माधवकी प्रशंसा। उसके बड़े भाई दडिगकी प्रशंसा। माधवका पुत्र किरिय-माधव,

उसका	पुत्र	हरिवर्म्म,
”	”	विष्णुगोप;
”	”	तडङ्गालमाधव;

”	”	अविनीत;
”	”	दुर्विनीत,
”	”	मुष्कर
”	”	श्रीविक्रम
”	”	भूषिक्रम

उसका छोटा भाई राजा काम (या नृप-काम) था जिसने एक अर्थी (याचक) को गजका दान दिया था और इस कारणसे 'चागि'का नाम प्राप्त किया था।

उस नृप-कामका प्रपौत्र श्रीपुरुष था, इसका 'श्रीवल्लभ' अन्यर्थक नाम प्रसिद्ध था तथा यह गज-शासकका प्रणेता था। इसने विळ्ढे (या चिव्ढे) की लडाईंमें काञ्चीके युद्धप्रिय राजा काडुवेट्टिसे उमका पल्लव-छत्र छीन लिया था तथा उसके हाथसे 'पेम्मनडि' का नाम भी छीन लिया था। तब उसका पुत्र शिवमार-देव (सैगोट्ट) हुआ, वह वीरमार्तण्ड-देव नामसे भी प्रसिद्ध था। उसने 'शिवमारमत' नामसे एक गज-शासकका भी प्रणयन किया था। राजा विजयादित्य उमका छोटा भाई था। उसका पुत्र एरेयङ्ग था। उसका पुत्र राजमल्ल, उसका पुत्र मरुळ, उसका पुत्र वूतुग, उसका पुत्र एरेयप; उसका पुत्र नरसिग; उसके तीन नाम और भी प्रसिद्ध थे—वीर वेडेग, मनुजपति तथा राजमल्ल। उसका (नरसिगका) छोटा भाई कञ्चिय-गङ्ग था। उमका छोटा भाई वूतुग-वेम्मनडि था। यह कृष्ण-राजाकी वहिनका पति था। उसके पराक्रमकी प्रशंसा। इसका ज्येष्ठ पुत्र मरुळ-देव था। उसका छोटा भाई मारसिह देव था। इसका छोटा भाई राजमल्ल देव था, जिसे नोळम्बकुलान्तक, पल्लव मल्ल, और गुत्तिय-गङ्ग भी कहते थे। इसकी प्रशंसा। उसका छोटा भाई नीति-मार्ग था। उसके छोटे भाई राजा वासव और कञ्चल-देवीसे गोविन्दर-देव उत्पन्न हुआ था। उसके पराक्रमकी प्रशंसा। उसका छोटा भाई अरुमुळि-देव था।

अरुमुळि-देव और गावच्चरसिसे चट्टल, कञ्चल और राजविद्याधर उत्पन्न हुए थे। इनमेंसे चट्टल-देवी की शादी काडुवेट्टिसे,—जो तोण्डे-नाड् ४८००० का शासक तथा काञ्चीका अधिपति था—कर दी थी। कञ्चल

देवी, (जिसका दूसरा नाम वीर-महादेवी था) और वीर-देवसे ये पुत्र उत्पन्न हुए—तैल, गोरिगंग, राजा ओङ्गुग, और बम्म ।

इनमेंसे ज्येष्ठ पुत्र तैलप-देवने अपने भुज-बलसे शान्तरका मुकुट प्राप्त किया और भुजबल शान्तरके नामसे शान्तिसे राज्य किया । उसका नाम सर्वत्र प्रसिद्ध हो गया था । उसका छोटा भाई गोविन्दर-देव था । इसका अपर नाम नन्नि-शान्तर था । नन्नि-शान्तरके नामसे ही हुम्ने मुकुट धारण किया था । वह जिन-पादाराधक था, तथा चट्टल-देवि और राजकुमार ओङ्गुरस और बम्म देवके साथ शान्तिसे राज्य करता हुआ पोम्बुर्चमें था ।

चट्टल-देवीने अरुमुळि-देव, गावच्चरसि, वीरल देवी और राजादित्य देव-की स्वर्गयात्राके स्मारकके उपलक्ष्यमें उर्वी-तिलक नामसे प्रसिद्ध पञ्चवस-दिके बनानेका काम अपने हाथमे लिया ।

सर्व शास्त्रो और आगमोंमें पारङ्गत होनेसे सम्मानित, तपस्वी श्रीवि-जय-देव चट्टल-देवीके गुरु थे । उसका पिता राजा रक्तसंगंग था । काञ्ची-अधिपति (काङ्गुवेट्टि) उसका पति था । गोरिग उसका पुत्र था । तालाव, कुआँ, वसदि, मन्दिर, नाली, पवित्र ज्ञानागार, श (स) व्र, कुक्ष इत्यादि प्रसिद्ध धर्म एवं पुण्यके कार्योंकी चट्टल-देवीने सम्पन्न किया था ।

उत्तर-मधुराके अधिपति गोरिगकी माने बहुत उत्सुकतासे दुनियामें अग्रगण्य स्थान प्राप्त करनेवाले पञ्चकूट जिनमन्दिरको बनवाया । क्षितिज और आकाश दोनोंसे वात करनेवाले ऐसे एक नये तालाव और मन्दिरका उसने निर्माण किया । इस तरह शान्तरकी मां प्रसिद्ध चट्टलदेवीने बहुत यश प्राप्त किया ।

श्रीविजय भट्टारक त्रियङ्गुळिके निद्रुम्बरे-तीर्थके अरुळलान्वयके नन्दि-गणके अध्यक्ष थे । इनके गृहस्थ शिष्य चट्टल-देवी और नन्नि शान्तर थे । किसी शुभदिन, उनके शिष्य श्रेयान्सपण्डितने पञ्च-वसदिके नींवका पत्थर डाला ।

श्रेयांसके आचार्योंकी परम्पराका वर्णन—वर्द्धमान-स्वामीके तीर्थमें त्रिकालङ्ग गौतम-गणधर हुए । उनके बाद कोण्डकुन्दाचार्य हुए, जो जमीनसे चार इञ्च ऊँचे चलते थे । कुछ समय बाद भद्रवाहु स्वामी हुए, जिनके

वाद कलि-कालका अवतार (उत्पत्ति) हुआ और विभिन्न गणोंकी उत्पत्ति हुई ।

उनमेंसे कलि-कालगणधर, शास्त्र-प्रणेता समन्तभद्र-स्वामी हुए । उनकी शिष्य-परम्परामें शिवकौट्याचार्य हुए; उनके बाद वरदत्ताचार्य; उनके बाद तत्त्वार्थसूत्रके प्रणेता आर्य-देव, उनके बाद सिंहनन्दाचार्य जो गङ्ग-राज्यके स्थापक थे । उनके बाद एकसन्धि सुमति-भट्टारक हुए । इसके बाद अकलङ्क देव (वादिर्सिंह) हुए । पुन क्रमशः वज्रनन्दाचार्य, पूज्यपाद-स्वामी, श्रीपाल-भट्टारक, पुन. अभिनन्दनाचार्य; कवि परमेश्वि-स्वामी, त्रैविद्य देव, अनन्तवीर्य भट्टारक, जिन्होंने अकलङ्क-सूत्रकी वृत्ति लिखी थी । इनके बाद कुमारसेन-देव; उनके बाद मौलि देव, उनके बाद विमलचन्द्र-भट्टारक, उनके शिष्य कनकसेन-भट्टारक थे जो राजा राजमल्लके गुरु थे । उनके शिष्य थे दयापाल जिन्होंने 'शब्दानुशासन' की 'प्रक्रिया' रूप-सिद्धि लिखी है—तथा पुष्पसेन सिद्धान्त-देव । वादिराज-देव 'पद्-तर्क-षण्मुख,' 'जगदेकमल्ल वादी' थे । श्रीविजय-देव रक्स-गङ्ग-पेर्मानदि, चट्टल-देवि, बीर-देव तथा नञ्जि-शान्तरके गुरु थे । विद्वानोंको वे शास्त्र देते थे तथा जो शास्त्रका महत्त्व नहीं समझते थे उन्हें उनका महत्त्व समझाते थे, इसी कारणसे उनका नाम श्रीविजय था तथा उन्हें 'पण्डित-पारिजात' भी कहते थे ।

उपर्युक्त श्रीविजय-भट्टारक और उनके शिष्य चोल्टट **, शान्त-देव, गुणसेन-देव, दयापाल-देव, कमलभद्र देव, अजितसेन-पण्डित-देव तथा श्रेयान्त-पण्डित-देव । इनने (उक्त मितिको) उर्वी-तिलक नामसे प्रसिद्ध पञ्चकूट-बसदिकी स्थापना की । बसदिकी मरम्मत, ऋषि-वर्गके आहार तथा पूजाके प्रबन्धके लिये, नञ्जि-शान्तरदेव, ओडुमरस, बम्म-देव, तथा चट्टल-देवीने,—आचार्य कमलभद्र-देवके पाद-प्रक्षालन-पूर्वक (उक्त) गौं व दिये ।

शेष भाग बहुत घिसा हुआ है ।]

२१४

हुम्मच—संस्कृत तथा कन्नड

[शक ९९९=१०७७ ई०]

[हुम्मचके, तोरण-वागिलके दक्षिणी खम्भेपर]

(पूर्वमुख) श्रीमत्परमगभीरव्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनायस्य शासनं जिनशासनम् ॥

('स्वस्ति' से लेकर पाँचवी पंक्ति 'महा मण्डलेश्वरं' तक का लेख पूर्वके शि० ले० नं० २१३ की पंक्ति १ से ६ तक से मिलता है ।)

एलगे चेन्नने वीरुगं वपुविनि भावोद्भव तक्कनेन्त् ।

एलगे वीरने वीरुगं विरुदिनि मीमोपमं वाप्पु मत्त् ।

एलगो टानिये वीरुग पिरियना-कर्णाख्यनिन्दकुमेन्त् ।

एलगे वीरल-देवि नोन्तळवनोळ् कूडिर्प्य सौभाग्यमम् ॥

अन्तेनिसिद वीर-शान्तर-देवगं वीरल-महादेविग ॥

दशरयन तनेयरन्दमन् ।

एओदिरे पोत्तिर्द तैलु गोगिगनुम् ।

कुमुमाखनेनिसु वोडुग-

वसुवेशनुमन्तु वोम्मनु ननयरदार् ॥

अवरोळ्यजनराति-सैन्य-शोषण-वाडवानळनुमाश्रित-कल्प-वृक्षनु-
मेनेसि परायत्तमाद देशम तनगेकायत्त माडि सान्तर-वट्टमं ताब्दि ।

निज-भुज-वळदिन्दरि-भू- ।

भुजरं कोन्दोत्तिकोण्डु देशमनन्ता- ।

विजिगीषु तैल-भूपम् ।

भुजवळ-शान्तरनेनिप्य पेसरं पळेदम् ॥

आतननुजं गोविन्दर-देवननेक-राज्य-कण्टकरं निष्कण्टकं माडि

सम्यक्त्व-चूडामणियु जगदेक-दानियुं एनिसि सान्तळिगो-सायिरमुमनेक-
छत्र ष्छायेयिन्दमाळ्हु ननि-सान्तरनेम्बेडनेय पेसरं पडेदम् ॥

(दक्षिणमुख) ख्यातियनेनं पेळ्हुदो ।

बूतुग-पैम्माडि पडेद महिमोनतियम् ।

भूतळदोळ् शान्तरनुप- ।

मातीन चक्रि कुडळ् पडेदनमोव ॥

अर्द्ध-पथमिदिर्गे वन्दु त- ।

दद्धासनमेनिप लोह-विष्टरदोळ् सं- ।

वर्द्धिन-सान्तरनेनिप ध- ।

नुर्दरन चक्रवर्त्ति निलिसिदनेसेयल् ॥

अन्तातन तम्भनोडुशनशेष-धरा-पळयम कर-वळयम ताळ्हुवन्ते

लीलेयि ताळ्दि विक्रम-सान्तरनेम्ब पेसर पडेद ॥

खस्ति श्री-रुसदुप्र-पश-तिलकः श्री-चीर-देवात्मजः

दृप्यद्-वैरि-निकाय-दर्प-दळन-प्रादुर्भवद्-विक्रमः ।

सम्पूर्णेन्दु-करावदात-सु-यशो-व्याल्लिप्त-दिक-भित्तिकः

श्रीमान् विक्रम-शान्तरो विजयते लक्ष्मी-वधू-वल्लभः ॥

आतननुज ॥

पर-नरप-शिरः-कुञ्जो- ।

त्कर-करि-कपळा-पयोधर-द्वय-हारम् ।

स्मर-मूर्त्ति निखिल-दिग्-मुख- ।

परिचुम्बित-कीर्ति वर्म्म-देव कुमार ॥

अन्तेनिसिदवर तायि ॥

जनकं रकस-गङ्ग-भूमिपति काञ्ची-नाथनात्म-प्रियम् ।

विनुतर् श्रीविजयर् सु-सि (शि) क्षकरेनल् विद्विष्ट-भूपाळ्तं-।
हन-विक्रान्त-यशो-विळास-भुज-खळ्गोळासि ता गोगि नन्- ।
दनना-चट्टल-देविगेन्दोडे यशश्रीगिन्तु मुन्नोन्तरार् ॥

अन्तु समस्त-गुण-सन्दोहक धर्मक जन्म-भूमियेनिसिद चट्टल-देवियु
भुजवळ-शान्तर-देवतु नन्नि-शान्तर-देवतु विक्रम-शान्तर-देवतु
बर्म-देवतु पोम्बुचर्चदोळ् सुखदिं राज्य गेय्युत्तमिहुं धर्म प्रागेव
चिन्तेदेम्ब वाक्यार्थम भाविसि तमगे श्रेयो-निवन्धनार्थ उर्वी-तिलक-
मेनिसिद पञ्च-वसदियं मापुद्योगमनेत्ति कोण्डु तामेळरु मोडेयदेवर गुड
गळप्प कारणदिन्द द्रविळ-सघद नन्दि-गणदरुडुळान्वयद श्रीविजय-
देवर नामोच्चारण गेय्दवर शिष्यरु श्रेयान्स-पण्डितरिन्दुर्वी-तिलक-
मेनिसिद पञ्च-वसदिगे सु(शु)म-मुहूर्तदोळाचन्द्रार्क-स्थायियप्पन्तुवत-
मप्येडेयोळ् केसर्कळ्ळिसिदरु अवराचार्यावळियेन्तेने । श्री-वर्द्धमान-
स्वामिगळ तीर्थ प्रवर्त्तिसे सप्तर्द्धिसम्पन्नरप्प गौतमर् गणधररेने
त्रिज्ञानिगळप्प मुनिगळ् पलवरु सले अवरिं चतुरडुळ-ऋद्धि-प्राप्तरेनिसिद
कोण्डकुन्दाचार्यर् श्रुतकेवळिगळेनिसिद भद्रवाहुस्वामिगळ् मोद-
लागि पलम्बराचार्यर् पोदिम्बळिय समन्तभद्र-स्वामिगळुदयिसिदरवर-
न्चयदोळ् गङ्ग-राज्यम माडिद सिंहनन्द्याचार्यरवरिं अकलङ्कदेवरवरि
रायराचमल्लन गुरुगळप्प चादिराज-देवरेनिसिद कनकसेन-देवरुमवर-
शिष्यरोडेय-देवरु रूपसिद्विय माडिद दयापाळ-देवरु पुष्पसेन-
सिद्धान्त-देवरु पट्-तर्क-पण्मुखरु जगदेकमल्ल-वादिद्युमेनिसिद चादि-
राज-देवरवरिं कमळभद्र-देवरवरिम्

एकास्य. चतुराननो गणपतिर्बैभाननो भारती

न स्त्री सर्व्व-कलाधरोऽज्ञाधरः कामान्तको नेश्वरः ।

विद्याना परिनिष्ठित-क्षिति-तळं तन्मूळमालम्बनम्
चित्ते तेऽजितसेन-देव विदुषा वृत्त विचित्रीयते ॥

अन्तेनिसिद शब्द-चतुर्मुखं ताकिं-चक्रवर्त्तियु वादीभसिंह-
नुमेनिसिदजितसेन-देवर सह-धर्मिगळु

दुरित-कुळ-प्रध्वस ।

स्मर-माधत्-कुम्भ-कुम्भदळन-मृगेन्द्रम् ।

वर-त्राग्-त्रनिता-क्रान्तम् ।

धरेयोळ्-नेगर्दी-कुमारसेन-देव-मुनीन्द्रम् ॥

अन्तेनिसिद कुमारसेन-देवरि वैद्य-गज-केसरियेनिसिद श्रेयान्स-देव-
रन्तवरायुर्वी-नितिक्रमेनिसिद पञ्च-वसदियना- शक्र-वर्षद९९९नेय
पिङ्गळ-संवत्सरद ज्येष्ठ-शुद्ध-विदिगे-चृहस्पतिवारदन्दु प्रतिष्ठेय
माडिया-वसदिय खण्ड-स्फुटित-जीर्णोद्धारणक्रमलिर्द ऋषि-समुदाय-
दाहार-दानक पूजा-विधानक्रमगे समस्त-गुण-मणि-गणविराजमाने-
यरूप श्रीमतु-चट्टल-देवियरुमन्तु तम्म नात्वरुमिर्हु कमळभद्र-देवर
काल कर्च्चि धारा-पूर्वकमासम्बन्धिय समुदाय-मुख्यमागे भुजवळशान्त-
रदेवं कोइ ग्रामङ्गळ (जैसाकि कहा गया हे) मत्तमातननुज नन्नि-
शान्तर-देवं सुखदि राज्य गेय्युत्तमिर्हु पोम्बुर्च-नाडोळगण हादिगारु
अदर कालहळ्ळि हल्लवनहळ्ळियु विडेयुम कोइ अन्तातन तम्म विक्रम
शान्तर-देव राज्य गेयुत्तमिर्हु पोम्बुर्च-नाडोळगण हालन्दूर कळूर-नाडोळ-
गण केरेगोड समीपद मडम्बळ्ळियुम कोइरिन्ती-वसदिय वृत्ति-एल्लवकं
देवि-देरे अडे-गर्द्धु काणिके सेसे विर्हु वीय-मोदलागे कुमार-गद्याण किरु-
देरे किरु-कुलायं साम्य सळगे मोदलागि पेरवुं तेरेगळेम्ब सर्व-त्राधा-
परिहारवं माडिदर । (यहाँ सीमाएँ तथा हमेशाके अन्तितम वाक्यावयव
आते हे) ।

[जिनशासनकी प्रशंसा । जिस समय, (उन्हीं चालुक्य पदों सहित), त्रिभुवनमल्ल-देवका विजयी राज्य चारों ओर प्रवर्द्धमान था—और तत्पादप-शोपजीवी (ऊपरके शिलालेख न० २१३ में जो उपाधियाँ नलिशान्तरकी हैं, उन्हींके सहित) महामण्डलेश्वर वीरुग या वीर शान्तर देव था । उसकी प्रशंसा । उसकी रानी वीरल-महादेवी थी । उनके चार लड़के—तैल, गोविगक, ओडुग, और वम्म—थे । इनमेसे तैलका नाम भुजवल-शान्तर, गोविगक या गोविन्दर-देवका नलि शान्तर तथा ओडुगका विक्रम-शान्तर प्रसिद्ध हुआ । सबसे छोटे भाईका नाम कुमार वम्म-देव ही रहा । इनकी माँ चट्टल देवी (वीरल महादेवी) थी । उसके पिता राजा रक्स-गज्ज, पति काञ्ची-अधिपति, गुरु श्रीविजय, और पुत्र गोविग (नलि-शान्तर) थे ।

इस प्रकार, जिस समय सब धार्मिक गुणों और पवित्रताकी जन्मभूमि चट्टलदेवी, भुजवल शान्तर-देव, नलि-शान्तर-देव, विक्रम-शान्तर-देव और वम्मदेव पोम्बुञ्चमे थे और शान्तिसे राज्य कर रहे थे 'धर्म सर्व प्रथम चिन्तनीय है', इसका खयाल करके, धर्म उपाजन करनेके लिये, उन्होने 'उर्वी तिलक' नामकी पञ्च बसदिके निर्माणका कार्य अपने हाथमें लिया । ये सब ओडेय-देवके (श्रेयान्त-पण्डितके शब्दोंमें जो श्रीविजय-देवका नामान्तर है) गृहस्थशिष्य थे । उन सबने किसी शुभ दिन पञ्चवसदिकी नीव डाली ।

श्रेयान्तदेवके आचार्योंकी परम्परा—वर्द्धमान स्वामीके तीर्थमें गौतम गणधर हुए । उनके पश्चात् बहुतसे त्रिकालर मुनियोंके होनेके बाद क्रमशः कोण्डकुन्दाचार्य, 'श्रुतकेवली' भद्रबाहु स्वामी, बहुत-से आचार्योंके व्यतीत होनेके बाद, समन्तभद्र स्वामी, सिंहनन्द्याचार्य, अकलङ्क-देव, कनकसेन देव (जो वादिराज नामसे भी प्रसिद्ध थे), ओडेयदेव (श्रीविजयदेव जिनका ऊपर नाम दिया है), दयापाल, पुष्पसेन सिद्धान्तदेव, वादिराज-देव (जो 'षट्-तर्क-षण्मुख' तथा 'जगदेकमल्ल-घादि' नामसे भी प्रसिद्ध थे), कमलभद्र-देव, अजितसेन देव (प्रशंसासहित) हुए । और अजितसेन देवके सहधर्मी शब्द-चतुर्मुख, तार्किक-चक्रवर्ती वादीमसिंह हुए । तत्पश्चात् कुमारसेनदेव मुनीन्द्र । इनके बाद श्रेयान्तदेव हुए ।

(उक्त मितिको) पञ्चवसतिकी नींव डालकर, चट्टल देवी और चारों आड़योँकी द्रपस्थितिके, कमलभद्रदेवके पैर धोकर, सुजयल-शान्तर-देवने (जैसा कि ऊपर कहा गया है) गाँव और भूमियोँ दीं। इसीतरह उसके छोटे भाई नखि-शान्तर देवने तथा इसके छोटे भाई विक्रम शान्तरदेवने (जैसा कि लेखमें बताया गया है) गाँव और भूमियोँ दानमें दीं और बसदिके इन दानोंको (जिलकी सूची लेख में दी हुई है) उन्होंने सभी करोंमें मुक्त कर दिया। सीमायें, शाप और आशीर्वाचन।]

[EC, VIII, Nagar tl., n° 36]

२१५

हुम्मच्च—संस्कृत तथा कन्नड़

[विना काल-सिद्धेशका; पर लगभग १०७७ ई० का]

[हुम्मच्चमें, मानसम्मके ऊपर, दक्षिणकी तरफ]

श्रीमत्परमगमीरस्याद्वादामोदराज्यनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य जामन जिन शासनम् ॥

नमो अर्हते ॥

स्यस्ति-श्री रमणी-विनोद-भवन यस्योद्भू(द्वय)-वक्षः-स्थलम्

वाग्-देवी-वनिता-विळास-निळयो यस्याननाम्भोरुहम् ।

वीर-श्री-युज्जतेरभूत् कुञ्ज-गृह यद्-वाहु-दण्ड-द्वयम्

यत्कीर्त्तिशरदिन्दु-ज्ञान्ति-विमला पारेदिशं वर्त्तते ॥

साशाहु-कुञ्ज-प्रमुर्निज-मुज-प्रोद्गासि-जौक्षेपक-

प्रव्यस्तीकन-सूरि-गर्व-वृत्तद्विद्वेषि-भूपाळकः ।

दीनानाय-जना यदीय-सु-महा-दानात् परेष्ट-प्रदम्

स श्रीनान् पुषि नखि-शान्तर इति खनातो भृगं भ्राजते ॥

विभाति यस्याप्रतिमः प्रतापः नानोगतो (१) वैरि-महीपतीनाम् ।

सन्तापयत्येव तदन्तरङ्गम् श्रीमानसावोद्भुग-मण्डलेजः ॥

कुमार-चूडामणिरेप भाति श्री-ब्रह्म-देवो गुणवाननिन्द्यः ।

श्री-जैन-पादाम्बुज-गुग्म-भृङ्गः यशोऽभिविष्टयाखिल-भूमि-भागः ॥

श्रीमद्-राक्षस-गङ्ग-मण्डलपतिः श्री-गङ्ग-नारायणः

दोर-दण्ड-द्वय-वीर्य-भीषित-रिपुः श्री-गङ्ग-पेम्मानडिः ।

स्याद् यस्या जनक्रो मनो निरुपमो विख्यात-कीर्ति-ध्वजः

श्रीमच्चङ्गल-देवि अत्र सुवने ख्याता वरीवृत्तते ॥

दृष्टे यत्र महोत्सवैक-निलये पश्यजनाना मनः

पुण्यं सञ्चिनुते-तरामतितरामहो हरस्यलम् ।

पूजाभिः पृथुभिः पुनः प्रतिदिनं वाभाति योऽयं सदा

श्रीमत्पञ्च-जिनालयो निरुपमो भक्त्या यथा निर्मितः ॥

संसाराम्भोधिमव्यन् निरुपम-गुण-सद्-रत्न-भेदाधिवासम् •

निर्वाण-द्वीपमाप्तु प्रतियत-मनसा पण्डिताना मुनीनां ।

कृत्वा श्रीमज्जिनेन्द्रालय-विलसित-नाचं व्यघाद् यक्षिणामन्-

मानस्तम्भोल्लसत्-कूर्वरमपि च वनान्यर्थि-सार्थाय दत्त्वा ॥

आहाराभय-भेषज्य-शाल्म-दानैरनिरन्तरैः ।

श्रीमच्चङ्गल-देवीयं वाभाति सुवन-स्तुता ॥

रोहिणी चेलिनी सीता देवता च प्रमावती ।

श्रूयन्ते वार्त्तया सेय दृश्यन्ते विमलैर्गुणैः ॥

श्रीमद्भुविळ-संघेऽस्मिन् नन्दिसंघेऽस्त्यरुङ्गळः ।

अन्वयो भाति योऽशेष-शाल्म-वाराशि-पारगैः ॥

यद्-वाग्-वज्राभिघातेन प्रवादि-मद-भूमृतः ।

सञ्चूर्णितास्तु भाति स्म हेमसेनो महामुनिः ॥

शब्दानुशासनस्योच्चैर् रूपसिद्धिर्महात्मना ।
 कृता येन स वाभाति दयापालो मुनीश्वरः ॥
 श्री-पुष्पसेन-सिद्धान्त-देव-त्रक्त्रेन्दु-सङ्गमात् ॥
 जातावभाति जैनीयं सर्व्व-शुक्ला सरस्वती ॥
 नम्रावनीश-नौलीद्ध-माला-मणि-गणार्चितम् ।
 यस्य पादाम्बुजं भातं भात श्रीविजयो गुरुः ॥
 सदसि यदकलङ्कः कीर्त्तने धर्मकीर्त्तिं ।
 वचसि सुरपुरोधा न्यायवादेऽक्षपादः ।
 इति समय-गुरुणामेकतस्संगतानाम्
 प्रतिनिधिरिव देवो राजते वादिराजः ॥
 सांख्यागमाम्बुधर-धूनन-चण्ड-वायुः
 • बौद्धागमाम्बुनिधि-शोपण-वाडवाग्निः ।
 जैनागमाम्बुनिधि-वर्द्धन-चन्द्र-रोचिः
 जीयादसावजितसेन-मुनीन्द्र-मुत्स्यः ॥
 श्रेयांस-पण्डितर् गत- ।
 मायादि-कषायरमळ-जिन-मत-सारर् ।
 न्याय-परर् रिसित-कमळ- ।
 श्री-युत-द-न-कुन्द-रुन्द्र-कीर्त्ति-पताकह् ॥
 नमो जिनाय ॥

[जिन-शासनकी प्रशंसा । नलि-शान्तरके यशकी प्रशंसा । राजा ओडुग,
 ब्रह्म(बम्म-)देव, और चट्टल-देवीकी प्रशंसा ।

हेमसेन-मुनि, शब्दानुशासनके लिये 'रूपसिद्धि' बनानेवाले दयापाल
 मुनीश्वर, पुष्पसेन सिद्धान्तदेव, श्रीविजय, इन सबका प्रशंसापूर्वक उल्लेख ।

चादिराजदेवकी प्रशंसा । क्षजितमेन मुनीन्द्रकी प्रशंसा । त्रेयांसपण्डित-
की प्रशंसा ।]

नोट.—इस शिलालेखमें समय (काल) का कोई निर्देश नहीं है और न
किसी कार्य या दानका इन्में उल्लेख है । यह लेख शुद्ध प्रशंसात्मक है ।

[EC, VIII Nrgar, 11, n° 39.]

२१६

हुम्मच—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक ९९९=१०७७ ई०]

(पश्चिम मुख)

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

[तीसरी पंक्तिमें 'स्वस्ति'से लेकर १७ वीं पंक्तिमें "कृडिर्ष-सौभाग्यम्"
तक शि० ले० न. २१४ की ११ से ३१ की पंक्तितक मिलता है ।]

एनिसिद् वीर-त्रेयनप्र-तनयम् ॥]

अरि-विरुद्ध-भूमजर्कळ ।

विरुद्धं वेरिन्दे कर्त्तुं वीर-श्रीयोळ् ।

नेरेददट्टपमातीतम् ।

धरेगेने भुजवळने ज्ञान्तरान्वय-तिलकम् ॥

विरुद्ध-रिपु-नृपर शिरमम् ।

भरदिं सेण्डाडि वीर-लन्नि यनोल्लिसळ् ।

नरपतिगळारो धुरदोळ् ।

निरुत निन्नन्ते नन्नि-शान्तर-नृपति ॥

उत्तर-मधुरावीश्वरम् ।

उत्तम-गुणानुप्रवश-तिलकं विवुध- ।

पर-वळ-कृतान्त । विरट-गण्डर यदिसुत्र सामन्तर गण्ड ।
गण्ड । समर-प्रचण्ड । नुडिदन्ते गण्ड ।पराङ्गना-
 पुत्र । दायिगमुरारि विनेप्रोपकारि । वल्लभ दुष्टाश्व-मल्ल भीतर
 कोल्ल हडिय माक्कोल्लुत्र दल्लुम वेङ्कोल्लुत्रं । इडगूर-देवी-खव्ववर-प्रसाद ।
 मृगमदामोड । यत्तिल-वन-विकासचन्द्र सदानन्दभोग-नागेन्द्र होयस्ल-
 देव-पादाराधकम् । पर-वळ-साधकम् । नीति-चाणुक्यं एक-वाक्य वैरि-
 मनो-भङ्ग । अय्यन सिद्ध दायिग-दुष्टर गण्ड । तप्पे तप्पुव । वीरदिन्दो-
 ष्पुव । सामन्तजगदल । मलेय.....दुळिज्ज । मलेगे ...आने । येत्तिद
 मोनेगे मुन्तु केड काळ्मके पिन्तु लड्दिळम् । चतुस्समयसमुह-
 रणनप्प श्रीमन् महा-सामन्त-माचाय्यनन्वयवेन्तेदडे ।

वेळुगेरेय माचेय-नायक-

ननुपम-गुण-रत्ने माकल-देविय दान-

व्रतमेसेये चैल्य-नोहमु-

मनर्त्तियोळोप्पे साळ्कुमा-पड्डणदोळ् ॥

[स]रसतिगे रतिगे सीतेगे ।

सरि दोरेयेनिसिद मारेय-नायकन ।

सत्तिय धरेय वण्णिसुवुट्ट ।

निरन्तर नेगळ्ळ वम्मियच्चवेय पेम्पन् ॥

सरणेने कायल्ल वल्लम् ।

नेरेदत्तियोळीय-वल्लनाश्रित-जनकम् ।

पर-वळ वैरि-भूपर ।

कोल्ल वल्लं वेळुगेरेय वल्लनिम्मडि-वल्ल ॥

रुयुमिणि वेळगिदरुन्वति ।

मिगिलेनिसिद सीतियेम्ब सतियरोळीगळ् ।

समनेनिप सतियेनिसिद ।

सति वल्लरे वल्लयनद्धाङ्गि केतवे देवियक्कं वरेयोळ् ॥

श्रीमत्तु सावन्त-इल्लि-देवनद्धाङ्गि केतवे-नायकितियरु देवियक्क-
नायकितियरुमवर सुपुत्र सुय्य-देव पैरुमाळु-देव सावन्त-मारय्य
माचि-देवतु सुख-सङ्गता(था)-विनोददिं राज्य गेय्युत्तिरे ॥

सादिसिद मोक्ष-लक्ष्मिय- ।

नादरदिन्द भयरन्न-दान-विनोदम् ।

मेदिनियोळ्पे माडुव ।

सासल-वम्मय्य भव्य-तिलक वरेयोळ्

भव्य-कुल-तिलकनोप्पुव ।

अप्रज माणिक्य चाकि-सेट्टियरुजम् ।

एरकाट्टि-सेट्टियेन्ती- ।

त्रै-पुरुपर् नेगळ्द दान-चिन्तामणिगळ् ॥

तर्क-व्याकरणदोळम् । वखाणगे वल्ल त्कट्ट- ..क्तिगळिम् ।

मिक्कदतिजाण धर्- । म्मक्कर्थिग नेगळ्दिदट्टे माचि-सेट्टिये धन्यम् ॥

आ-माचि-सेट्टियनुजं । भाविसे श्री-जैन-वर्म्म-पुर-कुजदत्तज्जार

स्समनेनिसल्लुक्काइ परि । यीव-गुण काळि-सेट्टियोरेग दोरेगम् ॥

कालि-काल-करुप-वृक्षमन् । अलसदे नी वेडु काळि-सेट्टिय सुतन

पल्लु पोन्नुं वल्लम । सले यीयल्ल वल्ल मान्यना-वम्मय्यम् ॥

आश्रित-जन-चिन्तामणि । विश्रुत-श्रीर्त्ताशननळ-त्रोधावीसं (श)

श्री-श्रेयास-जिनेशं । वैश्रावण-सेट्टिगीगे सुख-सन्पदमम् ॥

नुडिदेरु-नुडिववनल्लं । कडु.....इल्ल आश्रित-जनकन्-

तेडेयुडुगदीव-दान- । व्रतियं कर्पूर-सेट्टियं वेडु वुदा ॥

कीर्त्ति-श्री-रणन-वोलु ।

मूर्त्तियोळमिनव-मतोजन नम् ।

कूर्त्ताव मसण-सेट्टिगे ।

मार्त्तण्डन मग नळ- * * * * * नृप लवे ॥

* * * * * मनुजर्गम् ।

मरे-वोक्करनेट्टि काव वन्धु-जनक्कम् ।

नेरे पोलत कल्प-तरुवम् ।

नेरे वण्णिपुदेये काचि-सेट्टियम् * * * * * ॥

गणवर-भूपनन्वय-शिखामणि गोत्र-पवित्रन-द्विपम्

गुण-गण-नाथ गुण्णिपन * * * * * पेम्भिन मेरु वोन्द ।

अगणित-त्राव सत्यद तवर्मने मानव-वन्धनेन्दोडिन् ।

एणे * * * * * हट्टणदोळोप्पुव माणिकनन्दि-देवरोळ् ॥

स्वस्ति स(श)क-वरिस-सायिरद कालयुक्त-संवत्सरं प्रवर्त्तिसे
नखरजिनालयके विट्ट भूमि-(यहाँ दानकी विगत जाती हैं) आ-पट्टण-
दळ नडव देव-दाय हत्तु हेरिङ्गे हाग देवरिगे सोडरेण्णेगे गाण १
(हमेशाके शापात्मक वाक्य) श्री-मूळ-सवडेसिय-गणपोस्तक-गच्छ-
कोण्डकुन्दान्वयद श्रीमतु नागचन्द्र-चान्द्रायण-देवर-शिष्य रुण्णि-
कच्छगोण्डि-देवरु मदवळिगे वोप्पवे मगळु काचवे मळ्ळवे मादवे
माचवे बालचन्द्र-देवरु । सेट्टिय हल्लिय मळ्ळि-सेट्टि चिकसेट्टि तम्म *
सेट्टिगे विट्ट भूमि जकसमुददल्लि सलगे ५

* रोदद हलोजन मग वीरोज ई-शासनव होयिद ॥

* यह पंक्ति पत्थरके सिरेपर है ।

[जिनशामनकी प्रशंसा ।

जिस समय, (उन्हीं चालुक्य पदों सहित) भूलोकमल्ल सोमेश्वर-देव-का विजयी राज्य प्रवर्द्धमान था.—

त्रिभुवनमल्ल प्रेरयङ्ग-होरसल-देव और एचल-देवीके कृलमें उत्पन्न,— स्वस्ति । जब (अपने पदों सहित) वीर-बल्लाल-देव पृथ्वीका शासन कर रहे थे,—

तत्पादपञ्चोपजीवी, महा-सामन्त गण्डरादित्य और हुगिगयव्वे नायकित्तिके सामन्त सुवच्य, मातच्य, और वृवच्य उत्पन्न हुए थे ।

महा-सामन्त माचच्यकी प्रशंसा । उसकी कुछ उपाधियाँ । माचच्यकी उत्पत्तिका वर्णन । जिस समय सामन्त बल्लि-देव (माचच्य) अपनी दोनों स्त्रियों और चार लडकों सहित शान्ति और सुखसे राज्य कर रहा था;— मासल वम्मच्य और उसके दो लडकों माणिक्य और जाकि-सेट्टिका उल्लेख । माचि-सेट्टि और उसके लडके कालि-सेट्टि, फिर उसके लडके वम्मच्यका वर्णन । माणिकनन्दि-देवका उल्लेख । (उक्त मिति को) नखर जिनालय-के लिये (उक्त) भूमियाँ, दस गट्टोंका दाम, एक कोल्हू दानमें दिये गये थे ।

श्री-मूलसव, देशिय-गण, पोस्तक-गच्छ, तथा कोण्डकृन्दान्वयके नाग-चन्द्र-चान्द्रायणदेवके शिष्य रणिकच्छगोण्डिदेव थे, उनकी पत्नी बोप्पवे, चचे काचवे, मल्लवे, मादवे, माचवे और बालचन्द्रदेव थे । कुछ सेट्टियोंने और भी कुछ भूमियाँ दीं । रोद हलोजके पुत्र वीरोजने यह शासन लिखा ।]

[LC, XII, Tiptur tl, n° 101]

१ ऊपर जो १०७८ ई० काल दिया हुआ है, वह विनयादित्यके कालका है । उसके लडके बज्रालदेवका (११०१-११०४ ई०) नहीं, और न भूलोकमल्ल (११२६-११३८ ई०) का ।

दि० २१

२१९

तट्टेकेरे—सत्कृत तथा कन्नड—भद्र

[शक १००१=१०७९ ई०]

[तट्टेकेरे (शिमोगा परगना)मे, रामेश्वर मन्दिरके सामनेके पापाणपर]
 स्वस्ति सक-वर्ष १००१ नेय क्रोधन-संवत्सरद ज्येष्ठ-चहुल-
 चट्टि-बहुवार शासन निन्दुदु

श्रीमत्-परम-गभीर-स्याद्वादादामोघ-लाञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिन-शासनम् ॥

नमो वीतरागाय स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाराजा-
 धिराज परमेश्वर परम-भट्टारक सत्याश्रय निष्क चालुक्याभरणं श्रीमत्-
 त्रिभुवनमल्ल-देवर कल्याणद-नेलवीडिनोल् सुखदि राज्य गेय्युत्तमि .

जीयात् समस्त-ककुभान्तर-वर्ति-कीर्तिद

इक्ष्वाकु-वंश-कुल-वारिधि-वर्द्धनेन्दुः ।

कैलाश-शैल-जिन-धर्म-सु-रक्षणार्थम्

भागीरथी-वि ... तो द्वितीयः ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाधीश्वरेक्ष्वाकु-वंग-कुल-गगन-गभस्तिमालिनी परा-
 क्रमाक्रान्त-कन्याकुब्जाधीश्वर-शिरो..... .. लि-मुखो पार्थिव-
 पार्थः । समर-केलि-धनजयो धनञ्जयः । तस्य वल्लभा गान्धारि-देवी
 तत्सुतो हरिश्चन्द्रः । रोहि . दडिग-माधवापरनामधेयः । आ-
 गङ्गान्वयदरसुगळेलेवेळ्गेपाडिबदचन्द्रनन्तुदितोदितवागि पल . ज्यं
 गेय्युत्तिरे तदन्वयाम्बर-द्युमणियु गङ्ग-चूडामणियुमेनिसिद भुज-बल गंग-
 पेर्माडि ...

गुणि वेळ्वर्ति-जनके दान-मणि दोर-गव्वोद्धताध्मात-निर्-

घृण-त्रैरिप्रकरके वल्-कणि कळा-विन्यास-वारासि सत्-

प ... वेष्टित-यगं विक्रान्त-तुङ्ग नृपा- ।

प्रणियाद कलि-गंग-देवन सुत श्री-वर्म-भूपाळकम् ॥

कन्द ॥ विं वाहा- ।

परिघदिनरि-नृपरनलेटु सेले-योळ् वोधुर

व्वरे वणिसलेसेटं गं- । गर-भीमं लोकदोळो भुज-वळ- ...ग ॥

...ळियेनिसिद पेर्माडि-वर्म-देवङ्गं पाण्ड्य-कुळोद्धवेयेनिसिद

गङ्ग-महा-देवियर्गं रत्नत्रयं पुट्टवन्ते ...

वृ ॥ श्री-मारसिंग-नवनी-तळ-रक्ष-पाळम् ।

कामोपमं भगीरयान्वय-रत्न-दीपम् ।

भीम-प्रतापनहिता ।

सामान्यनल्लनुदितोदितनेकवाक्यम् ॥

आतनप्पुमापुर्णु लोक-विख्यातमाद तदनन्तरदोळ् । स्वस्ति सत्य
 .. वर्म-धर्म-महाराजाधिराज परमेश्वर कुवळाल-पुर-वरेश्वरम् ।
 नन्दगिरि-नाथं राज-मान्धातम् । पद्मावती-ळ्व-त्र-प्र... चकि-
 लामोदन् । असती-सहोदर वीर-वृकोदरम् । सम्यक्त्व-रत्नाकरं जिनपाद-
 शेखरम् । मद-गजेन्द्र-लाञ्छनम् चतुर-वि ... ग-गङ्गेयं शौचाञ्जनेयं ।
 गङ्ग-कुळ-कमळ-मार्त्तण्डम् दुङ्गर-गण्डम् । मन्निय-गङ्गम् जयदुत्तरगं ।
 श्रीमन्महा-मण्डलेश्वरम् त्रिभुवन-मल्ल-गङ्ग-पेर्माडि-देवङ्ग-गङ्गवाडि-
 तोम्भत्तरु-सासिरम वाक्केळिसि तदाभ्यन्तरद मण्डलिसासिरम
 श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल-देवर् इये-गेय्ये निधिनिधानमोळगागि त्रि-भागा-
 भ्यन्तर-सिद्धियिन्दे सुखदि राज्यं गेय्युत्तिरे ।

कन्द ॥ श्रीगे नैलेयागि वचन- । श्रीगागरमागि निज-
 भुजार्जितविजय- ।

श्रीगरुहनागिकीर्त्ति- । श्रीगधिपतियागि सुखदिनिरे गङ्ग-नृप ॥

वृ ॥ जुडिदुदे नन्नि माडिदुद्धे ग्रासन इत्तुदे रामरेसु मार- ।

प्पिडिदुदे वज्र-लेपसुरदिदुदे मृत्यु परोपकारदोळ् ।

नडेदुदे बडे पड् गुणमे मेथ्येने धम्मदोळोन्दि निनवोळ् ।

नडेव वृषेन्द्रनावनखिळावनियोळ् कलि-गङ्ग-भूपति ॥

स्थिरने मेरु-गिरीन्द्रदोळ् सेणसुवं गंभीरने वार्द्धियोळ् ।

पुरुडिप्प कलिये सुरेन्द्र-सुतन मेच्च महा-दानिये ।

सुर-भूजक्कोरेगइव चदुरने पाञ्चाळनिं मिक्कनेन्- ।

दिरदीगळ् धरे वण्णिकु रण-जय-प्रोत्तुङ्गनं गङ्गनम् ॥

क ॥ अमळ-चरित्रं पुरुषो- । त्तमनेनिसिद गङ्ग-भूपनातन तम्मम् ।

विमळ-यत्र गोविन्दर- । नमोव-त्राक्य कुमार-चूडा-रत्तम् ॥

अन्तिर्व्वरुं सुखादि राज्य गेथ्युत्तिरे ।

क ॥ धर्मक्काम्म दयेगे त- । वर्म्मने शिष्टेष्ट-कल्प-भूज गोत्रा-

गर्म्मम् कुलोत्तमं पोले- । यम्मनेनल् नल्-गुणक्के मच्चरमुण्टे ॥

आ-गुणोत्तमनेनिसिद पोलेयम्मङ्ग रमणी-रत्तमेनिसिद केलेयव्वेग

सु-पुत्रः कुळ-दीपक एनिसि नोक्कय्यं पुट्टि समर्थनागि मण्डलिय केश्व-

गावुण्डन मक्कळ् कालेयव्वेयुम्मल्लियव्वेयुम महुवेयागि कालव्वे-गावि-

तिगे गुज्जणं पुट्टि तन्देगे पदिम्मडियागि पेर्म्मार्डि-गावुण्डनेम्भ पेसरं पडे-

दम् । मल्लियव्वे जिनदासनेम्भ मगन पडेदळन्तिर्व्वरुम्मक्कळ् वेरसु नोक्कय्यं

सुखदिनिर्पुट्टु गङ्ग-पेर्म्मार्डि-देवरू तट्टेकेरेगे विजय गेथ्दु समस्ताधिकारं म-

कुडे देवेन्द्रङ्गे बृहस्पतियन्तु वळीन्द्रङ्गे भार्गवनेन्तन्ते समस्तराज्य-भर-निरु-

पितमहामाल्य-पदवी-धिराजमान-मानोन्नत-प्रभु-मन्त्रोत्साह-शक्ति-त्रय-सम्पन्न

महा-महिमोत्पन्नम् । सुजन-जनाधार वान्धव-प्राकारम् । पुरुप-रत्ताकरं

पर-वळ-भीकरम् । पति-कार्य-भार क्रमनसहाय-विक्रमम् । उपार्जना-
चार्यम् अचलित-धैर्यम्**क्षार-समुद्र लञ्चकार-मुख-मुद्रं । पतिगे
कळापम् जय-लक्ष्मी-निक्षेपम् । कोदण्ड-पार्थ सौजन्य-तीर्थम् । जिन-
पादाराधकम् । कलि-युग-साधकम् । गङ्गन हनुमन्तम् । जय-लक्ष्मी-
कान्तम् । श्रीमन्महाप्रधानम् । पिरिय-पेर्गडे नोक्कय्यम् ।

वृ ॥ पार्थिवर निराकरिप दान-गुणोक्तियिनर्थिगर्त्यमम् ।
प्रार्थिसदीव-कारणदे पेर्गडे नोक्कणनी-परोपकान-
रार्थमिद शरीरमेनिपोन्दु पुराण-वरोक्तिचिन्दम-
प्रार्थित-दानदिन्दे नेगव्वुन्नति सन्दुदिल्ला-तळाप्रदोळ् ॥
मार्गदोळोळिपनोळ् गुणदोळ्णिमनोळ्पिनोळ्दुदोन्दु पेम्-
पार्गमसाध्यमिन्तिरिव-काव-गुणङ्गळे साजमेन्दु केळ्-
दग्गेदेगोण्डु जेङ्गरिसे राज-गुणक्कळवट्ट नोक्कणम् ।
पेर्गडेयेम्बुदे धुरके मार्गडेयं पतिगेक-साधनम् ॥

क ॥ पेर्गडेतनमं वल्लर् । ख्खळ्गामनणमारियरुळ्दिमात्यर् नोक्क ।
पेर्गडे-गगन मनेयोळ् । मार्गडे सगरद मोनेयोळेने मेच्चदरार ॥
किरिदरोळ्ळवडद मनं । नेरे पिरिदक्कासे-गेय्व बुद्धियिनातम् ।
तेरे-विडिदु जोन्नदिन्दन । पेरेयन्ददे नोक्कनुत्तरोत्तरमाद ॥
अगळिसिद केरेगे माडिसि ।द गळ्देगेत्तिसिद देवता-गृहकरवण्-
टगेगन्न-दानदेडेगी-जगदोळ् पवणिल्लदेम् कृतात्थनो नोक्कम् ॥
सरनिधि वळसिदुडेम्बन् । तिरिलित्ता-तट्टेकेरेय पेर्गेरे सुत्तल् ।
पलिय नडुवमरसैळ्द । दोरेयेनिसिद तेरदे वसदि सोगयिसि
तोक्कुम् ॥

२२४

मदलापुर—कन्नड-भग्

[काल लुप्त,—पर सम्भवतः ऋगभग १०८० ई०]

[मदलापुर (मल्लिपट्टण परगना)में, गोणि वृक्षके नीचे एक पाषाणपर]

(सामने) खस्ति श्रीमतु... वर्य-नल्लरस... अरकेरेय बसदि
 माडितु इदके... लवट्टु-गदे मण्णु अय्-गण्डुग पिरिय... दोळय्-
 गण्डुग-मण्णु विसवूर-मण्णु अय्-गण्डुग कोटेय मण्णु मृ-गण्डुग इणितु
 बसदिगे सल्ल-भूमि अदा-पदके अदट्टरादित्य अधिरत-पाण्डय्य वेळ्तु
 अरसर-कालदोळ् श्रीम... मन्ने-ग... सिवय्य...
 गुड्डेय... मण्डळ कलाचन्द्र-सिद्धान्त-देव-भट्टारर् शिष्यर्...
 अमलचन्द्र-भट्टारकर्गे . . . बसदिय माडि . . . सलिसदु...
 (हमेशाका अन्तिम श्लोक) ।

सेनवोव दे

[. नल्लरसने अरकेरेकी बसदि बनाई । (उक्त) भूमिका दान उसके लिये किया । जो कोई इसे नष्ट करेगा, वह अदट्टरादित्यके क्रोधका पात्र होगा ।

. अरसके समयमें, मण्डळ कलाचन्द्र-सिद्धान्तदेव-भट्टारके शिष्य अमलचन्द्र-भट्टारकने इस बसदिको बनवाया । हमेशाका अन्तिम श्लोक । सेनवोव दे]

[EC, V, Arkalgud tl n° 102]

२२५

खजुराहो—संस्कृत

[सं० ११४२=१०८५ ई०]

[इस प्रतिमा-लेखके लेखका पता नहीं है, क्योंकि यह लेख एक खण्डित प्रतिमापरसे ए. कर्निघमने लिया है, जो कि प्रतिष्ठाकाल और प्रतिमाके नामके सिवा और कुछ नहीं बताता । इस प्रतिमाकी प्रतिष्ठा या स्थापना

श्रेष्ठी श्री वीवतसाह और उसकी पत्नी सेठानी पद्मावतीने की थी । इस लेखके ऊपरसे ए. कनिंघमने फलिताय यह निकाला हे कि प्राचीन बौद्ध मन्दिर ग्यारहवीं शताब्दिके जैनोद्वारा अपने काममें लाया गया था । संभव है बौद्धमतकी हीनताके समय खजुराहामें जैनोंकी संख्या अधिक होनेसे उन्होने उस प्राचीन बौद्ध मन्दिरको अपना बना लिया हो, या हो सकता है कि कनिंघमका यह अनुमान ही गलत हो कि गन्यरई-भग्नावशेष जैनोंका न होकर बौद्धोंका था । अस्तु, जो कुछ हो । इन खण्डित टि० जैन मूर्तियोंसे उस समय खजुराहोमें जैनधर्मकी प्रधानता द्योतित होती है ।]

[A Cunningham, Reports, II, p. 431, a]

२२८

हुम्मच—संस्कृत तथा कन्नड

[अंक १००९=१०८७ ई०]

(उत्तरमुख)

खस्ति-श्री-लसदुग्र-वंश-तिलकः श्री-वीर-देवात्मजः
 दृप्यद्-वैरि-निकाय-दर्प-दलन-प्रादुर्भवद्-विक्रम ।
 सम्पूर्णोन्दु-करावदात-सु-यशो-व्यालिस-दिग्-भित्तिकः
 श्रीमान् विक्रमशान्तरो विजयते लब्धी-वधू-वल्लभः ॥
 ओदेदु तटत्तटेम्ब पद-नाटनेयिन्दे दिशा-गजादिगल् ।
 मदमुडुगिळ्दुवस्त्रि पुगुविर्षेडे गाणने नागराजनुम् ।
 कदळ्ळ गम्पदिन्दमेळे कम्पिसे कूडे कळ्ळे सागरम् ।
 विदिर्दल्लिगिन्दे तारकि कळ्ळ तरलोङ्गुगानार्दडोडुगुम् ॥
 अदिरदे वर्ष चप्परिप कप्परि पार्दल्लोत्ति शाल्लमम् ।
 विदिर्दु मरळ मरल्लेनुते कुत्तुत्र कुत्तिदोडान्तु कड्दिदान-
 पददोळे सुत्ति मुत्तिदवोलेरने तोरुव गेण विन्नणक् ।
 ओदनुव विन्नण नेगळ्ळोङ्गुग नीनरसङ्ग-गाल्लनै ॥

परिदुदराग्निं मरेदु तिन्द पेणङ्गळिनादजीर्णादिम् ।

मरुळ बळाळि वैद्य-मरुळं वेसगोण्डडे दन्ति महेनल् ।

करियने नुङ्गि सूडुकोळे वैद्य-मरुळ् नगे वीर-लक्षि नो-।

डरि-हर निन्निनायितदेने विक्रम-शान्तरनादनोड्डुगम् ॥

अन्तेनिसिद विक्रम-शान्तर-देवर स्स(श)रु-वर्ष १००९ नेय
प्रभव-संवत्सरद शुद्ध-पाडिवदन्दु पञ्च-वसदिय पूजा-विधान-जीर्णो-
द्धरणकमलिर्ष ऋपि-समुदायकाहार-दानार्थमुमागि ॥

सरसति निनगिनितु कला-।

परिणति नेगर्दजितसेन-पण्डितरिन्दम् ।

दोरेवेत्तु देवियादी-।

पिरियतन निन्नदल्लितदवर महत्त्वम् ॥

एनिसिद परवादीभासिंहापर-नामधेय-श्रीमत्-अजितसेन-पण्डित-
देवर काल कर्चि धारा-पूर्वकमा-सम्बन्धद समुदाय मुख्यमार्गे कोट्ट
ग्रामङ्गळ् (यहाँ दानकी विस्तृत चर्चा तथा वे ही अन्तिम वाक्यावयव
और श्लोक आते हैं) द्रमिळ-गणो लसतितरा निरुपम-धी-गुण-महितैः ॥

श्रीमत्-सेनब्रोवं शोभनय्यं दिगम्बर-दासि वरेदम् ॥

[स्वस्ति । वीर-देवके पुत्र विक्रम शान्तरकी प्रशसा । उसका मूल नाम
ओड्डुग था । उसकी प्रशसाके श्लोक । ओड्डुग 'विक्रम-शान्तर' हो गया ।

विक्रम-शान्तर-देवने (उक्त मितिको) पञ्चवसदिमे पूजाके लिये, मर-
म्मत तथा ऋपियोके आहारके लिये, वादीभासिंह इस द्वितीय नामसे प्रसिद्ध
अजितसेन-पण्डित-देवके पैरोके प्रक्षालनपूर्वक (उक्त) गाँवोका दान,
संपूर्ण करोंसे मुक्ति दिलाकर, किया । वे ही अन्तिम श्लोक ।

द्रमिळ-गणकी अत्यन्त शोभा है । सेनब्रोव शोभनय्य दिगम्बर-
दासिने इसे लिखा है ।]

२२७

कोणूर (जिला बेलगाव)—कन्नड

[विक्रमादित्य चालुक्यका १२ वा वर्ष=१०८७ ई०]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्जनं जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन
जिनशासन ॥

श्रीनारिप्रिये(य) कण्डु तन्न नयनद्वन्द्वालकत्रातमं जैनान्निद्र(द्वि)नखा-
ल्लियोळ्मधुकरत्रात सरोजाल्लियं तानेतिल्लेगे तन्दुदेन्दु वगेदळ्मुग्धत्व-
दिन्दा जिन भूनाथेठाधरेण मोक्षुनिधिगंगी गायुम श्रीयुम ॥

स्वस्ति श्री त्रैभुवनाश्रय पृथुधराश्रीवल्लभ शूकरन्यस्तेद्धध्वजलाञ्जनं
नुतमहाराजाधिराजं यत्रोविस्तार परमेश्वराकपरम भट्टारक गात्रवोन्म-
स्तन्यस्तपदाब्जनूर्जितयज्ञं चालुक्यकण्ठीरव ॥

सत्याश्रय-कुळतिळक सन्य युधिष्ठिरननेकविद्यानिपुण प्रत्यक्षविक्र-
मादित्याख्यतयत्रोविळासि त्रिभुवनमल्लं ॥

तद्राज्यमुत्तरोत्तरवद्रिप्रभुचन्द्रसूर्यरुळ्ळन्नेवर भद्रं सल्लत्तमिरे रिपुवि-
द्रावणतत्प्रियात्मजं जयकर्णं ॥

जयकर्णावनिपालभासुरलसल्लाळाटिक श्रीवधूनयनाळंकृतरूपनूर्जि-
तयज्ञ.श्रीकामिनीवल्लभ जयकान्तामुजदण्डनाहवगदादण्ड गुणोन्मण्डित
नयदिं कूडिधराधिपत्यदोळिरल् चामण्डदडाधिप ॥

स्वस्ति समधिगतपचमहास्तुलविराजमानशब्द महाश्रीविस्तार
पृथुविमळगुणस्तोमं मण्डलेश्वर सैनदृप ॥

वदन निर्मळत्रावधूसदनवात्मीयोरुवक्ष लस्तसदळंकाररमाविळास-
विळसल्लक्ष स्वदोर्दण्डवुन्मदवीरारिगिर.प्रकन्दुकहतिक्रीडोद्धदण्ड निजा-
भ्युदय सर्वजनानुरागदुदय श्रीसेनभूपाळन ॥

- ५३ दरम् । संभूयेदमकारयन्गुरुशिरःसंचारिकेत्वंव(व)रप्रतिनो-
च्छलतेव वायुविहतेर्धामादिश[त्पश्य-]
- ५४ ताम् ॥ ० ॥ अथैतस्य जिनेश्वरमंदिरस्य निष्पादनपूजन-
संस्काराय कालान्तरस्फुटितत्रुटितप्रतीका-
- ५५ रार्थं च महाराजाधिराजश्रीविक्रमसिंहः खपुण्यरासे(शे)
रप्रतिहतप्रसरं परमोपचय चेतसि [नि] धाय
- ५६ गोर्णी प्रति विंशोपक गोधूमगोणीचतुष्टयवापयोग्यक्षेत्र
च महा[चक्र]ग्रामभूमौ रजकद्रहपू-
- ५७ र्व्वदिग्भागवाटिका वापीसमन्विता । प्रदीपमुनिजनशरीरा-
भ्यजनार्थं करवटिकाद्वय च दत्तवान् । तच्चाच-
- ५८ दार्कं महाराजाधिराजश्रीविक्रमसिंहोपरोधेन । “व (व) हु-
मिर्व्वसुधा मुक्ता राजभिः सगरादिभिः । यस्य य-
- ५९ स्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फल”मिति स्मृतिवचनान-
न्निजमपि श्रेयः प्रयोजन मन्यमानैः सकलैरपि
- ६० भाविभिर्भूमिपालैः प्रतिपालनीयमिति ॥ ० ॥ लिलेखो-
दयराजो या प्रस(श)क्तिं शुद्धधीरिमाम् । उत्कीर्णवा-
- ६१ न् शिलाकूटस्तील्हणस्ता सदक्षराम् ॥ संवत् ११४५
भाद्रपदसुदि ३ सोमदिने ॥ मङ्गलं महाश्रीः ॥

[यह शिलालेख सन् १८६६ में कप्तान डब्ल्यू. आर. मैलविलीको दुबकु-
ण्डके एक मन्दिरके भग्नावशेषमें मिला था । इस लेखमें कुल ६१ पंक्तियाँ
हैं । ५४-६१ की पक्तियोंको छोड़कर शेष लेख श्लोकोमें है । इसको प्रशस्ति
(पक्तियाँ ४७ और ६०) कहा है । इसको विजयकीर्ति (पं. ४६) ने
धनाया, उदयराजने (पं. ६०) लिखा और उत्कीर्ण करनेवाला

शिल्पी तिलहण (पं. ६१) था। इस सारे लेखमें 'व' 'व' अक्षरसे लिखा गया है।

इस लेखका उद्देश्य एक जैनमन्दिरकी—जिसके कि पास यह शिलालेख मिला है—स्थापनाका उल्लेख करना है। इसकी स्थापना कुछ निजी आदमियोंकी थी और इस मन्दिरको कुछ दान महाराजाधिराज विक्रमसिंह (पं. ५४-५८) ने दिया था। इस शिलालेखके लिखनेके समय, विक्रम स. ११४५ में, वे दुवकुण्डके आसपासके प्रदेशपर शासन करते थे। इस लेखके स्पष्टतः दो विभाग हो जाते हैं पहले विभागमें (पंक्तियाँ १०-३२) युवराज विक्रमसिंह और उनके पूर्वजोंका वर्णन है; दूसरे में (पंक्तियाँ ३२-५१) मन्दिरके सस्थापकों (या प्रतिष्ठापकों) तथा उनसे सम्बद्ध कुछ सुनियोका वर्णन है। प्रारम्भके छह श्लोकों (पं १-१०) में कवि ऋषभस्वामी, शान्तिनाथ, चन्द्रप्रभ और महावीर इन तीर्थङ्करोंकी, तथा गणधर गौतम, ध्रुतदेवताकी जो पकजवासिनीके नामसे जगत्में प्रसिद्ध हैं, स्तुति करते हैं।

युवराज विक्रमसिंहके वर्णन (प. १०-३२) में ऐतिहासिक तथ्य इस प्रकार है.—

कच्छपघात (कछवाहा) वशसे—

१ पांडु श्रीयुवराज (?) हुए। उनके बाद उनके लडके—

२ अर्जुन हुए, जिन्होंने विद्याधरदेवके कार्यसे, युद्धमें राज्यपालको मारा। उनके पुत्र—

३ अभिमन्यु हुए, जिनके पराक्रमकी प्रशंसा राजा भोजने की थी।

उनके पुत्र—

४ विजयपाल हुए, और फिर उनके पुत्र—

५ विक्रमसिंह हुए, जिनके कालकी तिथि यह शिलालेख संवत् ११४५ भाद्रपद सुदि ३ सोमवार बतलाता है।

दूसरे विभागके लेखका सार यह है कि विक्रमसिंहके नगरका नाम चदोभा था। यह चदोभा वर्तमान दुवकुण्ड ही होना चाहिये और उस समय यह एक बड़ा भारी व्यापारका केन्द्र रहा होगा। ३२-३९ की पंक्तियोंके श्लोकोंमें उस समयके दो प्रसिद्ध जैन व्यापारियों का नाम—ऋषि और दाइड

दिया हुआ है। विक्रममिहने उनको 'श्रेष्ठी' की पदवी दी थी और इन्हींमें से एक—साधु दाहड़-मन्दिरके संस्थापकोंमेंसे है। ऋषि और दाहड़ दोनों ही जयदेव और उसकी पत्नी यशोमतीके पुत्र, तथा श्रेष्ठी जासूरुके नाती थे। जासूरु जायसवाल वंशके थे जो 'जायस' (एक ग्रहर) से निकला था।

३९-४५ की पक्तियोंमें कुछ जैन मुनियोंका वर्णन है। उनमेंसे अन्तिम विजयकीर्ति थे। उन्होंने न केवल इस शिलालेखका लेख ही तैयार किया था, बल्कि अपने धार्मिक उपदेशसे लोगोंको इस मन्दिरके निर्माणके लिये भी, जिसका कि यह शिलालेख है, प्रेरणा की थी। उल्लेखित मुनियोंमेंसे सर्वप्रथम गुरु देवसेन हैं। ये लाट-वागट गणके तिलक थे। उनके शिष्य कुलभूषण, उनके शिष्य दुर्लभसेन सूरि हुए। उनके बाद गुरु शान्तिपेण हुए, जिन्होंने राजा भोजदेवकी सभामें पंडित धितोरव अंबरसेन आदिके समक्ष संकडों वादियोंको हराया था। उनके शिष्य विजयकीर्ति थे।

मन्दिरके संस्थापकोंमेंसे पंक्तियाँ ४८-५१ उनका नामोल्लेख इस प्रकार करती हैं.—साधु दाहड़, कृकेरु, सूर्यट, देवधर, महीचन्द्र, और लक्ष्मण। इनके अलावा दूसरोंने भी जिनका नाम यहाँ नहीं दिया गया है, इस मन्दिरकी स्थापनामें मदद दी थी।

गद्यभागमें (५४ वीं पक्तिसे शुरू होनेवाला) कथन है कि महाराजा-धिराज विक्रममिहने मन्दिर तथा इसकी मरम्मतके लिये तथा पूजाके प्रबन्धके लिये प्रत्येक गोणी (अनाजकी ?) पर एक 'विशोपक' कर लगा दिया था तथा महाचक्र गाँवमें कुछ जमीन भी दी थी तथा रजकट्टहमें कुँआसहित बगीचा भी दिया था। विष्णु जलानेके लिये तथा मुनिजनके शरीरमें लगानेके लिये उन्होंने कितने ही परिमाणमें (ठीक ठीक परिमाण जाना नहीं जा सका, शिलालेखके शब्द हैं 'करवटिकाद्वय') तेल भी दिया।

अन्तमें आगामी राजाओंको भी उपर्युक्त दानको चालू रखनेकी प्रार्थना करनेके बाद, ६०-६१ पक्तियोंमें इस प्रशस्तिके लिखनेवाले और इसको खोदनेवाले दोनोंका नाम दिया है। लिखी जानेकी तिथिका उल्लेख करके यह शिलालेख समाप्त हो जाता है।]

[F Kielhorn, EI, II, n° XVIII (p. 237-240).]

२२९

श्रवणत्रैलोगोला—संस्कृत

[विना कालनिर्देशका]

[देखो, जैन शिलालेखसंग्रह, प्रथम भाग]

२३०

कणवे—मस्कृत तथा कन्नड़—भग्न

[वर्ष शुक्र. १०९० ई० ? (६०० राइस) ।]

[कणवेमें, कल्लु-वस्तिमें एक समाधि-पाषाणपर]

श्रीमत्परमगर्भारस्याद्वादामोवलाञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाग्न्य शासनं जिनशासनम् ॥

साहस..... महिम जिन-शत्रु वि..... होयसज्ज.....

निळ्येयं मन्यक्कव-चूडामणियने नेगळ्ळं भण्डारि-चन्दिमय्यन प्रियेयुं जिन-
पादान्जुजम स्मरियसुत दिवकेय्-दिदरेन्दोडे कृतार्थारिन्नाद् विस्वावनि-
योळ्ळु ॥

स्वस्ति समस्त-प्रदास्ति-महितं जिन-गन्धोदक-पवित्रीकृतोत्तमाङ्गसु
भव्य-रत्नाकरन सरस्वती-देवी-कर्णा-कुण्डलाभरणनप्य श्रीमन्महा-प्रधान
होयसज्ज-देवन भण्डारि चन्दिमय्यन हेण्डति श्रोप्पव्वेयु शुक्क-संव-
त्सरठ पौष्य-मासदळ्ळु सन्यासन गेय्नु ममाधि-महित सोमवारदेरदनेय-
जावदळ्ळु स्वर्ग-प्रापिनरादर

[जिनग्रामनकी प्रशंसा । प्रधान मंत्री होयसज्ज-देवके स्वजाञ्ची चन्दिम-
य्यकी पत्नी श्रोप्पव्वेने (उक्त मिनिको), मन्ययन कर्णे हुण्ण, समाधिपूर्वक
'स्वर्ग' प्राप्त किया ।]

[EC, VIII, Tirthahalli tl, n° 198.]

२३१

वाळहोन्नूर—संस्कृत

[विना कालनिर्देशका, -पर सभवत् लगभग १०९० ई० का]

[वाळहोन्नूरमें, दूसरी चट्टानपर]

श्रीमद्वादीभसिंहस्याजितसेन-महा-मुनेः ।

अप्रशिष्येण मारेण कृता सेयं निगीधिका ॥

अगणितगुणगणनिलयो जैनागम-त्राधि-वर्द्धन-शशाङ्कः ।

...त्यूर्जित-मण्डलिर-गणे नत-गणाधीशः ॥

[वादीभसिंह अजितसेन महासुनिका यह स्मारक उनके प्रधान शिष्य मारके द्वारा बनवाया गया था । ये गणाधीश अगणित गुणोंके निलय (स्थान) थे, जैनागमरूपी समुद्रके पानीको बटानेके लिये चन्द्रमा थे ।]

[EC VI, Koppa tl, n° 3]

२३२

कणवे—संस्कृत तथा कन्नड

[वर्ष आङ्कित, १०९३ ई० ? (ल० राहस) ।]

[कणवेमें, एक दूसरे समाधि-पाषाणपर]

श्रीमत्परम-गम्भीर-स्याद्वादासोव-लाञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनायस्य वासन जिनगामनम् ॥

श्री-मूलसंघ-कोण्डकुन्दान्वय-देशीयगण-पुस्तकगच्छ लोकि-
यव्ये वसदिय प्र ...तळताळ वसदि

वळः रं वळल्लुव लतान्त-सङ्गि ...दि सञ्- ।

चळिसि पळञ्चि तू ...रन नळिसि मेय्योयाद-दूसरिं ।

कळयदे निन्द कळ्वुनद कळिगद विडिनमरक्केवेत्त क- ।

तळमेनिसित्तु पुत्तडर्द मेय्य मळ मळधारि-देवर ॥

स्वस्ति श्रीमदाङ्गिरस-संवत्सर-पौष्य-मास-बहुल-सप्तमियादि-
त्यवारदन्दु अवर शिष्यरु शुभचन्द्र-देवर समाधिविधियि स्वर्गस्थ-
रादरु ।

[जिनशासनकी प्रशसा । श्री मूलसव, कोण्डकुन्दान्वय, देशिय गण
और पुस्तक-गच्छ,—लोकियव्वे बसविकी तलताल बसविके मलधारि-देव
थे, कठोर तपस्यासे जिनका मारा नरीर धूल-धूसरित हो रहा था,
लोहेके समान बहुत समयतक जिसपर जङ्ग-मी चढी हुई थी, और वल्मीक
(चींटियोकी छोटी हुई मिट्टीका ढेर) के समान हो गया था । (उक्त
मितिको), उनके शिष्य शुभचन्द्र-देवने ममाधिके बलसे स्वर्ग प्राप्त
किया ।]

[EC, VIII, Tirthahalli tl, n° 199]

२३३

हले-बेलगोला—संस्कृत तथा कन्नड

[शक १०१५=१०९३ ई०]

(जैन गिलालेखसंग्रह, प्र० भाग)

२३४

सोमवार—कन्नड-भद्र

[शक १०१७=१०९५ ई०]

[सोमवार (मल्लिपट्टण परगने)में, बमव मन्दिरकी एक सोटपर]

स्वस्ति.....भद्रमस्तु जिनशासनाय स्वस्ति शक-वर्ष १०१७ नेय
युवमंवत्सरद भाद्रपद-मासद सुद्ध-सप्तमी-गुरुवारदन्दु मकर-उग्रं गुरुद-
यदल् श्रीमत्-सुराष्ट-गणद कल्लेलेय रामचन्द्र-देवर शिष्यन्तियरप्प
अरसव्वे-नान्तियर (यहाँ सत्त्व हो जाता है) ।

[(उक्त मिति को) सुराष्ट-गणके कल्लेलेके रामचन्द्र-देवकी लिप्या अर-
सव्वे-गन्ति.....]

[EC, V, Arkalgud tl, n° 96]

२३५

दुवकुण्ड—साम्भपर—संस्कृत

[संवत् ११५२=१०९५ ई०]

संवत् ११५२—वैशाखसुदिपञ्चम्यां ॥

श्रीकाष्ठासंघमहाचार्यवर्यश्रीदेव-

सेनपादुकायुगलम् ।

[स्पष्ट है]

[A Cunningham, Reports, XX, p 102]

२३६

सोमवार—कन्नड़

[विना कालनिर्देशका,—लेकिन सभयत. लगभग १०९५ ई०]

[सोमवार (मल्लिपट्टण परगना)में, वसत्रणण मन्दिरके मुख-मण्डपके
सामनेके पापाणपर]

पतिय सन्ततिय पति पेळ्द-मार्गदिम् ।

पति-हितनागि निस्तारिसि तत्पति माडिप जैनगेहमुन्- ।

नति-वेरसिर्....यनन्तदक्कहर्- ।

प्पति-शशियुल्लिन निरिसि जक्कनिटेम् सुकृतार्थनादनो ॥

दुह्मल्ल-देवन वाणसि जक्कय्यं माडिसिदम् ॥

[अपने स्वामीके कुटुम्बमेंसे, उसी पद्धतिसे जिसे उसके स्वामीने बतलाया था, स्वामीके प्रति रहे हुए प्रेमसे उसने उसी मन्दिरको खड़ा किया जिसे उसका स्वामी बना रहा था । उसे आशा थी कि यह मन्दिर तब तक खड़ा रहेगा जब तक आकाशमें सूर्य और चन्द्र चमकते हैं । जक कितना भाग्यशाली था ? दुह्मल्ल-देवके रसोद्दये जक्कय्यने इसे बनवाया ।]

[EC, V, Arkalgud tl, n° 97]

२३७

सौदत्ति - संस्कृत तथा कन्नड

[विक्रमादित्य चालुक्यका २१ वां वर्ष=१०९६ ई०]

स्वस्ति समस्तभुवनाश्रय (यं) श्रीपृथ्वीवल्लभ (भं) महाराजाधि-
राज(ज) परमेश्वर (रं) परमभट्टारक । सत्याश्रयकुळतिलक (क)
चालुक्याभरणं श्री[म]त्रिभुवनमल्लदेवविजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि-
प्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कतारवरं सल्लुत्तमिरे ॥ तत्पादपद्मोपजीवि ॥ स्वस्ति
समधिगतपञ्चमहाशब्दमहामण्डलेश्वर । लत्तल्लूपुंरवराधीश्वर त्रिवलीत्स्य-
निर्घोषणं । रङ्कुळभूषण । सिन्धुरलाञ्छन । विवेकविरिञ्चन । सुवर्ण-
गरुडध्वजं सहजमकरद्व(ष्व)ज नामादिसमस्तप्रस(श)स्तिसहित श्रीम-
न्महामण्डलेश्वरः कार्तवीर्यनृपः ।

रङ्गवंशोद्भवः ख्यातो नन्नभूपत्य नन्दन । श्रीमदाहवमल्लस्य
पादपद्मोपसेवकः ॥ सहस्रत्राहुरिव ख्यातः कार्तवीर्यः प्रताप-
वान् । कुहुण्डिदेशया(स्या)घाटं सादि(धि)त तेन भूभुजा ॥
राजन्वलयः प्रजा जाता दावरिनाम भूभुजा । तस्यानुज.
प्रतापी स्यात् कन्नकैरो महीपति । ॥ तस्याग्रनन्दनो भाति वाद्या
विद्याविदो भुवि । एरगाख्यमहीप स्यादनुजोत्थाञ्कभूपतिः ॥ वाद्या
विद्याधरस्याग्रसूनुः श्रीसेनभूपतिस्तस्याग्रमहिषी जाता मैल्लादेवि-
रूर्जिता ॥ श्रीकालसेनभूपत्य तस्यासीदग्रनन्दनः [I] कन्नकैरनृपः
ख्यातो नृत्यगीतादिक्रोविदः ॥ तस्य गुरवः ॥ त्रैविद्यो राजते भूमौ
सर्वशाल्विशारदः । कनकप्र(भ)सिद्धान्तदेवो गणधरोपमः ॥
कनकप्रभदेवेष्यः सक्रान्तो (न्तौ) सत्तियौ तदा । निवर्त्तन द्वादश
(श) दत्तं नमस्य (स्य) नन्नभूभुजा ॥ तस्यानुजः ॥ गम्भीरेण समुद्रोसि
शि० २३

गैरवेगसि नन्दः । श्रीकार्तवीर्य वेग(न) क्लृप्तमे उन्नतः ॥
 नलागलन ॥ इत् ॥ श्रीगतनन्दको वपत सुयत तत्र स्थित
 जयवू तत्र नन्दलघु (त्रि) ॥ वगये मुन्दनगडलिन प्राय श्रीसैन-
 सुन्दननन्दकेत त्रिं ॥

शुंठ ॥ सुगन्धवस्तुहेके प्रमे वन्देन्दतादृते । श्रीकात्सेलसूते
 कार्गदे जितनन्दरं ॥ लिखितं इदंशं(इ) नरै । जितगैह्य मन्त्रिः ।
 वृहद्गजेन सुन्दरं । नन्दं(सं) सेलसूतका ॥ वचनं ॥ वगविक्रम
 विदंनान्देवपंभौकविशतिप्रतिपददेव । वन्देनातधातुसंघत्सरं
 सुयवृत्तयेदं नदिवां, लगदमं नं (नं) । श्रीगोपेमादि-
 देवेत कारयवागुत नवेन्दमंते द्वादशनिचतं न्वेनन्दं (सं),
 वं ॥ नलिखे मंते श्रीकनकैरं सुगुं द्वादशनिचतं नन्दं
 (सं, इत्) नल मंन । इदं विमि (त्रिं), ह्यम्यसंभद(इ)
 नल पुलिगैरं वल्लि नल मंन । दक्षिणदिनागे सुगन्धवर्णिग
 मल मंन । नदिगैरं वृहद्गजु प्रानल मंन । उत्तरं विमि
 म्हागे तदा मंन । नान्देयं वनसुसुदेगां कले कले
 नन्दये म्हादि । म्हातनम वेदः नयिदेनात् सूये सूये यचने
 गम्भ्र ॥ वृमिस्सुषुवा सुक नन्मिस्सागदिमिस्सु वल यदा
 वृमिस्सु वल तदा नन्दं ॥ लदतं गदतं क ये हरेत वमुत्तरं ।
 पदिमिस्सु मे विदंयं जाये वृमिः ॥ इत् ॥ इदनादन्दं (दि)
 मंते पादिमिदं वं सुं मंनं । सुसुसु हन्ने म्हात्सुमेवले
 श्रीसुसुसुदिमंते तौतं न्द सुसु विदिमंते म्हात्सु म्हात्सुदि
 (दि) म्हात्सु (सु) सुसुदि विदिमंते म्हात्सु म्हात्सु ॥
 ॥ म्हात्सु म्हात्सु म्हात्सु म्हात्सु म्हात्सु म्हात्सु म्हात्सु

[तु] कुळद्विजपुगवगोकुळमनळि दरिन्तिदनळिदर ॥ वीरपेर्माडिदेवस्य जिनालय ॥

[इस लेखमें चालुक्य राजा पेर्माडिदेवके द्वारा शकवर्ष १०१९ में जो धातु 'संवत्सर' था, १२ 'निवर्तन' भूमिके दानका उल्लेख है। तत्पश्चात् कन्नकेरके दानका उल्लेख है। यह दान उक्त दानसे पहलेका होना चाहिये। यह कन्नकेर, प्रथम या द्वितीय है, यह इस लेखपरसे कुछ पता नहीं चलता। अन्तमें यह लेख अपने साधारण तरीकेसे भूमिदान करनेके तथा पूर्ववर्ती राजाओंके दानोंकी रक्षा करनेके फायदोंके बतानेवाला श्लोकोसे समाप्त होता है।]

[JB, X, p 170-171 a, p. 194-198, t, p 199, tr,
ins n° 2, (II part)]

२३८

हुम्मच—कन्नड-भग्न

[काल लुप्त, पर संभवतः १०९८ ई० ? (लुई राइस)]

[पंचवस्तीके प्राङ्गणमें, दक्षिणकी ओरके एक पाषाणपर]

खस्ति श्री-मूल-संघदपुस्तकगच्छदोळे प्रसिद्धि-बडेद श्री
.....भट्टारक-शिष्यरप्प लक्ष्मीसेन-भट्टारक-देवरु चिरकाल तप
गेयुदु..... ॥ विदित-बहुधान्यकार्तिकशुक्ल तृतीयार्कज-
वार-सूर्योदय.....लक्ष्मीसेन-मुनिपरमरास्पदम ॥.....
देवसेन-भट्टारकचारित्र-गुणोल्लसित-श्री-पार्श्वसेन-भट्टा-
रक.....एने जस बडे.....॥

विदित-बहुधान्य-नामा ।

बददोलोप्पुव-चैत्र-बहुळ-नवमी-कुजवा-।

† मूल लेखके अनुसार शक काल १०१८ वीतनेके बाद जो कि चालुक्य विक्रमादित्य द्वितीयके राज्य प्रारम्भ होनेका २१ वाँ वर्ष था ।

रदोळोड्ढि समाधियि ...।

यिददरनुपम-पार्श्वसेन-मुनिपर दिवमम् ॥

[स्वस्ति । श्री-मूलसंघ और पुस्तक-गच्छमें प्रसिद्ध ...भट्टारकके शिष्य लक्ष्मीसेन-भट्टारक-देवने बहुत समयतक तप किया । (उक्त मितिको), सूर्योदयके समय लक्ष्मीसेन मुनिने अमरपद प्राप्त किया ।

पार्श्वसेन-भट्टारककी प्रशंसा, जिन्होंने उसी वर्षमें, समाधि-विधिके द्वारा स्वर्ग प्राप्त किया ।]

[EC, VIII, Nagar tl, n° 42]

२३९

चिक-हनसोगे—कदड़-भद्र

[शक १०२१=१०९९ ई०]

[जिन-वस्त्रिमें, अन्दरके दरवाजेके दक्षिणकी ओरके एक पाषाणपर]

भद्र भूयाजिनेन्द्राणा शासनायाघनाशिने ।

कुतीर्थध्वान्तसङ्घातप्रभिन्नघनभानवे ॥

वननिधि-परिवृत-सीमा-वनियोळ सले नेगब्द कोण्डकुन्दान्वयदोळ ।

पनसोगे-निवासि-महा-मुनि-वरश्री-कर-[वि]मुक्तरागम-युक्तर ॥

यमि-नाथाप्रणि पूर्णचन्द्र-मुनिपत्त ... दामणंदि-मुनीन्द्र
तदपत्सरन्तवर शिष्य-श्रीधराचार्यर्ष आयमि-शिष्यर् म्मलधारि-देव-
रवर्गाद् चन्द्रकीर्त्तिव्रति-प्रमुखर्त्तत्तनुजातराततयशर् स्सिद्धान्त-
चक्रेश्वरर् ॥

स्वस्ति यम-नियम-स्वाध्याय-ध्यान-मौन ... परायणरूप श्री-मूल-
सङ्घद देशि-गणद पुस्तक गच्छद श्री-दिवाकरनन्दि-सिद्धान्ति-देवर
... न्तिर्ब्येसववे-गन्तियर् सक-वरिष सायिरद इ १०२१ नेय

प्रमादि-संवत्सरद फाल्गुण-सुद्ध-पञ्चमी-आदिवारदन्दु.....य पाळि
मूळपरिग्रहं चरियल्ल ३० गद्याण.....चन.....

[जिनशासनकी प्रशंसा । कोण्डकुन्दान्वयमें पनसोगे-निवासी मुनियोंमें प्रधान पूर्णचन्द्र मुनि थे । उनके शिष्य दामनन्दि-मुनीन्द्र थे, उनके शिष्य श्रीधराचार्य्य थे; उनके शिष्य मलधारी-देव थे; उनके पुत्र चन्द्रकीर्ति-व्रती थे ।

मूलसंघ, देशिगण तथा पुस्तकगच्छकी, विवाकरनन्दि सिद्धान्त-देवकी शिष्या, बेसववे-गन्तिने..... के करनेके लिये ३० गद्याण दिये ।]

[EC, IV, Yedatore tl, n° 24]

२४०

चिक्क-हनसोगे—कन्नड़

[विना काल-निर्देशका, पर सम्भवत लगभग ११०० ई०]

[चिक्क-हनसोगेमें, शान्तीश्वर वस्तिके दरवाजेके ऊपर]

श्रीमूलसङ्घट देसिग-गणद होत्तगे-गच्छद समुदाय मुख्यते राम-
स्वामि विट्ठीपरमेश्वर-दत्तिगे ॥

उपवास-प्रोनत-विधि- । युपवासानेक-वार-चान्द्रायणदिन्-

न्दर्प-मद-जयकीर्ति-मुनि- । प्रवरं श्री-पुस्तकान्वयाम्बुजसूर्य्य ।

दशरथसुतनु लक्ष्मणाग्रजनु सीता-वल्लभनु इक्ष्वाकु-कुलजनुमप्य
रामन प्रतिष्ठे देसिग-गणद वसदि इल्लि ६४

रामम्मडि गङ्गर्षडि सलिसे वन्द-तीर्थद-व्रसदिय यादवरप्प चङ्गा-
व्वरोळ्गे श्री-राजेन्द्र-चोळ-नन्नि-चङ्गाव्व-देवर पुनर्नवं माळिदरी-
पनसोगेयल् देसिग-गणद होत्तगे-गच्छद वसदि ४ के तल्ले-कावेरिय
वसदिगळ्ळु तत्समुदायमुख्य

[रामस्वामीके छोडे हुए (?) परमेश्वर-प्रदत्त (?) दानका प्रधान मूलसङ्घके
देशी गणके होत्तगे गच्छका समुदाय है । पुस्तकान्वयरूपी कमलके लिये

जयकीर्ति-मुनि सूर्यके ममान थे । ये अनेक उपवास और 'चान्द्रायण' व्रत करनेमें विख्यात थे ।

यहाँ दशरथके पुत्र, लक्ष्मणके बड़े भाई, सीताके पति, इक्ष्वाकुकुलोत्पन्न रामके द्वारा प्रतिष्ठित देसिग-गणनी ६४ बसदियों हैं ।

चन्द्र-तीर्थकी बमदिकी जिसे पहले रामने बनवाया था और जिसको गङ्गोने दान किया था, चङ्गाळववशी यादवीय राजेन्द्रचोळ-नखि-चङ्गाळव-देवने फिरसे बनवाया ।

इम पनसोरोमें देसिग-गणके होत्तरो गच्छकी ४ बसदियों, और तल-कावेरीकी बसदियोंका वही समुदाय मालिक है ।]

[EC, IV, Yedatore tl, n° 26]

२४१

चिक्क-हनसोरो—कन्नड़

[बिना काल-निर्देशका, पर सम्भवत लगभग ११०० ई० ?]

[चिक्क-हनसोरोमें, नेशीश्वर बस्तिके दरवाजेके ऊपर]

श्रीमद्-देसिग-गण पुस्तक-गच्छद श्रीधर-देवर शिष्यरेळाचार्य-
रवर शिष्यर्हामनन्दि-भट्टारकरवर सार्धर्मिगळ् चन्द्रकीर्ति-भट्टारक-
रवर शिष्यर्हिवाकरणन्दि-सिद्धान्तदेवरवर शिष्यर्चान्द्रायणी-देवापर-
नामधेयरप्प श्रीमज्जयकीर्ति-देवरादियागा-समुदाय-मुख्यमी-त्रसदिगळे-
छवर्कमासमुदायद वशमल्लदवरना-समुदायमिर्हु निर्दोडिसि पोरमडिसि
कळेवुदु । रामस्वामि विट्ट परमेश्वर-दत्तिगे तोल्लडियिन्द बडगण
तुम्बिन नीर् वरिद नेल्लन विक्रमादित्यं विट्टं १८ गेण कोलिन्द
१५०० कम्म मोदलेरियल्ल वेजिरिगट्टद केळ्मो आ-कोलि(न्द) २५०
कम्म मण्ण तोण्टके चङ्गाळ्वं मदुरनहल्लियुमनल्लि ५०० कम्म
मण्ण....

[देसिग-गण और पुस्तक-गच्छके श्रीधरदेव थे, जिनके शिष्य एलाचार्य थे, उनके शिष्य दामनन्दिभट्टारक थे, उनके साथी चन्द्रकीर्त्ति-भट्टारक थे, उनके शिष्य दिवाकरनन्दि सिद्धान्तदेव थे, उनके शिष्य जयकीर्त्ति-देव थे जिनका दूसरा नाम चान्द्रायणी देव भी था, इन सबका समुदाय इन बसदियोका मालिक है। जो इस समुदायके अधीन नहीं है उन्हें यह समुदाय भगा देगा, बाहर भेज देगा।

चङ्गाळवने, १८ विलस्तके दण्डेके नापसे, विक्रमादित्यकी छोडी हुई और तोल्लडिकी उत्तरीय नहर या मोरीसे सींची गई तथा परमेश्वरकी दी हुई और रामस्वामीकी छोडी हुई १५०० 'कम्म' (एक नापविशेष) जमीन दानमे दी, उसी नापसे वैजिरिगट्टकी २५० 'कम्म' जमीन बगीचेके लिये, और ५०० 'कम्म' मदुरनहल्लिमे दिये।]

[EC, IV, Yedatore tl, n° 28]

२४२

अङ्गडि—कन्नड—ध्वस्त।

[विना काल-निर्देशका, पर संभवत लगभग ११०० (?) ई० का]

[अङ्गडि (गोणीवीडु परगना)में, बसदिके पासके पाषाणपर]

भद्रमस्तु जिनशासनस्य श्री ण गङ्गदासि-सेट्टि सोमदिं....
.....धिय मुडिहिद प.....क्षके मग चटयं निलिसिद सासन

[जिन-शासनका कल्याण हो। गङ्गदास-सेट्टिके मर जानेपर, उसके पुत्र चटयने यह स्मारक उसके लिये खड़ा किया।]

[EC, VI, Mūdgere tl, n° 10]

२४३

सण्ड—संस्कृत तथा कन्नड—भग्न

[विना काल-निर्देशका, पर संभवत. लगभग ११०० ई० का]

[सण्डमें, तालाबके प्रवेश-द्वारपरके एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासनम् ॥

खस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर
परम-भट्टारक सत्याश्रय-कुळतिकक चालुक्याभरण श्रीमत् त्रिभुवनमल्ल
देवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कितारम्बरं सल्ल-
त्तमिरे ॥ तत्पादपद्मोपजीवि ॥ खस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-
सामन्ताधिपति महा-प्रचण्ड-दण्डनायक विबुधवर-दायक सुजन-प्रसन्न
नुडिट्टु मत्तेन्न गोत्र-पवित्र पराङ्गना-पुत्र..... सोत्तुह्ननय्यन-सिद्ध
नामादि-समस्त-ग्रशस्ति-सहित श्रीवेर्गडे मने-वेर्गडे-दण्डना-
यकननन्तपाल्ययं गजगण्ड-अरुनूरुमं वनवासेमुम
सप्ताद्ध-लक्ष्म(क्ष)यच्छ-पन्नाय-मुम पडेदु सुख-संकथा-विनोददिं...
तत्पादपद्मोपजीवि ॥

श्री-वनिता-कुच-सम्भृत-।

पीवर-वक्ष-स्थळ लसद्गुण-मणी . ।

..... ।

.....सकळ-विमु (वु) ध-जनता.....॥

आ-समस्त-गुण-गणाभरणनु विबुध-जन-पर..... विळसित-
जगद्-वळ्य वनु रण-रङ्ग भैरवन सकळ-सु-कवि-जन-क.....
वीर-लक्ष्मी-विळासनुमनन्तपाळ-असादनुदिताधिकार-लक्ष्मी-विळासनु.....
.....[गो]विन्दरसं वनवासे-पन्निच्छासिरसुम मेरुपट्टेय वड्ड-
रावुळमु.....नोददिं प्रतिपाळिसुत्तमिरे ॥

श्रियं निज-भुज-वळदिम् ।

दायाद वळ

.....न-

जेय रिपु-नृप-पयोज-सोम सोमम् ॥

आनेग.....गळ महा .. वेयोगेववोलानत-रिपु-वोगेद.....
 महीपति-प्रतिम-प्रताप-निळय निज-सन्ततिगोसुरो पुट्टे रिपु.....
 पुट्टिद सोवरस ॥ ...जमदनणिमनार्पेने कडायदे चलदोळोदविदुन्नति-
 नभम..... ..रेम् पुट्टिदर ॥

शरणेमगेन्नदेवुदेमगे-वेसनावुदु दुद्वियेन्नदुम् ।
 वरिसि नितान्तमेरिसिद विळ्वोळुद्धत-वृत्तिय-ने पेण्-
 डिर् केळदोळ् केळरुदु वीरुव विडे वीरुवधिक-चैरि-भू-
 परनातनत्तर मरुळ तण्डम नोडने सोम-भूमिपम् ॥
 किं कल्पदुम-वल्लरी किमु रतिः शृङ्गार-भङ्गी-गुरो.
 किं वा चान्द्रमसी कला विगलिता लावण्य-पुण्या दिवः ।
 सम्यदर्शन-रेवती किमु परा सोमाम्बिका राजते
 राजी सा वनवासि-सोम-नृपतेर्जाता मनोवल्लभा ॥

श्लोक ॥ क्षीर-सिन्धोर्यथा लक्ष्मीर्हिमाञ्चोरिव दीधितिः ।
 तथा तयोस्तुते जाते जिन-शासन-देवते ॥
 पूर्वं वीराम्बिका जाता ततोऽजन्मुदयाम्बिका ।
 इति मेढ तयोर्मन्ये सद्-गुणैस्समता द्वयोः ॥
 कि देवेन्द्र-विमान एष किमुत श्री-नागराजाश्रयः
 कि हेमाचल-शैल इत्यनुदिनं शङ्कां दर्धान जने ।
 निङ्गोष्रावनिपाल-मौलि-विलसन्-माणिक्य-मालाञ्चितम् ।
 भास्यत्युन्नतिमज्जिनेन्द्र-भवन् ताभ्या विनिर्मापितम् ॥
 तोडरे तोडड्डु मच्चरिसे गण्टल सिल्किद-गाळ बुके माड- ।

नुडिदडे जिहम पिडिदु किळ्य तोडिपिन पागवेन्देडेन्त ।
 एडरुव (व) रेन्तु मच्चरिपरेन्तु कर काडि केय्दु दपम [म्] ।
 नुडिदपरण्ण वार्पु मुळिदम्बद जूजिनोळ्ण्य-भूमुजर् ॥
 विडदेदरे सेणसि चुन्न ।

नुडिवरी-मन्नेयर वेन्न वार मिडियिम् ।
 पेडेतले-वरम्माळ्योत्तुव ।

कडु-गलि शसि-विशद-कीर्ति जूज-कुमार ॥

जवनेरे वच्चितेम्बिनेगमान्तरि-भूपरनट्टि कोन्दु कू- ।
 गुव तवे तिन्दु तेगुव तडगडिदि....व वेन्न-वारनेत्- ।

तुव पिडिदच्चि मुक्कुव पसुगारिडि वडगिन्दियादुवा- ।

हव-भुज-शौर्यम...लि-वीरदनेन्दोड् इन्नागैर पोगळ्ळु नेगळ्ळ

कुमार-गजकेसरियं ॥

अरमनेयोळे ।

..... न्दु त्रिगिदु तंगरमादन्दे ।

शिरल्ल्य मुङ्गाल्लोणेयनि- ।

परसर् प्पोल्लतपरे कु..... ॥

.....डे मोगम तिरिपुवरिन्.....दडे नगुवरन्यरम्बद जूज

मुनि..... य रिपु-जनक्कमर्त्थि-जनक्कम् ॥ अनुपममे-

निसिद गुण वारितमेनिप दान-गुणदोळ्ळु मत्त-

वण दोरेयतळ्ळदोळ्ळु ॥ आतनळ्ळिय ॥ खण्डदोळ्ळि

.....नेदु मूळेगळ्ळम्मूरि.....

.....

[जिन-शासनकी प्रशंसा । जिस समय, (चालुक्य उपाधियो सहित), त्रिभुवनमल्ल-देवका राज्य चारो ओर प्रवर्द्धमान था और तत्पादपद्मोपजीवी मने-वेगरीडे दण्डनायक अनन्तपालदय, राजगण्ड ६००, बनवासे १२०००, और सप्तार्द्ध-लक्ष (देश) अच्छ-पन्नायको प्राप्त करके उनके ऊपर शासन कर रहा था, तत्पादपद्मोपजीवी, जिस समय (अनेक उपाधियो सहित) गोविन्दरस बनवासे १२००० तथा मेल्पट्टे 'वड्डु-रावुल'की शान्तिसे रक्षा कर रहा था,—उसका पुत्र (प्रशंसासहित) सोम या सोवरस था, जिसकी पत्नी सोमाम्बिका थी । उनकी वीराम्बिका और उदयाम्बिका, ये दो पुत्री थीं । इन दोनोंने एक जिनमन्दिर बनवाया । अम्ब जूज-कुमारके, जिसे कुमार गजकेसरी भी कहते थे, पराक्रमकी प्रशंसा । उसका दामाद, ... (लेख बहुत घिसा हुआ है) ।]

[EC, VII, Shikarpur tl, n° 311]

२४४

गुप्ती—कल्लड

[विना कालनिर्देशका]

(देखो, जै० शि० सं०, प्र० भाग)

२४५

उदयगिरि (कटकके पास)—संस्कृत

[लगभग ईसाकी ११ वीं शताब्दि]

उद्योतकेसरीके समयका शिलालेख

नोट.—इस शिलालेखके लेखका कुछ पता नहीं है । इसका उल्लेख मात्र टी. ब्लॉक (T Bloch) के Archaeological Survey of India, Annual Report 1902-1903, पृ० ४० के उल्लेख परसे हुआ है ।

[उद्योतकेसरीके समयका यह शिलालेख, जो कि ई० ११ वीं शताब्दिका है, शुभचन्द्रके कुल और गणका उल्लेख करता है । शुभचन्द्रके शिष्यका

नाम कुलचन्द्र था । ये (कुलचन्द्र) यहाँकी किसी गुफामें रहते थे और अपने गुरुकी तरह, अवश्य जैन रहे होंगे]

[T Bloch, A S I, Annual Report 1902-1903, p 40]

२४६

नेसर्गी (जिला बेलगाँव),—कन्नड़

[विना काल-निर्देशका, पर ई० ११ वीं या १२ वीं शताब्दिका (फ्लीट)]
बेलगाँव जिलेके सम्पगाँव तालुकामें नेसर्गीके एक छोटेसे तथा अर्द्ध-ध्वस्त जैनमन्दिरकी एक खड्गासनस्थ बुद्ध-प्रतिमाके चरणपाषाणपर निम्न-लिखित अभिलेख पुरानी कन्नड़के ई० ११ वीं या १२ वीं शताब्दिके अक्षरोंमें है —

श्रीमूलसंघद बलात्कारगणद श्रीपार्श्वनाथदेवर श्रीकुमुदचन्द्रभट्टारकदेवर गुड्ड वाडिगसात्ति-सेट्टियरु मुख्यवागि नख (ग ?) रङ्गलु माडिसिद नख (ग ?) रजिनालय ॥

[श्रीमूलसंघ बलात्कारगणके, श्रीपार्श्वनाथदेवके श्री कुमुदचन्द्र-भट्टारकदेवके शिष्य या अनुयायी वाडिगसात्ति-सेट्टि जिनमें मुख्य था ऐसे नगरके (व्यापारी लोगो) द्वारा 'नगरका जिनालय' बनवाया गया ।]

[IA, X, p 189, n° 16, t & tr]

२४७

ऐहोले—कन्नड़—भस

[विक्रमादित्य चालुक्यका २६ वीं वर्ष; शक १०२३=११०१ ई०

(फ्लीट)]

[ऐहोले गाँवके दक्षिण-पश्चिम दरवाजेके बाहर ही हनुमन्तकी आधुनिक कालकी वेदी है । इसके सामने 'ध्वजस्तम्भ' नामका एक पाषाण है । इस ध्वजस्तम्भके पाटुकातलमें एक वीरगल् या स्मारक पत्थर बनाया गया है जिसपर पुरानी कर्णाटकभाषामें एक शिलालेख है । इस लेखकी नकल भाग १ Elliot MS. Collection पृ० ४१० पर दी हुई है ।

पत्थरका ऊपरी हिस्सा दृष्टिसे ओझल हो गया है । लेकिन लेखकी तीन पंक्तियां द्रष्टव्य हैं । इनमें सोमवार दिन तथा विषु सवत्सरके, जो कि चालुक्य विक्रम-कालका २६ वाँ वर्ष अर्थात्, शक १०२३ (=११०१ ई०) होता है, श्रावणमासके शुक्रपक्षकी एकादशीका काल निर्दिष्ट है । पाषाणके दूसरे हिस्सेमें भगवान् जिनेन्द्रकी मूर्ति है जो कि पद्मासन है और जिसके दोनो तरफ यक्षिणियाँ चँवर ढोर रही हैं । पाषाणका शेष हिस्सा दृष्टिसे नहीं आता है; लेकिन उसमें अय्यावोळे (पेहोले) के पाँचसौ महा-जनोँद्वारा दिये गये दानका उल्लेख है ।]

[३० ए०, ९, पृ० ९६, नं० ६९]

२४८

दानसाले—संस्कृत तथा कन्नड

[शक १०२५=ई० ११०३]

[दानसालेमें, दक्षिणकी ओर, वस्तिके पासके एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासनम् ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाजाराधिराज परमेश्वर-परम-भद्रारकं सत्याश्रय-कुळन्तिळदा चालुक्याभरण श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल-देवर विजय-राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कतार सल्लत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीवि ॥ समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वरनुत्तर-मधुराधीश्वर पट्टि-पोम्बुर्चपुर-वरेश्वरम्महोग्र-वंशललाम पद्मावती-लब्ध-वर-प्रसादासादित-विपुळ-तुळ-पुरुष-महादान-हिरण्यगर्भ-त्रयाधिक-दान वानर-ध्वज मृगराज-लाञ्छन-विराजितान्वयोत्पन्न बहु-कळा-सम्पन्न शान्तर-कुल-कुमुदिनी-शशाङ्क-मयूखाङ्कुर रिपु-मण्डलिक-पतग-दीपाङ्कुरं तोण्ड-मण्डलिक-कुळाचल-वज्रदण्ड विरुद-भेरुण्ड कन्दुकाचार्य्य मन्दर-धैर्य्य कीर्ति-नारायण और्य्य-पारायण जिन-पादाराधकं परवल-

साधक शान्तरादिग्य सकल-जन-स्तुत्यं नीति-शास्त्रज्ञ विरुद-सर्व्वज्ञं
नामादि-समस्त-प्रशस्ति-सहितं श्रीमन्महा-मण्डलेश्वरं त्रिभुवनमल्ल-सा-
न्तर-देव ॥

॥ वृत्त ॥

कनकाद्रीन्द्रकमम्भोनिधिगमवनिग पेम्पिनोळ् गुण्पिनोळ् तिण्-।
पिनोळेत्तुं ताने पोपासटि सरि समनेन्दन्ददाव सम-स्कन्-।
धनदावं पोल्वनाव पडिय्ये निसुवव राज-सर्व्वज्ञनोळ् तै-।
लुनोळ्त्थि-स्तोम-चिन्तामणियोळ्खिळ-भू-भागदोळ् नोर्ण्डेन्तुम् ॥

व ॥ अन्तेनिसिद कलि-काल-कल्पपावनिजङ्गा-महानुभावङ्गे जन्म-
निळयमेनिसिद अखिळ-शत्रिय-कुलोत्तममुमद्वितीय मुमेनिसिदुर्गान्वया-
वतारमेन्तेन्दडे पार्श्वनाथ-सन्तानदोळनेकसमर-सम्मर्दित-रिपु-व्यूह-
राहनेम्बनुत्तर-मधुरा-पुरी-भुजङ्गनु प्रतिपालिन-चतुस्समुद्र-मुद्रित-
रुद्रवरी-रगनु-मेनिसि राज्य गेय्दनातनिन्दनन्तरमर्थि-जन-कल्पभूरुहा-
कार-सहकारं राज्यभर-धुरन्वरनादनातन तनय ॥

क ॥ जगदोळगण नृपरेल्लम् ।

मृगदन्तिरलात्म-विक्रम-प्राभवदिम् ।

मृग-रिपुविनतिरेसेदम् ।

नेगळ्दुग्रान्वय-नगेन्ददोळ् जिनदत्तम् ॥

व ॥ आ-नृपेन्द्रचूडामणि दुर्व्वार-भारत-समर-समय-समुदीर्ण-सौर्या-
तिरय-समरय-महारयाद्धरय-समूह-सम्मर्दन-लब्ध-विजयलक्ष्मीविवाहोत्सवतुं
त्रिविक्रम-कारुण्य-लब्ध-लसदेकशङ्कनु धनञ्जय-दत्त-शाखामृग-ध्वजनुम-
तर्क्य-विक्रमोपात्त-कण्ठीरव-ध्वजनुमागि दिग्-विजय-यात्रा-निमित्त दक्षिण-
दिशाभिमुखनागि विजय गेय्दु समस्त-दैत्य-वशध्वंसन माडि पद्मावती-

पदाराधना-लब्ध-सप्ताङ्ग-राज्य-राजधानी-पोम्बुर्चदोळु शान्तर-पद्म
ताळिद शान्तळिगेशायिरमुमनेक-च्छत्र-च्छाय-यिन्दाळु शान्तरसेम्बे-
रडनेय पेसर पडेदनन्दि वळिक्कमुग्रान्वयं शान्तरान्ययाभिधानम
पडेदुदाननि वळिक्कमनेक-राज-सन्तानकमतिक्रान्तमागे तदन्वयदोळु ॥

वृ ॥ विरुदर मृत्यु वीरद नवर्मेने चागद जन्म-भूमि शा- ।

न्तर-कुळ-वार्धि-वर्द्धन-शरत्-समयेन्दु समस्त-सत्-कळा-परिणत-
नङ्गना-जन-मनोभवनेन्दोसेदर्थियि बुधो-

त्करमभिवर्णिणसल्के नेगळद धरेयोळ् विमु शान्तर-ओङ्गुग ॥

क ॥ नव-जळददळि मिश्रुम्-सुबुदुवद शान्तरोङ्गुगं वाळ् गित्तन्- ।

तेवोलादुदेन्दु पोगळ्व । भुवनाधिपनात्म-समेयोळ-भूपतिय ॥

आतननुज ॥

क ॥ अदाटिनिदिरान्त-भूपर- । नदटलदेरदर्थि-निकरम तणिपि जगद्- ।

विदित-यश नेगळद भू- । प दिळीप वैरि-वीर-काळ तैल ॥

तत्पुत्र ॥

क ॥ आयद कड्डळे मदवद्- ।

दायाद-मृपाळ-दर्प-विच्छेदनन- ।

त्यायत-दोर-दर्प जय- ।

जायापति दळित-वैरि-वीरं वीर ॥

अवन मनोरमे गङ्गा- ।

न्वत्राय-पीयूष-वार्धि-सम्भवे लाव- ।

प्यवति मनोभव-राज्यो- ।

ङ्गव-विळसज्जन्म-भूमि वीरल-देवी ॥

अवरिर्व्यर्गम् ॥

भुजवल-शान्तरन्यु-

द्व-जय-श्री-ललित-प्रन-मुजा-दण्ड भू- ।

भुज-वन्धनवर्गे ताना- ।

भजनाद रिपु-त्रकाटवी-द्वदहन ॥

आतर्नि किरिय ॥

वृ ॥ शरणायात-शरणप्रनिधि-जन-कल्पक्षमाजनन्यावनी- ।

श्वर-सैन्यार्णव-त्राडवानकनओप्राशावधिन्यस्त-भा- ।

सुर-कन्हार-सुरापगा-निभ-यगश्रीवल्लभं नन्नि-शान्-

तर-देवं जगटेक-दानि नेगळ्ळ विध्वम्भरा-भागटोळ् ॥

तदनुजन्मनोद्भुगनात ॥

क ॥ विक्रम-चक्रिय पुण्यदे ।

चक्र पुरुष-स्वरूपदिं पुष्टितेनल् ।

विक्रमदिन्देसेदान ।

विक्रम-शान्तरनेनिष्प पेसर पडेद ॥

व ॥ आतन मनोरमे पाण्ड्य-कुल-वियत्-तळ-चन्द्र-लेखेयु शफर-
पताक-जय-पताकेयुमेनेसिद चन्दल-देविग ॥

क ॥ उदयाचलदोळहिमकरन् ।

उदधियोळमृतकरनुदयिपन्तिरलवर्गन्द् ।

उदयिसिदं सकळ-कळा- ।

सदन महिमानिळिम्प-गैल तैल ॥

अन्तु जगज्जनद पुण्यादिं कल्पवृक्षमे क्षत्रिय-स्वरूपदिं पुष्टितेनि ॥
पुष्टि सान्तळिगे-सायिरमुमनेक-च्छत्र-च्छायेयि सुखं राज्य गेयुत्तिरेसि

क ॥ अरुमुळि-देवन गाव- ।
 व्वरसिय सुते वीर-भूपनत्तिगे वीर- ।
 व्वरसियरग्रजे तैलप- ।
 धरणीश्वरनज्जि नेगळ्ढ-चड्डुल-देवि ॥
 भुजवळन गोग्गियोड्डुग- ।
 न जय-श्री-कान्तनेनिप वम्मन तायि वि- ।
 श्व-जगद्-चन्दे तानव- ।
 निजेगमरुन्धतिगमधिके चड्डुल-देवि ॥
 काश्वी-नाथ-मनः-प्रिये ।
 चञ्चज्जिन-समय-कामवेनु दिगन्त- ।
 प्राञ्चित-कीर्ति-पताके वि- ।
 रञ्चि-रमा-सदशे नेगळ्ढ-चड्डुल-देवि ॥

व ॥ आ-जिन-समय-निदान-दीप-वर्त्ति भुजवळ-शान्तर नन्नि-
 शान्तर विक्रम-शा [न्] तरं वम्मदेवं मोदलागि निज-नन्दन-
 समेत सुखं राज्य गेय्युत्तिहुं राजधानि-पोम्बुर्चदोलु पञ्च-वसदियं
 माडिसि या-वसदिय खण्ड-स्फुटित-जीर्णोद्धारकमल्लिर्प ऋपि-समुदा-
 यक्काहार-दानार्थमागि भुजवळ-शान्तर नन्नि-शान्तर विक्रमशान्तरतुं
 सूवरुमिहुं विट्ट ग्रामङ्गलु रावनाडोळ्गण अग्रहारमानंदूरुं (दूसरे स्थानों
 के भी नाम दिये हैं) विट्टरा-पञ्च-वसदिय प्रतिवद्द मागियानन्दूरुल्ल
 चड्डुल-देवियु श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल-शान्तर-देवतु वीरव्वरसियर्गे परोक्ष-
 विनयमागि यी-वसदिय श्रीमद्-द्रविल-सङ्घदरुङ्गलान्वयद वादि-घरट्टनेनि-
 सिट्ट श्रीमद् अजितसेन-पण्डित-देवर नामोच्चारणदि केसू-कल्लिकि-
 सिद-वराचार्यावल्लियेन्तेन्दे श्री-वर्द्धमानस्वामिगळ तीर्थ प्रवर्त्तिसे
 शि० २४

गौतमर् गणधररागे तत्-सनातनदोळनेकरतिक्रान्तरागे कलियुग-गण-
धरर् इयापाळ-देवरादरवरिं वळिक्क पट्-तर्क-पण्मुखापर-नामधेय
जगदेकमल्ल-वादिराज-देवरवरिं ओडेय-देवरवरिं श्रेयान्स-पण्डित-
रवरिं वळिक्क ॥

क ॥ दूरीकृत-दुरघ निर- ।

हारित-मदन स्व-तर्क-विद्या-वळ-सम्- ।

हारित-पर-समय वाक्- ।

श्री-रमणी-रमणजितसेन-मुनीन्द्र ॥

प्रद्युम्न-मद-विदारणन्- ।

उद्यद्गुण रत्न-वार्द्धिनेगळ्द पेरेदिन् ।

अद्यतन-गणधरं निर- ।

वद्य श्रीमत्-कुमारसेन-व्रतिप ॥

तार्किक-चक्रवर्त्तियु वादीभ-पञ्चाननमेनिसिद् श्रीमदजितसेन-
पण्डितेवर गुह् ॥

क ॥ नृप-विद्याम्बुवि-पारगन् ।

अपरिमित-स्याग-गुणनराति-मुखेन्दु- ।

ग्लपन-रुहा-राहु रिपु- ।

द्विप-सिंह शान्तरान्वयाम्बर-चन्द्र ॥

चागददगुन्ति याचकर- ।

आगिसिद्धु पलवरसर वीरददोन्द ।

ओगडिसदेव्गे वनचरर् ।

आगिसिद्धु पलवरहितर तैलुगन ॥

अवननुज निज-निर्लि- ।

२५०

होन्नूर—कन्नड़

[लगभग शक १०३०=११०८ ई० (फलीट) ।]

[कोल्हापुरके पास कागलसे दक्षिण-पश्चिमकी ओर दो मील दूरपर होन्नूरमे जैनमन्दिरके भीतर एक प्रतिमाके अभिषेक-स्थल (पाण्डुक शिला) के सामने यह प्राचीन कन्नड़का लेख है । प्रतिमा खड्गासनस्थ सिरपर सर्पके सप्तफणाधारी छत्रसे मण्डित पार्श्वनाथस्वामीकी है । इसके दोनों कोनोमें एक-एक झुकता हुआ या बैठा हुआ आकार (मूर्ति) है । लेख १३ इञ्च ऊँची तथा २ फुट ७ इञ्च चौड़ी जगहको घेरे हुए है । यह कोल्हापुरके शिलाहारोंसे बल्लाळ और गण्डरादित्यके समयका है, अर्थात् लगभग शक १०३० (११०८-९ ई०) के समीपवर्ती है ।]

लेख

स्वस्ति श्रीमूलसंघद पो(पु)न्नागवृक्षमूलगणद रात्रिमतिकन्ति-
यर गुड्ड वम्मगावुण्डं माडिसिद वसदिगे श्रीमन्महामण्डलेश्वरं बल्लाळ-
देवतु गण्डरादित्यदेवन्म(नुम्) आहारदानके विट्ट कम्मविन्नूरकं
अरुगयि मने

[स्वस्ति । श्रीमन्महामण्डलेश्वर बल्लाळदेव और गण्डरादित्यदेवने श्रीमूल संघके (मेद) पुन्नागवृक्षमूलगणके रात्रिमतिकन्तिके गुड्ड (शिष्य या अनुयायी) वम्मगावुण्डके द्वारा निर्मापित वसदिके लिये, (तपस्वियोंको) आहारदान के लाभार्थ २०० 'कम्म' एव छ. हाय या ३ गजका एक भवन दानमें दिया ।]

[IA, XII, p 102, n° 6, t & tr]

निर्माण करता था उसको कुछ भूमि भेंटमे दी जाती थी, इसके लिये उस तालाबसे फायदा उठानेवालोंसे तालाबके निर्माण करनेवालेको उत्पन्न (फसल) का १० वाँ हिस्सा या और कोई छोटा हिस्सा मिलता था । इसीका नाम 'दशवन्न' था ।

२५१

हेचवण्डे—संस्कृत तथा कन्नड-भ्रम

[वर्ष ३५ चालुक्य-विक्रम=१११० ई०]

[हेचवण्डेमें, तालाबके दक्षिण नष्ट हुए बाँधके पासके पाषाणपर]

श्रीमत्-परम.....॥

.....चालुक्याभरण श्रीमत्-त्रिभुवनमल्लदेवर विजयराज्यमुत्तरो-
त्तराभिवृद्धि-प्रवर्द्धमानम्माचन्द्रार्क-तारं सलुत्तमिरे ॥ आतन मगं एरेयङ्ग
(४ पक्तियाँ नष्ट हो गई हैं) विष्णुवर्द्धन-म एनिसि
केतवेर्गडे (६ पक्तियाँ नष्ट हो गई हैं) श्री-शुभचन्द्र-देव.....
... .. तुण्डरु वादि-कोळाहळ ' 'स्व-समय-रक्षण-पक्षपाति
... .. एनिसिद कनक ' त्रैविद्यसिद्धान्तदेवर शिष्यरूप
मुनिचन्द्र-सिद्धान्त-देवर गुड्डि केतव्वे ' विट्टि-देवतुं
भुजवळ-गंग-पेम्माडियु वम्म-गावुण्डु नाळ-प्रभु चालुक्य-
विक्रम-कालद ३५ नेय विकृत-संवत्सरद फाल्गुन-मासद शुद्ध-
पञ्चमी वृहवारदन्दु ' मुख्य-स्थानवागि ' चन्द्रशेखर-वेर्गडे कट्टि-
सिद केरेय केळगे गळदे कम्म मूवोत्तु आ-केरेय तेङ्गण-ओडियल्लु वेदले
मत्तरोन्दु मने आरु गाण वोन्दु (हमेशाका अन्तिम श्लोक) श्रीमत्
कनकनन्दि-त्रैविद्य-देवर गुड्डि सेनवोव-योग-देवन वरह ॥ श्री

[जिनशासनकी प्रशंसा । जब (अपनी उपाधियों सहित) चालुक्य
त्रिभुवनमल्लका विजयराज्य चारो ओर प्रवर्द्धमान था । (इस स्थानपर
होचसलोके विवरण है, जो कि बहुत घिस गये हैं ।) शुभचन्द्र-देव (से
परम्परागत धाये हुए) कनकनन्दि-त्रैविद्य-देवके शिष्य, मुनिचन्द्र-सिद्धान्त-
देवके गृहस्थ शिष्य केतव्वेकी प्रशंसा ।

विट्टिदेव, भुजवळ-गंग-पेम्माडि, वम्म-गावुण्ड (? तथा) नाळ-प्रभुने,
चालुक्य-विक्रम-कालके ३५ वें वर्षमें, जो कि विकृत वर्ष था, ६ मकान और

१ तेलंगी चर्की साय, (उक्त) भूमिका दान क्रिया । हमेशाके अन्तिम श्लोक । यह लेख कनकनन्दि-त्रैविद्य-देवके गृहस्थ-शिव्य, सेनवीर योग-देवके द्वारा रचा गया ।]

[LC, VII, Shimoga tl, n° 89]

२५२

महोदा—संस्कृत

[संवत् ११६९, फाल्गुन सुदि ८ (१११२ ई०)]

यह लेख संभवत जयवर्म्मदेवके कालका होना चाहिये, जो, जैसा कि इतिहास कहता है, सिर्फ ४ साल बाद, सं० ११७३ में शासन कर रहा था ।

[A Cunningham, Reports, XXI, p 73, a]

२५३

बालहळिळ—संस्कृत तथा कन्नड़-भक्त

[वर्ष ३७ चालुक्य विक्रम=१११० ई०]

[बालहळिळ (होळळर परगना)में, तलवारके खेतमें पापाणपर]

श्रीमन्परमगर्भारस्याद्वादामोवलाञ्छनम् ॥

जीयात् त्रैलोक्यनायस्य शासन जिनशासनम् ॥

सखि समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वरं
परम-भद्रारकं सत्याश्रय-कुल-तिलकं चालुक्याभरणं श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल-
देवर विजय राज्यसुत्तरोत्तरामिद्विप्रवर्द्धमानना-चन्द्रार्क-तारन्वर सल्लुत्त-
मिरे कल्याणपुरद-नेल्लैवीडिनोळ् सुख-सक्रया-विनोदति राज्य गेय्युत्तिरे
तत्यादपश्रोपजीवि ।

* महोदाके ये (न० २५२, ३२५, ३३७, ३४१, ३६०, ३६१, ३६५)
अतिसमित्त शिलालेख ए ० निधमन्ने मन् जैन मूर्तियांके चरग-पापाणपर मिले
ये । इनमेंके कुछ शिलालेख बहुत नामके हैं, क्योंकि उनमें जिस समय-मूर्तिका
निर्माण या प्रतिष्ठा हुई थी उन्का काल तथा उस समय शासन करनेवाले
राजाका नाम, ये दोनों चीजें दी हुई हैं । कुछमें शासक-राजा का नाम नहीं
मिलता, पर कालका उल्लेख मिलता है, कुछमें वह भी नहीं मिलता ।

खास्ति समस्त-वस्तु-गुण-भूपणनधि-परीत-भूतळ- ।
 प्रस्तुत-कीर्त्ति भावभव-सूक्ति जया-वनिता-प्रपूर्णा-वृ- ।
 त्त-स्तन-हार***वाञ्छित-कल्प-कुजानुसारन- ।
 भ्यस्त-कळागम-ज्ञनेने गङ्गरसं सरसं धरित्रियोळ् ॥
 विनयाधारमुदारमुन्नति कुलङ्ग*...श्वर्यमेम् ।
 इनितु शोभिसे शोभे-वेत्तनेनुतु धात्री-तळ कूर्तु-की- ।
 र्त्तने-गेय्यु जयदुत्तरंगननशेष-श्री ***वर्द्ध-प्रस- ।
 गन्वितरण-व्यासङ्गनं गङ्गनम् ॥

अन्तेनिसि नेगर्द नीतिवाक्य-कोङ्कुणिवर्म धर्म-महाराजाधिराज
 परमेश्वरं कुवळाळपुरवराधीश्वरं नन्दगिरि-नाथं सकळ-गुण-सनाथ मद-
 गजेन्द्र-लाञ्छन परिपूर्णाकृत-विलुध-जन-मनोवाञ्छन पद्मावती-लब्ध-
 वरप्रसादम् मृगमदामोदम् गङ्गकुळ-कुवळय-शरच्चन्द्र मण्डळिक*...द्र
 दप्पोद्धताराति-मण्डळिक-वनज-वन-वेदण्ड दुर्द्धर-गण्ड नामादि-समस्त-
 प्रशस्ति-सहित श्रीमन्महामण्डलेश्वर त्रिभुवनमल्ल भुजवळ-गंग-पेर्माडि-
 देवर पट्टमहादेवी ॥

पुष्टिद*...अनुज । पड्डिग-देवङ्गे गङ्गवाडिगे तळेदळ् ।
 पट्टमनेसेदिरे गङ्गन । पट्ट-महादेवियन्तु नोन्तरुमोळरे ॥
 परिवार-सुरभिगन्तर्- । पुर-मुख्य-मण्डनेगे गङ्ग-मादेविगे नायकि ।
 यरनदू*...ओड सति । दोरे * ...नृप*... पडेये ॥
 अन्तवर्गे ॥

गङ्ग-कुळ-तिळकरेनिसिद । गङ्ग-नृपं मारसिंग-नृप गोगिग-नृपं ।
 तुङ्ग-यशनेनिसिदं कलिय् । अङ्ग-नृपं नेगर्दरेळेगे कुमाराप्रणिगळ् ॥
 कोळालपुर-वरेश-नृ-पाळ-सुतर्मद-गजेन्द्र-लाञ्छनररि-भू-
 पाळ-कुळ-वनज-वन-शुण्डाळनेगर्दर् स्समस्त-सु-भटाप्रणिगळ् ॥

अन्तेनिसि नेगर्दग झ-पेर्माडि-देवरु गङ्ग-महादेवियरु कुमार-वर्गसुं
मण्डलि-सासिरदोळ्गाणेडेहळ्ळिय वीडिनोळ् सुख-संकया-विनोददि राज्यं
गेय्युत्तमिरला-महा-मण्डलेश्वरनर्दाङ्ग-ळ्ळिम ॥

श्री-ब्रधु जय-ब्रधु कीर्त्ति- । श्री-ब्रधु वाग्ब्रधुवेनिष्प ब्रधु गङ्ग-नृपङ्ग ।

ई-ब्रधुवेनिसिद वाचल-देवियेळ्गेयेन् वेनुळ्ळिद नृप-वनितेयरम् ॥

ई-चतुरम्बुधि-वेष्टित-भू-चक्रद सतियरेन्नलादडवेनो ।

वाचल-देविगे समन् ॥-च-मणि-प्रतति दोरेये चिन्तामणियोळ् ॥

काम-मडेभ-गामिनिगे.....नमे पूज्यमेनिष्प पेम्पिनिन्द ।

ईव म तणुपि कल्प-कुजक्केणे.....

दू..... . र-दान-गुण-भूपणे दान-विनोदे दान-चिन्-।

तामणि दान-कल्प-ल्लतेयेम्बिदु वाचल-देविगोष्पडे ॥

एरगदराति-भूमुजरनाजियोळ्ळिसि निजाङ्घिगळ् ।

एरगिसुतिर्ष दर्षद पोड गण्डनष्प त-।

नेरेयन.... ..तनगे गङ्ग-महीभुजन विलासदिन्द ।

एरगिसि...भाग्य-भरदुन्नति वाचल-देविगोष्पुगुम् ॥

अन्तुमल्लदे ॥

अरि-विरुद-पात्र-जगदळ । धरेगेळ्ळ नीने राय जगदळे नानी-।

धरेगेळ्ळमेन्दु पिरिदान- दरदिन्द . सि पात्र-जगदळे-वेसरम् ॥

कुडे राय जगदळे-वेसर- । वडेद.....डेय कडेय वडवुगळ्ळीयळ् ।

पडेदळ् रायरोळ्प कुडे वाचल-देवि पात्र-जगदळे-वेसरम् ॥

मत्तम् ॥

.....मेवुदे-नडे-तन्न महत्त्व-वृत्तियं ।

वेडदे नोडिरे नेगळ्द वाचल-देविय कीर्त्ति.....।

आडि दिगङ्गना-नटियरोळ् तणिविल्लुदे मत्तविन्नु.....।

.....वीर ..पात्र.....मेळे पात्रमुम् ॥

मत्तं स्वस्त्यनवरत-परम-कल्याणाभ्युदय-सहस्र-फल-भोग-भागिनि
 छलित-करण-गृहीत-भाव-प्रयोगिनि भुजवळ-गग-भूपाळ-विशाळ-वक्ष-स्थळ-
 निवासिनि । नृत्य-विद्या-प्रभाव-प्रभूत निर्मळ-यशो-विभासिनि...स्थान-
 पात्र-मुख-मण्डने । प्रतिपक्ष-गायिका-गान-नान-परिखण्डने । अनवरत-
 दान-जनिन-विद्युज-जन-हर्षे । देवा.....न... स .. तर्षे.....। चतुर-
 विद्या-विनोदे । कस्तूरिकामोदे । अरि-विरुद-पात्र-जगदळे । जिन-गन्वो-
 दक-पवित्रीकृतविनीळ-नीळ-कुन्तळे । निखिल-कुळ-पाळिका-गीयमान-वि-
 शद-यशो-गीति .. स्थान ...जिन-शासन-साम्राज्य-यशस्-पताके । परोप-
 कार-कमळाकरचक्रवाके । सौभाग्य-सर्वा-देवि श्रीमद्-वाचल-देवियद्
 वणिण्केरेय त्रिमोगाभ्यन्तर-सिद्धियिन्द सुरवदिनिरप्प ।

जन-चुते वाचल-देविय.....।

जननिगे सरि दारे समानमेनल्के केळ्।

वनियोळ् पडवळति.....।

जननिय.....जननियरेणेये ॥

पडेदोडमे दान-धर्म-कोडळु विगेप-त्रतक्किवेने नेगळ्द जसं ।

वडेदडव्.....मतिगे ।.....वसुधा-तळदोळ् ॥

आ-महानुभावेयोडपुट्टिदम् ॥

जिन-पदाम्बुज-भृङ्ग । जिन-समय-सरोजिनी-मार्ता... ।

.....प्रभ- । वेने नेगर्द वाहुवलि धरा-मण्डलदोळ् ।

एळ्यं मूरडियं कोट् । अळिपदनञ्जो..... ।

.....दिन् । इत्तिरिदिप नम्म वाहु-त्रलिया-त्रलियन् ॥

अन्तेनिसि नेगर्द श्रीमद्-वाचल-देवि ... हुवलियण्णतु धम्म-कार्या-
लोचनमनालोचिसि ॥

ई-भवनदोळेन्दु परि- । शोभितं..... ॥

.....एन्देन्दाहा- । राभय-मैपज्य-शास्त्र-दानमनेसेयल् ॥

माडुव वगेयिं मण्डलि- । नाडोळगण वन्नि.....अतुनयदिन्दम् ।

माडिसिदळ् जिन-गृहम । नाडाडिगळ्मुवमेन्दु धरे पोगळ्विनेग ॥

सङ्गळोळगिदुत्तम- । सङ्गं मूल-सगमा-सग-.... ।

तुङ्ग देसिग-गणमा- । सङ्गदोळागुड्डि वाचल-देवि ॥

देसदोळ्मुत्तममेनिसुव । देसिग-गणद...माडिसिदळ्दिदम् ।

देसिग-गणके मण्डलि- । सासिरक तिळकमेनिप चैत्यालयमम् ॥

अळ्ळिगे देसिग-गणदव- । गळ्ळदे मत्ताव-गणदलागन्देडकूळ् ।

अळ्ळदे तेज वोन्दिप- । गळ्ळददेन्तु बुधाळ्ज-वन-कळ-हसा ॥

पुर-मनुज-भुजग-भुवना- । न्तरदोळ् मुन्दादविन्नुदिप्पुवाविन्तिम् ।

दोरेये जिन-भवनमळेम्- । वर मातु दिट बुधाळ्ज-वन-कळ-हंसा ॥

जळधि-परीत-भू-वळ्युदोळ् नेगर्दोप्पुव गङ्गाडि-ना- ।

डोळ्ळगे नेगर्त्ते-वेत्तेसेव मण्डलि-नाळ्के मुखके मूगेनिप्पु ।

अळ्वियनान्त वन्निक्केरेयोळ् नेरेदोप्पुव पार्श्वनाथनीग् ।

अळ्ळि-कुळ-नीळ-कुन्तळेगे वाचल-देविगमीष्ट-सिद्धियम् ॥

अन्तेनिसि नेगर्द श्री-पार्श्वनाथ-देवर्गे चालुक्क्य-विक्रम-वर्षद ३७

नेय नन्दन-संवत्सरद पौष्य-शुद्ध ५ वृहवारदुत्तरायण-सङ्क्रान्ति-

यन्दु मण्डलिसासिरद वळ्ळिय वाड वूडङ्गेरेयल् वन्निक्केरेयल् तळ-

वृत्ति गर्दे मत्तर्मरू तोण्ट मत्तरोन्दु गाणवेरुडु पुरद कोलियो...आ-येरुडु

तळ-मण्डद सुङ्गवोळ्गागि यिन्तिनितुम भुजवळ-गङ्ग-पेम्माडि-देवरु

गङ्ग-महादेवियरु वरुगडे-वाचल-देवियरु कुमार-गङ्ग-रसतु मार-
सिंग-देवतु गोग्गै-देवतु कलियङ्ग-देवतु समस्त-प्रधानर नाड-प्रभु-
गळ सन्निधानदळु सर्व्व-त्राधा-परिहार सर्व्व-नमस्यमागि देवर श्री-पाद-
पद्ममूळटोळु धारा-पूर्व्वक माडि विट्टरु ॥

धरे पुसिवोगदे वेळगी- । धरेय भुज-त्रळदिनाळु भुजयळ-गङ्गम् ।
परेदिक्के जैन-धर्म । धरेयोळु चन्द्रार्कितारमुळुनेवरम् ॥
सकलोर्व्वो-स्तुतमप्य धर्ममनिद काढ चिरैश्वर्य-मुम् ।
भुकनक्कु विपरीतदि नडेदवगा-गङ्गेया-वारणा-
सि-कुरुक्षेत्रदोळेये गो-द्विज-मुनि-लीयर्कळं कोन्द पा-
तकनक्कु विडविर्कुमा-पुरुपनेनुं रौरव-स्थानमम् ॥

(हमेशाके शंतिम श्लोकके वाद)

शासनमिदाबुदेळिय । शासनमारित्तरेके सल्लिबुवे नानी- ।
शासनमनेम्ब पातक-ना-सकळ रौरवके गळगळनिलिगुम् ॥
देवर श्री-पाददोळु धारा-पूर्व्वकदि पुर-वरुगद सुङ्गच देवरुगे विट्टरु
वन्निकेरेयळु कलुकुटिग काळोज देव-दासिगळिगे विट्ट वेदले गळ्येयळु
मत्तरोन्दु ॥

श्री-देशी-गण-वार्धि-वर्द्धन- करश्चन्द्रोऽकलकाङ्कितम् ।
श्वेयान् श्री-मलधारि-देव-यमिनः पुत्र. पवित्रो भुवि ॥
सद्-धर्मैक-शिखामणिर् जिनप...चिन्तामणिम् ।
स-श्रीमान् शुभचन्द्र-देव-मुनिपरिसद्वान्त-रत्नाकरः ॥

श्री-लोककिगुण्डिय प्रभु एरकर्ण श्री-पार्श्व-देवरुंग-भोगके वड्डि-
यिन्द-क्षयमागि कोट्टु लोकिय गद्याण १ ॥ मत्त विट्ट गर्दे मत्तरोन्दु वेदले
मत्तरु मूरु ॥

[जिनशासनकी प्रशंसा । त्रिभुवनमल्ल-देवके विजय-राज्यमें तत्पादप-
द्वोपजीवी गङ्गरस था; इसको 'जयदुत्तरग' नाम भी दे रक्खा था ।
नीतिवाक्य कोट्टुणिवर्म धर्ममहाराजाधिराज परमेश्वर महामण्डलेश्वर त्रिभु-
वनमल्ल भुजवळ-गग-पेर्माडिदेवकी पट्टरानीने अपने छोटे भाई पट्टिग-
देवके लिये गङ्गवाडिका मुकुट धारण किया । तन्नाम रानियो और राजाओसे
वह ज्यादा प्रतिष्ठित थी ।

उन दोनोंके चार पुत्र उत्पन्न हुए—गङ्ग, मारसिंग, गोगिग, और
कलियङ्ग । ये सब महान योद्धा थे ।

जिस समय गङ्ग-पेर्माडि-देव, गग महादेवी, और उनके लडके मण्डलि
हजारमें अपने निवास-स्थान एडेहल्लिमें थे, उस महामण्डलेश्वरकी एक अन्य
बह्दाङ्गिनी वाचल-देवी (उसकी प्रशंसा) थी । उसने अपने पतिको 'पात्र-
जग-वृद्धे'की उपाधि दी थी ।

जिस समय (अनेक उपाधियोवाली) वाचल-देवी वन्निकेरेमें, अपनी
तीसरी पीढीकी सुशाले विश्रब्ध होती हुई, सुप्तपूर्वक रहती थी, उसने
अपने बड़े भाई वाहुवलीसे परामर्श करके वन्निकेरेमें एक सुन्दर जिना-
लय बनवाया ।

वाचल-देवी मूलसंघ, देशीगणकी गृहस्थ-शिष्या थी । उस देशीगणके लिये
उसने चैत्यालय बनवाया । समुद्र-परिवेष्टित लोकमें गङ्गवाडि-नाड प्रसिद्ध है
और उसमें मण्डलि-नाड प्रसिद्ध है । उसमें चेहरेपर जैसे नाक है उसी
तरह वन्निकेरे था । पार्श्वनाथ भगवानके लिये चालुक्य विक्रमके ३७ वें
वर्षमें भुजवळ-गङ्ग पेर्माडिदेव, गग-महादेवी, पेर्माडे-वाचल-देवी, और
कुमार गङ्गरस, मारसिंग देव, गोगिग-देव, कलियङ्ग-देव, और तन्नाम मन्नि-
यौने, नाड-प्रभुओकी उपस्थितिमें सब वरो एघ सुद्धियोले मुक्त, मण्डलि-
हजारके वृद्धकेरे, वन्निकेरेकी कुछ जमीन, एक बगीचा, दो कोलहू, और उन
दोनों शहरोकी कुछ सुद्धीकी आमदनीका दान किया । आशीर्वचन और
शाप । पापाण-शिष्पी काळोज (शासनके उत्कीर्ण करनेवाले) का नर्त्तिकयोके
लिये दान । शुभचन्द्र-देव-सुत्तिपकी प्रशंसा । लोकिगुण्डि प्रभु एरेकणने
भगवानके भोगके लिये १३ लोकि गद्याण, तथा कुछ भूमि दान की ।]

[EC, VII, Shimoga tl, n° 97]

२५४, २५५, २५६, २५७, २५८, २५९, २६०, २६१

श्रवणवल्लोला—संस्कृत तथा कन्नड

(देखो जैनशिलालेखसंग्रह, प्रथम भाग ।)

२६२

मत्तावार—कन्नड-भग्ना

[शक १०३८=१११६ ई०]

[मत्तावार पार्श्वनाथ वस्तिके प्राङ्गणमें एक पापाणपर]

खस्ति श्री सक-वरुप १०३८ नेय दुर्मुकि-संवत्सरद् चैत्र-
मासद् कृष्ण..... यादिवार..... चेदल्लियु मायन.....मग
मावण्णन शिप्यरु सन्यसन गेय्दु मुडिहिदि निसिदि ।

[(उक्त मितिको), मायनका पुत्र और मावण्णका शिष्य सन्यसन
(संन्यास=समाधि) धारण करके मर गया । उसका यह स्मारक है ।]

[EC, VI, Chikmagalur tl, n° 51]

२६३

तिप्पूर—संस्कृत तथा कन्नड

[शक सं० १०३९=१११७ ई०]

[तिप्पूर (तुलगेरी-प्रदेश) में, नांवेके उत्तर-पूर्व, पहाड़ीपर]

भद्रमस्तु जिनशासनाय सम्पद्यता प्रतिविधानहेतवे ।

अन्यवादिमदहस्तिमस्तकस्फोटनाय घटने पटीयसे ॥

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासनम् ॥

खस्ति ह्यौय्सल-वजाय यदु-मूलाय यद्भवः ।

क्षत्र-मौक्तिक-सन्तानं पृथ्वी-नायक-मण्डनम् ॥

खस्ति श्रीजन्मगेह निमृत-निरुपमौर्वानल्लोदाम-तेज ।

विस्तारोपात्त-भू-मण्डलममल-यशश्चन्द्र-सम्भूति-धाम ॥

वलुनातोद्भव-स्यात्काननिशय-सुरशायकम् गभीरं ।
 प्रस्तुत्य निलमन्मोनिधिनिम्नेनेगुं द्वीयुसकोर्वाश-यदान् ॥
 अदरोष्कौ लाम्बोन्तनर्ग-गुगन देवेभदुदानन्स-
 र्चदगुर्वं हिम-रानिन्युज्जल-ज्जलानगतिः नारिजा-
 तदुदारव्यद पेन्गनोर्वने नितान्न ताञ्चि नानलो पु-
 ङ्ङिन् उद्वेजितवीर-जैरि विनयादित्यावनी-गलकम् ॥
 विनयादित्यष्टनं नजनर्ग दुर्जनर्गमान्निनय तेजं ।
 जनिपिले नयन भयन । विनूत नाञ्चो गिजालमृत्पदलमं ॥
 अ-वित्तयादित्य-अधु । भावेद्भव-मन्न-उवता-सन्निभे नद-
 भावन्गुग-भवनतल्लिज्जलज्जिलसिने क्येलेयव्वरसि वेन्नु पेसिं
 आ-उन्वतिगे तनूमन् । आद शचिगं नुराविमतिगं नुनेत्त ।
 आदं जयन्तन् अन्ने विन पाठ-विद्वरान्गङ्गन् एरेयङ्ग-नृपं ॥
 ऐर्यन् अखिचोर्दिन् एनिसिर्द । ऐर्यङ्ग-नृगल-निलकन् अङ्गने चत्विग-
 ऐर्यङ्गु नील-गुगदि । नरेद् एचल-देविन् अन्तु नोन्तल्लोकरे ॥
 एने नेगव्द अशरिर्वर्गं । तनूमन् नेगव्दर अन्ते बल्लकं विष्णु-
 च्छमायकन् उदयादि- । लमेन् पेन्सिरिन्तमखिज्ज-अन्तुवतळ्ळोक् ॥
 अत्रोक् मय्यतनागिन्तुं अरणिः पूर्वापरान्भोविन् ए-
 व्दुष्टिन कुडे निनिचुवेन्नु निज-वाता-विज्जन-श्रीडेयु-
 द्वेवदिन्दुत्तमलाड सुत्तन्गुगानैक-यामं अरा-
 च्च-चूडामणि यादववज-दिन- श्री-विष्णु-मूगलकन् ॥
 ॥ जं ॥ एल्लेसेत्त क्रोयतूर ज्वन तळ्वनपुरान्ते रायरायपुरन्त-
 पळ वळेद् विष्णु-तेजेन उळ्वनदे वेन्दु वळ्ळि-रिपुदुर्गङ्ग ॥
 लसि ननविगत-अनहाशयं नहान-डलेवरं द्वारावती-पुरवरा-

धीश्वर यादवकुलाम्बरद्युमणि सम्यक्त्व-चूडामणि मलपरोळ्-गण्डाघनेक-
नामावली-समलङ्कृतम् अप्प श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल तलकम्बु-गोण्ड भुज-
वळ वीरगङ्गविष्णुवर्द्धन-होयसल-देवर-विजयराज्यप्रवर्द्धमानमाच-
न्द्रार्कितारं सल्लुत्तिरे तत्पादपद्मोपजीवी ॥

जनताधारनुदारनन्यवनितादूरं वचस्सुन्दरी-

घन-वृत्त-स्तन-हारनुप्र-रण-धीरम्मारनेनेन्दपै ।

जनक तानेने माकणव्वे विवुध-प्रख्यात-धर्म-प्रयु-

क्के निकामात्त-चरित्रे तायेनलिदेनेच महा-धन्यनो ॥

उत्तमगुणततिवनिता- वृत्तियनोळकोण्डुदेन्दु जगमेळ कै-

व्येत्तुविनममळ-गुण-सन पत्तिगे जगदोळगे पोचिकव्वेये

नोन्तळ ॥

अन्ते निसिदेचि-राजन पोचिकव्वेय पुत्रं श्रीमन्महाप्रधान दण्डनायकं
द्रोहघरट्ट गङ्गराजं चोळन-सामन्तम् इडियमं मोदलागि तळक्काड-
वीडिनोळ् पडियिप्पन्तिर्दु चोळं कोट्ट नाड कुडदे कादि कोळ्ळिमेने
विजिगीपु- वृत्तियिन्देत्ति वळमेरडु सार्चिदल्लि ॥

इत्तण भूमि-भागदोळ् अदन्यरदेके भवत्प्रताप-सं-

पत्तिय वर्णना-विधिगे गङ्ग-चमूप-जिगीपु-वृत्तियिन्दु ।

एत्तिद निन्न कय्य निशितासिय तेमोने वेन्न-वारनेत्-

तुत्तिरे पोगि कश्चि-गुरि-यप्पिनमोडिद दामनेय्दने ॥

आन् ओन्दे-मेय्योळ् एय्दि नरसिंग-वर्म्म-मोदलाद चोळन-साम-
न्तम् एल्लर वेड्कोण्डु नाड् आदुद् एल्लमनेक-च्छत्रम्माडि कुडे कृतज्ञं
विष्णु नृपति मेच्चिदेम् वेडिकोळ्ळिमेने ॥

अवनिपनेतगित्तपनेन्-। दवरिवर-त्रोल्लिद वस्तुवं वेडदे भू-
 भुवनम्बण्णिसे तिप्पूर । वृत्तियं वेडिद जिनाच्चन-लुधम् ॥
 अन्तु वेडि कुडे पडेदु गाजलरु-कुडुगेर्य् ओळ्गाद तिप्पूर
 वृत्तियं शकवर्ष १०३९ नेय हेमण(ल?)म्बि-संवत्सरद
 उत्तरायणसंक्रमणदन्दु तम्म गुरुगळु श्रीमूलसङ्घद काणूरग्गणद
 तिच्चिणिक गच्छद श्रीमन्मेघचन्द्र-सिद्धान्त-देवर काल कच्चिं
 धारापूर्व्वक माडि विट्ट दत्ति ॥

प्रियदिन्दिदित्तिनेय्दे काव पुरुषर्गायुं महाश्रीयुं अक्-
 के इदं कायदे काव्य पापिगे कुरु-क्षेत्रोर्व्वियोळ् वाणरा-
 सियोळ् एकोट्टि-मुनीन्द्रर कविलेयं वेदाह्यरं कोन्ददोन्द-
 अयसं सागुमिदेन्दु सारिदपुव ई-शैलाक्षरं सन्ततं ॥

[EC, III, Malavalli t], n° 31]

[जिनशासनकी प्रशंसाके बाद पोयसल राजाओके वंशकी प्रशंसा ।
 इसी वंशमें विनयादित्य उत्पन्न हुआ उसकी प्रशंसा । उससे और उसकी
 पत्नीसे एर्येयङ्ग उत्पन्न हुआ । उसकी पत्नी एचलदेवी । उनसे बल्लाल,
 विष्णु, और उदयादित्य उत्पन्न हुए । उनसे वीचके विष्णुने पूर्व समुद्रसे
 पश्चिमतक सारी पृथ्वीपर कब्जा किया । उसके पराक्रमकी ज्वालाओसे
 मजबूत छोटे शाही किले कोयतूर, तलवनपुर (जो कि रायरायपुरका ही
 दूसरा नाम है) नष्ट हो गये ।

उस समय वीरगङ्ग विष्णुवर्द्धन होयसलदेव अपनी चरमोन्नतिपर पहुँच कर
 राज्य कर रहे थे । एचि-राजाके पिता मार, माता माकणव्वे और पत्नी
 पोचिकव्वेकी प्रशंसा । उनके पुत्र महाप्रधान एव दण्डनायक गङ्गराज हुए ।

चोलके अधीनस्थ शासक इडियम और दूसरे लोगोंने जब चोल राजाके दिये
 हुए प्रदेशको देनेसे इन्कार कर दिया तब गङ्ग-चमूप (गङ्गराज) ने उनसे
 वह प्रदेश लडाईं लड़कर ले लिया । अकेले ही गङ्गराजने नरसिंग वर्म्म और

चोलके अधीनस्थ अन्य तमाम विपक्षी शासकोंको भगा दिया और नाड देशको एक छत्रके नीचे लाकर विष्णुवर्धनको सौंप दिया, जिसपर उसने गङ्गराजसे अपनी इच्छाके माफिक कोई वर मांगनेको कहा । उत्तरमें गङ्गराजने तिप्पूर माँगा ।

इस प्रकार इच्छानुसार माँगे हुए और दिये हुए तिप्पूरका, जो कि गाजलूर और गौडुमेरीके बीचमें है, मूलसंघ, काणूर गण और त्रिचिणिक-गच्छके मेघचन्द्र-सिद्धान्त-देवको दान कर दिया ।]

२६४

चामराजनगर—संस्कृत तथा कन्नड

[शक १०३९=१११७ ई०]

[चामराजनगरमे, पार्श्वनाथस्वामीकी बस्तीके एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोधलाञ्छन ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

खस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्दमहामण्डलेश्वरं द्वारावतीपुरवराधीश्वरं
यादवकुलाम्बरद्वमणि सम्यक्त्व-चूडामणि मलेपरोळ्गण्डाद्यनेकनामा-
वलीसमलकृतरप्प श्रीमद्भुजवल वीरगङ्ग विष्णुवर्द्धन विट्टिग-होयस-
ल-देवरु गङ्गवाडि-तौम्भत्तरु-सासिर कोङ्गोळगागि एकच्छत्रछयेयिं
तलेकाडुलु कोळाल-पुरदलु सुख-सङ्कया-विनोददिं राज्य गेय्युत्तमिरे ।

श्रीमत्स्वामिसमन्तभद्रमुनिपो देवाकलङ्कस्तुतः

श्रीपूज्याङ्घ्रिरुदात्तवृत्तनिलयो श्री-वादिराजाम्बुधौ ।

आचार्यो द्रविडान्वयो जिनमुनिश्श्रीमल्लिषेण-व्रती

श्रीपालः परिपालिताखिलमुनिस्सोऽनन्तवीर्यक्रमः ॥

जिननिष्ठ-दैवमजितं । मुनिपति गुरु पोय्स्लेशनाब्दनेनल् सद्

विनुतं माडिसिदं श्री- । जिनगृहम पुणस-राज-दण्डावीशं ॥

मित्र-कुलाब्धि-वर्द्धन-सुधाशु विरोधि-बलान्तकं महा-
 माल्य-कुलोद्भवं सकळशासनवाचकचक्रवर्त्ति लो-
 कत्रयवर्त्तिकीर्त्ति **पुणिसम्म-चमूपनवङ्गे शुद्ध-चा-**
रित्रे पवित्रे पोचले मनः-प्रिय-बल्लभे तत्तनूभवद् ॥
 चावणनाश्रितामर-महीरुहनुद्धतमन्निमन्निविद्-
 रावणनातर्नि किरिय कोरपनन्वितसत्कळा-कळा- ।
 पावृत-त्रोधनातननुजं सुजनाग्रणि नागदेवना-
 ज्ञावनतान्य-मन्नि-निचय कवितागुण-पङ्कजासनम् ॥
पुणिस-चमूपनेम्बेसेव शासन-वान्वक-चक्रवर्त्तिगेन्-
तेणिसलोड पोगर्त्ते तनगागिरे पुट्टिद चामराज ना-
कण कुमरय्यनेम्ब रतुन-त्रय-मूर्त्तिय पुत्रनोष्पिदं ।
पुणिसम-दण्डनायनुदितोदित-चाम-चमूप सम्भवम् ॥
 अवरोळ्णे पिरिय चावन । युवतियरप्परसिकव्वेग चौण्डलेगं ।
 भुवन-प्रसिद्धरात्मोद्- । भव [रादर प्] **पुणिसमय्यनुं विट्टिगुं**
 कोळनेन्तम्भोजमुण्णम् नलिट्टु महिमे-वेत्तिपुवन्तागळु श्री- ।
 निलय विख्यातवृत्त **पुणिसेगनवर्नि विट्टिगं पुट्टे मित्रर्ग-**
गळिगोळ सय्यप्.....उद्भविसितखिळ-भव्य-त्रज नाडेयु निश-
चळ-चेतोजातरादद्धरेयोळेसेदुदन्ता-महामाल्य-गोत्रम् ॥
 चावङ्ग सत्त्रियदिं । भावकियेनिपरसिकव्वेग सुतनोगेद ।
 केवळमे नेगर्द पोयसल- । भू-वनितेश्वरन सन्धिविग्रहि **पुणिसं ॥**
तोदवनदिर्धि कोङ्गरनडङ्गिसि पोलुवरं पोरळ्चि मा-
 णदे **मलेयाळरम्मडिपि काळ-चृपालन तोळ त्रिङ्गमम् ।**
 वेदरिसि पोक्कु नीळ-सिळ्ळेयं जयलक्ष्मिगे कीर्त्ति[•••] मा-

डिद विभु विट्टि-देवन महा-सचिव पुणिसं वळाधिकम् ॥
 अदटिं पोय्सळ-भूपनोम्मे वेस ...नीळाद्रियं कोण्डु तन्- ।
 ओदविन्दं मल्ल्याळरं कदनदोळ् वेङ्कोण्डु तत्साहसा- ।
 म्युदयं कैकोळे कैरळाधिपतियागिर्हेम् वयल्-नाडन ।
 पदपिं काणिसि कोण्डनिन्तु पुणिस-श्री-दण्डनायाधिप ॥
 केट्टु नियोगि विट्टु मोदलिल्लदे वन्द कृषीवल मोदल् ।
 गेट्टु किरातनोलगिसळारदे सेवकनागे गेट्टुदम् ।
 कोट्टु निरन्तरं जगमनिन्तभिरक्षिसुतिर्प्य पेम्पोडम्-
 वट्टिरे दण्डनाथ-पुणिसं नेगळ्दं भुवनान्तराळदोळ् ॥

दरमिर.....लीयदे ग- । गर परियिं गङ्गवाडि-तोम्भत्तरु-सा-
 सिरद वसदिगळनाळङ्करिसिदपं पुणिस-राज-दण्डाधीशम् ॥

खस्ति श्रीमतु सक-वरुप १०३९ नेय दुर्म्युखी-संवत्सरद
 जेष्ठवहुळ १ व मूलाक्कारदन्दु तुलारासिय वृहस्पति-लग्नदल एण्णे-
 नाड अरकोत्तारदल श्री-सन्धि-विग्रहि दण्डनायकपुणिसमथ्य माडिसिद
 त्रिकूटद-वसदियोळगागि वसदिगळ्णे त्रिट्टु गद्दे आ-ऊर हड्डुवल्लु अण्ण-
 मारेय-नोरेय केळ्णे.....खण्डुग हट्टुके गुळि १००० आ-ऊर तेङ्कण
 हेगोरेय कीळेरियल्लु गद्दे खण्डुग ऐदके गुळि ५०० वेदले ...
 हरदरि खण्डुग एरडके ९ गुळि ४००० आ-ऊर हळ्ळि सहित जक्कि-
 कोळग धर्म-गोळ दान-गोळग कळ्दु.....गुळि ओन्दु होरें गाण-
 दलोम्मान एण्णे तोण्टद गुळि १०० आ-ऊर वडगण कोडेयनहळ्ळि
 सहित.....पुणिस-जिनालयके धारा-पूर्वक माडि विट्टु दत्ति (रीतिके
 अनुसार अन्तिम श्लोक)

वसदिगो विट्ठी-धर्मम- । न् ओसेदु करं सल्लिसदिर्दंडं.....।
 ।ब्राह्मणन कोन्द गति समनिसुगुं ॥

[जिनशासनकी प्रशंसा या स्तुति । इस समय अनेक पदोंसे अलङ्कृत घोरगङ्ग विष्णुवर्द्धन विट्ठिग-होय्सलदेव कोद्दु तककी गङ्गवाडि ९६००० की जमीनके ऊपर तलकाड और कोळाल-पुरमें सुखसङ्कथा-विनोदसे राज्य कर रहे थे ।

समन्तभद्र, देवाकलङ्क, पूज्यपाद, वादिराज, द्विडान्वयके मल्लिपेण, श्रीपाल, और अनन्तवीर्य (इनका वर्णन किया गया है) । पुणस राज-दण्डा-धीशके देव जिन थे, गुरु अजित मुनिपति थे, और पोयसल राजा उनका शासकथा । उन्होंने एक जिनमन्दिर बनवाया । पुणिसम्मकी पत्नी पोचले थी । उनके पुत्र चावण, कोरप, और नागदेव थे । उनको क्रमसे चामराज, नाकण, और कुमरय्य भी कहते थे । वे रत्नत्रयमूर्तिके समान थे । उनके ज्येष्ठ पुत्र चावण तथा उनकी पत्नियो अरसिक्खे और चौण्डलेसे पुणिसमय्य और विट्ठिग उत्पन्न हुए । चावण और अरसिक्खेका पुत्र पोयसल राजाका सान्धि-विग्रहिक मन्त्री पुणिस हुआ । विट्ठिदेवका महा-सचिव पुणिस था । विट्ठिदेवने तोड़ लोगोको डरा रक्खा, कोङ्ग लोगोको भूगर्भमें भगा दिया, पोलुव लोगोको कल कर डाला, मळेपाल लोगोको मार डाला, काल नृपतिको भयभीत कर दिया और नील-पर्वतपर जाकर उसकी चोटीको जयलक्ष्मीके स्वायत्त कर दिया । पुणिस-दण्डनाथाधिपने एक-वार पोयसल राजाकी आज्ञा मिलनेपर नीलाङ्गिपर कब्जा कर लिया और मळेपाल लोगोका पीछाकर उनकी सेनाको कैदी बना लिया और इस तरह वह केरलाधिपति बन गया और इसके बाद फिर खुले मैदानसे आ गया । जो व्यापारी विगड गये थे, जिन किसानोके पास वानेके लिए वीज नहीं था, जिन हारे गये किरात-सरदारोके पास कुछ भी अधिकार नहीं रह गया था और जो उसके नौकर हो गये थे, तथा सबको जिसका जो-जो नष्ट हो गया था वह सब उसने दिया और उनके पालन-पोषणमें मदद की । बिना किसी भय-सञ्चारके, गङ्गोकी ही तरह, उसने गङ्गवाडि ९६००० की वसदियोंको शोभासे सजित किया ।

पुष्पे-नाडुके धरकोट्टारमें अपने द्वारा बनवाई गई त्रिकूट बसदिकी बसदियोंके लिये उसने भू-दान किया ।]

[EC, IV, Chamarajnagar tl, n° 83.]

२६५

मुगुलूर—कन्नड़

[वर्ष हेमलन्वी [१११७ ई० ? (८० राइस)]

(इस लेखकी पहली १४ पक्तियाँ इसी नामके तालुकेके ३८० वें लेखकी पंक्तियोसे मिलती हैं)

.....पुष्पसेन-सिद्धान्त-देवरु अवर शिष्यरु वासुपूज्य-देवरु
हेमलम्बि-संवत्सरद वैशाख-त्रहुल त्रयोदशी-बुधवारदन्दु सल्लेखन-स-
माधि-भरणदि मुडिपि स्वर्गके सन्दरु मगलमहा श्री श्री श्री

[द्रमिल संघान्तर्गत नन्दिसंघके अरुल्लान्वयकी प्रशंसा । पुष्पसेन-
सिद्धान्त-देवरुके शिष्य वासुपूज्य-देवने (उक्त मितिको), सल्लेखना धारण
करके, देहत्याग किया और स्वर्गको पहुँचे ।]

[EC, V, Hasan tl, n° 131.]

२६६

हल्लेवीड—संस्कृत कन्नड-भग्न

[काल लुप्त, लगभग १११७ ई०]

[इसका लेख नहीं है, मात्र 'Mysore ins Translated' में नं०
११७ के शिलाशासनमें लुई राइसके द्वारा अनुवाद दिया हुआ है]

[लेखमें सर्वप्रथम जिनेश्वर पार्श्वनाथको लक्ष्य करके मङ्गलाचरण है ।
पश्चात् राजा विष्णुवर्द्धन और उसके मन्त्री गङ्गराजकी प्रशंसा है ।]

[Mysore ins translated, n° 117, tr']

१ अनुवाद लम्बा होनेसे मूल लेख भी लम्बा मालूम पड़ता है ।

२६७

निदिगि—संस्कृत तथा कन्नड-भग्न

[वर्ष ४२ वि. चा०=१११७ ई०]

[निदिगि (विदरे परगना)में, दोड्डमने नविलप्प-गौडके खेतमें

एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम्

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

खस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर
परम-भट्टारक सत्याश्रय-कुळ-तिलकं चालुक्याभरणं श्रीमत्-त्रिभुवन-
मल्लदेवर विजय-राज्यमु....त्तराभिवृद्धि-प्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कतारं-त्रं
सल्लत्तमिरे । तत्पादपद्मोपजीवि ।

उत्तममप्प.....तोम् ।

भत्तरु-सासिरं विषयमाप्तननिन्द्य-जिनेन्द्रनाजिरन् ।

गात्त-जय जयं जिनमत मतमागिरे सन्ततं निजो- ।

दात्ततेयिन्दमा-दडिग-माधव-भूमुजराळ्दरुर्वियम् ॥

उत्तर-दिक् तटावधिगे तागे म.....मूड तोण्डे-ना- ।

डत्तपराशेगम्बुनिधि चैवोळ्ळियप्प.....कोड्डु म- ।

त्तित्तोळ्ळु वैरिगळनिक्कि परावृत गङ्गवाडि-तोम् ।

वत्तरु-सासिरं-दले माडिदरिन्तुट्टु गङ्गरुज्जुगम् ॥

.....गंगनि भय- । मिल्हद हरिवर्म्म विष्णु-नृपनिं निजदिं ।

बळे तडङ्गाल्-माधव- । नळि बळि चुर्चुवाय्द-गङ्ग-नृपालं ॥

श्रीपुरुषं शिवमारं । भूपाल् कृतान्त भूपना-सयिगोड्डुम् ।

द्वीपाधिपरोळरि-नृप- । कोपानल-शिखेयेनिप्प विजयादित्यम् ॥

म-येरिद मारसिङ्गना- । कुरुळ-राजिगं पेसर्वेत्ता- ।
 मरुळं तनृप-तिलकन । पिरियमग सत्यवाक्यनचळितसौर्यम् ॥
 गर्वद-गं.....वसुधेयो- । लोर्व्वने कलि चागि शौचि गुत्तियगङ्गम
 दोर्व्विक्रमाभिरामन- । गुर्व्विन कलि राचमल-भू-नृप-तिलकम् ॥
 तेङ्गं मु.....हसिय कौ- । बुङ्ग पिडिडडसि कीव्वना-मद-कारिय
 पिङ्गद निलिसुव साहस- । तुंग केवळमे नेगब्द रकस-गङ्गम् ॥
 इन्तेनिसि नेगब्द गङ्ग-वशोद्भवरोळा-दडिगन मग चुर्चुवायद-गङ्ग
 नातन सुतं दुर्व्विनीतनातन तनेय श्रीविक्रमनातन पुत्र भूविक्रमं ।
 तत्सूनु श्रीपुरुष-महाराजम् । तत्-तनेयं सिवमार-देवम् । तत्-तनू-
 भवनेरेय.....तत्पुत्रं वृतुगवेर्माडि । तदात्मजं मरुळ-देवं । तदनुज
 गुत्तिय-गङ्गनातन मर्म मारसिङ्ग-देवनातन.....ग क.....ग-
 देवनातनमग वर्म्म-देवनिन्तु गंग-वशोद्भवरु राज्य गेथ्ये ।
 दक्षिण-देश-निवासी गङ्ग-मही-मण्डलिक-कुल-सधरणः ।
 श्री-मूलसध-नाथो नाम्ना श्री सिंहनन्दि-मुनिः ॥
 श्री-मूलसध-वियदमृ- । तामळ-रुचि-रुचिर-कोण्डकुन्दान्वय-ल- ।
 क्ष्मी-महितं जिन-धर्म-ल- । लाम क्राणूरुगगणं जनानन्द-करम् ॥

आ-गणदन्वयदोलु ।

मणिरिव वनरागौ मालिकेवामराद्रौ
 तिलकमिव ललाटे चन्द्रिकेवामृताशौ ।
 इव सरसि सरोजे मत्त-भृङ्गी-निकायः
 समजनि जिनधर्मो निर्मलो वाळचन्द्रः ॥

अवर शिष्यरु ।

विमल-श्री-जैनधर्मावर-हिमकरनुद्यत्-तपो-राज्य-लक्ष्मी- ।

रमण भूमण्डलाधीशानुभय-सिद्धान्त-रत्नाकरं ज- ।

गम-तीर्थ भव्य-वक्राम्बुज-खरकिरणं श्री-प्रभाचन्द्र-सिद्धा- ।

न्त-मुनीन्द्रं क्षीर-नीराकर विशद-यज्ञो-त्रेष्टिनागा-विभागम् ॥

अथ शिष्यरु ।

गुणियेने जिनमत-रक्षा- । मणियेने कवि-गमक-त्रादि-त्राग्नि-प्रवरा- ।

अणियेने पण्डित-चूडा- । मणियेने गुणनन्दि-देवरेसेदद्धरेयोळ् ॥

तत्-सधर्मरु ।

अळवे पेळ् नुडियल्के विरुदं माण् माणेले सांख्य वा- ।

ग्वळम नच्चदे नीनडङ्गेडरदिरु चार्वाकनैय्यायिका ।

मलेयल् वेडिरु मड्मेके चलदिन्दी-वन्दप केम्नण- ।

डलेयल् श्री-गुणचन्द्र-देवनमळ वादीभ-कण्ठीरवम् ॥

तत्सधर्मरु ।

गङ्गा-वारि-सु-शैवळ सुर-करी दानार्द्रि-गण्ड-स्थळः ।

शम्भुः कण्ठ-विलग्न-घोर-गरळश्चन्द्रः कळङ्काङ्कितः ।

कैलासो वन-वल्लरी-परिवृतस्साम्य कथं वच्यहम् ।

कीर्त्या सह माघनन्दि-यमिनश्चन्द्रातपोचच्छ्रिया ॥

आ-चारित्र-चक्रेश्वर-मुनि-राज-राजन शिष्यरु ॥ स्वस्ति समधिगत-

पञ्च-महा-शब्द-महा-कर्याणाष्ट-महा-प्रातिहार्य-चतुर्लिंगादतिशय-विराज-

मान-भगवदहर्त्परमेश्वर-परम-भट्टारक-मुख-कमल-विनिर्गत-सदसदादि-व-

स्तु-स्वरूप-निरूपण-प्रवण-सिद्धान्तामृत-वार्द्धि-वार्द्धौत-विशुद्धेद्ध-बुद्धि-समृ-

द्धरु सकळ-भुवन-प्रसिद्धरु शम-दम-यम-नियम-नियमितान्तःकरणरु

वाक्सुन्दरी-स्तन-मण्डन-रत्नाभरणरुमप्य श्रीमत्प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देव-

रेन्तेन्दडे ।

आशीदाशान्तराळ-प्रथित-पृथु-यशो-ज्योम-गंगा-तरंगः ।

चञ्चचारित्र-धात्री-भवदति-ललितोदार-गम्भीर-मूर्त्तिः ।

वाक्-कान्तोत्तुंग-पीन-स्तन-कळश-लसन्नूत-चूत-प्रवालः ॥

सिद्धान्त-क्षीर-नीराकर-हिमकिरणश्री-प्रभाचन्द्रदेवः ॥

अभिनव-गणधर-रूपं । त्रिभुवन-जन-विनुत-चरण-सरासिरुह-भृङ्ग ।

शुभ-मति-त्रैविद्यास्पद-। नुभय-कवीन्द्रोत्तम प्रभाचन्द्र-द्युधम् ॥

अवर सधर्मरु ।

गशि-विशद-कीर्त्ति निर्म्मट-।नसदृश-गुण-रत्न-वार्धि क्राणूर्गणसद्-।

विसरुह-वनार्कनेम्बुदु । वसुमतियोलनन्तवीर्यसिद्धान्तिगरम् ॥

तत्सधर्मरु ।

मन-वचन-काय-गुप्तिय-। ननुनयदि तळेदु पञ्च-समितिय वज्रदिन्-।

दनुवशनाद तपोनिधि । मुनिचन्द्र-व्रतिपनखिल-राद्धान्तेशम् ॥

इन्तेनिसि नेगर्त्तैय तळेद श्रीमत्-प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देवर गुडं भुज-

वळ-गंग-पेर्माडि-वर्म-देव ।

वळवदू-वैरिगळ पडरपडिसि गेल्टुप्राजियोळ् माण्डने ।

चलटिन्द परिधिदु वैरि-पुरमं तत्-कोटेयं तद्-मही-।

तळमं कोण्डु वरिन्नि वणिणसुविन श्री वर्म्म-देवं मही-।

तळम तोळ्-वर्लदि निमिर्च्चिदनिदेम् पेर्माडि शौर्यात्मनो ॥

भरदिन्दान्तदटङ्ग । शरणेन्द नृपङ्गवेरेदु वन्द नरङ्गम् । “

सुरगिरि वज्रागार सुर-भूज वर्म्म-देवनदटरदेवम् ॥

इन्तेनिसिद वर्म्म-देवन पड-महादेवियेन्तेन्दडे ।

जिनेन्द्र-पादासुज-मत्त-भृङ्गी गुणावली-भूषण-भूपिताङ्गी ।

नितम्बिनीना कळशायमाना विराजते गङ्गमहाधिदेवी ॥

निजवेनिपी-नेगर्त्तय महागतिगुत्सवमं निमिर्चुवा-
 त्मजरेनिसिर्द तम्मुतोडहुडिदरोप्पुव मार.....।
 स-जयदे सत्य-गङ्गचपत्तु कलि-रक्कस-गङ्ग-देवन्तु ।
 भुजबळ-गङ्ग-भूभुजनुमार्जिसिदर्जसमं निरन्तरम् ॥
 स्थिरने मेरु-गिरीन्द्रनोळ् सेणसुव गम्भीरने वार्धियोळ् ।
 पुरुडिर्प्य कलिये सुरेन्द्र-सुतनं मेच्चं महा-चागिये ।
 सुर-भूजक्कोरे-गड्डुव चदुरने पाञ्चाळन गेल्दनन्-।
 दिरदी-धारणि वण्णिक्कु रण-जय-प्रोत्तुगन गङ्गनम् ॥
 नुडिदुदे नन्नि माडिदुदे शासनमित्तुदे राम-रेसु मार-।
 ष्पिडिदुदे वज्र-लेपसुरदिर्हुदे मृत्यु परोपकारदोळ् ।
 नडेदुदे वडे सद्दुणमे मेय्येने निन्नवोलिन्तु नीतियोळ् ।
 नडेव नृपेन्द्रनावनिलेयोळ् कलि-गंगा-भूपती ॥

आतन तम्मम् ।

गज-रिपु-विष्टरादि-विभवोदय पार्श्व-जिनेन्द्र-पाद-पं- ।
 कज-मद-भृङ्ग-गङ्ग-कुळ-मण्डन-दण्डित-वैरि-वर्ग भा- ।
 वजनिभ-मूर्त्ति दिग्बलय-वर्त्तित-कीर्त्ति समस्त-धात्रियोळ् ।
 भुजबळ-गङ्ग-भूप निनगार् द्वारे मण्डलिकैक-भैरव ॥
 आतन-पट्ट-महादेवि ॥

पट्ट.....रननुजं । पट्ट.....भूपङ्गे गङ्गवाडिगे तळेदळ् ।
 पट्टमनेन्दडे गङ्गन । पट्ट-महादेवियन्तु ॥
 गङ्ग-महादेवियर्ग भुजबळ-गङ्ग-देवनप्र-तनूजनेन्तेन्दडे ।
 कलियनदिर्द.....एन्दु निमृदेत्तिद वाहुवे..... ।
छळदू.....मरे.....सले..... ।

....नासे- गेयन्....अळवि.....नन्निय-गङ्गनिन्तु मण्डळिक ।
प्रद....वेसरं देसेयन्तु वरं निमिच्चिद ॥
दाज्ञान्छते पर्वि-देण्-देसेयोळं विद्युजय-स्तम्भविन्तु ।
 इवेनल् दिगर्जवर्त्थि.....कड्ल् केड्डिदुत्तग-हस्- ॥
 तवनान्तन्य-त्रळके दोर्ष-नेवदिं कोदण्डदत्तङ्गे नी- ।
 लुव नीन, ये गङ्गनात्मकर .. सग्राम-रङ्गाप्रदोळ् ॥
 जस.....अस्त्रिळाशा-देवतापाङ्ग-रग्- ।
 मि-सहस्र चमर करीन्द्र-रिपु....विक्रम.....आ- ।
 गे सु-साम्राज्य....तामिदृद्धि विभव मेच्चुत्तिरल्.... ।
इरे सत्य-गङ्गनेसेदं विश्वावनी-भागदोळ् ॥

स्वस्ति सत्यवाक्य-क्रोङ्गुणिवर्म धर्म-महाराजाधिराज परमेश्वर
 कुवळाळपुरवराधीश्वर नन्दगिरि-नाथ.....मद-गजेन्द्र-लाञ्छनम्
 चतुर-विरिञ्चनं पद्मावती-देवी-लब्ध-वर-प्रसाद विचकिळामोद नन्निय ...
 त्तरंगं गग-कुळ-कुवळ्य....वेन्द्र दर्पोद्धताराति-वनज-वन-वेदण्डं कुसुम-
 कोदण्ड गण्डरगण्डं दुइरगण्ड नामादि-समस्तश्रीमन्नन्निय-गङ्गं
 नेलेवीडिनल्ल सुख-संकया-विनोददिं राज्य गेय्युत्तिरे श्रीमतु कळंबूरु-न-
 गराविपति पट्टणस्थ माडिसिद वसदियेन्तेन्दे ।

इदु भू-देवते होत्त होङ्गळशमो श्रेयस्सुधा-भार-पू- ।

रदिनात्रय-मण्डना- ।

स्पदमो तानेन्दुलोक मनो- ।

मुददिं वण्णिसे वर्म्मि-सेट्टि जिन-चैत्यावासमं माडिदम् ॥

भुवन.....महत्त्वदिं.....चातुर्वर्ण-सघक्क-भीष्टम-

नित्तेत्तिसि जैन-गेहमनसुत्साह-सन्दोह.....

.....
दनुजनिष्ट-शिष्ट-जन-कल्प-कुजं सदनोपशोभिता-।
 म्युदय-विभूतिगास्पदनुदात्त-कळाधिपनीतनेम्ब्र.....।
उदितोदितं नेगळ्दनी-वसुधा-तळदोळ् निरन्तरम् ॥

वर्मि-सेड्डिय वनिते ।

तनगनुवशेयेनिसि जग-। जन-सस्तुत-शील-गुण-गणाळ.....।
 राजिसुतिर्दळ् ॥
 अवरिर्वर्गमगण्य-पुण्य-जनित-श्रीरायुरारोग्य-चै-।
 भव-सम्पन्-महिमौघ.....।
माडुतिङ्ग-।
 प्प विळासं वेरसोळ्पुवेत्तनवनी-चक्र मन-गोळ्विनम् ॥

अन्तर् म्माडिसिद वसदिय पूजा-विधान.....

षियर्गाहार-दानकं श्रीमञ्चालक्य-विक्रम-कालद ४२ नाल्वत्तेरड-
 नेय मनुमथ-संवत्सरदुत्तरायण-संक्रपुण्यतिथियन्दु
 श्रीमन्-नन्निय-गङ्ग-पेम्माडि-देवनिन्द कुडल पडेदु वर्मिसेड्डियर्
 म्पेपपापाण-गच्छाम्बर-शरच्चन्द्र * * शुभकीर्त्ति-देव-भट्टारकर कालं
 कर्चि धारापूर्वकं सर्व-नमस्य सर्व-त्राधापरिहारवागि वसदिगे कोड् वृत्ति
 (आगेकी ५ पक्तियोमें दान और सीमाकी चर्चा है तथा अन्तिम वाक्य-
 पद्धति)

वहुभिर्वसुधा दत्ता राजमिस्सगरादिभिः ।

यस्य यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य तदा फलम् ॥

(हमेशाके अन्तिम श्लोक)

[इस लेखमें न० २७७ शि० ले० के अनुसार ही गङ्ग राजाओंकी वंशा-
 वली तथा क्राणूर-गच्छके सिंहनन्दी आदि आचार्योंकी परम्परा दी हुई है ।
 अन्तमें जिस बातके लिये यह लेख लिखवाया गया है वह यह है—

गङ्ग महादेवी और भुजबल गङ्ग-देवका (प्रशंसासहित) ज्येष्ठ पुत्र नन्निय गङ्ग था, (जिसका छोटा भाई) सत्य गंग था ।

जिस समय सत्यवाक्य कोद्रुणिवर्म्म धर्ममहाराजाधिराज परमेश्वर नन्निय गङ्ग सुख-शान्तिसे राज्य कर रहे थे कलम्बूरु-नगराधिपति बर्मि-सेट्टिने एक जिनमन्दिर खड़ा किया (इसकी प्रशंसा) । अपनी वनवाई हुई बसदिकी पूजा तथा ऋषियोंके आहारदानके लिये (उक्त मितिको) नन्निय-नाग-पेम्माडि-देवने (उक्त) भूमि दी और बर्मि सेट्टिने उसे लेकर मेप-पापाण-गच्छके शुभकीर्ति-देव-भट्टारकको पाद-प्रक्षालनपूर्वक अर्पित कर दिया]

[EC, VII Shimoga tl n° 57]

२६८

श्रवणबेल्लोल—संस्कृत तथा कन्नड

[शक १०३९=१११७ ई०]

[जै. शि. सं., प्र० भा०]

२६९

कम्बदहल्लिका—संस्कृत और कन्नड

[शक १०४६, वर्ष विलम्बि (१०४० शक=१११८ ई० [छ. राइस])

[कम्बदहल्लिका (विण्डिगनवले प्रदेश)के, कम्बदराय स्तम्भपर]

(दक्षिणमुख) भद्रमस्तु जिन-शासनस्य ॥

श्री-सूरस्थ-गणे जातश्चारु-चारित्र-भूधरः ।

भूपालानत-पादाब्जो राद्धान्तार्णव-पारगः ॥

आदावनन्तवीर्यस्तच्छिष्यो बालचन्द्र-मुनि-मुख्यस्

तत्सूनुर्जितमदनस्तिद्धान्ताम्भोनिधिर्प्रमाचन्द्रः ॥

शिष्यं कलनेले(?)देवस्तस्याभूत्तन्मनीषिणस्सूनु-

र्विध्वस्तमदनदर्पो गुणमणिरष्टोपवासिमुनिसुख्यः ॥

तन्मौखो(१)विबुधाधीशो हेमनन्दिसुनीश्वरः ।

राद्धान्त-पारगो जातस्सूरस्थ-गण-भात्करः ॥

तदन्तेवासिनामाद्यो माद्यतामिन्द्रिय-द्विपाम् ।

यतिर्विनयनन्दीति विनेताभूत्तपोनिधिः ॥

नाडोळगिदेसेद गोसने । ब्राह्मण्णोरगिदन्देमुनिवनितेयरोळ
कुडिदनेम्बी-नुडियद- । नेडिपुदेले विनयनन्दि-देवरचरितं ॥

ओन्दने केळि बुध-जन- । मेन्दिङ्गं साक्षि नीमे वसुधा-तळदोळ
सन्दिब्द वधू-निवहं । तन्देय वधुवेन्दपोम् प्रियम्बद-दानि ॥

ब्रन-समिति-गुप्ति-गुप्तो । जितमोह-परीषहो बुध-स्तुत्यो ।

हतमदमायाद्वेषो यतिपति तत्सूनुरेकवीरोऽभूत् ॥

(पूर्वमुख) दानद पेम्पु दीन-जनकोटिगे करप-कुजाळि नोडे सन्-
मानद पेम्पु भव्य-जन-सङ्कुळमन्तणिपित्तु दान-सन्-
मान-तपोपवास-गुण-सन्ततियं सले ताळ्दिदर्जगन्-
मानिगळेकवीर-मुनि-नायरे जङ्गम-तीर्थवल्लरे ॥

तस्यानुजस्सकळ-शाख-महाण्णोऽभूद्

भव्याब्ज-पण्ड-दिनकृन्मुनि-पुण्डरीको ।

विध्वस्त-मन्मथ-मदोऽमळ-गीत-कीर्त्तिश्-

श्री-पल्ल-पण्डित-यतिर्जितपापशत्रुः ॥

पल्लकीर्त्तिर्थथा रूढः पुरा व्याकरणे कृती ।

तथाभिमान-दानेषु प्रसिद्धर् पल्ल-पण्डितः ॥

पल्ल-पण्डित-नागेन ददता दानमद्भुतम् ।

भूषित कलि-कालेऽस्मिन् गङ्ग-मण्डल-काननं ॥

सूरस्य-गण-नीर्वाण-मार्गमालम्बतेऽधुना ।
दान-प्रभा-प्रकाशोऽयं पल्ल-पण्डित-चन्द्रमाः ॥
दान-वारि-परिपूरित-सिन्धुर्नष्टमोहतिमिरो गुण-बन्धुः ।
भव्यलोककुमुदाकरचन्द्रः पल्लपण्डितमुनिर्हिततन्द्रः ॥
नानादेशसमागतेन गुणिना लोकेन संसेवितो
जीर्णैर्नाभिन्वेन नूतन-तनु-श्री-लक्षणैर्लक्षितः ।
शुभ-द्भूरिगुणालयो मतिमता अग्रेसरो राजते
देशेऽस्मिन्नभिमानदानिकमुनिस्सर्वार्थ-चिन्तामणिः ॥
विद्वज्जनानन्दनकारणेन दानेन भक्त्या मुनि-पुङ्गवेषु ।
दिगन्तविश्रान्तयशोनिधानं विराजते पण्डित-पुण्डरीकः ॥

(उत्तरमुख) नानाभिमानिजन-दान-विधान-धीतो

धीमानगेषजनता-मनसोऽभिरामः ।

जातोऽभिमानि-पद-पूर्वक-दानि-नाम्ना

ख्यातः खलीकृत-महा-कळि-काळ-दोषः ॥

साभिमाने जनेऽमीष्टमभिमानमखण्डयन्

जातोऽभिमानदानीह ययार्थः पल्लपण्डितः ॥

अतिसयमार्गे दानदोळे वेर्वरिदोळ्पुनयोक्तियेम्ब सन्-
मतियोळे पुष्टि शाखदोळे दाङ्गुडिवोगि विगेपमप्य सन्
नुत-गुणदोळियिन्दे मंडलागि दिगन्तमनेण्दे पल्ल-पण्-
डित्तर विलास-कीर्त्ति-रुते पर्व्विदुदुर्व्विगे चोद्यमप्यिनम् ॥

सुर-कारिय काम-धेनुव । सरदभ्रद कान्तिय पुदुङ्गोळिसुत्तु ।

शरदमळचन्द्रविम्बद । दोरेगे मिगिल् पाल्यकीर्त्ति देवरकीर्त्ति ॥

दानमपरिमितमोळपभि- । मानं सत्कविते शाखानिपुणते कीर्त्ति-

स्थानमेने सन्दरीगळ् । दानिगळभिमानदानिगळ् वसुमतियोळ् ॥
 वननिधि-वेष्टित धात्रियो-न लनवरतं नेरेद दीन-जनरेङ्गैल्लम् ।
 धन-कनक माळपरस्सन्- मनदिन्दं पाल्यकीर्त्ति-पण्डित-देवर ॥
 ए-बोगळ्वुदण्ण विमुध-ज-न नावळिगं वेडिदत्थि-जनकन्निच्चन् ।
 देवतरु कुड्डुव तेरेदन्- तीवस्सले पल्ल-पण्डितर व्वसुमतियोळ् ॥
 (पश्चिममुख) पुढवियोळ्गळ्नेगळ्द दानिगळिन्निरत्तरारो पेळ् ।
 नुडियदिरारुम मरुळे कल्प-महीजद कोडिनन्ते कोड् ।
 उडुगदे नग्न-भग्न-नट-गायक-दीन-जनके सन्तोसं-
 वडे कुड्डुतिर्पे पेम्पिनळ्वच्चरिपास्तभिमानदानियोळ् ॥

स्वस्ति श्रीमन्महामण्डलेश्वर त्रिभुवनमल्ल तलेकाडु-गोण्ड भुजवळ
 वीर-गङ्ग होयसळ-देवरु सुखसंकयाविनोददिं राज्यं गेयुत्तमिरे तत्पाद
 पक्षोपिजीवि महासमन्ताधिपति श्रीन्महाप्रधानि द्रोह-घरट्ट पिरिय-दण्ड-
 नायक गङ्ग-राज तलेकाडं कोळुवल्लि मुङ्गोळ वेडि-कोण्डु गेहदडे
 मेच्चिदेम् वेडिकोळ्केने श्री-विण्डिगनविलेयतीर्थ्येके तळ-वित्तियम्बेडे
 श्रीविष्णुवर्धन-होयसळ-देवरु कारुण्य गेयुदु कोडे कोण्डु शक-वरिस
 * १०४६ विलम्बि सम्बत्-सरद श्रीमूलसंघद देसिग-गणद पुस्तक-
 गच्छद कोण्डकुन्दान्वयद शुभचन्द्र-सिद्धान्त-देवर काल कर्चि
 धारापूर्वकम्माडि विट्ट दत्ति पिरिय-केरैय त्विन वडगण हळदिं तेङ्गक्
 कौञ्जिन तोण्ट ओळगागि विट्ट गदे सल्लिगे मूवत्तु हळियमुन्दण लक-
 समु.....म्म गट्टुं अन्दूर-कि [रि] यकेरैयुं पक्षोपवासि.....
 वसदिय हडवण-देसे-वर । ई-धर्ममनळिदव गङ्गैय तडिय हदिनेण्टु-
 सासिर कविले कोन्द दोसदल्ल होद ॥

[जिनशासनकी समृद्धि-कामना । अनन्तवीर्य सूरक्ष्यगणमें उत्पन्न हुए । उनके शिष्य बालचन्द्र मुनि उनके पुत्र प्रभाचन्द्र, उनके शिष्य कलनेलेदेव, उनके पुत्र अष्टोपवासी मुनि उनके शिष्य हेमनन्दि मुनि । इनके शिष्योंमें एक विनयनन्दि नामक यति थे जिनके विषयमें नाड्-देशमें यह प्रवाद फैला कि वे शहरोंमें श्राविकाओंके पास जाते हैं; लेकिन यह प्रवाद सही नहीं था । विद्वानो, इस बातको सुनो कि इस विषयमें स्वयं तुम्हीं लोग साक्षी हो कि वे अपने पिताकी पत्नी (अर्थात् अपनी माँ) से जैसा वर्त्तन करते थे वैसा ही वर्त्ताव स्त्री-समुदायसे करते थे । उन अनन्तवीर्यका पुत्र एकवीर था जो अपने गुणोंसे 'जङ्गमतीर्थ' कहलाता था । उसका छोटा भाई पल्ल-पण्डित था । जैसे पूर्वकालमें पाल्यकीर्ति न्याकरणमें प्रसिद्ध था वैसा ही दान देनेमें यह प्रसिद्ध था । आगे उसके दानोंकी प्रशंसा की गई है, उसको नाम भी 'अभिमानदानी' और 'पाल्यकीर्त्तिदेव' दिये गये हैं ।

जिस समय वीर गङ्ग-होयसल-देव शान्ति और बुद्धिमत्तासे अपना राज्य चला रहे थे; तत्पादपद्मोपजीवी गङ्गराज महाप्रधानको, तलेकादुपर कब्जा करनेसे पहिले, उन्होंने कोई एक वर माँगनेको कहा । उत्तरमें गङ्गराजने विण्डिगन जिलेके लिये भूमि-दान माँगा और विष्णुवर्द्धन-होयसल-देवने उसको वह दिया । गङ्गराजने भी उक्त भूमि पाकर शुभचन्द्र-सिद्धान्तदेवके पादप्रक्षालन कर उन्हें सौंप दी । शुभचन्द्र-सिद्धान्तदेव मूलसध, देसिग-गण, पुस्तक-गच्छ तथा कोन्द-कुन्दाम्बयके थे । शाप ।

[EC, IV, Nagamangala tl, n° 19]

२७०, २७१

श्रवणवेल्लोला—संस्कृत तथा कन्नड

[क्रमशः शक १०४१=१११९ ई० और

शक १०४२=११२० ई०]

(जै० शि० सं० प्र० भा०)

२७२

बङ्गापुर—कन्नड

[त्रि० चा० का ४५ वाँ वर्ष (=शक १०४२=११२० ई० [फ्लीट] ।

[शायें हाथकी ओरके शिलालेखमें करीब १७-१७ अक्षरोंवाली ३७ पंक्तियाँ हैं। इसमें एक दानका उल्लेख है जो मादिगवुण्ड और दूसरे गौतम-प्रमुखोंके द्वारा शुभकृत् संवत्सरमें, चालुक्य विक्रमके ४५ वें वर्षमें, क्रियेय बङ्गापुरके जिनमन्दिरको किया गया था।]

[JA, IV, 205, n° 7, a.]

२७३

मत्तावार—कन्नड

[त्रिना कालनिर्देशका पर संभवतः लगभग ११२० ई०]

[मत्तावारमें, पार्श्वनाथ-वस्तिके प्राङ्गणमें एक पाषाणपर]

मरुलहळिके जकवे हड्डिदेडे गे ...गन्ति मत्तवूरद वसदि तपसु
माडि सिद्धियादलु अन्वेय माजकल मग मारे[य] कळ निळिसिद

[मरुलहळिके जकवेके द्वारा प्रेषित गे.....गन्तिने मत्तवूरकी बस-
दिमें तपश्चरण करके सिद्धि प्राप्त की। अन्वेय माजकके पुत्र मारेयने यह
पाषाण स्थापित किया।]

[EC, VI, Chikmagalur tl. n° 52]

२७४

सुकदरे—संस्कृत तथा कन्नड भ्रम

[काल लुप्त, पर लगभग ११२० ई०]

[सुकदरे (होणकेती परगना), लक्ष्म मन्दिरके सामने पदे हुए
पाषाणपर]

.....

..... |

.....कल्पवृक्ष-सदृश कीर्त्यङ्गनावल्लभम्

श्री.....पुण्याकरम् ॥

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

नमोऽस्तु ॥ स्वस्ति समधिगतपञ्चमहागन्ध महामण्डलेश्वरं द्वारा-
वतीपुरवराधीश्वरं यादवकुलाम्बरद्युमणि सम्यक्त्वचूडामणि मलपरोल्लु गण्ड
श्रीमन्निभुवनमल्ल तलकाडु गोण्ड भुजत्रल.....वर्द्धन पोयसळ-देवरु
सुख-संकथा-विनोददि राज्यं गेय्युत्तमिरेव ।

जिननिष्टदेव्यमजितं । मुनिपति गुरु पोयसळेश.....
एचले तायेनेल्केनेसे- । दनो ता जक्कि-सेट्टि यात्रेय-गोत्रपवित्र ।
.....नेगळ्द जक्कि-सेट्टिय गुरु-कुलमदेन्तेन्दडे ।
श्रीमद्वाविडसंघ.....वळि-लीलेयिम् ।
श्रीमत्स्वामि-समन्तभद्ररवरिं भट्टाकलङ्काख्य.... ।
.....हेमसेनरवरिं श्रीवादिराजाङ्गरन्त्
आमाहात्म्यविशिष्टरिन्दजितसेन..... ॥
.....परम-मुनिय शिष्यर् । प्पापहरर्मल्लिपेण-मलधारि.... ।
.....रु । च्भूपालस्तुत्यरेसेदरवनीतळदोळ ।

धनदोळ धनद वि..... ।

साहसदिं चारुदत्त चागदोळे जीमूत जक्कि-सेट्टि..... ।
.....दानि विद्वज्- । जनविनुतं धर्मजलधिवर्द्धितचन्द्रम् ।
मनु-नीति-मार्ग..... ।जक्कि-सेट्टि गोत्र-पवित्रम् ॥

अन्तप्य जक्कि-सेट्टि तम्भूर सुकु.....माडिसियदक्के विट्ट
दत्ति आवूर यीसान्यद केरेय कट्टिसि.....केरेयु वसदियिं बडगळ
वेदले वेदे खण्डुग एरडु मत्तवायाव्यद किरुकेरे सहितवागियुं
आ-ऊर देव-गोळ्ळा धर्म होरे-तिपे-सुङ्ग गाणदलरवानेण्णे इन्तिवुम
शक-वर्ष.....संवत्सरद ज्येष्ठ शु० १२ वडुवार स्वातिनक्षत्रदन्दु

वसदि.....करणकवाहारदानक दयापाल-देवों धारापूर्वकं.....
 (सदाका अन्तिम श्लोक) मङ्गलमहा श्री श्री नमोऽर्हत्पा..... ।

.....तन्नार्पिनि ।

मनमं तन्न वसके तन्दु वळियं सत्-क्षान्तियं.....न् ।

अनेक-पुष्प-वरिष-प्रभावदिं भावदिं..... ।

..... ॥

.....सुर-दुन्दुभिगळेसेये सूर-गणिकेय.....पोगळित्रनेगं ॥

जक्कि-सेट्टिय तम्मं.....

[जिनशासनकी प्रशंसा । जिस समय (अपनी हमेशाकी उपाधियों सहित), विष्णुवर्द्धन पोय्सलदेव शान्ति और बुद्धिमत्तासे अपने राज्यका शासन कर रहे थे:—

आत्रेय-गोत्रको पवित्र करनेवाले जक्कि-सेट्टिके 'जिन' इष्टदेव थे, अजित-मुनिपति गुरु थे, पोय्सल राजा थे और एचल माता थी ।

उस प्रसिद्ध जक्कि-सेट्टिकी गुर्वावली निम्न भाँति है:—द्राविळ (इ) में.....स्वामी समन्तभद्र हुए, -उनके बाद भट्टाकलङ्क, ...हेमसेन; उनके बाद चादिराज;..... अजितसेन; परममुनिके शिष्य, पापहर मल्लियेण मलधारी ।

जक्कि-सेट्टिकी और भी प्रशंसा । इस जक्कि-सेट्टिने अपने गाँव सुकदरेमें एक 'वसदि' और उसके दक्षिण-पूर्वमें एक तालाव बनवाया । 'वसदि' और सरोवरके खर्चके लिये (लेखमें वर्णित) भूमिका दान दिया । साथमें दक्षिण-पश्चिममें स्थित एक छोटासा तालाव, देवका 'कोलग' बोझोंका खर्च और खादके गद्दे, और तेलके कोल्लुओंसे आधा मन तेल, ये सब चीजें उत्सवों और आहारदानके लिये दीं । ये सब चीजें दयापाल-देव-को सौंप दीं ।

जक्कि-सेट्टि और उसके छोटे भाईकी प्रशंसा ।]

२७५

मुत्तसि—कन्नड़

[विना कालनिर्देशका; बहुत करके लगभग ११२० ई०]

[माधवराय मन्दिरके नवरंग मण्डपके चार स्तम्भोंपर]

(दक्षिण-पश्चिमी खम्भा) स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महामण्ड-
 लेश्वर द्वारावतीपुरवराधीश्वरं यादवकुलाम्बरद्युम (उत्तर-पश्चिमी) णि
 सम्यक्त्वचूडामणि तळेकाडु-गोण्ड भुजवळ वीरगङ्ग विष्णुवर्द्धन-पोय्सळ-
 देवरु विनयादित्य-दण्ड-(दक्षिण-पूर्व खम्भा) नायक माडिसिद
 होय्सळ-जिनालयके विट्ट दत्ति श्री-मूलसंघ देशिय-गणद पो(पु)स्तक-
 गच्छद कोण्डकुन्दान्वयद श्रीमन्मेघचन्द्र-त्रैविद्य-देवर शिष्यरु
 (उत्तर-पूर्वी खम्भा) श्री-प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देवर्गे सक्रान्तिव्यतीपात-
 दन्दु काल कर्चि धारा-पूर्वक माडि विट्ट दत्ति हिरिय-केरैय केळगे
 मोदलेरिय गदे हत्तु-सल्लिगेयदु ओन्दु सल्लगे तोण्टेयदु वसदिय मुन्तन
 इम्मडल्ल वेदलेयुम बल्लिगट्टमुम वसदिय वडगण.....
 (दक्षिण-पूर्वी खम्भा) विनयादित्यालय

{ (अपने उन्हीं पदों सहित) विष्णुवर्द्धन-पोय्सळ-देवने (उक्त)
 भूमिका दान श्री-मूलसंघ, देशीय-गण, पुस्तक-गच्छ तथा कुन्दकुन्दान्वयके
 मेघचन्द्र-त्रैविद्य-देवके शिष्य प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देवको विनयादित्य-दण्ड-
 नायकके द्वारा बनवाये गये होय्सळ-जिनालयके लिये किया । }

[EC, V, Hassan tl., n° 112]

२७६

कोनूर (जि० बेलगाँव)—कन्नड़-भद्र

[विक्रमादित्य चालुक्यका ४६ वाँ वर्ष=११२१ ई०]

परिचय

[इस लेखमें रायणय्य नायक, भारय्य नायक, तथा कोण्डनूरुके दूसरे नायकोंके द्वारा किये गये दानका उल्लेख है। ये दान महातीर्थ तटेश्वरदेवके मन्दिरकी तरफसे किये गये थे। उस समय कुण्डी ३००० में महासामन्त राजा कार्तवीर्य राज्य कर रहे थे। इनकी उपाधियोमें रट्ट-वश बतलाया गया है। पूर्ववर्ती रट्ट शिलालेखोंकी अपेक्षा इनकी उपाधियाँ कलहौळी शिलालेखकी उपाधियोंसे ज्यादा मिलती हैं। इस लेखकी ४३ वीं पंक्तिमें उनका नाम 'कत्तमदेव' दिया हुआ है, और ये संभवतः कार्तवीर्य तृतीय है, जैसा कि आगेकी वंशावलीसे प्रकट होगा। कालकी पंक्ति बिस गई है।]

[JB, X p 181-182, p. p 287-292, t, p 293-298, tr, ins n° 8, II part.]

२७७

कल्लरगुडु—संस्कृत तथा कन्नड

[शक १०४३=११२१ ई०]

[कल्लरगुडु (शिमोगा परगना)में, सिद्धेश्वर मन्दिरकी पूर्वदिशामे पड़े हुए पाषाणपर]

१ इस शिलालेखका लेख वही है जो शिलालेख नं २२७ का अन्तिम भाग है। केवल अश-भेद है। २२७ नं का अश पहिला है और इस लेखका अश दूसरा है। पर यह अश-भेद सूक्ष्मरीतिसे अवलोकन करने पर भी, सिवाय तिथि (काल)-भेदके, ठीक-ठीक नहीं मालूम पडता। अत लेख (जो २२७ वे शिलालेखका द्वितीयाश है) यहाँ नहीं दिया जा रहा है। पाठक अपनी बुद्धिसे ही उसे निश्चित करें, क्योंकि हमको उक्त (२२७) लेखमे 'रायणय्य नायक' तथा 'भारय्य नायक' ये दो नाम (जिनके दानका उल्लेख इस लेखमे है) कतई नहीं मिले हैं। 'कोण्डनूरु' का नाम अवश्य पाया जाता है, पर उसके अन्य 'नायकों'का कुछ भी पता नहीं। अत हमें सन्देह है कि २२७ वे नं० के शिलालेखसे भिन्न कोई दूसरा लेख इस २७६ वे नं० का होना चाहिये। संभव है वह गलतीसे लिखे जानेसे रह गया हो, या मूल 'JBX' पत्रिकामे ही छूट गया हो। सम्पादक

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रयं श्री-पृथ्वी-वल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वर
परम-भट्टारक सत्याश्रय-कुळ-तिळक चालुक्याभरणं श्रीमत्-त्रैलोक्यमह-
देवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि-प्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कतारं-वरं सलुत्त-
मिरे । गङ्गान्वयावतारमेन्तेन्दोडे ।

सले वृषभ-तीर्थ-काल । सुललितमेने सकळ-भव्य-चित्तानन्दम् ।

कलि-काल-निर्जित श्री- । ललना-लावण्य-वर्द्धनं क्रमदिन्दम् ॥

सोगयिसुव-कालदोळ् की- । तिंगे मूल-स्तंभमेनिपयोध्या-पुरदोळ् ।

जगदधिनाथं पुट्टिद- । नगण्यनिश्वाकु-वंश-चूडारत्नम् ॥

धरेगे हरिश्चन्द्र-नृपे- । श्वरनोर्वने कान्तनागि दोर्वलदिन्दम् ।

विरुदरनदिर्णं विद्या- । परिणतिरिं नेरेदु सुखदिनिरे पलकालम् ॥

वृ० ॥ आतन्न पुत्रनिन्दु-हर-हास-निमोज्वल-कीर्ति सद्गुणो- ।

पेतनुदात्त वैरे-कुळ-भेदनकारि कला-प्रवीणनुद- ।

धूत-मलं सुरेन्द्र-सदृश भरतं कवि-राज-पूजितम् ।

ह्यातनतर्क्यपुण्यनिलयं सु-जनाप्रणि विश्रुतान्वयम् ॥

ऋजु-शील-युक्तेयनिसिद । विजय-महादेवी तनगे सतियेने विबुध-

व्रज-भूज्यं भरत भा- । वज-सदृशं ताने सकळ-धात्री-तळदोळ् ॥

आ-विजय-महादेविगे गर्भ-दोहलं नेगळे ।

तरल-तरंग-भंगुर-समन्वितेयं झष-चक्रवाक-भा- ।

सुर-कळहंस-पूरितेयनुदूध-लताङ्कित-गात्रेयं मनो- ।

हर-नव-शैल्य-मान्य-शुभ-गन्ध-समीर-निवासेयं तळो- ।

दरि नेरे गङ्गेयं नल्लिदु मीवभिवञ्छेयनेष्टे ताळिददळ् ॥

कळहस-याने पलरु । केळदियरोड वोमि पूर्ण-गङ्गा-नदियम् ।
 विलसितं पोक्कु निरा कुलदिन्दोलाडि पाडि गाडियनान्तळ् ॥
 अन्तु मनदलम्पु पोगे गङ्गा-नदियोळ् ओलाडि निज-गृहके वन्दु
 नवमासं नेरेदु पुत्रनं पडेदातङ्गे ।

गङ्गा-नदियोळु मिन्दु ल- । ताङ्गि मग वडेदळम्प कारणदिन्दम् ।
 माङ्गल्य-नामवोन्दुदि- । लाङ्गनेगधिपतिगे गङ्गदत्ताख्यानम् ॥
 आ-गङ्गदत्तङ्गे भरतनेम्ब मग पुष्टिदनातङ्गे गङ्गदत्तनेम्ब पुष्टि ।
 गुण निधिगे गङ्गदत्त- । गणुगिन पुत्रं विवेक-निधि पुष्टि दया- ।
 प्रणियागि हरिश्चन्द्रं । प्रणुत-नृपेन्द्र धरित्रियोळ् गोभिसिदम् ॥
 मत्तमा-नृपोत्तमङ्गे भरतनेम्ब सुत पुष्टिदनातङ्गे गङ्गदत्तनेम्ब मगनागि-
 म्मिन्तु गङ्गान्वय सल्लुत्तमिरे ।

हरि-वश-केतु नेमी- । श्वर-तीर्थ वृत्तिसुत्तमिरे गङ्ग-कुला- ।
 वर-मानु पुष्टिद भा- । सुर-तेजं विष्णुगुप्तनेम्ब नृपाळम् ॥
 आ-धराधिनाथ साम्राज्य-पदविय कैकोण्डहिच्छत्र-पुरदोळु सुख-
 मिर्हु नेमितीर्थकर परम-देव- निर्वाण-क्काळदोळ् ऐन्द्रध्वजवेम्ब पूजेयं माडे
 देवेन्द्रनोसेदु ।

अनुपमदैरावतं । मनोलुरागदोळे विष्णुगुप्तङ्गित्तम् ।
 जिन-पूजेयिन्दे मुक्तिय- । ननर्घ्यं पडेगुमेन्दोडुळ्ळिदुदु पिरिदे ॥
 आ-विष्णुगुप्त-महाराजङ्ग पृथ्वीमति-महादेविग भगदत्तं श्रीदत्त-
 लुमेम्ब तनयरागे भगदत्तङ्गे कलिङ्ग-देशम कुडलातनु कलिङ्ग-देशम-
 नाळ्दु कलिङ्ग-गङ्गनागि सुखदिन्दिरे ।

इत्तल्लुद्रात्त-यशो-निधि । मत्त-द्विपमं समस्त-राज्यमुमं श्री- ।
 दत्त-नृपङ्गित्तं भू- । पोत्तमने निसिर्दं विष्णुगुप्त-नरेन्द्रम् ॥

अन्तु श्रीदत्तनिन्दित्तलानेयुण्डिगे सलुत्तमिरे ।

प्रियवन्धु-वर्म्मनुदयिसि । नयदिन्दं सकल-धात्रियं पाळिसिद
भय-लोभ-दुर्लभं ल- । क्ष्मी युवति-मुखाब्ज-षण्ड-मण्डित-हासम् ॥

व ॥ अन्ता-प्रियवन्धु सुख-राज्यं गेय्युत्तमिरे तत्समयदोलु पार्श्व-
भट्टारकर्गे केवल-ज्ञानोत्पत्तियागे सौधर्म्मेन्द्र वन्दु केवळि-पूजेयं
माडे प्रियवन्धु तानु भक्तियि वन्दु पूजेय माडलातन भक्तिगिन्द्र मेच्चि
दिव्यवप्पय्यु-तोडगेगळं कोट्टु निम्बन्वयदोलु मिथ्यादृष्टिगळागळोड
अदृश्यङ्गळकुमेन्दु पेळ्ळु विजयपुरक्कहिच्छत्रमेन्व पेसरनिडु दिविजेन्द्र
पोपुट्टुमित्तल गङ्गान्वय सम्पूर्ण-चन्द्रनन्ते पेच्चि वर्र्तिसुत्तमिरे तदन्व-
यदोलु कम्प-महीपतिगे पद्मनाभनेन्व मगं पुट्टि ।

तनगे तनूभवरिल्लेदे । मनदोलु चिन्तिसुतमिर्दु पद्मप्रभनार- ।

पिन-कणि शासन-देवते- । यने पूजिसि दिव्य-भन्नदिं साधिसिदं ॥

अन्तु साधिसि साधित-विद्यनागि पुत्ररिवरं पडेदु राम-लक्ष्मणरेन्व
पेसर-निडु ।

परमक्षेहदोलिर्व्वर नडपे लीला-मात्रदिं चन्द्रनन्त् ।

इरे संपूर्ण-कळागरागि वेळ्येल् विद्या-त्रलोघोगमुर्- ।

व्वरेयोळ् चोधमेन्ल् सलुत्तमिरे कीर्त्ति-श्री दिशा-भागदोळ् ।

परेदाशा-गजमं पळञ्चलेये लक्ष्मी-भारन्दिोपिदर ॥

अन्तु सुखदिन्दिर्पुदुमत्तलुञ्जयिनी-पुराधिपति-महीपाल-तोडबुगळं

वेडियाट्टि दोडे पद्मनाभं कृतान्तनन्ते रौद्र-वेगम कैकोण्डु ।

एमगदनइल्कागदु । तमगे तुडल् योग्यमल्ल सन्तमिर्ल् वेळ् ।

समरक्के वन्दनप्पडे । निमिषदोळान्तिरिदु वीर-रसमं मेरेवेम् ॥

अन्तु सुडिदडे मन्नि-वर्गटोळालोचिसि तन्न तङ्गेय कनेयुं नाल्वत्ते-
 प्परात्तरप्प विप्र-सन्तानसु वेरसु कळपिदोडवर्द्धक्षिणाभिमुखरागि वरुत्तुं
 राम-लक्ष्मणगर्गे दडिभ-माधवरेन्दु पेसरनिड्डु निच्च-पयणदिम् ।

वन्दवर्गळुचित-पदमन- गुन्दलेयि कण्डरमल-लक्ष्मी-चित्तान् ।

नन्दनम पैरूरं । मन्दार-नमेरु-पुष्प-गन्धाद्रियुमम् ॥

व ॥ अन्तु गङ्ग-हेरूरं कण्डल्लिय तटाक-तीरटोळु वीड विड्डु चैन्या-
 लयमं कण्डु निर्वरं भक्तिरियि त्रि-प्रदक्षिण गेय्दु स्तुतिरिसि समस्त-विद्या-
 पारावार-पारागरम् । जिन-समय-सुधाम्भोधि-संपूर्ण-चन्द्रम् । उत्तम-
 क्षमादि-दश-कुशळ-धर्म-रतरम् । चारित्र-भद्र-धनरम् । विनेय-जनान-
 न्दरम् । चतुस्समुद्र-सुद्रित-यशः-प्रकाशरम् । सकळ-सावध-दूररम् ।
 क्राणूर्गणाम्बर-स्रहन्नकिरणरम् । द्वादश-विधतपोनुग्रान-निष्ठितरम् ।
 गङ्ग-राज्य-समुद्धरणरम् । श्री-सिंहनन्दाचार्यरं कण्डु गुरु-भक्ति-
 पूर्वकं वन्दिसि तम्म वन्दभिप्रायमेळम तिलिय-पेळे कैकोण्डवर्गे
 समस्त-विद्याभिमुखर्माडि केलवानु देवसदिं पद्मावती-देविय भक्ति-पूर्व-
 कमाहान गेय्दु वर वडेदु खळगसु समस्त-राज्यमनवर्गे माडि ।

मुनि-पति नोडळ् विद्वज्-जन-पूज्य माधवं शिला-स्तम्भमनाद्-
 र्दत्तुगेय्दु पोय्यलदु पुण्-मेने मुरिदुदु वीर-पुरुपरेन माडर् ॥
 आ-साहसमं कण्डु ।

मुनि-पति कर्णिकारदेसळोळ् नेरे पट्टमनेय्दे कट्टि सज्-
 जन-जन-वन्द्यरं परिसि सेसेयनिक्कि समस्त-धात्रियम् ।
 मनभोत्तेदित्तु कुञ्चमनगुर्विन केतनमागि माडि वर-
 र्पनिनु परिग्रहं गज-तुरङ्गमुमं निजमागे माडिदर ॥

अन्तु समस्त-राज्यमं माडि बुद्धियनवर्गिन्तेन्दु पेळ्दरु ।
 नुडिदुदनारोळं नुडिदु तप्पिदोडं जिन-शासनकोडम्-।
 वडदडमन्य-नारिगेरेदडिदडं मधु-मास-सेवे नेय्-।
 दडमकुलीनरप्पवर कोळ्कोडेयादोडमर्त्थिगर्त्थमम् ।
 कुडदोडमाहवाङ्गणदोळोडिदड किडुगु कुल-क्रमम् ॥

एन्दु पेळ्दु ।

उत्तममप्प नन्दगिरि कोटे पोळ्ळु कुवळालमारे तोम्-।
 वत्तरु-सासिरं विपयमाप्तननिन्द-जिनेन्द्रनाजि-रं-।
 गात्त-राज्यं जयं जिनमत मतमागिरे सन्ततं निजो-।
 दात्ततेयिन्दमा-दडिग-माधव-भूमुजराब्दरुर्वियम् ॥

मत्तमा-नाडिङ्गे सीमे ।

उत्तर-दिक्-तटावधिगे तागे मदक्कले मूड तोण्ड-ना-।
 डत्तपरासेगम्बुनिधि चेरमेनिप्पेडे तेङ्ग कोडु मत्-।
 तित्तोळ्गुळ्ळु वैरिगळ्ळिक्कि परावृत्त-गङ्गवाडि-तोम्-।
 वत्तरु-सासिरं दलेने माडिदरिन्तुट्टु गङ्गरुज्जुगम् ॥

अन्तु धरिन्निगधिपतियागि दडिग-माधवरिर्वरु कोङ्कण-विषय-सा-
 धन-निमित्तं वरुत्त मण्डलियं कण्डरदर प्रभाव मेन्तेने ।

नुत-महेन्द्र-पुरं धरा-तळदोळोप्पुत्तिर्दविल्यातियिम् ।
 कून-काल मदना-पुरं नेगळे मिक्का-त्रेतेयोळ् सज्जन-।
 स्तुत मण्डाल-पुरं तृतीय-पेसरिं द्वापारदोळ् सन्ततोन्-।
 नतियि मण्डलियेम्भारिन्तु कलि-कालं सन्दुदिन्ती-पुरम् ॥

अन्ता-नाल्लु-युगक्क नाल्लु-पेसरिन्दोप्पुव मण्डलिय वहि-र्भागदोळु
 सांगन्धम कूडे पसरिसुव सहस्र-पत्रवप्पलर्द तावरेगळिं नाना-जलच्चरि-

युलिपदिन्दोष्पुव हेगरेयं कण्डु व्रीडं विट्टु तद्-गिरिय रम्यम कण्डुमिळि
 चैत्यालयम माडिमेन्दु क्राणूर्गण-तिलकद्र सिंहनन्दाचार्य्यर प्पेळे महा-
 प्रसादमेन्दु चैत्यालयम माडिसि केलवानु दिवसदिं कौळालके पोगि
 सुखदिं राज्य गेय्युत्तमिरे गङ्गान्वयं पेळ्ळि वत्तिंसुत्तिरे दडिगंगे माधव-
 नेम्ब सुतनागि राज्यं गेय्यलातन मग हरि-वर्मनातन पुत्रं विष्णु-
 गोपनेम्बनागि मिथ्यात्वके सखुदुवन्ता-तोडवदश्यङ्गळगि पोगे आतन
 मग पृथ्वी-गंगं सम्यग्दृष्टियातन मगं विरुदरं तडङ्गाल्ल वोय्दडि-गिडि-
 सुव तडङ्गाल-माधवनातनमगम्

अविनीत-गङ्गनेम्बं । भुवनकधिनाथनागि पुट्टि बुधर्गुत्त-।
 सवम पुट्टिसिद माध-व-रायन मर्मनन्धियन्ते गमीरम् ॥

अन्तु शत-जीवियेम्ब्रादेशमं केळ्ळु ।

भरदिन्द चुर्चु-वाय्द पोगळे बुध-जन वन्द कावेरियोळ् मी-।
 करमागल् वीर-लक्ष्मी-नयन-कुमुदिनी-चन्द्रमं निन्दु नोडल् ।
 परिवारं तन्न कीर्त्ति-प्रमे वळसे दिशा-भागम चोवमागल् ।
 परम-श्री-जैन-पादं नेलसे हृदयदोळ् मेरु-शैलोपमानम् ॥

अन्तु चुर्चु-वाय्दु वहुङ्किदनातनन्वयदोळु दुर्विनीत-गङ्गनातङ्गे मु-
 ष्कर-नेम्बनादनातङ्गे श्रीविक्रमनातन मग भूविक्रमनातन मगन्दिद्र
 नवकाम-श्रीएरगरवरोळु परेयन मगनेरेयङ्गनातनिन्दुदधिसिदं श्रीव-
 ल्लमनातङ्गे श्री-पुरुषनादनातङ्गे शिवमारनेम्बनातङ्गे मारसिंहनुदयं
 गेय्दम् ।

अवयवदिन्दे साधिसिद मालववेळुत्रनेय्दे गङ्ग-मा-।
 लववेनलकरं वरेट्टु कल् निरिसुत्ते कळलिच चित्रकू-।
 टवसुरे कन्नमुजैय-नृपानुजन जयकेसियं महा-।
 हवदोळे मारसिंह-नृपनिक्कि निमिर्च्चिदनात्म-शौर्य्यमम् ॥

तनयं श्री-मारसिंहगनुपमित-जगतुंगनाद जगत-पा-
वन-लक्ष्मी-वल्लभङ्गिन्तुदियिसि नेगळ्दं राचमल्लावनीशम् ।
मनु-मार्गं गङ्ग-चूडामणि जय-वनिताधीश-भूवल्लमेशम् ।
जिनधर्म्माम्बोधि-चन्द्र गुण-गण-निळयं राज-विद्याधरेन्द्रम् ॥
अन्तातन मर्म्मन्दिर मरुळय्यं बूतुग-पेम्माडि तदपत्यनेरेयपं
तत्सुत-वीरवेडङ्गनेम्बङ्गे ।

उदय गेय्दं विद्या- सुदतीशं मार-रूपनुचित-विळासम् ।

विदित-सकलार्थ-शास्त्रं । मृदु-वाक्यं राचमल्लनहितर-मल्लम् ॥

अन्ता-राचमल्लनिन्देरेयङ्गनातन मग बूतुगनातन मगं मरुळ-देव-
नातनात्मज गुत्तिय-गङ्गनातनिन्द मरेयेरिद मारसिंहनातन सुत
गोविन्दरनातन पुत्र सैगोडु-विजयादित्यनातनिन्द राचमल्लनातनि
मारसिंहनातन सुतं कुरुळ-राजिगनातनिन्दं गव्वर्द-गङ्गं गोविन्दरन
तम्मन मगनप्य मम्म-गोविन्दरम् ।

तेङ्गनुडिदडर्दु किळत । कौङ्ग मिडुकादिरलेडद-कय्योळ् मद-मा-
तङ्गमने पिडिट्टु निलिसिद । गङ्गं सामान्य-नृपने रक्कस-गङ्ग ॥

तदनुजं कलियङ्गनातनिन्दुत्तरोत्तर गङ्गान्वयं सलुत्तमिरे क्राणूर-
गणदाचार्यावतारवेत्तेन्दोडे ।

दक्षिण-देश-निवासी गङ्ग-मही-मण्डलिक-कुळ-समुद्ररणः ।

श्री-मूल-संघ-नाथो नाम्ना श्री-सिंहनन्दि-मुनिः ॥

अवर तदनन्तरं अर्हद्ब्रह्म्याचार्यरं वेडुद-दामनन्दि-भट्टारकरं
वाळचन्द्र-भट्टारकरं मेघचन्द्र-त्रैविद्य-देवर । गुणचन्द्र-पण्डित-दे-
वरवरिन्द ।

एळगे गुण-रुचियिनोळपग्न- गळिसिरे गुण-रुचि-विकाश-त्राग्-रदिम-
यिनुच्-।

चळिसे चदनेन्दु पेम्पम् । तळेदं गुणनन्दि-देव-शब्द-त्रल ॥

अवरिं वळिकमकलंक-सिहासनमनलकरिसि नेगर्द तार्किक-चक्रे-
श्वररु । वादीभ-सिंहं । पर-त्रादि-कुल-कमल-वन-मद-मातंगरुम् ।
बौद्ध-त्रादि-तिमिर-पतङ्गरुम् । साल्य-त्रादि-कुळाद्रि-वज्रधरुम् । नैयायि-
काचार्य्य-भूजात-कुठारुम् । मीमांसक-मत-वनाघन-प्रचण्ड-पवनरुम् ।
सिद्धान्त-वार्धि-वर्द्धन-सुधाकररुम् । सकळ-साहित्य-प्रवीणरुम् । मनोभ-
वभय-रहितं । जिन-समयाम्बर-दिवाकररुम् । अप्प श्री-मूल-संघद
कोण्डकुन्दान्वयद क्राणूरु-गण मेपपाषाण-गच्छद श्रीमत्प्रभाचन्द्र-सि-
द्धान्तदेवरवर शिष्यरु ।

अनवद्याचाररु म्मा- । घनन्दि-सिद्धान्त-देवरधिकृत-जिन-शा- ।

सन-संरक्षकरेसेदरु । जिनमतसद्धर्म-सम्पद नेगळ्-विनेगम् ॥

अवर शिष्यरु ।

चतुरास्य चतुरोक्तिरिं प्रमुतेयिन्दीशं गुण-व्यापक-।

स्थितिरिं विष्णु सु-बुद्धि-विस्तरणेयिं बौद्धं ढली-जैन-पद्-।

धतियिन्दिर्हुमिदेम् विचित्रतरमो चातुर्य्यमादी-समुन्-।

नत-सिद्धान्त-विभूषणङ्गेनिसिद श्रीमत्प्रभाचन्द्रमम् ॥

अवर सधर्मरु ।

नुत-सिद्धान्त-मनन्तवीर्य्य-मुनिग शुद्धाक्षराकारदिम् ।

सतत श्री-मुनिचन्द्र-दिव्य-मुनिगं संवर्त्तिसुत्तिकुम-।

प्रतिम तानेने पेम्पु-वेत्तरु दितोदान्तर् जगद्-चन्धरु-।

जितरुधोतित-विश्वरप्रतिहत-प्रज्ञर् म्मही-भागदोळ् ॥

अवर शिष्यरु ।

वादि-वन-दहन-हुतवह । वादि-मनोभव-विशाळ-हर-निटिलाक्षं
वादि-मद-रदनि-विदुवं । भेटिप मृगराज जयतु श्रुतकीर्त्ति-बुधम् ॥
कवि गमकि-वादि-वाग्मिगळ् अवन्दिरं गेल्लु कनकनन्दि त्रैवि-
द्य-विलासं त्रि-भुवन-मल्ल-वादिराज दलेनिसिद नृप-समेयोळ् ॥

अवर सधर्मरु ।

चारित्र-चक्रि संयम-न धारि क्राणूरगगणाग्रगण्य सदयम् ।
श्री-रमण सिद्धान्त-वि-न शारदनति-विशद-कीर्त्ति माधवचन्द्रम् ॥

अवर शिष्यरु ।

वर-शालाम्बुधि-वर्द्धन-न हरिणाङ्क विरुद-वादि-मद-विरुफाळम् ।
निरुतं तानेनलेसेद । धरेयोळ् त्रैविद्य-वालचन्द्र-यतीन्द्रम् ॥
श्री-प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देवर शिष्यरु ।

वसुमतिगोष्पु-वेत्त धवलातपवारणवागि कीर्त्ति नर-
त्तिसुबुद्धु पेम्पु-वेत्त महिमोन्नति मेरुगे मण्डपन् दल-
गेसेबुद्धु सद्-गुण-प्रतति मौक्तिक-मालेय लीलेय समर-
र्थिसुबुद्धु सज्जनके सहजातमेनल् बुधचन्द्र देवर ॥
करव वारुणिगेन्दु नीडि पिरिट्टु निस्तेजमेधिदई तन्-
निरव नोडदे सत्पद-अमुतेय ताब्दिर्षं दोपाकरम् ।
दोरेये पेळेनुत कळङ्क-रहित सद्-वृत्तदिन्द तिरस-
कारिध चन्द्रननोष्पु-वेत्त बुधचन्द्र सन्ततोस्ताहदिम् ॥
नुडिगळ् सत्य-सुवर्ण-भूषण-गण चित्त सु-नलङ्गळम् ।
मडगिर्दिर्षं करण्डक तनु तपश्री-भामिनी-भासियेन्-
शि० २७

दडे दुष्कीर्तियनान्त मत्तिन शठर् दुर्वोधरस्पृश्यरेम् ।
 पडिये सद्-बुध-सेव्यनप्प बुधचन्द्र-ख्यात-योगीन्द्रनोळ् ॥
 सुर-धेनु व्रति-रूपमं तळेदुदो गीर्वाण-भूजातवी-
 धरेयोळ् तापस-रूपदिं नेलसितो पेळेम्बिनम् वर्पुदम् ।
 करेदर्थि-प्रकारके कोट्टु विपुळ-श्री-कीर्तिय ताळ्दिदम् ।
 निरुतं श्री-बुधचन्द्र-देव-मुनिप वात्सल्य-रत्ताकरम् ॥

इन्तेनिसि नेगळ्दाचार्य्य-परमेष्ठिगळ्न्वय-तिलकरु जिनसद्ध-निर्माप-
 णरुमप्प बुधचन्द्र-पण्डित-देवरु प्रवर्त्तिसुत्तिरे । प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-
 देवर गुड्ड ।

जय-जया-त्रल्लभनन्-। वय-वार्धिं सीतरोचि मुवन-स्तुत्यम् ।

प्रिय-मूर्तिं जिन-पदाब्ज-। द्वय-भृङ्ग वम्मदेव भुज-वळ-गङ्गम् ॥

अन्तेनिसि नेगर्द वम्मदेव भुज-त्रळ-गङ्ग-पेम्माडि-देवं मण्डलिय वेड्ड
 मेले मुवं दडिग-माधवर् म्माडिसिद वसदियं तम्म गंगान्वयदवर् प्पडि
 सलिसुत्तुं वरल्लु तदनन्तरं मर-व्हेसनागि माडिसि मण्डलि-सासिरवेड-
 दोरे-एप्पत्तर वसदिगळ्जिन्नुव मुन्नादुवक्कुं पड्ड-वसदिय प्रतिवद्ध-
 वागि समादेयर् म्मुख्यवागि विड्ड दत्ति तड्डेकरे सर्व्व-वाधापरिहार
 मत्तं वसदियिं तेङ्गण केरेय केळ्गे तळ-वृत्ति गद्दे गळेय मत्तल्लु मूरु
 वेड्डेले गळेय मत्तल्लारुमिन्तु पड्ड-तीर्थद वसदिगे सल्लुत्तमिरे आतन
 तनूभवर् ।

जय-लक्ष्मी-पति मारसिंननुज सत्य-प्रियं सन्द नन्-।

निय-गङ्ग-क्षितिपाळकं तदनुज तेजस्वि विक्रान्त-च-।

क्र-युतं रक्कस-गंगनातननुजं वीराग्रगण्य तद-।

न्वय-लक्ष्मी-गृह-दीपकं भुजवळ-श्री-गङ्ग-भूपाळकम् ॥

आ-मारसिंग-देवं आद्रं वल्लियेम्बूरुमं वसदियाप्रेय-कोणरेयिम्मूडल्लु
 गद्दे गळ्ळेय मत्तलोन्दु वेदले मत्तलेरडुमं विट्टम् । माघनन्दिसिद्धान्त-
 देवर गुडु मारसिंग-देवं मत्तवातन तम्म प्रभाचन्द्रसिद्धान्त-देवर
 गुडु नन्निय-गङ्ग-देवम् सिरियुरगे येम्बूरुममागद्देयिं तेङ्कण कोळद
 केळगे गळ्ळेय मत्तलोन्दु वेदले मत्तलेरडुम विट्टम् । वर्म्म-देव सक मारसिंग
 नन्निय-गङ्ग ९७६ विज [य] ९८७ [विश्वाव] सु ९९२ सौम्य ।
 अनन्तवीर्य्य-सिद्धान्त-देवर गुडुं रक्स-गंगं नन्निय-गङ्ग विट्ट गद्देयिं
 तेङ्कल्ल हरकेरिय सीमे-वरं विट्ट गद्दे गळ्ळेय मत्तलोन्दु वेदले गळ्ळेय मत्त-
 लेरडु इन्ती-वृत्ति मण्डलिय होळद भूमियिन्ती-हनेरडु मत्तल्ल वेदलेय सीमे
 मूडण देसे तळवृत्तिय गद्दे । तेङ्क हरकेरिय सीमेय नट्ट कळुगल्ल हडु-
 वल्ल पिरिवल्ल वडग मोरसर-कोळ मत्त कटकद गोव रक्स-गङ्ग हूल्लि-
 यकेरेय गद्देयुमदर सुत्तण वेदलेयुमं विट्टनदर सीमे मूडल्ल चिक्कवण-
 जिगनकेरे तेङ्कल्ल तट्टकेरेय गुड्डेय वडगद.....नीर्व्वरि हडुवल्ल नट्ट कळि
 वरल्ल गुड्डेय मूडण नीर्व्वरि वडगल्ल वडगण दिम्बिन नीर्व्वरि चिक्क-
 वञ्जिगनकेरेय वडगण कोडि ॥

मुनिचन्द्र-सिद्धान्त-देवर गुडुम् ।

भुज-वळदि शत्रु-मही- । भुज-कुजमं किन्तु मुत्ति कोण्डेगळं कोण्- ।

डजित-वळनेनिसि नेगर्द । भुजवळ-गङ्ग-क्षितीशानवनिप-तिलकं ॥

- इन्नेनिसि नेगर्द भुजवळ-गंग-पेर्म्मार्डि-देव सक-वर्ष १०२७ नेय
 सर्व्वजितु-फाल्गुण-मासद १ शुक्रवारदन्दु मण्डलिय पट्टद-तीर्थ्यद
 वसदिय निल्य-निवेद्य-पूजेग ऋपियर्गाहार-दानक विट्ट दत्ति हेरगण-
 गिले येम्बूरं सर्व्व-वाधा-परिहारं माडि विट्टन् (आगेकी ३ पक्तियोमें

सीमाकी चर्चा है) प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देवर गुड्ड नन्नियगंग-
पेम्माडि-देव ।

आ-भुजवळगङ्ग-..... ।वन-भ्राजित मग-बुद्धिद-..... ।

.....दिक्-तट रा- । ज्याभिपवाधिपतियेनिप नन्निय-गङ्गम् ॥

देसेगळनेध्दे पर्विद नेलक्किदे ता नेलगट्टेनिप्प वल्- ।

पेसेवुदु तोलोळेण्-देसेय गण्डर मीसेय मेले-मेले वऱ्- ।

तिसुवुदु गण्ड-गर्वेद जसं बडवाग्नि य वायनेध्दे वत्- ।

तिसुवुदु तेजमेनधिकनादनो नन्निय-गङ्ग-भूमुजम् ॥

पद-नखदोळ् दशाननते नम्र-नृपालि-मुखाङ्कदिं जया- ।

स्पद-भुजदल्लि षण्मुखते दुर्जय-शक्ति-धरत्वदिं चतुर- ।

व्वदनते वक्त्रदोळ् चतुर-वाणियिनोप्पिरलेन्तु नोर्षडा- ।

भ्युदयमनेध्दिदत्तु पलवुं मुखदिं तवे कीर्त्तिं गङ्गनोळ् ॥

दिगिभमनोत्ति कीलिडिपनगद केसरिवोले वाय्दडम् ।

सुगिये तळ-प्रहारदोळे मगिपनुडुटदिन्दे मीण्टुवम् ।

नगमनिव कवुडुडिव तेडुडिवन्नने सम्बुशैलमम् ।

नेगपिद पन्ति-दोळवननेळिपनेम्बुदु मारसिङ्गन ॥

खस्ति सत्यवाक्य-कोडुणि-वर्म्य धर्म-महाराजाधिराजम् परमे-
श्वरम् । कौळालपुर-वरेश्वरम् । नन्दगिरि-नाथं मद-गजेन्द्र-लाञ्छनम्
चतुर-विरिञ्चनं पद्मावती-देवी-लब्ध-वर-प्रसादम् विचकिलामोद
नन्नियगङ्गं । जयदुरत्तङ्गम् । गङ्ग-कुल-कुवळय-शरच्चन्द्रम् । मण्डलिक-देवे-
न्द्रम् । दर्पोद्धताराति-वनज-वन-वेदण्डम् । कुसुमकोदण्डम् । गण्डर-
गण्डम् । दुडूरगण्डम् । नामादि-समस्त-प्रशस्ति-सहितम् । श्रीमन्-

१ यहा 'मारसिंग' नन्निय-गंगका ही दूसरा नाम मालूम पडता है ।

न्निय-गङ्ग-पेर्माडि-देवम् तम्मज्ज वम्म-देव माडिसिद मण्डलिय
 पट्टद-त्तीर्थद वसदियं कल्ल-वेसनागि माडिसिद पट्टद-वसदिगे सक-
 वर्ष १०४३ नेय शुभकृत्-संवत्सरद भाद्रपद-मासद शुद्ध ५
 वृहस्पति-चारदन्दु कुरुळिय-वसदियादियागि पञ्चविंशति-चैत्यालयमं
 धम्मप्रभावनेयिन्द माडिसिद प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देवर शिष्यरु मुख्य-
 वागि विट्ट वृत्ति वसदिय मुन्दे गद्देगळेय मत्तरोन्दु वेद्लेगळेय मत्तरेखु
 वसदियहळ्ळिय सुद्धमुमं विट्टरु मत्त नन्निय-गङ्ग-देवतु पट्ट-महा-देवि
 कञ्चल-देवियरु पक्कावती-देविगे हरसि हेर्माडि-देवनं हडेदु काणि-
 केय तन्नाळ्व नाडुर्गळोल्लु शर-मित-पणव कोट्टरा-चन्द्रार्क-तारं-वरं ।
 बुधचन्द्र-पण्डित-देवर गुडुम् ।

मुनिसिं दिग्दन्ति-दन्तङ्गळनवयवदिन्दोत्ति वेग छळ्ळेम्- ।

विनेग कित्तेत्तने तारगेगळनदट्टिन्दालिकळन्ददिं सू- ।

सने वार्द्धि-त्रातमं सुरेने तवुविनेग पीरने कोपदिं पोय्- ।

यने वेट्ट पिट्टु-पिट्टागिरे समरदोळी-वीर-पेर्माडि-देवम् ॥

(हमेशाका अन्तिम श्लोक)

[इस समय त्रैलोक्यमल्ल-देवका विजयराज्य प्रवर्द्धमान है । गङ्गान्वय
 (वंश) का अवतार इस प्रकार हुआ —

वृषभ-तीर्थ-कालमें जब कि अयोध्यामें इक्ष्वाकु-वंशमें राजा हरिश्चन्द्रको
 राज्य करते हुए बहुत समय हो गया था, उसका पुत्र भरत हुआ। उसकी
 पत्नी विजय-महादेवी थी । जब उसको गर्भ-दोहद हुआ तो उसे जोरसे नृत्य
 करनेवाली लहरोंसे ओतप्रोत, मत्स्य, चक्रवाक पक्षी तथा चमकीले हंसोंसे
 पूरित गङ्गामें नहानेकी इच्छा हुई । अपनी इस इच्छाको पूरा करनेके बाद,
 नौ महीने पूरे होनेपर उसे एक लडका हुआ । उस लडकेका नाम, चूँकि
 गङ्गामें नहानेके बाद वह उत्पन्न हुआ था अतः गङ्गदत्त रक्खा गया ।
 गङ्गदत्तका पुत्र भरत हुआ और उसका पुत्र गङ्गदत्त हुआ । इस गङ्गदत्तकी

लडकीका लडका हरिश्चन्द्र हुआ, उसका लडका भरत हुआ और उसका फिर गङ्गदत्त ।

गंग वंशकी परम्परा इस प्रकार जारी थी,—जब कि नेमीश्वरका तीर्थ चल रहा था,—उस समय, राजा विष्णुगुप्तका जन्म हुआ । यह राजा अहिच्छत्र-पुरमें शान्तिसे निवास कर रहा था, उसी समय नेमि तीर्थकरका निर्वाण हुआ और उसने ऐन्द्रध्वज पूजा की, जिससे प्रसन्न होकर देवेन्द्रने उसे ऐरावत हाथी दिया ।

विष्णुगुप्त महाराज और पृथ्वीमति-महादेवीसे भगदत्त और श्रीदत्त नामके दो पुत्र हुए । पिताने भगदत्तको राज्य करनेके लिये कर्लिंग-देश दे दिया और वह उसपर 'कर्लिंग गंग' नामसे राज्य करने लगा । दूसरी तरफ, उसने वह मत्त हाथी तथा शेष असंपूर्ण राज्य राजा श्रीदत्तको दे दिया । इस प्रकार जब श्रीदत्तके समयसे हाथीको मुकुटमें धारण किया गया था,—प्रियवन्धुवर्म्मेने उत्पन्न होकर अपनी नीतिसे सारी पृथ्वीकी रक्षा की ।

जिस समय वह प्रियवन्धु शान्तिसे राज्य कर रहा था, उस समय पार्श्व-भट्टारक, (तीर्थकर) को केवलज्ञान उत्पन्न हुआ, जिसकी पूजाके लिये सौधर्म्मनेन्द्रने आकर केवली-पूजा की । इसी अवसरपर स्वयं प्रियवन्धुने भी आकर केवलज्ञानकी पूजा की । उसकी श्रद्धासे प्रसन्न होकर इन्द्रने पाँच आभरण (अलङ्कार) उसे दिये और कहा,—“अगर तुम्हारे वंशमें आगे कोई मिथ्यामतका माननेवाला उत्पन्न होगा, तो ये (आभरण) लुप्त हो जायेंगे ।” ऐसा कहकर, और अहिच्छत्रका 'विजयपुर' नाम रखकर इन्द्र चला गया ।

दूसरी ओर, पूर्ण चन्द्रमाके समान, गंग-वंश बढ़ता ही चला गया और इस वंशसे राजा कम्पके पद्मनाभ नामका एक पुत्र उत्पन्न हुआ । पद्मनाभके, शासन-देवताकी कृपासे, दो पुत्र उत्पन्न हुए, जिनका नाम उसने राम और लक्ष्मण रखा ।

जब ये दोनों कुमार शान्तिसे रह रहे थे, उज्जयिनी-शासक महीपालने उनको जा घेरा और उनसे इन आभूषणोंको माँगा । पद्मनाभने देनेसे इन्कार कर दिया ।

इसके बाद अपने मन्त्रियोंकी सम्मतिसे, उसने अपने पुत्रोंको, अपनी कुमारी छोटी बहिन तथा ४० पुत्रोंके साथ बाहर भेज दिया, और चूँकि वे दक्षिणको जा रहे थे, उनका नाम बदलकर क्रमसे दडिग और माधव रर दिया ।

चलते-चलते वे एक अत्यन्त मनोरम स्थानपर आये, जहाँ उन्हें विशाल पेरु (शायद कोई तालाब-विशेष) और एक पहाड़ी मिली जो पुष्पाच्छादित मन्दार, नमेरु तथा चन्दनके वृक्षोंसे आवृत थी । उस गङ्गा-हेरूरको देखकर वहाँ उन्होंने एक तालाबके किनारे अपने तम्बू तान दिये, वहाँ एक चैत्यालय भी उन्हें दिखाई दिया, जिसकी तीन प्रदक्षिणा करनेके बाद, स्तुति करते समय, क्राणूर-गण-आकाशके सूर्य, गङ्गा राज्यके प्रवर्धक श्री-सिंहनन्दाचार्य दिखाई दिये । गुरुमें श्रद्धा होनेके कारण उन्होंने उनकी विनय की और अपने जानेका उद्देश्य कहा । इसपर वे उनको हाथ पकटकर ले गये और उन्हें विद्याकी कलामें प्रवीण किया, और कुछ दिनोंके बाद अपने श्रद्धा-त्रलसे पद्मावती देवीको प्रकट कर वर प्राप्त किया, और उन्हें एक तलवार तथा सपूर्ण राज्य दिया ।

जिस समय मुनिपति ऊपरकी ओर देर रहे थे, माधवने अपनी तमाम शक्तिसे एक पापाण-स्तम्भपर प्रहार किया, और वह स्तम्भ कडकड करते हुए नीचे गिर पडा । मुनिपतिने इस शक्तिको देखकर उनको कर्णिकारके परागोंसे तैयार किया गया एक मुकुट पहिनाया, उनके ऊपर अनाजकी वृष्टि की और बहुत खुशीसे तमाम पृथ्वीका राज्य देते हुए, झण्डेके लिये अपनी पीछीको चिह्न बनाया, तथा बहुतसे सेवक, हाथी और घोडे दिये ।

तमाम राज्यका अधिकार देते हुए उन्होंने उन्हें इस उपदेशसे सावधान किया—अपनी प्रतिज्ञात बातको यदि वे नहीं करेंगे, अगर वे जिनशासनको स्वीकार नहीं करेंगे, अगर वे दूसरोंकी स्त्रियोंको ग्रहण करेंगे, अगर वे मांस और मधुका सेवन करेंगे, अगर वे नीचोंसे सम्बन्ध जोड़ेंगे, अगर वे आवश्यकतावालोंको अपना धन नहीं देंगे, अगर युद्धभूमिसे भाग जायेंगे:—तो उनका वंश नष्ट हो जायगा ।

१ शिलालेख इस बातमें एक राय है कि यह प्रहार तलवारसे किया गया था ।

ऐसा कहनेके बाद,—उच्च नन्दगिरि उनका किला हो गया, कुवलाल उनका नगर बन गया, ९६००० उनका देश हो गया, निर्दोष जिन उनके देव हो गये, विजय उनकी युद्धभूमिकी साथिन हो गई, जिनमत उनका धर्म हो गया ।

आगे गङ्गवाडि ९६००० की चतुर्दिक्-सीमा दी है ।

राज्य प्राप्त करनेके बाद, दडिग और माधव दोनो, जब कौकण देशको अधीन करनेके लिये आ रहे थे, उन्होंने मण्डलि देखी, जिसके बाहरी प्रदेशमें एक विशाल तालाबको सफेद जल-कमलिनी और हजारपत्तेवाले विकसित कमल तथा बहुत-सी मछलियोंके शब्दोंसे आकर्षक जानकर वहाँ उन्होंने अपने तम्बू गाढ दिये । पहाडीकी सुन्दरता देखकर सिंहनन्धाचार्यने उन्हें वहाँ एक चैत्यालय निर्माण करनेकी प्रेरणा की, जिसे उन्होंने मान्य किया ।

और कुछ दिनोंके बाद वे कोलाल चले गये और शान्तिसे राज्य करने लगे । जैसे जैसे गङ्ग-वश बढ़ता गया, दडिगके माधव नामका एक पुत्र हुआ, जिसने राज्य किया । उसका पुत्र हरिवर्मा, उसका पुत्र विष्णुगोप, जिसके मिथ्यामतके माननेके कारण, वे आभूषण विलीन हो गये थे । उसका पुत्र पृथ्वी गङ्ग हुआ, जिसने सत्यमत अङ्गीकार किया । उसका पुत्र तडङ्गाल माधव था ।

इसका पुत्र अविनीत गङ्ग था । यह अपनी शत-जीवी वातको सुनकर, परीक्षाके लिये, अत्यन्त भयानक वाढवाली कावेरीमें कूद गया और फिर तैर कर निकल आया । यह पक्का जिनभक्त था ।

उसके बाद दुर्विनीत गङ्ग हुआ, जिसका पुत्र मुष्कर था । मुष्करके बाद क्रमसे एकके बाद एक श्रीविक्रम और भूविक्रम हुए । भूविक्रमके नव-रूप और एरग पुत्र हुए । इनमेंसे एरगके एरेयङ्ग पुत्र हुआ; उससे श्रीवल्लभ, उससे श्रीपुरुष, उससे शिवमार और उससे मारसिंह ।

मालव सप्तको स्वाधीनकर और एक पाषाणपर 'गङ्ग-मालव' खुदवाकर मारसिंहने कन्नमुञ्जेके राजाके छोटे भाई जयव्हेसीको युद्धमें मारा ।

मारसिंहका पुत्र जगत्तुंग हुआ; उसके राचमल्ल हुआ जो जिनधर्म-समुद्रके लिये चन्द्रमा था ।

उसके नाती मरुळय्य और वृतुगपेर्माळि हुए; वृतुगकी सन्तान एरेयप, उसका पुत्र वीरवेडंग, और उसके राचमल्ल उत्पन्न हुआ ।

राचमल्लसे एरेयङ्ग उत्पन्न हुआ; जिसका वृतुग, जिसका मरुळ-देव, जिसका गुत्तिय-गंग, जिससे मारसिंग, उसका पुत्र गोविन्दर, उसका सैगोट्ट विजयादित्य, उससे राचमल्ल उत्पन्न हुआ; उससे मारसिंग, उससे कुरुळ-राजिग, उससे गव्वंदगङ्ग, गोविन्दरके छोटे भाईका पुत्र मम्म-गोविन्दर था । (उसकी प्रशसा) उसका छोटा भाई कलियङ्ग था । उसके बाद जिस समय गंगवंश चल रहा था—

काणूरुगणके आचार्योंकी वंशावली निम्न भाति थी —

दक्षिण-देशवासी, गङ्ग राजाओके कुलके समुद्धारक, श्रीमूलसंघके नाथ सिंहनन्दि नामके मुनि थे । तदनन्तर अर्हद्वय्याचार्य, वेष्ट्ट दामनन्दि भट्टारक, बालचन्द्र भट्टारक, मेघचन्द्र त्रैविद्यदेव, गुणचन्द्र पण्डितदेव । इनके बाद शब्द-ब्रह्म गुणनन्दिदेव हुए । इनके बाद महान तार्किक एवं वादी प्रभाचन्द्र सिद्धान्तदेव हुए । वे मूलसंघ, कोण्डकुन्दान्वय, क्रानूर-गण तथा मेघपाषाण गच्छके थे । उनके शिष्य माघनन्दि सिद्धान्तदेव हुए । उनके शिष्य प्रभाचन्द्र हुए ।

इनके सधर्मा अनन्तवीर्य मुनि थे; मुनिचन्द्र मुनि भी । उनके शिष्य श्रुतकीर्ति । उनके बाद कनकनन्दि त्रैविद्य हुए, जिन्हें राजाओंके दरवारसे 'त्रिभुवन-मल्ल वादिराज' कहा जाता था । इनके सधर्मा माधवचन्द्र थे । उनके शिष्य त्रैविद्य बालचन्द्र यतीन्द्र थे ।

प्रभाचन्द्र सिद्धान्तदेवके शिष्य बुधचन्द्रदेव थे (उनकी प्रशसा) । जिस समय आचार्य-परमेष्ठि-अन्वयके तिलकस्वरूप बुधचन्द्र-पण्डितदेव विराजमान थे ।—

प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देवके गृहस्थ-शिष्य भुजवल-गंग वर्मदेव थे ।

इन प्रसिद्ध वर्मदेव, भुजवल-गंग पेर्माळि-देवने 'वसदि' बनवाई । यह वही वसदि है जिसे पूर्वसे दडिग और माधवने मण्डलिकी पहाडीपर बनवाई थी, और जिसके लिये उसके गगवशके राजाओने पूजाका प्रवन्ध जारी रखा था, और जिसे बादमे उन्होने लरुडीकी बनवा दी थी,—यह

आजतककी वसी हुई तथा भविष्यमें जो मण्डलि-हजारकी पट्टदोरे-सत्तरमें वनेंगी उन सभी वसदियोंमें मुख्य थी। इसका नाम पट्टद-वसदि (शाही वसदि) रक्खा था, और इसे (उक्त) भूमिदान दिया।

वर्मदेवके ४ लडके थे—मारसिंग, उसका छोटा भाई नन्निय-गंग; उसका छोटा भाई रक्स-गंग; उसका छोटा भाई भुजवल-गंग।

उक्त मारसिंग-देवने आर्द्रवह्निमे (उक्त) कुछ भूमिका दान दिया। इसके अतिरिक्त, माघनन्दि सिद्धान्तदेवका गृहस्थ शिष्य मारसिंह-देव (शक ९८७ विश्वावसु) और उसका छोटा भाई, प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देव-का शिष्य, नन्नियगङ्गदेव था। इन दोनोंने सिरियूरमें (उक्त) कुछ भूमिका दान दिया। (शक ९९२ सौम्य)

वर्मदेवका दानका समय—शक ९७६ विजय।

अनन्तवीर्य-सिद्धान्त-देवके गृहस्थ-शिष्य रक्स-गङ्गने (उक्त सीमा-सहित) भूमिका दान दिया। मुनिचन्द्र-सिद्धान्त-देवके गृहस्थ शिष्य भुजवल-गंगने शक १०२७ में, सर्वज्ञितु वर्षमें, (उक्त) भूमिका दान किया। नन्निय-गंग-पेर्माडि देवका 'नन्निय-गंग' नामका लडका हुआ। (इसकी प्रशंसा), इसने शक वर्ष १०४३ शुभकृत् वर्षमें मण्डलिकी पट्टद-तीर्थ वसदिके लिये, २५ चैत्यालय और वनवानेके साथ-साथ, कुछ जमीनका दान दिया। इसकी पट्टमहादेवी कञ्चल-देवी थी।]

२७८

श्रवणबेलगोला—संस्कृत तथा कन्नड

[शक १०४३=११२१ ई०]

(जै० शि० सं०, प्र० भा०)

२७९

श्रवणबेलगोला—संस्कृत तथा कन्नड

[शक १०४४=११२२ ई०]

(जै० शि० सं०, प्र० भा०)

२८०

तेरदाळ—कन्नड

[शक १०४५=११२३ ई०]

[तेरदाळ दक्षिण महाराष्ट्रके सांगली जिलेका एक वडा गाँव है। इस स्थानकी जैन 'वस्ति' में एक पापाण पीठ (stone tablet) है जिसपर ३ विभिन्न भागोंमें विभक्त एक अभिलेख है। यह लेख उसका प्रथम भाग है, यह इस समूचे लेखकी ५६ वीं पक्तिपर जाकर समाप्त होता है।]

[IA, XIV, P 14-26 (Lines 1-56)]

श्रीमत्परमगमीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासनम् ॥

श्रीमन्नमुरासुरोरगलसन्माणिक्यमौळिप्रभा-

स्तोमालकृतपादपद्मयुगल कैवल्यकान्तामनः-

प्रेमं सन्मति-नेमिनाथ-जिननाथ तेरिदाळातिशय-

श्रीमत् (६) भव्यजनके माळ्कनुदिनं दीर्गर्वायुमं श्रीयुमम् ॥

क्षितिभृत्त्राणप्रभावोत्करकरिमकरोद्यत्प्रयुक्ताव्धिवेला-

वृतजम्बूद्वीपमध्योद्भवकनकनगक्कीक्षिसल् दक्षिणाशा-

क्षिति कण्गोप्पिप्पुदेत्त भरतविषयमा देशदोळ् कुन्तलोद्यत्-

क्षिति तोर्कुं चेल्विर्नि तद्धरणियोळेसेगुं कूण्डिनामोद्घदेशम् ॥

तद्विषयमध्योदेशदोळ् ॥

निरुपमगन्धशाळिवनदिं वनदिं कोळदिं तटाकदिं गिरिवन-त्तोय-
दुर्ग-कुळ दिन्दगळिं बुध-माधवाक-अंकर-जिन-सद्मदिं विपणि-मार्गदिनो-
प्पुव तेरिदाळ पन्नेरडर चेल्वनेय ॥

१ यहाँपर यह लेख छुस्पष्ट और सरलतासे पढ़नेके लिये पक्तिवार न देकर नियमानुसार पठनीय साधारण शैलीसे दिया जाता है ।

आ वीर-मल्लिदेव-महीवल्लभनर्धनारि गुणमणिगणदिं भू-वधुगेण्येने
वाचलदेवि महीन्द्रजेगे सीतेगोरे दोरेयल्ले ॥ त्रि (वृ) ॥

अवरिवर्गनुरागदिं सिरिगवा कञ्जोदरंगं मनोभवनद्विप्रियपुत्रिगं
शशिधरंगं पण्मुखं वन्दु पुट्टुववोल् पुट्टि विरोधि-मन्नेयधरइ तेरिदाळ-
क्षितीश-विळासं परिरञ्जिपं भुवनदोळ् निरशंकेयिं गोङ्कर्मन् ॥

त्रि (वृ) ॥ कन्तु-विळास-लक्ष्मयेनिपगढ वाचलदेवि माते
विक्रान्त-विभासि-मल्ल-महीप जनक मुनि माघणन्दिसेद्धान्तिकचक्रवर्त्ति
गुरु नेमिजिन मनदिष्ट-देव्यवोरतेने तेरिदाळद नृपाप्रणि गोङ्कनिदें कृता-
र्यनो ॥ अडसुव कुत्तवोत्तरिप मृत्यु कडगुव मारि कोच्चिनिं तोडर्व
विरोधि पाय्व पुलि पोय्व सिडिल् पिडिवुग्र पन्नग सुडुव दवाग्निवाघे
कडेगंचुवुदेन्दटे तेरिदाळ्दी कडुगलि गोङ्क-भूपतिय भव्यते केवळवे
निरोक्षिसल् ॥ पसिद सिताहि सोङ्किदोडे सकिसि मन्नद तंत्रदासेयिन्द-
सुवरेयागि विट्टिरदे पञ्च-पदङ्कळनोदि तद्विपप्रसरमनेव्दे पिङ्गिसि जिन-
व्रतदोळु दडनाद तन्न पेम्पेसेदिरे तेरिदाळदरसं नेगळदं कलि गोङ्क-
भूसुजन् ॥ येत्तिसि तेरिदाळदोळगोप्पे जिनेश्वरसन्नम समन्तेत्तिसिद
जयच्चजमसुर्व्विगे दिग्-मुख-दन्ति-दन्तदोळ् तेत्तिसिद निजाङ्क-महिमा-
क्षरमाळिकेयं गडुन्दडेनुत्तमभव्यनो जिनमताप्रणि सद्गुणि गोङ्क-
भूसुजन् ॥ सतत कीर्त्तिसदिर्षपंपरार्चुवनदोळ् भव्यर्जगत्सेव्यनं

जित-काळ्येय-कळङ्क-पङ्क-पटह-ध्वान्ताङ्कन गोङ्कनम्
प्रतिपक्ष-क्षितिनाय-हृत्-सरसिजोघातङ्कन गोङ्कनम्
क्षितियोळ् रञ्जिप तेरिदाळदेसवी निरशक्तन गोङ्कनम् ॥

१ 'म' अक्षर छन्दपूर्तिके लिये है, वैसे इसकी कोई जहुरत नहीं है ।
२ यह दूसरा 'प' गलत है ।

अन्तेनिसिद गोङ्कमहीकान्त श्री-माघणन्दि-सिद्धान्तिकरं
 भ्रान्तेन्तो कोल्लगिरिदिं [दं] तरिसि समस्त-भव्यरभिवर्णिपिनम् ॥
 तदाचार्य्यप्रभाववेन्तेन्दडे ॥ धरे दुग्धाब्धियिनब्धि चन्द्रनिनिनं
 तेजोग्नियिन्देन्त [म]न्तिरली पोस्तक-गच्छ-देसिग-गण
 श्री-कोण्डकुन्दान्वयम्

निरुतं श्री-कुळचन्द्रदेव-यतिपोषच्छिष्यरिं सद्गुणा-
 कर-राद्धान्तिक-माघणन्दि-मुनियिं कणगोपुगु धात्रियोळ् ॥

क ॥ अगणित-गुण-जळधिगळेने नगधैर्य्यर्माघणन्दि-सैद्धान्तिकराव-
 गमेसेवर्सेन्-मतियिं जगदोळ् सामन्त-निम्बदेवन गुरुगळ् ॥

वृ ॥ सन्ततवन्य-चिन्तेगळनोक्कु जिनास्यविनिर्गतागमार्थान्तरचिन्ते-
 योळ् नेरेदु निळदे सिद्धर सद्गुणगळ चिन्तिसुतिर्पि कोल्लगिरिदग्गद सन्मुनि
 माघणन्दि-सैद्धान्तिक-चक्रवर्ति जित-मन्मथ-चक्रियेनिम्पनुर्वियोळ् ॥

वृ ॥ अन्तरिसिर्द जैन-समयक्कोगेदं जिननीगळोर्व्वेनेम्बन्ते जिनव्रतङ्ग-
 लनगेषजनक्कुपदेशमित्तु सामन्तनेनिम्प निम्बनेरगळ् नेगळ्दोप्पुव माघ-
 णन्दि सैद्धान्तिक-चक्रवर्ति जिन-धर्म-सुधाब्धि-सुधाशुवागने ॥ अवर-
 ग्रशिष्यरु ॥

क ॥ वादि-विषोरग-ताक्ष्य-कर्वादि-महा-गहन-दावदहनर्व्व (र्व्व)
 लवद्-वादीभसिंहेरेसेदम्मेदिनीयोळ् कनकणंदिपण्डित-देवर ॥ तत्पर-
 वादीभ-पञ्चाननर स-धर्मर ॥ श्रुतकीर्त्ति-त्रैविद्य-त्र (त्र)तिपर्षट्-तर्क-
 कर्कशर

पर-वादि-प्रतिभा-प्रदीप-प्रवन जिंतदोषर नगळ्दरखिळ्भुवनान्तर-
 दोळ् ॥ तत्परवादि-शिखरि-शिखर-निर्व्वेदनोच्चण्डपवि-दण्डर सधर्मर ॥

वृ ॥ जित-कुसुमायुधाखरननिन्दितजैनमतप्रसिद्धसाधितहितशाखरं
विदळितोन्मद-मान-विमोह-लोभ-भूमृत्-कुलिशाखरं पदपिनिं पोगळुं
धरे चंद्रकीर्त्ति-पण्डितरनतर्क्य-तार्किक-चतुर्मुखरं परवादिशूलरन् ॥
तत्परवादिमस्तकशूलर सधर्मर ॥

वृ ॥ धृति भूमृत्पतिय गभीरवमृताम्भोराशियं साले सन्मति वाच-
स्पतिय पळचलेविनम्भेत्त सन्मार्ग-सन्ततियिन्दं नेगळिर्द देशिग-गणा-
धीश-ग्रभाचन्द्रपण्डितदेवोज्वळकीर्त्तिमूर्त्ति वडेदाढ वत्तिकुं धात्रियोळ् ॥
तन्मुनीश्वरर सधर्मर ॥

परवादिप्रकर-प्रताप-महिभृत्-प्राप्त्रोत्र-वज्रगुणा-
भरणर श्रीवसुधैकवान्धवजिनेन्द्राधीश्वरोत्तुङ्गम-
दिरदाचार्य्य नगेन्द्र-रुद्र-निभ-धैर्य्यवर्द्धमान-त्रती-
श्वररिन्ती धरेयोळ् नेगळ्ते-चडेद त्रैविद्य-विद्याधर ॥

यिन्तु नेगळ्तेग पोगळ्तेगमधीश्वरराद वर्धमान-त्रैविद्यदेवरज्ज-
गुरुगळ्प श्री-माघणन्दि-सैद्धान्तिक-देवरदिव्यश्रीपादपद्मगळ्म् ॥

स्वस्ति समस्तभुवनाश्रयं श्रीपृथ्वीवल्लभ महाराजाधिराज परमेश्वरं
परमभट्टारक सत्याश्रयकुळतिलकं चालुक्याभरणं श्रीमद्-विक्रम-चक्रवर्ति-
त्रिभुवनमल्लदेवर विजयराज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कता-
रम्बरम् कल्याणपुरद नेलेवीडिनोळ् सुख-संकथा-विनोददिं राज्य गेय्युत्त-
मिरे तत्पादपद्मोवजीवि ॥ स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द-महामण्डले-
श्वरं लत्तनूरपुरवराधीश्वरं त्रिवलि-परेधोषण रङ्कुलभूपण सुवर्ण-गरुड-
ध्वज सिन्धूर-लाञ्छनं विवेक-विरिञ्चनं गण्डमण्डलिक-गण्डस्थळ-प्रहारि
देसकारर-देव मूरु-रायरा-स्थान कलि-विरुदर-गण्ड नुडिदन्ते-गण्ड साह-
सोत्तुग सेननसिंह नामादिसमस्तप्रशस्तिसहित श्रीमन्महामण्डलेश्वरं

कार्तवीर्य-देवरसं सुख-संकथा-विनोददि राज्यं गेय्युत्तमिरल् तदाज्ञे-
 र्थिम् ॥ स्वस्ति समस्तप्रशस्तिसहितं श्रीमन्मण्डलिकं परब्रह्मसाधक जीमू-
 तवाहनान्वयप्रसूत शौर्य-रघुजात समर-जयोत्यु(त्तु)ङ्ग रणरङ्गसिद्ध
 मयूर-पिच्छ-चक्षुद-ध्वज रूप-मकरध्वज पद्मावतीदेवीलब्धवरप्रसाद
 जिनधर्म-केलि-विनोद भावनं-ककार मण्डलिक-केदार नामादिसमस्तप्रश-
 स्तिसहित श्रीमत् गोङ्कि-देवरसं निज-राजधानियप्प तेरिदाळद मध्य-
 प्रदेशदोळ् गोङ्क-जिनालयम निर्मिसि श्री-नेमि-जिननाथ-प्रतिष्ठेय राष्ट्रकूटा-
 न्वय-शिरः-शिखामणि कार्तवीर्य-महामण्डलेश्वरं मुख्यवागि सद्भक्तियिं
 शुभदिनमुद्घर्त्तदोळ् माडि तज्जिनमुनि-प्रधानरप्प देसिग-गण-पोस्तक-
 गच्छद श्रीकोण्डकुन्दाचार्यान्यद कोछापुपुरद श्री-रूपनारायणन वसदि-
 याचार्यरु मण्डलाचार्यरु मेनिप्प श्रीमाघणन्दि-सैद्धान्तिक-देवर वरिसि
 शक्र-वर्ष १०४५ नेय शुभकृत्-सवत्सरद वैशाखद पुण्णमि बृहस्पति-
 वारदळ् गोङ्क-जिनालयके पन्निर्व्वर्गावुण्डुगळुम समस्तपरीवार-
 प्रजेगळुम आ स्थळद सेट्टि-गुत्त-मुख्य-समस्त-नकरङ्गळुम
 वरिसि नेमि-तीर्थेश्वरन वसदिय ऋषियराहारदानक देवरष्टविधाच्चनेग
 खण्डस्फुटितजीर्णोद्धारकं पेसर्-गोण्डु तन्मुनीश्वर दिव्य-श्री-पाद-पद्म-
 गळं दिव्य-तीर्थ-जळङ्गळि तोळ्दु शातकुम्भ-कुम्भ-समृत-जळङ्गळि धारा-
 पूर्व्वकं माडि तेरिदाळद पश्चिम-भागदोळ् हारुनगेरिय वट्टेयिं वडगळ्
 यिप्पत्तनाल्गोण-कोळ् कोट्ट मत्तरेप्पत्तरेडु देवियण-वावियिं तेङ्गला
 कोळ् कोट्ट तोण्ट मत्तरोन्दु अन्तु मत्तर् ७२ तोण्ट मत्तर् १ अल्लिय
 पन्निर्व्वर्गावुण्डुगळुमरुवत्तोक्कळु हन्नि-धान्यक रासिगोळ्गे व विट्टर्
 अल्लिय सेट्टिगुत्त-मुख्य-नगरङ्गळ् तावु मार-कोण्ड भण्ड माणिक-
 पट्ट-सूत्रवाटड होगे वीस लाभायद अडके होगे हन्नोन्दु तावु तेगेद

येलेय हेरिंगं अग(१)द (१)न्तरु वत्तिगरु तेगेद हेरिङ्गं नूरेलेयिन्ति-
 नितुव विट्टर तेळ्ळिगद् मान्य-सान्यवेनटे देवर संजे-सोडरिंगं धूपारितेगं
 गाणके सोळ्ळगे होरगणि वन्द एण्णेय कोडके सोळ्ळगे यिन्तव विट्टर
 मण-कुम्भाररु देवर अष्टविधार्चने आहारदान नडवन्तागि दानशालेगे
 आवगेगळन विट्टर हलसिगे-हन्निर्छीसिरद हेच्चट्टेयल् नडेव गात्रिगरु
 देवरिगे अष्टविधार्चने नडवन्तागि हेरिङ्गे नूरु चोळ्ळेलेयं विट्टर ॥

[IA, XIV, p 14-26 (lines 1-56), t & tr]

२८१-८२-८३

श्रवणवेल्गोला—संस्कृत तथा कन्नड

[शक १०४५=११२३ ई०]

(जै० शि० सं० प्र० भा०)

२८४

होसहोळ्लु—संस्कृत और कन्नड

[विना कालनिर्देशका, पर संभवत. लगभग ११२५ ई० का]

[होसहोळ्लु (कृष्णराजपेट परगना)में, पार्श्वनाथ वस्तिके दक्षिणकी
 ओरके पाषाणपर]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामोघलाञ्छन ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासनम् ॥

भद्रमस्तु जिनशासनाय । स्वस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द-महामण्ड-
 लेश्वर-द्वारावतीपुरवराधीश्वर-यादवकुलाम्बरद्युमणिसम्यक्त्वचूडामणि मले-
 परोळु गण्डाधनेकनामालङ्कृत.....त्रिभुवनमल्ल तळ्काडुगोण्ड
 मुजवळ वीरगङ्ग होयसळ-देव पृथिवि-यराज्यं उत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्ध-
 मानमाचन्द्रार्कितारम्बरं सल्लुत्तमिरे गङ्गवाडि-तोम्भर्तुर्-सासिरमनेक-
 ञ्छत्रंछायंदि पृथ्वी-राज्यं गेयुत्तिरल्लु तत्पादपद्मोपजीवि । स्वस्ति समस्त-

भुवनविख्यात पञ्चस(श)तवीरशासनलब्धानेकगुणगणालङ्कृत सत्य-
सौ(शौ)चाचा [र] चारुचारित्र वीर-बलजधर्म-प्रतिपालन विसु(शु)द्ध-
गुह्य-ध्वज-विराजिताम्बरं साहसोत्तुङ्ग चलदङ्कराम साहसमीमं दीनानाय-
बुधजन-कल्पवृक्षनुमप्य चबुण्डादि-द्वितीय-नामधेय-दोरसमुद्रपट्टण-स्वामि
पोरुपल-सेट्टियराद नो [ळ] वि-सेट्टि श्री शुभचन्द्र-सिद्धान्त-
देवर गुह्यन् आप्रभुविन मनो-नयन-बल्लमे जिन-गन्धोदक-पवित्री-
कृतोत्तमाङ्गेषु आहाराभय-भैषज्य-शाल-दान विनोदेयरुमप्य देमिकब्बे-
सेट्टियु मेदिनीदेवरु ।

वृत्त ॥ मरु निरतमरंगे वदन-तेजमनोत्ति.....।

स्तरमनु।

.....।

.....नोळवि-सेट्टियु ॥

कन्द ॥.....देमाम्बिकेय । उच्चमनेने सकळ-जनम् ।

.....।.....न ॥

आप्त-चऊण्डादि-नामधेय.....देमिकब्बेयु त्रिकूटजिनालयं
माळिसि श्रीमूलसङ्घद देसिग-गणद पोस्तक-गच्छद श्रीकोण्डकुन्दान्वयद
श्री-कुक्कुटासन-मलधारिदेवर शिष्यरुप्य तम्न गुरुगलु श्री-शुभचन्द्र-
सिद्धान्तदेवर्गे कोट्ट वसदिगे अर्हनहल्लियुमं वसदिय वडगलु तेङ्गळुं
नट्ट कल्लु मेरेयागि मूड केरें-वरं परिदे केरियुमं मरे नडुवण-दान-साल्य
मनेयुमं एरडु-गाणसु एरडु तोण्टमुं...वेट्ट-नायक[न] मग गण्ड-
नारायण-सेट्टि कत्तारे घट्टद भूमियोळगे कणिय-समीपद कडवद कोळद
केरे एरडुमं आ-केरेंय-मूडण-कोळियिं परिद पळ्ळदिं तेङ्गळ-पडुवळद
गर्दे वेदलेयुमं विट्टनन्तिनितुम *...शुभचन्द्र-सिद्धान्त-देवर्गे धारा-

पूर्वकां माडि सर्व्वनमस्यवागि नोळवि-सेट्टियरु कोट्टु.....श्री-मूलसंघद
पुस्तक-गच्छदवर्गोल्लरु साम्यमिल्ल इन्त् ई-धम्मव (हमेशाकी तरह अनितम
शब्दावली और श्लोक)

[जिनशासनकी प्रशसा । जिस समय वीरगद्ग-होयसल-देव इस पृथ्वीपर
राज्य कर रहे थे उस समय उनके पादपद्मोपजीवी, शुभचन्द्र-सिद्धान्त-
देवके गृहस्थ शिष्य नोळवि-सेट्टि नामके पोयसल-सेट्टि थे। देमिकच्चे
सेट्टिने त्रिकूट-जिनालय बनवानर इसके सभेके लिये दानमें अर्हणहलि गाँव
दिया; इसीके साथ एक उत्तम तालाब, जिसके बीचमें दानशाला थी
ऐसी एक गली या सडक, दो तेलकी चक्कियाँ और दो बगीचे भी दिये ।
यह जिनालय उन्होंने मूलसंघ, देसिग-गण, पोस्तकगच्छ और कोण्ड-
बुन्दान्वय कुक्कुटासन मलधारिदेवके शिष्य और अपने गुरु शुभचन्द्रसिद्धान्त
देवको समर्पित कर दिया । वेट्ट नायकके पुत्र गण्ड-नारायण-सेट्टिने निर्दिष्ट
दूसरी जमीन दी । यह सब दान नोळवि-सेट्टिने शुभचन्द्र-सिद्धान्तदेव के
स्वाधीन कर दिया । और मूलसंघके पोस्तक-गच्छका जो कुछ था, उस सभीको
चुगी और करसे मुक्त कर दिया ।]

[EC, IV, Krishnarajapet tl, n° 3]

२८५

अवणवेल्गोला—सस्कृत तथा कन्नड

[शक १०४५=११२३ ई०]

(जै० शि० सं०, प्र० भा०)

२८६

हिरे-आवलि—कन्नड

[विक्रमचालुक्यका ४९ वाँ वर्ष ?=११२४ ई०]

[हिरे-आवलिमें, रामलिङ्ग मन्दिरके सामने पड़े हुए पत्थरपर]

स्वस्ति श्रीमतु विक्रम-वर्षद ४ [] नेय साधा [रण]-सं-
वत्सरद माघ-शुद्ध ५ वृ०-चारदन्दु श्रीमन्मूल-संघद सेन-गणद

पोगरिगच्छद चन्द्रप्रभ-सिद्धान्त-देव-शिष्यरप्प माधवसेनभट्टा-
रक-देवरु

मनदिं जिनन पदङ्गळोळ ।

अनुनयदिं निरिसि पञ्च-पदमं नेनेयुत् ।

अनुपम-समाधि-विधियिम् ।

मुनि माघ.....पडेदम् ॥

[स्वस्ति । (उक्त मितिको), मूल-संघ, सेन गण और पोगरिगच्छके चन्द्रप्रभ-सिद्धान्त-देवके शिष्य माधवसेन-भट्टारक-देव जिन-चरणोंका मनन करके, पञ्च-परमेष्ठिका स्मरण करके, समाधि-मरण धारण करके स्वर्गको गये ।]

[EC, VIII, Sorab tl, n° 127]

२८७

चल्ल (ल्य)—कन्नड

[शक १०४९=११२५ ई०]

(जै० शि० सं०, प्र० भा०)

२८८

सावनूर—कन्नड

[वर्ष-संवत् ११२८ ई० (ल. राइस) ।]

[सावनूरमें, मारि-कट्टेके दक्षिणमें पड़े हुए एक पाषाणपर

भद्रं भूयाज्जिनेन्द्राणां शासनायाधनाशिने ।

कुन्तीर्थ-ध्वान्त-संघात-प्रभिन-धन-भानवे ॥

श्रीमत-परम गम्भीर-स्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिन-शासनम् ॥

स्वस्ति समस्त-भुवनाश्रय श्री-पृथ्वी-ग्रहम-महाराजाधिराज-परमेश्वर-
परमभद्रारक सत्याश्रय-कुळ-तिळक चाळुक्याभरण श्रीमत्-त्रिभुवनमह-
पेम्माडि-देवर विजय-राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धि-प्रवर्द्धमानमा-चन्द्रार्क-ना-
म्बरं सल्लत्तमिरे तत्पादपद्मोपजीवि ॥

वृत्त ॥ वनधि-व्याप्तावनी-चक्रदोळति-सुभट विक्रमायत्त-चित्तम् ।
मुनिभि माराम्पनाव त्रिपुर-विजयिगं शूद्रकङ्ग सुपर्णी- ।
तनयङ्ग फल्गुणङ्ग दशरथ-तनुजङ्ग सहस्रार्जुनङ्गम् ।
दनुजप्रध्वसिग कैरव-नृप-रिपुग पाण्ड्य-भूपालकङ्गम् ॥
भरदिन्दङ्ग-कलिङ्ग-वङ्ग-मगधं नेपाल-पाञ्चाल-गुर्- ।
जर-गौळ-द्रविळान्ध्र-माळव-तुरुङ्गा.....सौराष्ट्र-वद्- ।
द्वर-काश्मीर.....मरोत्- ।
करम वेङ्गोलुव भयङ्ग.....ण पाण्ड्य-भूपालकम् ॥

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वरं काञ्ची-पुर-वरा-
धीश्वरं यदुवशाम्बर-शुमणि सु-भट-चूडामणि निज-कुळ-कमळ-मार्त्तण्डं
परिच्छेदि-गण्ड राजिग-चोळ-मनो-भङ्ग श्रीमत्-त्रिभुवनमह-देव-पादाब्ज-
मृङ्गं नामादि-प्रशस्ति-सहित.....भुवन.....दक्षिण-भुजा-दण्डने-
निसि ॥

वृत्त ॥ सततं धर्मिये धर्मजंळ- ।
चित्तने हुं कमळोद्भव पर-हित-व्यापार.....भू-तळ- ।
स्तुत-विधाधर.....सत्य-सङ्- ।
गतने भास्कर-सूनु विक्र.....नं श्री-सूर्य-दण्डाधिपम् ॥
प्रभु-मन्त्रोत्साह-शक्ति-त्रय-गुण-भरितं मान-सन्मान-दान- ।
.....नाराधकं नित्य-लक्ष्मी- ।

प्रसु-शौचाचार-सार.....वळ-विळसत्-पाण्ड्य..... ।

.....सूर्य-दण्डाधिनाथम् ॥

.....अनवरत-विनुत-सुर-नर ...घटित-पद-कमल-युगल श्रीमदीश्वर-
पादाराधकं विरोधि-निकुरुम्ब.....गण्ड पाण्ड्य-मण्डलिकसभा-
 मण्डन प्रचण्ड-दण्डनाथ.....विराजमान सतत-स.....नाभिमान.....
मन्त्रोत्साह-शक्ति-त्रय-गुण-गण.....त नियोगयौगन्धर निखिल-धर्म-
 धारण.....पाळ-मस्तक-खण्डन-प्रचण्ड-दोर्-दण्ड पाण्ड्य-मण्डलिक-
 दक्षिण.....गर्भपर्वताखण्डनि ऊढ-प्रौढ-नितम्बिनी-निकुरुम्ब-
 दिव्य.....श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल परिच्छेदि-गण्ड पाण्ड्य-मण्डलिक
 शरणागतवज्र-पञ्जर । मृदु-मधुर..... दार-हित ' सतत
 दण्डनाथ-कुळ-कमळिनी-विकासन-सहस्रकिरण । वन्दि-जन-भरण.....
तन्नि सूर्य-दण्डाधिनाथम् ॥

कं ॥ आळापदिन्दे पाण्ड्य-नृ- ।

पाळङ्गेरगद विरोधि-नृप ।

....सि पद-नतरं प्रति- ।

पाळिसिद सु-भट.....दण्डाधीशम् ॥

.....जिन-स्तवन.....सम्पूपवित्रोत्तमाङ्ग.....दरदि मुक्त
प्रिनुरुतर-वज्र.....करतळ-रुचियिन्दोपुत.....नर्थदि भास्वर-कान्ता-
 रत्नमे ॥

कं ॥ मण्डलिय.....दडेकेषेयेलु.....डगलेनरे

..... ॥

वृ ॥ दोरे मरु देवी.....ताम् ।

सरि नुत-लक्ष्मि तत्-सदृशमा-प्रियकारिणि देवियेन्दोडी-

धरेय.....कालियकनोळ् ।

वर-गुण-वाद्दियोळ् मुनि-जन-प्रिय दान-विनोद-चित्तेयोळ् ॥

पडेदर्थ कळ्ळरिं दायिगरिमळिपरिं भूपरिं किच्चिनिन्दम् ।

किडुगं तानन्तदेम् आश्वतमेनि....शाश्वतं मर्षेनेन्दा- ।

गडे पूर्ण्ड पूर्ण-चन्द्रानने जिनपति-सद्-गोहमं सेम्बनूरोळ् ।

कडु-रथ्य तानेनल् माडिसिदळधिक-सद्-भक्तिरिं कालियकम् ॥

स्वस्ति समस्तवन्तुविस्तार-गोचरजगान-जिनेश्वर-चरण-सर-

सिरुहमधुकरोपमान-कुटिल-कुन्तळ-कळापे मृदु-मिधुर-सतत-सत्य-वचना-

लापे । शृङ्गार विरचित.....जन्मभूत.....मान-सूर्य्य-दण्डाधिनाय-

विशाल-वक्षस्-स्थळस्थित-लक्ष्मी.....ने सम्मान-दाने तार-हार-हर-

हासा.....शशि-विशद-कीर्त्तिविराजित-प्रवर्द्धमान-गुणवति पद्मावती-देवी-

लब्ध-वर-प्रसादे जिन-पूजा-विनोदे धत्रळ-विशाल-कुमुद-नेत्रे गोत्र-पवित्रे

निशंकादि-गुण-मणि-गण-विराजिते सम्यक्व-रत्नाकरे पञ्चाणुव्रत-गुणाकरे

सकळ-विनेय-जन-चिन्तामणि वनिता-निकर-चूडामणि नामादि-प्रशस्ति-

सहितेयप्प श्री-सूर्य्य-दण्डनायकन पिरिय-दण्डनायकित्ति कालियकम् ॥

वृ ॥ जिन-धर्म प्राणि.....र्म तनगट्ट कुल-धर्म जिन-स्वामि देव्यम् ।

जनकं मिक्कायत्तवर्म जननि तनगे जक्कवे भव्यक्केन्दुम् ।

तनगात्तु तन्न त.....गुणि कालि-देव लसत्- शौर्य्य-धैर्य्य ।

तनगीगं सूर्य्य-दण्डाधिपनेने तळेदळ् कीर्त्तियं कालियकम् ॥

सूर्य्य-चमूपन तम्मम् ।

धैर्य्य-महा-मेरु वैरि-जन-लय ..वत्-।

चौर्य्य स्वामि-प्रिय-कर-।

कार्य्य दण्डाधिनाथनादित्याख्यम् ॥

स्वस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-सामन्ताधिपति महाप्रचण्ड-
दण्डनायक चालुक्य-विक्रमादित्य-देव-सभानर्घ्य-वस्तुनायक प्रभु-
मन्त्रोत्साह-शक्ति-गुण-मणि-गणालङ्कृत-शरीर । भय-लोभ.....त्रिभुवन-
मल्ल-पेर्माडि-देवदक्षिण-भुजा-दण्ड रिपु-काळ-दण्ड । प्रसिद्ध-सेनवर-
दण्डनाथ-प्रिय-पुत्र चारु-चौरत्र । सतत-धार्मिक-धर्मनन्दन । स्वामि-
प्रिय-मरुनन्दन । हर-चरण-कमल.....सळ-सततानत-मधुकर । सकळ-
गुणाकर । समप्र-वैरि-कुळ-कुधर-कुळिश-दण्ड । समर-प्रचण्ड । दुर्द्धर-
दुर्विनीत-दण्डनाथ-वश-वन-कुठार । सङ्ग्राम-धीर.....आयदा-चार्य
मन्दर-धैर्य आन्धी-नीरन्ध्र-कुच-कळश-दर्पण वन्दि-सन्तर्पण कुन्तली-
कुन्तळ-सुवर्ण-कुसुमाभरण अनिन्दिताचरण पुरुप्रार्थ-स्वार्थीकृत-जीमूत-
वाहन मान-विज्रसद्धन सतत-दान-सन्तर्पित-दीनानाय-यूय नामादि-
प्रशस्ति-सहितं श्रीमदादित्य-दण्डाधिनाथम् ॥

प्रभु-मन्त्रोत्साह-शक्ति-त्रय-गुण-गणदोळ् सन्ततैश्वर्यदोळ् सू-
क्त-भवोद्यद्-भक्तियोळ् सद्-विनय-नय-सदाचारदोळ् चित्तभूसन्-
निभ-भद्राकारदोळ् तद्-वितरण-गुणदोळ् धार्मिक-स्वान्तदोळ् सत्-
प्रभवर्षेळिन्नरारेम्बिनमेसेदपनादित्य-दण्डाधिनाथम् ॥

श्रीमद्-द्रविळ-संघेऽस्मिन् नन्दि-संघेऽस्त्यरुङ्गळः ।

अन्वयो भाति योऽशेष-शास्त्र-त्रासि-पारगैः ॥

अवट्ट-त्तटमटति झटिति स्फुट-पट्ट-त्राचाट-धूर्जटेरपि जिह्वा ।

वादिनि समन्तभद्रे स्थितवति तत्र सदसि भूप कास्थान्येपाम् ॥

इन्तेनिसिद् समन्तभद्रस्वामिगळ् सन्तानदोळु ॥

एकत्र गुणिनस्सर्वे वादिराज त्वमेकतः ।

तस्यैव गौरवं तस्य तुळायामुन्नतिः कथम् ॥

अवर शिष्यरु ॥

इन्दोश्च कान्तमति-विस्तृतमम्बराच्च

भूमेश्च भूरि जळधेश्च गभीरमास्ते ।

मेरोश्च तुङ्गमजितेश यशस्तवोर्व्याम्

मत्तेभ-विम्बमिव मानव-तारकेऽद्य ॥

इन्तेनिसिदजितसेन-भट्टारकरप्र-शिष्यरु ॥

घन-वद्ध-क्रोध-धात्रीधर-कुळ-कुळिशं मान-माद्यद्-गजास्फा-

ळन-भद्रेभारि माया-गहन दहन-दावानळं संस्फुरल्लो- ।

भ-नितान्त-ध्वान्त-विध्वसन-खर-किरण श्राव्य-काव्य-प्रियं भ-

व्य-निकायाम्मोधि-संवर्द्धन-हिमकरणं मल्लिपेण-व्रतीन्द्रम् ॥

एने नेगळ्द मल्लिपेण-मलधारि-देवर शिष्यरु ॥

आळापं वेड नैव्यायिक निज-मतम नच्चदिर् रसाख्य माण् वा- ।

चाळत्वं सल्ल मीमासक तोडरदेले वौद्ध पो पोगु वादि- ।

व्याळेभोत्तुग-कुम्भ-स्थळ विदळन-कण्ठीरव वन्दपं श्री- ।

पाल-त्रैविद्य-देवं जिन-समय-सुधाम्मोधि-सम्पूर्णचन्द्रम् ॥

स्वस्ति श्रीमच्छालुक्य-विक्रम-कालद् ५३ य कीलक-संवत्सर-
दुत्तरायण-संक्रमणदन्दु श्रीमत्-सेम्बनूर स्तानाचार्य्य शान्तिशयन-
पण्डितर कथ्यल्ल श्रीमत्-पिरिय-दण्डनायकिति काळिकव्वेगल्लु धारा-
पूर्व्वक माडिसि कोण्डु पार्श्व-देवर कूटक्कं देवर वि...पूजारिय वियक्क
हलकइद केळ्गे विट्ट गदे कम्म ४५० आ-केरेय हड्डुवण-कोडियोळगे
वेळ्दले मत्त १ इन्ती-धम्ममना रोर्व्वरल्लिय स्थानाचार्य्यरु देवगुत्तरं...
निर्व्वरु वेस-वक्कळुं तप्पदे प्रतिपालिसुवरु मत्तं स्थानि...केरेय केळ्गण

गर्दियु अदर वळसि वेद्लेयुम्.....मं प्रतिपा (शेष पदे जानेके योग्य नहीं है) ।

[EC, XI, Davangere tl, n° 90]

[जिनशासनकी प्रशंसा । स्वस्ति । जव, (उन्हीं चालुक्य उपाधियों सहित), त्रिभुवनमल्ल-पेम्माळि-देवका विजयी राज्य प्रवर्द्धमान था तब तत्पादपद्मोपजीवी राजा पाण्ड्य था । पृथ्वीपर उसका सामना करनेवाला कोई भी न था । उसने शिव (त्रिपुर), शूद्रक, गरुड, अर्जुन (फाल्गुन), राम, सहस्रार्जुन, कृष्ण, भीम, इन सबको जीता था ।

उसका दण्डाधिप सूर्य यादव-वंशका सूर्य और राजिग-चोळके प्रयत्नोंका विफल करनेवाला था । उसकी पत्नी कालियकै थी । जो धन चोरों, सगे-सम्बन्धियों, लोभियों, राजाओं, या अप्रियसे नष्ट किया जा सकता है, उसकी प्राप्तियों क्या स्थिरता है, इसलिए उसने उसकी स्थिरताके लिये सेम्बनूरमे जिनपतिकका एक उत्तम मन्दिर बनवाया । उसकी प्रशंसा । कालियकैके पिता भास्वर्मा, माँ जङ्गवे,.....कलि-देव थे ।

सूर्य-चमूपाका छोटा भाई आदित्य-दण्डाधिनाथ था । उसकी प्रशंसा । द्रविण-संघके नन्दि-संघमे अरुळान्यय चमकता है । उसमें समन्तभद्र, वादिराज, उनके शिष्य अजितेश (अजितसेन-भट्टारक) उनके ज्येष्ठ शिष्य मल्लिषेण-मलधारी, उनके शिष्य श्रीपाल-त्रैविद्य-देव हुए । प्रत्येकका एक-एक श्लोकमें गुणवर्णन ।

(उक्त मितिको), सेम्बनूरके मन्दिर-पुरोहित शान्तीशयन-पण्डितके हाथोंसे, ज्येष्ठ दण्डनायकित कालियङ्गवेने जलधारापूर्वक पार्श्वदेव और उनकी पूजा तथा पुजारीकी आजीविकाके लिये (उक्त) भूमिदान किया । कल्याणकामना और शाप]

२८९-९।

श्रवणबेलगोला—संस्कृत तथा कन्नड

[शक १०५०=११२९ ई० (कीलहॉर्न)]

(जै० शि० सं०, प्र० भा०

२९१ ..

ऊर्द्धि—कन्नड

[विक्रम वर्ष कीलक ११२५ ई० (ल. राइस) ।]

[ऊर्द्धिमें चौथे पापाणपर]

स्वस्ति श्रीमद्-विक्रम वर्षद कीलक-संवत्सरद माग (घ)-शुद्ध
 १३ श्रीमन्महामण्डलेश्वरं एकलरस-देवरुद्धरेथोक् सुख-सकथा-विनो-
 ददिं राज्यं गेद्युत्तिरे ॥

परम-जिनेश्वर तनगधीश्वरनुद्धलसच्चरित्र... ।

गुरु हरिण[न्दि]देव-मुनिपोत्तमनगद दण्डनायकम् ।

वर-गुणि-त्रोप्पणं जनकनुन्नत-शीलद नागियक्क मा-।

तरेयेनलेम् कृतात्थनो धरित्रिगे सिंगण-दण्डनायकम् ॥

गुणद कणि जैन-चूडा-।

मणि वैरि-त्रलके समर-मुखदोळ सुभटा-।

प्रणि जिन-पदङ्गळ सिङ्ग-।

गण-दण्डाधिपति नेनेदु सद्-गति-वेत्तम् ॥

[स्वस्ति । (उक्त मितिको), जिस समय महा-मण्डलेश्वर एकलरस-देव, शान्ति और बुद्धिमत्तासे राज्य करते हुए उद्धरेमें विराजमान थे उस समय सिंगण दण्डनायक था । वह बड़ा भाग्यशाली था, क्योंकि उसके परम-जिनेश्वर अधीश्वर (इष्ट देव) थे, हरिनन्दि-देव-मुनि उसके गुरु, महान् दण्डनायक घोप्पण उसके पिता, और नागियक्क उसकी माता थी । यह दण्डनायक अपने समयका जैन-चूडामणि था, समरमे सामना करनेवाले सुभटोंमें अग्रणी था,—जिनपदोंका ध्यान करते हुए उसको सद्गति मिली थी ।]

२९२

हनुशीकटिका (जिला बेलगाँव)—कन्नड़

[शक १०५२=११३० ई० (झीट)]

[१] खास्ति श्रीमद्-भूलोकमल्लदेवर वर्ष ६ नेय सावा
(धारण संव-

[२] त्सरद फाल्गुन शु ५ आटिवारदन्दु श्रीमन्महामं-

[३] डलेश्वरं मारसिंहदेवरसरु अग्रहारं कोडन-पूर्व-

[४] दवल्लिय माणिक्यदेवर वसदिय सम्बन्धियेकसा-

[५] लेय-पार्श्वनाथदेवर विविधपूजाविधानके विट्ट

[६] गदेय सीमेय गुड्डे [॥] मङ्गलश्री [॥]

[मंगल हो । रविवार, साधारण 'संवत्सर' जो कि श्रीमान् भूलोकमल्ल-
देवका छठा साल था, फाल्गुन शुक्ल पञ्चमीको,—महामण्डलेश्वर मार-
सिंहदेवरसने कोडनपूर्वदवल्लि (गाँव) के माणिक्यदेव (देवता) की
वसदि (मन्दिर) के एकसालेय-पार्श्वनाथदेव (भगवन्त) की अनेकविध
रीतियोंकी पूर्तिके लिये धान्य (चावल) के बहुतसे क्षेत्र दिये ।]

[३० ए०, १०, पृ० १३१-१३२, न० ९८]

२९३

हन्तूरु—संस्कृत तथा कन्नड़

[शक १०५२=११३० ई०]

[हन्तूरु (गोणी वीडु परगना) में, ध्वस्त जैन-वस्तिके पाषाणपर]

श्रीमत्परमगभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासन जिनशासनम् ॥

१ भूलोकमल्लका दूसरा नाम सोमेश्वर तृतीय भी है । यह राजा पश्चिमी
चालुक्य वंशका है ।

जयति सकळविधादेवतारत्नपीठम्
 हृदयमनुपलेपं यस्य दीर्घं स देवः ।
 जयति तदनु शाखं तस्य यत् सव्व-मिष्या- ।
 समय-तिमिर-घाति ज्योतिरेकं नराणाम् ॥

खस्ति समधिगत-पञ्च-महा-शब्द महा-मण्डलेश्वरं द्वारावतीपुर-
 वराधीश्वरं यदु-कुळ-कळग-कळिन-नृप-धर्म-हर्म्यमूळ-स्तम्भन् । अप्र-
 तिहत-प्रताप-विदित-विजयारम्भ । शशकपुर-निवास-त्रासन्तिका-देवी-
 लब्ध-वर-प्रसाद । श्रीमन्मुकुन्द-पादारविन्द-वन्दन-विनोद-नित्यादि-नामा-
 वळीसमन्वितरूप श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल तळकाडु-गोण्ड भुजवळ वीर-गङ्ग-
 विष्णुवर्द्धन-होयसळ-देवरू मूडळ नंगलियघट तेङ्गळ कोङ्गु चेरमनमले
 हडुवळ वारकनूर घट्ट बडगळ साविमलेयिनोळगाट भूमिय भुज-वळाव-
 ष्टम्भदिं परिपाळिसुत्तुं दौरसमुद्रद नेलेवीडिनोळु सुख-संकथा-विनोददिं
 राज्यं गेय्युत्तमिरे ।

वृत्तं ॥ प्रकटाटोपद चक्रगोट्टदोडेयं सोमेश्वरं वल्के त- ।

न कराळासिय-कूर्पनेम्मेरदनो गौडान्धकार-प्रचरण- ।

डकरं माळव-मेघ-जाळ-पवनं चोळोप्रकाळानळम् ।

त्रि-कळिङ्ग-त्रिपुर-त्रिणेत्रनदटं श्री-विष्णु-भूपालकम् ॥

इन्तेनिसि नेगर्द श्री-विष्णुवर्द्धन-अग्र-तनूज निज-वशाम्बर-धमणि ।
 वन्दि-जन-चिन्तामणि । सत्य-शौचाचार-सम्पन्न । बुध-जन-मनःप्रस-
 न्नम् । आळिम्मुन्निरिव सौर्यम मेरेव । श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल कुमार-
 बल्लाळ-देवननवरत-मनोरथावाप्तिरियिं राज्यं गेय्युत्तमिरे ।

क ॥ कळ्के बयल्लगेक्क तुळक् । एळ्येोळ् माराम्परिल्लदा-दिगधि-परम् ।

शेळट्टु नेलक्किळ्ळ कौ- । वळिपुट्टु रिपु-नृप-कुमार-भैरवन मन ॥-

आवङ्गमाव-धनमुम- । नीव महा-दानि युद्ध-विजयमना-मा- ।

देवङ्गमीयददटर । देवं ब्रह्माळ-देवनप्रतिम-ब्रळ ॥

अन्तेनिसि नेगर्द श्रीमत्कुमार-ब्रह्माळ-देवनग्रानुजे हरियव्वरसिये-
न्तप्पळेन्दडे सरस्वतियेन्ते सत्-कळान्विते । सीतियन्ते विनीते । सुसीमा-
देवियन्ते सुशीले रुग्मिणियन्ते गुणाप्रणि । अनल्प-कल्प-शाखानीकद-
न्तनून-दान-जनित-जन-मनःपुळकेयुं । भगवदर्हत्-परमेश्वर-चरण-नख-म-
यूख-लेखा-विळसित-ललाट-पळकेयुम् । चातुर्वर्ण्य-वर्णिणतागण्य-पुण्य-
जन-शिखा-मणियुम् । सम्यक्त्व-चूडामणियुमेनिसि ।

वृत्त ॥ धरेयोळनन्त-दिव्य-यति-सन्ततिगन्नमनाद-मीतियिम् ।

वरे पळरङ्गलेम्बभय-वाक्यमनातुररागि वेर्पवर्गम् ।

इरदे शरीर-रक्षणमनोदल्ल शास्त्रमनीव पेम्पिनिम् ।

हरियवे ताळ्दिदळ् पर-हितोक्त-चतुर्विध-दान-शक्तियम् ॥

पर-ब्रळ-दानव-संहा- । रारुण जळ-लित्त-खर्गानुन्नततेजम् ।

वर-विवुध-विभव-विभवं । हरि- कान्ता- कान्तनेसदपं विमुसिग ॥

हरि-कान्तेयुमी-कान्तेय । दोरेगे वरळ् कोरळेम्ब निम्भदद गुणोत्-

करमनोळकोण्डु हरियवे । पर-हितदिं धरेयोळैदे जसम तळेदळ् ॥

अन्तेनिसि नेगर्द श्रीमत्तु-हरियल-देवियर् गुरुगळेन्तप्परेन्दडे
श्रीमूलसंघद कोण्डकुन्दान्वयद देसिग-गणद पुस्तक-गच्छद श्री माध-
णन्दि-सिद्धान्त-देवर शिष्यरु ।

वृ ॥ मोहान्धकार-रिपु-शाक्य-नवोत्पळारिश् ।

चार्वाक-चन्द्र-किरण-प्रतिनाश-हेतुम् ।

सद्-भव्य-चारिज-महोत्सव तेज-राजिर् ।

उज्जम्भितो जगति गण्डविमुक्त-भानुः ॥

अन्तु जगद्विख्यातरप्य श्रीमत्-गण्डविमुक्त-सिद्धान्त-देवर गुड्डि हरियब्बरसियरु कोडङ्गि-नाड मलेवडिय हन्तियूरलनेकरत्त-खचित-रुचिर-मणि-कंळश-कळित कूट-कोटि-घटितमप्य उत्तुंगचैल्यालयमं माडिसि खण्ड-स्फुटित-जीर्णोद्धरणक नित्य-पूजेग ऋषियरज्जियर्कळाहार-दानकं सित-परिहारक श्रीमत्-त्रिभुवनमल्ल-होयसळ-देवर कय्यळु सर्व्व-वाधा परिहारवागि गुत्तिय चिण्णन दीवर वम्मनन्तिव्वर्य्यदु हणविन मण्णुम विडिसिकोण्डु शक-वर्षद १०५२ नेय सौम्य-संवत्सर दुत्तरायणसंक्रान्तियन्दु तम्म गुरुगळ्प गण्डविमुक्त-सिद्धान्त-देवर काल कच्चिं धारा-पूर्व्वकं माडि कोट्टरु ॥ (हमेशाके अन्तिम श्लोक)

श्रीमन्-मल्लिनाथं विरुद लेखक-मदन-म्महेश्वरं वरेटम् । नागरादि-नागरिक-द्रविळ-समुद्धरणप्य माणिमोजन मग विरुदरूवारि-वेश्या-भुजङ्ग बलकोजं कण्डरिसिदं मङ्गलम् ॥

[जिनशासनकी प्रशंसा । (अपने पदों सहित) विष्णुवर्द्धन-होयसळ-देव अपने निवासस्थान दौरसमुद्रमे विराजमान थे । राजा विष्णुने चक्रगोट्टके स्वामी सोमेश्वरको अपनी तलवारकी धारसे ढराया । वह गौड, मालव, चोळ, त्रिपुट, त्रि-कलिंग सबके लिये भयावह था । जब विष्णुवर्द्धनका ज्येष्ठ पुत्र श्रीमत् त्रिभुवनमल्ल कुमार बल्लालदेव राज्य कर रहा था:- (उसकी शूरवीरता और औदार्यकी प्रशंसा करते हुए उसकी स्तुति) । कुमार बल्लाल-देवकी बहिर्नेमि सबसे बडी हरियब्बरसि थी । उसका वर्णन.—(जैन रूपमे उसकी भक्तिका प्रदर्शन, उसकी प्रशंसा) । उसका पति सिंग था, (उसकी प्रशंसा) ।

उस हरियब्ब-देवीके गुरु श्री-मूलसंव, कुन्दकुन्दान्वय, देसिग-नाग तथा पुस्तक-गच्छके माधनन्दि-सिद्धान्तदेवके शिष्य गण्डविमुक्त-सिद्धान्तदेव थे; (उनकी प्रशंसा)

जगद्विख्यात गण्डविमुक्त-सिद्धान्त देवकी गृहस्थ-शिष्या हरियब्बरसिने, कोडङ्गि-नाडके मलेवडिके हन्तियूरमे, गोपुरों या शिखरोंसे—जिनमें रत्नोंसे

जड़ित चोटियाँ थीं—समन्वित एक विशाल चैत्यालय, तथा मन्दिरकी मरम्मत करने, पूजाका प्रबन्ध करने, ऋषि और वृद्ध स्त्रियोंको आहारदान देने, तथा शीतसे रक्षा करनेके लिये—त्रिभुवनमल्ल होयपल-देवके हाथोंसे तमाम जुद्धियों व करोसे मुक्त भूमि गुप्तिके चित्र और वम्म मद्युपसे ५ हणके किरायेसे लेकर (उक्त मितिको), अपने गुरु गण्डविमुक्त-सिद्धान्त-देवके पैरोंका प्रक्षालन करके उन्हें दी । (हमेशाके अन्तिम श्लोक)

मल्लिनाथने इसे लिखा और माणिमोजके पुत्र वलकोजने उत्कीर्ण किया ।]

[EC, VI, Mudgere tl, n° 22]

२९४

कम्बदहल्लि—कन्नड़-भम

[विना काल-निर्देशका, पर मम्भवत लगभग ११३० ई०]

[कम्बदहल्लिमें, जैन बस्तिके सामनेके पायाणपर]

स्वस्ति यम-नियम-स्वाध्याय-ध्यान-धारण-मौनानुष्ठान-जप-समाधि-
शील-गुण-सम्पन्नरूप श्री-मूलसंघद कोण्डकुन्दान्वयद देशिय-
गणद पुस्तक-गच्छद श्री-प्रभाचन्द्रसैद्धान्तिकर त्रिष्यितियरूप ...
.....कय रुकमव्वे जकवे कन्तियग्गे तव ...निसिधिय माडिसि
:.....स्वर्गस्थर.....

[(सर्वसाधुगुणसम्पन्न) प्रभाचन्द्र-सैद्धान्तिककी शिष्याएँ “ रुकमव्वे और जकव्वे-कान्तिपरकी स्मृतिसमें स्मारक बनवाया ।]

“ “

[EC, IV, Nagamangala tl, n° 21]

२९५

तगदुरा—कन्नड़

[विना कालनिर्देशका]

(जै० शि० सं०, प्र० भा०)

२९६

श्रवणबेलोला—कन्नड

[विना कालनिर्देशका]

(जै० शि० मं०, प्र० भा०)

२९७

आवहवाडी—कन्नड-भद्र

[शक सं० १०५३ (?) = ११३१ ई०]

[आवहवाडी (कोप्प तालुका) में, सीमाकी दीवालके पास]

श्रीमत्परमगम्भीरस्याद्वादामौघलाञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

खस्ति समधिगतपञ्चमहाशब्द महामण्डलेश्वरं द्वारावतीपुर-वरा-
 चीश्वरं दसकाष्ठनिवास वासन्तिका-देवि-लब्ध-वर-प्रसाद दशदिशं
 तिलक किं.....कुन्दपादातमन्द म.....करन्द नन्द.....रपा-
 लमाथि.....क्यं अरि-भीमज रिपु.....ञ्जर.....लु गण्डं विश्व-विद्या-
 विचार.....दला.....मदि समस्त.....गवाडि
 नोगम्भवाडि गोण्ड.....वीरगङ्ग.....विव.....यिसळ विष्णुवर्द्धन
दुष्टनिग्रहगिष्ट-प्र.....सु.....दोळे.....के जवर
विष्णु.....तारम्बरदोळु.....रण.....लु महिनाथ ॥ आतन
 समस्तभुवनख्याति.....गोत्र.....ळर सूत्र.....
 मारसमन्वित.....निरु.....गोत्रचूडा..... ॥ तत्पा.....
परम-ज.....धर्म.....भीमं ॥रङ्ग.....माचिकेय
 धर्म.....य वं.....पाद.....
न्द-जन.....नरुळ.....गरगं ॥यना.....जात
गेने पुण्य.....ळिगळु श्री तरव.....प्रातरु सि.....साधरागि तद्

स...न...श्री मूलसंघ देशिय-गणद पुस्तक-गच्छद सि...द्वान्त-
चक्रवर्ति दर्मण...तार-देवर सधर्मरूप श्री...द्र-सिद्धान्त-देवर शि-
ष्यरु ॥ रामं...जदि-पुर-गत धूर्त-कषायर् अतुल-रत्नत्रय-स...
तदोलु श्रीमन्नयकीर्ति-भानुकीर्ति-मुनीन्द्र ॥ सतिथ ...कधोक्ष-वा
...हतिथ् अदनोन्दु हृदयदळिप् सिगळ...लेम्बुदे नयकीर्ति-त्रतिना-
थनोळ् अतनु...दावानळनोळु ॥ विनुत्...रुडकादान्वित विमळ-
वियत्-तिग्म-रुग्-मण्डलं व्रज...मेनित् अनित् आतलरु...नकरं
प्रस्फुरद्वर्ष...डप्पन कोट्यज् ज...प्रहरणन् उपमानित-पुण्य...चा
...णिक...ति पतिने विश्वविद्यानिदानम् ॥ अरित-त्रातमुमतिशान्ततेयु
...र-करनुव त्रात-किरणनुमूर्जि ...दोळेसेवन्तिरेसगु श्रुत-सरसिज-
भानु-भा ...कीर्ति-त्रतियोळु ॥ आ-मुनि-मुष्यस्य यम ...ड तन स
गरुगळे...रेया...हियाद...ळ गुण-शीळ-त्रत-निधि मल्लिनाथनोळु
मनुज...सि पोगर्त्ते नेगर्त्ते...पेर्गडे मल्लिनाथ ...सदियं माडिसि
शक-वर्ष १ ...३ नेय साधारण-संवत्सरद फाल्गुण बहुळ ३
सोमवारदन्दु कीर्तिभट्टार काल कर्चि...पूजेगं खण्ड-स्फुटित-जी-
र्णोद्धारक देवर केरैय केळगण ...यळ हनेरडु सलिगे गद्देयु वसदि
...मह...रणज...ल्लघट्टमु विडिसिद नाम-
हरन प...क्षदोलु तदनुजम् ॥ वस...वाग्-वि...
...णु-भूपनें वसु-मर्मनिरुतमा-
केयन् अहरयन...लिधा...श सिम...दिन पेम्पु
...सि श्री-पुल्लिन वसदि...गनिद त्रहि...गन् उद्व...
...सत्-सर...तरसु... समस्त-गुण...
...श्री चळुन विमळ...सवाहिर-

व.....चक्रवर्तिगळ् एनिसि.....
हा.....सर्व.....हेगड.....पूजेयगळु
तिरे यदा रा.....
सादी.....देन्दु.....द माचण

[जब कि (अपनी विशाल पदवियोंके साथ) विष्णुवर्द्धन इस जगत्-पर राज्य कर रहे थे:—मूलसंघ, देशियगण और पुस्तकगच्छके.....द्र-सिद्धान्तदेवके शिष्य मुनि नयकीर्त्ति और भानुकीर्त्तिके भक्त पेर्गडे मल्लिनाथने जैन-वसदिका निर्माण किया और इसे धनसे पुष्ट किया ।]

[EC, III, Mandya tl, n° 50]

२९८

श्रवणवेलगोला—संस्कृत तथा कन्नड

[शक १०५३=११३१ ई०]

(जै० शि० सं०, प्र० भा०)

२९९

पुरले—संस्कृत तथा कन्नड

[शक १०५४, वर्ष नन्दन=११३२ (ठीक १११२) ई०]

[पुरले (विदरे परगना) में, गाँवके दक्षिण-पश्चिम वीर-सोमेश्वर मन्दिरके सामने पडे हुए एक पाषाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वादामोघलाञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिन-शासनम् ॥

वस्ति समस्तभुवनाश्रयं श्रीपृथ्वीवल्लभं महाराजाधिराज परमश्वर परम-भट्टारकं सस्याश्रय-कुल-तिलकं चालुक्याभरणं श्री-त्रिभुवन-मल्लदेवर विजय-राज्यमुत्तरोत्तराभिवृद्धिप्रवर्द्धमानमाचन्द्रार्कितारम्बरं सल्लु-त्तमिरे ।

एनगेन्दा-विक्रमाकं गड निगळमनिक्किडनो वोगे कीना- ।
 शंनवोळ्ळेतन्दु कार्थिय किळदे तल्लेयना-वीरनेम् माणवने-नोय्- ।
 वेनेनुत्त मीतिय-पट्टदने कनसु-गण्डुम्मळं-गोण्डु चोधम् ।
 ननसेन्देच्चट्टिरुत्...तत्रेय तल्लेयनति-भ्रान्तनन्दिन्दु नोळकुम् ॥
 तत्पादपद्मोपजीवि ॥ श्रीमदेरेयङ्ग-होय्सळनळियं हेम्माडियरसन
 कीर्त्ति-विशारदमेन्तेन्दे ।

इवनिन्द कण्डेनेळुं-कडल कडेयनेळुं-कुभृत्-कूटम दिग्- ।
 धव-दन्ति-त्रातमं लोकद पवणनेनुत्तुं यशो-लक्ष्मि... ।
त तन्नोन्दरिविनळवु तन्नार्पु-तत्रेळ्ळो तन्न... ।
 ...विळासं तन्न पेम्पट्टळगमेनिसिदं हेर्म मान्धात-भूपम् ॥
 स्वस्ति श्री-जन्म-गेहं निभृत-निरुपमौर्वानळोदाम-तेजम् ।
 विस्तारोपात्त-भू-मण्डलममळ-यशश्चन्द्र-सम्भूति-धामम् ।
 वस्तु-त्रातोद्भव-स्थानकमतिशय-सत्त्वावलम्बं गमीरम् ।
 प्रस्तुत्य नित्यमम्भोनिधि-निभमेसेगु होय्सळोर्वीश-वशम् ॥
 अदरोळु कौस्तुभटोन्दनर्ध-गुणमं देवेभदुद्दाम-स- ।
 त्वदगुर्वं हिमरश्मियुज्ज्वळ-कळा-सम्पत्तियं पारिजा- ।
 तदुदारत्वद पेम्पनोर्वने नितान्त ताळ्ळि तानल्ले पुट्ट- ।
 टिदनुद्वेजित-वीर-वैरि विनयादित्यावनीपालकम् ॥
 मदवद्भूप-त्रळान्धकार-हरण तेजोधिकं सन्तता- ।
 म्युदयं संहत-विद्विषत्-कुवळय-(य) श्रीकं सुहृच्चक्र-सं- ।
 मद-सम्पादन-हेतु सत्पथगतं पद्मोद्भवोद्भावकम्- ।
 विदितात्थानुग-नामनल्ले विनयादित्यावनीपालकम् ॥
 विनयादित्य-नृपं सज्जनर्गं दुर्जनार्गमात्म-विनयं तेजम् ।

जनियिसे नयम भयमं । विनूतनाब्दोम् विशाल-भूमण्डलमम् ।
 आ-विनयादित्यन वधु । भावोद्भव-मन्न-देवता-सन्निभे सद्- ।
 भाव-गुण-भवनमखिल-क- । ला-विळसिते केळयवरसियेम्बळ् पेसरिं ।
 आ-दम्पतिगे तनूभव- । नादोम् सचिगं सुराधिपतिगं मुजेन्त् ।
 आद जयन्तनन्ते वि- । पाद-विदूरान्तरंगनेरेयङ्ग-नृपम् ॥

वृ ॥ आतं चालुक्य-भूपालकन वलद-भुज-दण्डमुदण्ड-भूप- ।
 ब्रात-प्रोत्तुग-भूमृदू-विदळन-कुळिश वन्दि-सश्यौघ-स्येधम् ।
 श्वेताम्भोजात-देव-द्विरदन-शरदभ्रेन्दु-कुन्दावदात- ।
 घोट-प्रोद्यद्यशश्री-धवळित-भुवन धीरनेकाङ्ग-वीरम् ॥
 मालव-सेनेयं तुळिदु धारेयनोवदे सुदु त्त्विद तच्- ।
 चौळननीब्दु तत्-कटकम कडुपिन्नेरे सूर-गोण्ड दोश- ।
 शाळि कलिङ्गनं सुरिदु भङ्गिसिदात्म-भुज-प्रतापमम् ।
 केळे दिशाधिपं नेगळदनी-तेरदिन् [द्] एरेयङ्ग भूमुजम् ॥
 एरेयनखिलोर्विगेनिसिर्दे- । रेयङ्ग-नृपाळकनङ्गने चेळ्विग्- ।
 एरेवदु शील-गुणदिं । नेरेडेचल-देवियन्तु नोन्तरुमोळरे ॥
 एने नेगळदवरिर्वर्गं तनूभवन्नैगळदरल्ले वळ्ळाळं वि- ।

ष्णु-नृपाळकनुदयादि- । त्यनेम्ब पेसरिन्दमखिल-वसुधा-तळदोळ् ॥

वृ ॥ अवरोल् मध्यमनागियुं धरणियं पूर्वापराम्भोधियेय्- ।
 दुविन कूडे निमिर्चुवोन्दु-निज-त्राहा-विक्रम-क्रीडियुद्- ।
 भवदिन्दुत्तमनादनुत्तम-गुण-त्रातैक-धामं धरा- ।
 धव-चूडामिणे यादवाळज-दिनपं श्री-विष्णु-भूपाळकम् ॥
 एळेगेसेव कौयतूर तत्- । अळवनपुरमन्ते रायरायपुरं वळ्- ।
 पळवलद विष्णु-तेजो- । ज्वळनदे वेन्दबु वलिष्ट-रिपु-दुर्गङ्गम् ॥

कमलाक्षं पुरुषोत्तमं काह्लादनं द्विष्ट-दै- ।
 त्य-मद-ध्वसननन्त-भोग-युतनुर्वी-भार-धौरेयनुत्- ।
 तम-सत्त्वान्वितनुद्ध-यादव-कुळाळकारनेन्दित्तु वि- ।
 ष्णु-महीशं सले ताने विष्णुवेनिय लक्ष्मी-वधू-वह्मम् ॥

क ॥ लक्ष्मी-देवि-खगाधिप- । लक्ष्माङ्गसेदिर्दं विष्णुग् यन्तन्ते वलम् ।
 लक्ष्मा-देवि लसनमृग- । लक्ष्मानने विष्णुगग्र-सतियेने नेगर्दळ् ॥
 अवर्गे मनोजनन्ते सुदती-जन-चित्तमनिष्कौळ्के साल्व- ।
 अवयव-गोमेयिन्दतनुवेम्बभिधानमनानदङ्गना- ।
 निवहमन्.....वीरनेच्चि युद्धदोळ् ।
 तत्रिसुवनादनात्मभवनप्रतिमं नरसिंह-भूसुजम् ॥
 रिपु-सर्पद्-दर्प-दावानळ-वहळ-शिखा-जाळ-काळाम्बुवाहम् ।
 रिपु-भूपोद्दीप्र-दीप-प्रकर-पट्टु [तर]-स्फार-ज(झ)ञ्जा-समीरम् ।
 रिपु-नागानीक-ताक्ष्यं रिपु-नृप-नळिनी-पण्ड-वेतण्ड-रूपम् ।
 रिपु-भूमृद्-भूरे-वज्र रिपु-नृप-मद-मातग-सिंहं नृसिंहम् ॥
 स्वस्ति श्री-यदु-वंश-मण्डन-मणिः क्षोणीग-चूडामणिस् ।
 तेजःपुञ्ज-विनिर्जिताम्बर-मणिसद्वन्ध-चूडामणिः ।
 यस्योद्यत्-सु-यशस्सुपर्व-सरिता लोकत्रयं शोभते ।
 जीयात् पाद-युगानमन्-नृप-कुळश्री-नारसिंहो नृपः ॥
 श्री-मूलसंघ-विख्याते मेघपापाण-गच्छके ।
 क्राणूर-गण-जिनावासो निर्मितं हेम्मभूमृत. ॥

स्वस्ति समाधिगत-पञ्च-महाशब्द महा-मण्डलेश्वर द्वारावतीपुरवरा-
 धीश्वरं.....दावानळ पाण्ड्य-कुळ-कमळ-वन-वेदण्ड गण्ड-मेरुण्ड
 मण्डलिक-वेण्टेकार परमण्डल-सुरेकार तग्राम-मीम कलि-काल-काम

सकल-वन्दि-वृन्द सन्तर्पण-समर्थ-वितरण-विनोद वासन्तिका-देवि-
 लब्ध-वर-प्रसाद मृगमदामोद यादव कुलाम्बर-द्युमणि मण्डलिक-मकुट-
 चूडामणि कदन-प्रचण्ड मलेपरोळ् गण्ड नामादि-समस्त-प्रशस्ति-सहितं
 श्रीमत् त्रिभुवन-मल्ल तळेकाडु कोडु-नङ्गळि-गङ्गवाडि-नोळ्म्ववाडि-
 बनवसे-हानुङ्गळ-हुलिगेरे-चेंळुवलं-गोण्ड भुज-वळ वीर-गङ्ग प्रताप-
 नारसिंहदेवरु सकळ-मही-मण्डळम दुष्ट-निग्रह-शिष्ट-प्रतिपाळ-
 नदिं सुख-संकथा-विनोददिं दौरसमुद्रद नेळेवीडिनोळु राज्यं गेय्युत्त-
 मिरे । तत्पादपद्मोपजीवि ।

तद्राज्ये बुध-कोटि-सम्पदवन-प्राज्ये प्रधानाग्रणीर् ॥

उन्मीळत्-सुकृताम्बुराशि.....सम्पत्ति-चन्द्रोदयः, ।

श्रीमत्-तिप्पण-भूपतिस्समुदगादुद्धान-धारा-जलैर् ।

द्वात्री सम्प्रतिपद्यते प्रतिदिनं...मा...सस्याश्रया ॥

तस्य श्लाघ्य-गुणोदयस्य धरणी-वन्द्योनुजातस्स्वयम् ।

श्रीमन्नाग-चमूपति.....यत्त यः ।

यत्तेजः-प्रकरैरजायत परं पद्मानुराग-ग्रदैर्- ।

दृष्यद्-त्रैरि-तमो-घटा-विघटनैर्देवोऽग्र.....ग्रामणीः ॥

श्रीमन्नामल-देवि भाति भवतीत्येव बुधैर्य्या स्तुता ।

तद्वंशे गुण-संगमे नर-मणिणिः ।

सा जाता भुवनाभिराम-विभवैर्लार्ण्य-पुण्योदयैर् ।

देवि (सम्प्रति) यन्मुखपङ्कजे विजयते वाणी जगत्पावनी ॥

गङ्गरात्रियोळवनी- । मगळमेनिसिर्द...आ-ल्ली-रत्नम् ।

तुङ्ग-जन..... ।आगिरे कोडुळ् ॥

वचन ॥ (य्) इक्षुवाक- (क्ष्वाकु) वंशावतारमदेन्तेन्दडे ।

सले वृषभ-तीर्थ-काल सु-ललितमेने सकळ-भव्य-चित्तानन्दं ।

कलिकालनिर्जितं श्री- । ललना-लावण्यं-वर्द्धन-क्रीमदिन्दम् ॥
 सोगेयिसुव-काळदोळं की- । तिगे मूल-स्तम्भयेनिपयोध्या-पुर-दोळ् ।
 जगदधिनाथ पुष्टिद- । नगण्यनिश्वाकु-वश-चूडारत्नम् ॥
 धरेगे हरिश्चन्द्र-नृपे- । श्वर नोर्वने कान्तनागि दोर्वळदिन्दम् ।
 विरुदरनदिधिं विद्या- । परिणतिधिं नेरेदु सुखदिनिरे पळ-कालम् ॥
 वृ ॥ आतन पुत्रनिन्दु-दर-हास-निभोज्जळ-कीर्तिं सद्-गुणो- ।
 पेतनुदात्त-वैरि-कुळ-भेदन-कारि कला-प्रवीणनुद्- ।
 धूत-माळं सुरेन्द्र-सदृग भरतं कवि-राज-पूजितम् ।
 ख्यातनतर्क्य-पुण्य-निलयं सु-जनाप्रणि विश्रुतान्वयम् ॥
 ऋजु-शील-युक्तेयेनिसिद । विजय-महादेवि तनगे सतियेने विबुध-
 ब्रज-पूज्यं भरतं भा- । वज-सदृग नेगळे सकळ-धात्री-तळदोळ् ॥
 वचन ॥ आ-विजय-महादेविगे गर्भ-दोहळ नेगळे ।
 वृ ॥ तरळ-तरंग-भङ्गुर-समन्वितेयं ऋ(ङ्ग)ष-चक्रवाक-भा- ।
 सुर-कळ-हंस-प्रुरितेयनुद्ध-लताङ्कित-गात्रेयं मनो- ।
 हर-नव-शैल्य-मान्य-शुभ-गन्ध-समीर-निभास्येयं तलो- ।
 दरि नेरे गङ्गेयं नलिदु मीत्रभिन्गञ्छेयनेन्दे ताळिददळ् ॥
 कळ-हस-याने पलरु । केळदियरोड वागि पूर्ण-गङ्गा-नदियम् ।
 विळसितमं पोक्कु निरा- । कुळदिन्दोळाडि पाडि गाडियनान्तळ् ॥
 अन्तु मनदलम्पु पोम्पुळि-योगे गङ्गा-नदियोळोळाडि निज-गृहके
 वन्दु नव-मासं नेरेदु पुत्रन पडेदातङ्गे ।
 गङ्गा-नदियोळु मिन्दु ल- । ताङ्गि मगं वडेदळप्प कारणदिन्दम् ।
 माङ्गल्य-नाममादुदि- । ळङ्गनेगाधिपतिगे गङ्गदत्ताख्यानम् ॥
 व ॥ आ-गङ्गदत्ताङ्गे भरतेनम्ब मगं पुष्टिदनातङ्गे गङ्गदत्तनेम्बं
 मगं पुष्टिदम् ।

कं ॥ गुण-निधिगे गङ्गदत्त- । गणुगिन पुत्रं विवेक-निधि पुट्टि दया- ।
 प्रणियागि हरिश्चन्द्र- । प्रणुत-नृपेन्द्र धरित्रियोक् शोभिसिदम् ॥
 मत्तमा-नृपोत्तमाङ्ग भरतनेम्भ सुतं पुट्टिदनातङ्गे गङ्गदत्तनेम्भ
 मगनागिन्तु गङ्गान्वय सल्लत्तमिरे ।

कं ॥ हरि-वंश-केतु नेमी- । श्वर-तीर्थ्य वर्त्तिसुत्तमिरे गङ्ग-कुञ्ज-
 वर-भानु पुट्टिदं भा- । सुर-तेजं विष्णुगुप्तनेम्भ नरेन्द्रम् ॥

व ॥ आ-धराधिनाथ साम्राज्य-पदविय कय्कोण्डु अहिच्छत्र-पुर-
 दोळु सुखमिर्दु ।

व ॥ नेमि-तीर्थ्यकर परम-देवर निर्व्वाण-कालदोळैन्द्र-ध्वजमेम्भ
 पूजेयं माडे देवेन्द्रनोसेदु ।

कं ॥ अनुपमदैरावतमं । मानोनुरागदोळे विष्णुगुप्ताङ्गित्तम् ।

जिन-पूजेयिन्दे मुक्तिय- । ननर्घ्यमं पडेगुमेन्दोडुळिदुदु पिरिडे ॥

व ॥ आ-विष्णुगुप्त-महाराजङ्गं पृथ्वीमति-महादेविगं भगदत्तं
 श्रीदत्तनेम्भ तनयरागे ।

व ॥ भगदत्ताङ्गे कलिङ्ग-देशम कुडलातनु कलिङ्ग-देशमनाब्हु
 कलिङ्ग-गङ्गनागि सुखदिनिरे ।

(य्) इत्तल्लदात्त-यशो-निधि । मत्त-द्विपम समस्त-राज्यमुम ।

श्रीदत्त-नृपाङ्गित्तं भू- । पोत्तमनेनिसिर्दं विष्णुगुप्त-नरेन्द्रम् ॥

अन्तु श्रीदत्तनिन्दित्तलानेयुण्डगे सल्लत्तमिरे ।

प्रियवन्धु-वर्मनुदयिसि । नयदिन्दं सकळ-धात्रिय पालिसिदम् ।

भय-लोभ-दुर्लभं ल- । क्षमी-युवति-मुखाब्ज-पण्ड-मण्डित-हासम् ॥

अन्ता-प्रियवन्धु सुखदिं राज्य गेय्युत्तमिरे तत्त-समयदोळु पार्श्व-भट्टार
 कर्गे केवळ्ज्ञानोत्पत्तियागे सौधम्मैन्द्रं वन्दु केवळि-पूजेय माडे प्रिय-

बन्धुवं तां भक्तियि वन्दु पूजेयं माडलातन भक्तिगिन्द्र मेच्चि दिव्यम-
प्यष्टुं तुङुगे-गळं कोडु निम्मन्वयदोळु मिथ्यादृष्टिगळागलोड अदृश्यङ्गळ-
कुमेन्दु पेळुदु विजयपुरकहिच्छत्रमेन्दु पेसरनिडु दिविजेन्द्रं पोपुदित्तळ
गङ्गान्वयं संपूर्ण-चन्द्रनन्ते पेच्चि वर्तिसुत्तमिरे तदन्वयदोळु कम्प-मही-
पतिगे पद्मनाभनेम्न मगं पुष्टि ।

कं ॥ तनगे तनूभवरिल्लदे । मनदोळ् चिन्तिसुतमिर्दु पद्मप्रभना- ।
र्षिन कणि सासन-देवते- । यने पूजिसि दिव्य-मन्त्रदिं साधिसिद
व ॥ अन्तु साधिसि (दि) शाधित-विद्यनागि पुत्ररिर्वरं पडेदु

राम-लक्ष्मणरेन्दु पेसरनिडु ।

वृ ॥ परम-स्नेहदोळिर्वरं नडपि लीला-मन्त्रदिं चन्द्रनन्- ।
तिरे सपूर्ण-कळाङ्गरागि वेळेयल् विद्या-त्रलोद्योगसुर-
र्वरेयोळ् चोधमेनल् सलुत्तमिरे कीर्त्ति-श्री दिशा-भागदोळ् ।
पेरेदाशा-गजमं पळञ्चलेये लक्ष्मी-भारदिन्दोपिदरु ॥

व ॥ अन्तु सुखदिमिर्पुदु मत्तल्लुजेनिय-पुराधिपति-महीपाळना-
तुङुगेगळ वेडियद्विपडे पद्मनाभ कृतान्तनन्ते रौद्र-वेशमं कौकोण्डु ।

क ॥ येमगदनदल्लिकागदु । तमगे तुडळ् योग्यमल्लु सन्तमिरल् वेळ् ।
समर्के वन्दनपडे । निमिपदोळान्तिरिदु वीर-रसम मेरेवेम् ॥

व ॥ अन्तु नुडिदृष्टि मन्नि-वर्ग डोळाळोचिसि तन्न तङ्गेयाळव्वेषु
नात्वतेणवरासरप्प विप्र-सन्तानमं वेरसि कळिपिदडवर्दक्षिणाभिमुखरागि
वरुत्तं राम-लक्ष्मणर्गे दडिग-माधवरेन्दु पेसरनिडु निच्च-वयणदिं
वरुत्तमिरे ।

क ॥ वन्दवर्गळुचित-पदमन- । गुण्डेलेयिं कण्डरमळ-लक्ष्मी-चित्ता- ।
नन्दनमं पेळुरं । मन्दार-नमेरु-पुष्प-गन्धाद्रियुमम् ॥

व ॥ अन्तु गङ्ग-हेरूरं कण्डल्लिय तटाक-तीरदोल्लु वीडं विट्टू चैल्या-
 ल्यमं कण्डु निर्भर-भक्तिरिं त्रि-प्रदक्षिणं गेय्दु स्तुतियिसि समस्त-
 विद्या-पारावार-पारगरु जिन-समय-सुधाम्भोधि-संपूर्णा-चन्द्ररुमुत्तम-
 क्षमादि-दश-कुशल-धर्म-निरतरुं चारित्र-चक्र-धरं विनेय-जनानन्दरं
 चतुस्समुद्र-मुद्रित-यशः-प्रकाशरं सकळ-सावद्य-दूरं क्राणूर-ग्गणाम्बरे-
 सहस्र-किरणरं द्वादश-विधतपोनुष्टा[न]-निष्ठितरं गङ्गराज्य-समुद्धरणरं श्री-
 सिंहनन्दाचार्यरं कण्डु गुरु-भक्ति-पूर्वकम् वन्दिसि तम्म वन्दभिप्राय-
 मेल्लम तिल्लिय पेळे कय्कोण्डवर्गे समस्त-विद्याभिमुखर्माडि केलवानु
 दिवसदिं पद्मावती-देविय विधि-पूर्वकमाह्वानं गेय्दु वर वडेदु खळ्गसुमं
 समस्त-राज्यमनवर्गे माडे ।

क ॥ मुनि-पति नोडल्लु विट्ट- । ज्जन-पूज्यं माधवं शिलास्तम्भमना-
 ईतुगेय्दु पोय्यल्लु पु- । ज्जेने सुरिट्टुदु वीर-पुरुपरनें माड् ॥

व ॥ आ-साहसम कण्डु ।

वृ ॥ मुनि-पति कर्णिकारदेसळोळ् नेरे पट्टमनेय्दे कट्टि स- ।
 ज्जन-जन-वन्द्यरं परसि सेसेपनिक्कि समस्त-धात्रियम् ।
 मनमोसेदित्तु कुञ्चमनगुर्व्विने केतनमागि माडि वे- ।
 र्पणितु परिग्रह गज-तुरङ्गसुमं निजमागे माडिदर ॥

व ॥ अन्तु समस्त-राज्यम माडि बुद्धियनिवर्गिन्तेन्दु वैससिदरु

वृ ॥ नुडिट्टुदनारोळ नुडिट्टु तप्पिदडं जिन-शासनकोडम्- ।
 वडदडमन्य-नारिगेरेदट्टिदडम्मधु-मास-सेवे गे- ।
 यदडमकुळीनर्पवर कोळ्कोडेयादडमर्थिगर्थमम् ।
 कुडदडमाहवङ्गणदोळोडिदडं किडुगुं कुल-क्रमम् ॥

॥ उत्तममप्य नन्दगिरि कोटे पोळ्ळ कुवळालमाळ्के तोम् ।
 भत्तरु-सासिरं विपयमाप्तननिन्द्व-जिनेन्द्रनाजिरं- ।
 गात्त-जय जयं जिन-मत मतमागिरे सन्ततं निजो- ।
 दात्ततेयिन्दमा-दडिग-माधव-भूभुजराब्दरुर्वियम् ॥
 उत्तर-दिक्-तटावधिगे तागे मोद [कं] ले मूड तोण्डे-ना- ।
 उत्तरपरागेगम्बुनिधि चैरोडेयिर्ष्य तेङ्क कोङ्कु म- ।
 त्तित्तोळगुळ्ळ वैरिगळनिकि परावृत-गङ्गवाडि-तोम्- ।
 भत्तरु-सासिर दळेले माडिदिनिन्तुदु गङ्गनुजुगम् ॥

अन्तु शत-जीवियेम्बुदा-शब्दम केळ्दु ।

भरदिन्दं चुर्चुवाय्दं होगळे बुध-जन वन्दु कावैरियोळ् मी- ।
 करमागल् वीर-लक्ष्मी-नयन-कुमुदिनी-चन्द्रम निन्दु नोडल् ।
 परिवारं तन्न कीर्ति-प्रमे वळसे दिशा-आगमं चोधमागल् ।
 परम-श्री-जैन-पाद नेलसे हृदयटोळ् मेरु-शैलोपमानम् ॥

क ॥ कर...अरिद गङ्गनि भय- । मिल्लद हरिवर्म विष्णु-
 भूपनि निजदि ।

वल्ले तडङ्गाळ्-माधव- । नल्लि वळि चुर्चुवाय्द-गङ्ग-नृपाळम् ।
 श्रीपुरुषं शिवमारं ।...ळ कृतान्त-भूपना-सयिगोड्दम् ।
 द्वीपाधिपरोळ्ळरि-नृप- । कोपानळ-शिखेयेनिष्प विजयादित्यम् ॥
 ...रे येरिद मारसिंगना- । कुरुळ-राजिग पेस-व्वेत्ता- ॥
 मरुळ तन्नृप-तिळकन । पिरिय मगं सत्य-वाक्यनचळिन-शौर्य्य
 गर्वद-गङ्ग वसुधेयो- । लोर्वने कलि चागि शौचि गुत्तिय-गंग ।
 दोर्विक्रमाभिरामन- । गुर्विन कलि राचमल्ल-भूम् ... ॥
 तेङ्ग मुरिवं हसिय क- । अङ्ग पिडिदडसि कीळ्वना-मद-कारियम् ।

पिङ्गदे निलिसुव साहस- । तुङ्ग केवलमे नेगळ्द रकस-गङ्गम् ॥
 अवयवदिन्दे साधिसिद .माळत्रमेळुपनेय्दे गङ्ग-मा- ।
 ळवमेनळकरं वरेदु कल् निरिसुत्ते कळ्ळिच चित्रकूट- ।
 मनुरे कन्नमज्जेय-नृपानुजन जयकेसिय महा- ।
 हवदोळे मारसिंग-नृपनिक्कि निमिच्चिदनात्म-शौर्यमम् ॥
 तनयं श्री-मारसिंहङ्गनुपम-जगदुत्तुगनाद जगत्-पा- ।
 वन लक्ष्मी-वल्लभङ्गितुदयिसि नेगळ्द राचमल्लावनीशम् ।
 मनु-मार्गं गङ्ग-चूडामणि जय-वनिताधीश-भूवल्लमेशम् ।
 जिन-धर्म्माम्भोधि-चन्द्रं गुण-गण-निळय राज-विद्या-धरेन्द्रम् ॥

इन्तेनिसि नेगळ्द गङ्ग-वंशोद्भवरा-दडिगन मगं चुर्चुवाय्द-गङ्गनातन
 सुतं दुर्विनीतनातन तनय श्री....नु श्रीपुरुषमहाराज तत्-तनयं देव
 तत्-तनूभवनेरेयङ्ग-हेम्माडि तत्पुत्र वूतुग-हेम्माडि तदात्मजरु....
 देव तदनुज गुत्तिय-गंगनातन मोम्म मारसिंग-देवनातन मगं
 कलियङ्गदेवनातन मग वर्म्म-देवनिना-गङ्ग-वशोद्भवरु राज्यं गेय्ये ।

दक्षिणदेशनिवासी । गङ्ग-मही-मण्डलिक-कुळ-संधरणः ।

श्री-मूल-संध-नाथो । नाम्ना श्री-सिंहनन्दि-मुनिः ॥

श्री-मूल-संध-वियदमृ- । तामळ-रुचि-रुचिर....जय-ल- ।

क्ष्मी-महित जिन-धर्म्म-ल- । लामं क्राणूर-गण-जना....करम् ॥

गणद अन्वयदोळु ।

मणिरिव वनराशौ माळिकेवामराद्रौ

तिळकमिव ललाटे चन्द्रिकेवामृतांशौ ।

इव सरसि सरोजे मत्त-भृङ्गी निकामम्

समजनि जिनधर्म्मा निर्म्मळो घालचन्द्रः ॥

अवर शिष्यरु ।

विमळ-श्री-जैन-धर्मास्वर-हिमकरनुद्यत्-त...लक्ष्मी- ।
 रमणं भूमण्डलाधीश-नुतनुभय-सिद्धान्त-रत्नाकरं जं- ।
 गम-तीर्थं भव्य-वक्त्राम्बुज-खर-किरणं श्री-प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-
त-गुनीन्द्रं क्षीर-नीराकर-विशद-यशो-वेष्टिताशा-विभागं ॥
 मनमं नियमिसलरिय- । तनुव... तोर्पं मुनियुं मुनिये ।
 मनम तनुवं नियमिस- । लनुदिनमी-नेमि-देवनोर्व्वेने वल्लं ॥

अवर शिष्यरु ।

- गुणियेने जिनमतरक्षा- । मणियेने कवि-गमक-वादि-वाम्मि-प्रवरा-
 मणियेने पण्डित-चूडा- । मणियेने **गुणनन्दि-देवरेसेदर** द्वरेयोळ् ॥
 तत्सधर्मरु ।

अळवे पेळ् नुडियळे निन्न विरुद माण् माणेले सांख्य वा- ।
 ग्-त्रळम नच्चदे नीनडङ्गेडरदिर्चावर्वाके नैय्यायिका ।
 मलेयळ् वेडिरु मन्तमेके चलदिन्दी-भण्डप केम्मनण्- ।
 डलेयळ् श्री-गुणचन्द्र-देवनमळं वादीभ-कण्ठीरवम् ॥

तत्सधर्मरु ।

गङ्गा-वारि सु-शैवलं सुर-करी दानार्द्र-गण्ड-स्थलः ।
 शम्भुःकाण्ठ-विलग्न-घोर-गरलः चन्द्रः कळङ्काङ्कितः ।
 कैलाशो वन-त्रल्लरी-परिवृतस्साम्य कथं वच्यहम् - -
 कीर्त्या तैस्सह **माघनन्दि**-यमिनश्चन्द्रातपोवच्छ्रिया (म्) ।

आ-चारित्र-चक्रेश्वर-मुनि-राज-राजन शिष्यरु खास्ति समधिगत-पञ्च-
 महा-शब्द महा-कल्याणाष्ट-महा-प्रातिहार्य्य चतुर्धिशदतिशय-विराजमान-
 भगवदर्हत्-परमेश्वर-परम-भट्टारक-मुख-कमळ-विनिर्गत-सदसदादि-वस्तु-

स्वरूप-निरूपण-प्रवण-राद्धान्तामृत-त्राद्धिवर्द्धन-रात्र्याभरणरुमप, श्रीमतु-
प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देवरेन्तेन्दडे ।

आसीदाशान्तराळ-प्रबळ-पृथु-यशो-व्योम-गङ्गा-तरङ्गः

चञ्चरित्र-धात्रीभवदतिललितोदार-गंभीर-मूर्तिः ।

वाक्-कान्ता-तुग-पीन-स्तन-कलश-लसन्नूत-चूत-प्रवालः

सिद्धान्त-क्षीर-नीराकर-हिमकिरणः श्री-प्रभाचन्द्र-देवः ॥

अभिनव-गणधर... । त्रि-भुवन-जन-विभुत-चरण-सरसिरुहयुगं ।

शुभमति...रुह-वनार्कनेष्टुदु । वसुमतियोळनन्तवीर्य्य-सिद्धान्तकरम् ॥

वादि-वन-दहन-हुतवह । वादि-मनोभव-(वादि)-विशाळ हर-निटलाक्षम् ।

वादि-मद-रदनि-विहुव । मेदिप मृगराज जयतु श्रि(श्रु)तकीर्ति-बुधं ॥

तत्-सधर्मरु ।

कवि-गंमक-वादि-वाग्मिग- । ल्लेवम्बरं गेल्लु कनकनन्दि-त्रैविद्य-

विळासं त्रिभुवन-म- । ल्ल-वादिराज दलेनिसिद नृप-समेयोळ् ॥

अवर सधर्मरु ।

मन-वचन-काय-गुप्तियो- । ल्लनुनयदि तळदु पञ्च-समितिय वशदिन्-

दनुवशनाद तपोनिधि । मुनिचन्द्र-व्रतिपनखिल-राद्धान्तेशम् ॥

अवर शिष्यरु ।

पिरिदं पोगळ्वडेङ्गळ । पुरुळुण्टे-माडलेन्दु-मुनि-पतियेम्बी- ।

वर-चिन्तामणि... । कुरुळि सु-सन्मान-ध्यानदुरुळियेनिकुम् ॥

तपोनुष्ठा [न] निष्ठितरारेन्दडे ।

कनकचन्द्र-मुनीन्द्रन पादम । मेनेत्र भव्य-समूहद पाप-सम्- ।

हंननमपुदु तपुदु निश्चयम् । मन.....निच्चळुम् ॥

अवर सधर्मरु- ।

मुनिय.....अनवद्याचा(च)रणे जैन-शा- ।
सन-रक्षामणि शान्तने सकळ-राग-द्वेष-दोष-प्रभञ्- ।
जननुर्वी-नुतने गुण-अणयितं तानेम्बिन वीर मे- ।
दिनियो...धवचन्द्र-देवनेसेद चारित्र-चक्रेश्वरम् ॥

तत्-सधर्मरु ।

वर-शास्त्राम्बुधि-वर्द्धन- । हरिणाङ्गं-विरुद-त्रादि-मद-विस्फाळम् ।
निरुतं तानेनलेसेद । धरेयोळ् त्रैविद्य-त्रालचन्द्र-मुनीन्द्रम् ॥

अवर सधर्मरु ।

वृ ॥.....आळ्दु धर्ममनुपेक्षिसि तक्केडेगीयदागळ्म् ।
पीन-नितम्बम घन-कुच-द्वयम भरेगोण्डु म-यो- ।
द्यानमनोळ्दु पोक्कु नेरे नील-पटाश्रितरप्प योगिगळ् ।
दान-विनोदनोळ् दोरेगे-वप्परे माधवचन्द्र-देवनो...॥
...सत्य-गङ्गं कुडे कुरुळियोळादन्न-दान-प्रभा-वि- ।
स्तरदिं श्री-त्रालचन्द्र-व्रति-पति पडेद दानदिं जीयनल्लुर-
व्वरेय सम्पूर्णमागळ् तणिसिदमिदु वळ्-चोद्यमक्षीण-रिद्धि- ।
स्फुरित कय्गण्मि पोण्मुत्तिरे..... ज्यनादम् ॥

अवर सधर्मरु ।

चतुराश्य-क्रोटि-कूटदो- । व्यतिशयमेनिसिर्द कोपण-तीर्थदोळीगळ् ।
नुतिधिप वड्डाचार्य- । व्रतिपतिये नेमि-देवरिन्दमे पूज्य ॥
स्थावर-जगममनिंतुं । पावनमाद..... ।
...जीयेनिसि वाळ्वडिगळ् । जीय श्री-नेमि-देवरुदयिसे शुभद ॥

अवर सधर्मरु ।

अधनर्गाश्रितर्गिष्ठ-सन्ततिगे चातुर्वर्ण-संघके तान् ।
शि० ३०

अधिकोत्साहदिन्...वयकेयम्बेर्ष्यःर्थमं वाञ्छेयम् ।
 दुभ-चिन्तामणि..... कूर्त्तित्तु मा- ।
 धवचन्द्रं पडेद समस्त-भुवन-प्रस्तुत्यम स्तुत्यमम् ॥

अवर सधर्मरु ।

साधिसि गुरुपदेऽदो- । ळाधिक्रयतेयास्तु सकळ-पट्-कर्मगळु ।
 वेदान्तत् म...ठरिव- । गर्गोधूम-वरदृनोडने तोड्व्वम... ॥
 शाकिनि-डाकि.....-किनि-चोरारि-मारि-देव्येयरनितु ।
 लोकमरियत्के... । सकळमनरिये विरुद देवेन्द्रनुमम् ॥

इन्तेनिसि नेगळ्तेयं तळेद श्रीमत्-प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देवर गुड
 भुजवळ-गङ्ग-हेर्माडि-वर्म-देव ।

वलवद्वैरिगळं पडल्-वडिसि गेल्दुग्राजियोळ् माण्दने ।
 चलदिन्द परियिट्टु वैरि-पुरमं तत्-कोटेय तद्-मही- ।
 तळमं कोण्डु धरित्रि वणिणसुविन श्री-वर्म-देवं मही- ।
 तळम तोळ्-वळटि निमिर्च्चिदनिदम् हेर्माडि सौर्व्यात्मनो ॥

आतन पट्ट-महादेवियेन्तेन्दडे ।

जिनेन्द्र-पादाम्बुज-मत्त-भृङ्गी.....भूपण-भूपिताङ्गी ।
 नितम्बिनीना तिळकायमाना विराजते गङ्ग-महाधिदेवी ॥

वृ ॥ निजवेनिपी-नेगर्त्तेय महासतिगुत्सव [म] म् निमिर्च्चुवा- ।
 त्मजरेनिसिर्द तम्मुतोडहुट्टिदरोप्पुव मारसिगनुम् ।

स-जयदे सत्य-गङ्ग-नृपनुं कलि-रकस-गङ्ग-देवनुम् ।

भुजवळ-गङ्ग-भुजनुमार्जिसि पेर्जसम निरन्तरम् ॥

गजरिपु-विष्टराजि-विभवोदय-पार्श्व-जिनेन्द्र-पाद-पड् ।

कज-मद-भृङ्ग गङ्ग-कुळ-मण्डन दण्डित-वैरि-वर्ग भा- ।

वज-निभ-मूर्त्ति दिग्-वलय-वर्त्तित-कीर्त्ति समस्त-धात्रियोक् ।

भुजवल-गङ्ग-भूप निनगादारे मण्डलिकैक-भीरव ॥

आतन पट्ट-महादेवि ।

[.....]आळु-वरननुज । दिङ्भूपङ्गे गङ्गवाडिगे तळेदळ् ।

पट्टमनेन्दे गङ्गन । पट्टमहादेवि यन्तु नोन्तरुमोळरे ॥

वृ ॥ मारिडाशान्तमं वळ्ळदलळेडुदधि-त्रातम त्तरे सन्दा- ।

मेरु-ओणीन्द्रमं त्राशिनोळेणिसि तरङ्गोण्डु नक्षत्रमं पेळ् ।

आरानुं वळ्ळरे वळ्ळडे पोगळो...विश्वम्भरा-भार-वीर- ।

श्री-रामालीट-वज्र-द्रुडिम-घन-भुज-स्तम्भनं गङ्ग निन्नम् ॥

अन्नेयवागिदूटिसुन्न...मोले...प्रकास येळ्ळो ।

रत्नवे हेण्डरोळ् मनेगोर्व्वरुदारेयरण हुडरे ।

हुन्नियवुळ्ळडेम् जगदोळ्ळोर्व्वळे भागिये ताने लेसे हुह्- ।

नन्नियोळ्ळिन्तु गर्वितेयरागर्गळ चन्दल-देवियन्ददिम् ॥

श्रीमद्-भुजवल-गंग-देवङ्ग गङ्ग-महादेविगं पुडिद सत्य-
गङ्गन प्रतापमेत्तेने ।

जसमुद्यद्ववळातपत्रमखिळाशा-देवतापाङ्ग-र- ।

दिम सह..... गजेन्द्र-रिपु-पीठं विक्रमं तानदा- ।

गे सु-साम्राज्य-लताभिवृद्धि-विभव मय्वेत्तिरळ् वळ्ळिदर ।

व्वेसकेयुत्तिरे सत्यगङ्गनेदं विश्वावनी-भागदोळ् ॥

आतन-अरसि ।

पति सत्य-गङ्ग-देवं । गति ...दार-लक्ष्मि तानेनिसि..... ।

.....तळेदळेम्...। ...आरो राणे कञ्चल-देवि ॥

भावभवङ्गे रूपु मद-सामज-त्रैरिगे विक्रम-क्रम सुरेन्- ।

द्रावनिजके दान-गुणमन्धिगे गुणपमराचळके सं- ।

भावित-धैर्यमगालिपुदेन्दडे गङ्ग-कुभृत-कुमार**** ।

.....पालकंगे दोरेयपरे मिक कुभृत-कुमारकर ॥

.....यिन्दं क्षीराव्धियु- । मसवसदिं पेचुवन्ते गङ्गान्वयसु ।

पसरिसे पेचुगे निनिन्दसदळमौदार्य-शौर्य गङ्ग-कुमारा ॥

श्रीमन्महामण्डलेश्वरनेरेयङ्ग-होयसण-देवनळियं गण्डर दावणि
ह्रसिवर शूल मावन गन्ध-वारण हेर्माडि-देवनेडेदोरे ...साथिरमुम
हरिगेय नेलेवीडिनोलु सुखदिनाळुत्तिर्दु कुन्तलापुरदोलु चैत्यालयमं
माडि देवर पूजा-विधानक चातुर्वर्ण-सध-समुदाय-चतुस्-समयदाहार-
दानक खण्डस्फुटित-जीर्णोद्धारक समुदाय-सुख्य-स्थानं माडि येडदोरे-
मण्डलिनाडप्रभु-गावुण्डुगळकरेयलट्टि धर्म आरक्ये येन्दु शक-वर्ष
९८९ नेय पुवंग-संवत्सरद पुण्य-सु १३ दशि-गुरुवार-वुत्तरा-
यण-संक्रमणदन्दु तम्म गुरुगळु श्री-प्रभाचन्द्र-सिद्धान्त-देवर काळ
कार्त्तिक धारा-पूर्वक(क)माडि विट्ट दत्तिया-ग्राम-दुभय...सर्व-नमस्य-
वलि डुडुवायदाय-सुङ्ग-निधि-निक्षेप सर्व-बाधा-परिहार ॥

मत्ता-राज-सर्वन्य सत्य-गङ्ग-देव नेडेहळिय नेलेवीडिनोलु सुखदिं
राज्यं गेयुत्तिर्दिल्लि कुरुळिय-तीर्थदळ गङ्ग-जिनालयम माडि सक-
वर्ष १०५४^१ नेय नन्दन-संवत्सरद चैत्र-सुपुण्णमियादिचार-
सोम-ग्रहणदन्दु तन्न गुरुगळु श्री माधवचन्द्र-देवर काळ कार्त्तिक
धारा-पूर्वक माडि विट्ट दत्ति ...वण्ण

खत्ति श्रीमन्-महामण्डलेश्वर गङ्ग-हेर्माडि-देवर सन्निधियल्लि
सर्वाधिकारि वागिय-हेगडे लोकिमय्यन मग हेगडे-चन्दिमय्यं

कुरुलिय तम्म गौडिकेयं कलियर-मल्लि-शेट्टि मारं कोण्डु अरसर
सनिधियलु बालचन्द्र-देवर्गे धारा-पूर्वकं माडि विट्टरु ॥

मत्त सिरियम-सेट्टियुमातन मक्कळु.....आतन गौडिकेय नन्नि-
यरस-देव हळ्ळुवरदलु बालचन्द्र-देवर्गे धारा-पूर्वकं माडि कोट्टरु ॥
अन्तुभय-ग्रामद.....साम्य सुङ्ग सहित सर्व्व-वाधा-परिहार
(भागेकी ५ पक्तियोमे सीमाओकी चर्चा तथा हमेशाके अन्तिम श्लोक हैं)

[जिनशासनकी प्रशंसा । जिस समय त्रिभुवन-मल्ल-देवका राज्य
प्रवर्धमान था;—

आगेके श्लोकका प्रकरणसे कोई सम्बन्ध नहीं है, सिवाय इसके कि
विक्रमांकने, जो कि त्रिभुवन-मल्ल है, बहुत भय उत्पन्न किया ।

तत्पादपञ्चोपजीवी एर्येङ्ग होय्सलका दामाद हेम्माडि-अरस था । उसकी
प्रशंसा ।

होय्सल राजाओके वंशकी प्रशंसा । विनयादित्यसे लेकर नरसिंह तकके
राजाओकी परम्परा ।

मूलसंघके मेप-पापाण-गच्छके क्राणूर-नाणका एक जैनमन्दिर राजा हेम्मने
बनवाया ।

जिस समय प्रताप-होय्सल-नारसिंह-देव दोरसमुद्रमे राज्य कर रहा
था —उसका प्रधान मंत्री (प्रशसासहित) तिप्पण भूपति और उसका
छोटा भाई नाग-चमूपति था, जिसकी पत्नी चामल-देवी थी । उसने
का दान किया ।

पश्चात् इक्ष्वाकुवंशका अवतार दिया है । इस भागकी १७० पक्तियोंमें
पूर्वके शिलालेख न० २७७ और २६७ के भाग ज्यो-के-त्यो मिलते हैं । न०
२७७ “सले वृषभतीर्थ-काल” से लेकर “परावृत-गङ्गावाडितोम्भत्तरु-
सासिरं” तक १०१ पंक्तियाँ, और “अन्तु शत-जीवियेम्बुदा-शब्दमं वेल्दु”
से लेकर “मेरु-शैलोपमानम्” तक ५ पक्तियाँ । न० २६७ “कर ..अरिद
गङ्गनि भय-” से लेकर “रक्कस गङ्गम्” तक ११ पक्तियाँ । न० २७७
“अवयवदिन्दे” से लेकर राज विद्याधरेन्द्रम्” तक ८ पक्तियाँ । न० २६७
“इन्तेनिसि नेगल्द” से लेकर “अनन्तवीर्यसिद्धान्तकरम्” तक ४५ पंक्तियाँ ।

श्रुतकीर्तिकी प्रशंसा । पश्चात् क्रमसे सधर्मा कनकनन्दि, मुनिचन्द्र व्रंती-की प्रशंसा । मुनिचन्द्रके शिष्य कनकचन्द्र-मुनीन्द्र, उनके सधर्मा माधव-चन्द्र-देव; उनके सधर्मा त्रैविद्य बालचन्द्र-मुनीन्द्र और उनके सधर्मा माधव-चन्द्र-देव । सत्य गंगने कुरुळिमें बालचन्द्र व्रतिपतिको दान दिया । उनके सधर्मा वड्डाचार्य व्रतिपति थे । उनके सधर्मा माधवचन्द्र थे ।

इसके बाद भुजबल-गङ्ग हेर्माडि-वर्म-देवकी प्रशंसा । उनकी पट्टमहिषी गंगमहादेवी तथा इन दोनोंके चार लडके मारसिंग, सत्य-गंग, कलि-रक्ष-गंग और भुजबल-गंगका उल्लेख ।

भुजबल-गंगदेव और गंग-महादेवीसे सत्य-गङ्गकी उत्पत्ति । उसकी प्रशंसा । उसकी रानी कञ्जल-देवी । (उनके पुत्र गंग-कुमारकी प्रशंसा) ।

जिस समय एरेयङ्ग होयसल्ल-देवका दामाद हेर्माडि-देव हरिगेके निवास-स्थानमें था और एडेडोरे-(मण्डलि) हजारका शासन कर रहा था, कुन्तलापुरमें उसने एक चैत्यालय बनवाया और, उसके लिये तमाम करो इत्यादिसे मुक्त, एक गाँवका दान दिया ।

इसके अतिरिक्त, जब सत्य-गङ्ग-देव, अपने एडेहल्लिके निवासस्थानमें सुख और शान्तिसे राज्य कर रहा था, उसने कुरुली तीर्थमें गङ्ग जिनालय बनवाया, और शक-वर्ष १०५४ में अपने गुरु माधवचन्द्र-देवके पैरोका प्रक्षालनपूर्वक,का दान किया ।

और गंग हेर्माडि-देवकी उपस्थितिमें सर्वाधिकारी, वागिके हेगडे, हेगडे चन्दिमयने कुरुलीकी अपनी 'गौडिके' भूमि कलियर-मल्लि-सेट्टिको बेची और उसने वह भूमि बालचन्द्र देवको दान कर दी । और सिरियम-सेट्टि तथा उसके पुत्रोंने हल्लवुरकी अपनी 'गौडिके' भूमि, नन्नियरसदेवके सामने, बालचन्द्र-देवको भेट कर दी । (यहाँ सीमाएँ और हमेशाके श्लोक आते हैं ।]

[EC, VII, Shimoga tl, n° 64]

१ ये अङ्क १०३४ होने चाहिये, क्योंकि शक वर्ष १०५४=विरोधिकृत नन्दन=१०३४ ।

३००

चन्द्रहल्लिक—कन्नड

[विक्रम वर्ष ५८=११३३ ई०]

[चन्द्रहल्लिके, अमृतेश्वर मन्दिरके सामनेके वीरकलके ऊपर]

स्वस्ति श्रीमत्तु विक्रम-संवत्सरद् ५८ परिधावि-संवत्सरदास्व-
यिज-न्न ५.....श्रीमत्तु मूलमंघद देसिग-गणद श्री-माघणन्दि-
भट्टारक-देवर गुट्टं गङ्गवल्लिय दास-गावुण्डन मग घोप्पय समाधि-
विधियि मुडिपि स्वर्गस्थनादनु ॥

[स्वस्ति । (उक्त मितिको), मूलमंघ और देसिग-गणके माघणन्दि-
भट्टारक-देवके एक गृहस्थ-शिष्य, -गङ्गवल्लिय दाम-गावुण्डके पुत्र घोप्पय,
समाधि विधिसे मरण कर, स्वर्गको गये ।]

[EC, VIII, Sorab tl, n° 97]

३०१

हलेवीड—मंस्कृत और कन्नड

[वर्ष प्रमादिन्, ११३३ ई० (६० राइम)]

[हलेवीडसे लगी हुई चस्तिहल्लिकेमें, पार्श्वनाथ बस्तिके बाहरकी
दीवालमें एक पापाणपर]

श्रीमत्परमगंभीरस्याद्वाढामोवलाञ्छनम् ।

जीयात् त्रैलोक्यनाथस्य शासनं जिनशासनम् ॥

जयतु जगति नित्य जैनसद्योदयार्कः

प्रभवतु जिनयोगीत्रातपद्माकरश्रीः ।

समुदयतु च सम्यग्दर्शन-ज्ञान-वृत्त-

प्रकटित-गुण-भाखद्-भव्य-चक्रानुरागः ॥

जगन्नितयवल्लभः श्रियमपथ्यवाग्दुर्लभः ।

सितातपनिवारणत्रितयचामरोद्भासनः ।
 ददातु यदघान्तकः पदविनम्रजम्भान्तकः
 स नस्सकल-धीश्वरो विजय-पार्श्वतीर्थेश्वरः ॥

सिद्धं नमः ॥

श्रीमन्नतेन्द्रमणिमौलिमरीचिमाळा-
 माळार्चिताय भुवनत्रयधर्मनेत्रे ।
 कामान्तकाय जितजन्मजरान्तकाय
 भक्त्या नमो विजय-पार्श्व-जिनेश्वराय ॥
 होयसळोव्वाश-वंशाय स्वस्ति वैरि-महीभृताम् ॥
 खण्डने मण्डलाप्राय शतधाराग्रजन्मने ॥

तदन्वयावतारम् ॥

नेगळ्दा-ब्रह्मनिनत्रि सोमनेसेवा-श्री-सोमज भूतल
 पोगळ्त्तिर्ष-पुरूरवोर्वीपति सन्दायु-र्महीवल्लभं ।
 सोगयिप्पा-नहुपं ययाति यदुवेम्बुर्वीश-सन्तानदोळ् ।
 नेगळ्द श्री-सळनानतान्य-निकरं सम्यक्त्व-रत्नाकरम् ॥
 आ-सळ-नृपतिय राज्यश्री-संवर्द्धनमनेये माडुव वगोयिं ।
 वासव-वन्दित-जिन-पूजा-सहित सकल-मत्र-विद्या-कुशलम् ॥
 मुददिं जैन-त्रतीशं शशकपुरद पद्मावती-देविय म- ।
 त्रदिनादं साधिसळ् विक्रियेयोळे पुलि मेल् पाये योगीश्वर कुं-
 चद-काविन्दान्तदं पोय्सळ एनलमय पोय्वुदु पोय्सळाङ्कम् ।
 यदु-भूपर्गादुदन्दिन्देसेदुदु सेळेरिं लोळ-शार्दूळ-चिह्नम् ॥
 आ-सन्द-यक्षी-वरदोळ् वसन्तं । लेसागे तात्कालिक-नामदिन्द ।
 वासन्तिका-देवतेयेन्दु पूजा- । व्यासङ्ग व माडिदना-नृपाळम् ॥

कय्-सादिरे पुलि युण्डगे ।
 कय्-सादिरे वीर-लक्ष्मी रिपु-नृप-राज्यम् ।
 कय्-सादिरे पलराट्टम् ।
 प्योय्सळ-नामदोळे यादचोर्वीपतिगळ् ॥
 सत्कुळदोळगिन्दु माही- ।
 भृत्-कुळदोळगचळ-नाथनेसेवन्तेसेदं ।
 तत्कुळदोळ् विजितारि-कु- ।
 भृत्कुळनादित्य-मूर्तिं विनयादित्यम् ॥
 तदपत्य रिपु-नृप-भुज- ।
 मद-मर्दननखिळ-विद्युध-जनता-सौख्य- ।
 प्रदनुदितोदित-महिमा- ।
 स्पदनेनिपेरेयङ्ग-भूपनङ्गज-रूपम् ॥
 एरेयङ्गन कूरसि तले- ।
 गेरगदे मुन्नरिदु वन्दु पदकेरगदवर् ।
 प्परिये तले मुरिये निडैल्य् ।
 ओरदुगे विसु-नेत्तरेरगदिर्परि धुरदोळ् ॥
 ई-वसुवे पोगळलेचल- ।
 देविगवेरेयङ्ग-नृपतिग त्रै-पुरुपर ।
 तावेनलाट्चर्चला- ।
 लावनिपति विष्णु-नृपतियुदयादित्य ॥
 अन्तवरोळ् विष्णु-मही- ।
 कान्त निमिर्देसेये कूर्पुमापुं जसमा- ।

दन्तोळगि वेळगे पेर्मैय- ।

नान्त नळ-नहुप-भरत-चरित-प्रतिमम् ॥

स्थिरमागि विष्णुवर्द्धन- ।

धरणीपाळगे पट्टमागलोड सा- ।

गरदन्तनहित-धरणी- ।

श्वरोडनेण्दिस्तु विशदकीर्तिप्रसरम् ॥

पोडरटे साधमायतु मल्लेळमुना-तुळ-देशवेळमु ।

नडेये कुमार-नाडु-तळकाडुगळेम्बिबु कयो सार्हुव- ।

त्तडियिडे मुञ्चि कञ्चि वेसकेण्डुतु विष्णु-नृप कृपाणम ।

जडियटे मुने कोङ्ग-नृपरित्तरिमङ्गळनेम् प्रतापियो ॥

चौळ-नृपाळ-पाण्ड्य-नृप-केरळ-भूप-मुजावलेप-वि- ।

स्फालननन्ध्र-गन्ध-गज-केसरी लाट-वराट-धारिणी- ।

पाळ-धनानिळ कडन-सूर-कदम्ब-वनाग्नि विष्णु-भू- ।

पाळनवार्य्य-शौर्य्य-निधियातन गौर्य्यमनारो कीर्तिपद् ॥

श्रीमन्महामण्डलेश्वर । द्वारावतीपुरवराधीश्वरं । यादवकुलाम्बरद्युमणि
मण्डलिक-चूडामणि शशकपुर-वसन्तिका-देवी-लब्धवर-प्रसादम् । दर-
दळन्-मल्लिकामोदम् । परिहसित-शरदुदित-तुहिनकर-कर-निकर-हर-
हसन-सु-रुचिर-विशद-पशश्चन्द्रिका-श्री-विलासम् । निरनिशय-निखिल-
विद्या-विलासम् । विनमदहित-महिप-चूडालीड-नूत-रत्न-रस्मि-जाल-
जटिलिन-चरण नख-किरणम् । चतुत्समय-समुद्धरणम् । कर-कराळ-
करवाल-भ्रमा-प्रचलित-दिशा-मण्डलम् । वीर-लक्ष्मी-रत्नकुण्डलम् । हिर-
ण्यगर्भ-तुळापुरुपाश्व-रय-विश्वचक्र-कल्पवृक्ष-प्रमुख-नख-शतमखम् । राज-
विद्या-विलासिनीसख । स्थिरीकृत-यादव-समुद्र-विष्णुसमुद्रोत्तुग-रङ्गद्-

वहलतर-तरङ्गौघाच्छादित-दिशा-कुञ्जरम् । शरणागतवज्र-पञ्जरम् । आम-
 ल्क-फल-तुळित-मुक्ता-रुता-लक्ष्मी-लक्षित-वक्षम् । विबुध-जन-कल्प-
 वृक्षम् । विजयगज-घटोत्तरल-कदलिका-कदम्ब-चुम्बिताम्बुदम् । प्रति-
 दिन-प्रवर्द्धमान-सम्पदम् । रिपु-नृप-लय-समय-क्षुभित-वार्द्धि-वीचि-चयोच्च-
 लित-जालश्व-हेपा-रवपूरित-दिशा-कुञ्जरम् । गस्तोदात्त-पुण्य-पुञ्जम् । इन्दु-
 मन्दाकिनी-निश्चलोदात्त-गुण-न्यूथम् । गण्डगिरि-नाथम् । चण्ड-पाण्ड्यवे-
 दण्ड-कूट-पाकलम् । जगद्देव-त्रल-कळकळं । चक्रकूटाधीश्वर-सोमेश्वर-
 मदमर्दनम् । तुल्य-नृपासुर-जनार्दनम् । कळपाळ-तारक-मयूर-वाहनम् ।
 नरसिंह-ब्रह्मसम्भोहनम् । इरुङ्गोल-त्रल-जळधि-कुम्भ-सम्मवम् ।
 हत-महाराज-वैभवम् । दळितादियम-राज्य-प्रभावम् । कदम्बवन-दावम् ।
 चेङ्गिरि-त्रल-काळानळम् । जयकेगी-मेवानिळनेन्दिवु मोदलागे समस्त-
 प्रशस्ति-सहितम् । तळकाडु-कोङ्गु-नङ्गलि-गङ्गवाडि-नोळम्बवाडि-
 मासवाडि-हुलिगेरे-हलसिगे-चनवसे-हानुङ्गल्लु-नाडु-गोण्ड
 त्रिभुवनमल्ल भुजवळ वीर-गङ्ग-होयसळदेवम् ॥

निरुपमिताङ्गिय रुचिर-कुन्तळेय नुत-मध्येय मनो- ।

हरतर-काञ्चिय धृतसरस्वतिय विलसद्विनीतेयम् ।

स्फुरदुरु-कीर्त्तिमन्मधुरेय स्थिरवागिरे तन्न तोळोळोल्द ।

इरिसिदनुर्वराङ्गनेयनप्रतिम विभु-विष्णु-भूभुजम् ॥

तदीय-पाद-पद्मोपजीवि । निरन्तर-भोगानुभावि । जिनराज-राजत्-
 पूजा-पुरन्दरम् । स्वैर्य्य-मन्दिरम् । कौण्डिन्यगोत्र-पवित्रम् । एचि-
 राजप्रिय-पुत्रम् । पोचाम्बिकोदारोदन्वत्-पारिजातम् । शुद्धोभयान्वय-
 सञ्जातम् । कर्णाटधरामरोत्तस । दानश्रेयासम् । कुन्देन्दु-मन्दाकिनी-
 विशद-यशःप्रकाश । मन्त्र-विद्या-विकाशम् । जिन-मुख-चन्द्र-वाक्-

चन्द्रिका-चक्रोरम् । चारित्र-लक्ष्मी-कर्णपूरम् । धृतसत्य-वाक्यम् ।
 मन्त्रि-माणिक्यम् । जिन-शासन-रक्षामणि । सम्यक्त्र-चूडामणि ।
 विष्णुवर्द्धन-नृप-राज्य-त्राद्धि-संवर्द्धन-सुवाकरम् । विगुह-रत्नत्रयाकरम् ।
 चतुर्विधानूनदानविनोदम् । पद्मावती-देवी-लक्ष्म-वर-प्रसादम् । भय-
 लोभदुर्लभम् । जयाङ्गना-चल्लभम् । वीर-भट-ललाट-पट्टम् । द्रोह-
 घरट्टम् । विबुध-जन-फल-प्रदायकम् । हिरिय-दण्डनायकं । अप्रतिम-
 तेजम् । गङ्ग-राजम् ।

मत्तिन मातवन्तिरलि जीर्ण-जिनालय-कोटियं क्रम- ।
 वेत्तिरे मुन्निनन्ते पल-मार्गदोळ नेरे माडिसुत्तवत्य्- ।
 उत्तम-पात्र-दानदोडवं मेरुत्तिरे गङ्गवाडि-तोम्- ।
 वत्तरु-सासिरं कोपणवाट्टु गङ्गण-दण्डनायनिम् ॥
 नुडि तोदळादोडोन्दु पोणर्दञ्जिदोडन्तेरडन्य-नारियोळ् ।
 नुडिगेडेयागे मूरु मरे-त्रोक्करनोपिसे नाल्कु वेडिदम् ।
 पडेयदोड्य्दु कूडिडेडेगोगदोडारधिपङ्गे तपि व- ।
 ईडे गडिवेल्लुवेळु-नरकङ्गळिवेन्दपनल्ले गङ्गणम् ॥

आ-गङ्ग-चमूपतिग ।

नागल-देवीगमवीत-शास्त्र पुत्रम् ।

चागढ वीरढ निवियुम् ।

भोग-पुरन्दरतुमप्य द्योप्य-चमूपम् ॥

परमार्थं विद्वदर्थं तविसदनधन व्यर्थविन्दार्थिसार्थम् ।
 निरवद्य ज्ञातविद्यं दक्षिण रिपु-मनोद्य तिरस्कारिताद्यं ।
 धरे तन्नं कीर्त्तिपन्नं विबुध-ततिगे पोन्न त्रिपश्चित्प्रसन्नं
 कारेदीव द्योप्य-देवं समर-मुख दशप्रीवतुद्यत्प्रभावम् ॥

समरायाताहित-क्षोणिभृदतुल्लब्रळोधानदोळ् पावकानु- ।
 क्रमदिन्दं क्रीडिसुत्तु रिपु-नृपति-शिरः-कन्दुक-क्रीडितं तत्-
 समयोद्भूतारुणाम्भो-भरित-समर-धात्री-सरो-मध्यदोळ् त्रि- ।
 क्रम-लक्ष्मी-लोलनोलाडुवनरेद-बुधर्गप्य दण्डेश-वोप्पम् ॥
 लोभिगळं पोलिपुदे य- ।
 शो-भाजननप्य वोप्प-दण्डेशनोळिन् ।
 ई-भू-भुवनदोळाहा- ।
 राभय-भैषज्य-शास्त्र-दानोन्नतियिम् ॥

तदीय-गुरु-कुलम् ॥

गौतम-गणधरिन्दा-यात-परम्परेय कोण्डकुन्दान्वय-विख्यात-
 मलधारि-देवर् । पृत-तपोनिधिगळा-मुनीश्वर-शिष्यर् ॥ श्री-राद्धान्त-
 सुधाम्बुधि-पारग-शुभचन्द्र-देव-मुनिपर्विमळा-चार-निधि-गङ्ग-राजन ।
 धीरोदात्ततेयनाब्द वोप्पन गुरुगळ् ॥ जिन-धर्म-वनधि-परिवर्द्धन-
 चन्द्रं गङ्ग-मण्डलाचार्य्यर्-प्पावन-चरितरेन्दु पोगळ्बु [दु] जनं
 प्रभाचन्द्र-देव-सैद्धान्तिकरम् ॥
 इवचोप्प-देवन देवतार्चन-गुरुगळ् ॥

जळजभवङ्गविन्तु वरेयल् कडेयल् करुविट्टु गेय्यल- ।

त्तळगवेनिप्पुद तोळप वेळ्ळिय-वेट्टेने पोल्बुद जगत्- ।

तिलकमनी-जिनालयमनेत्तिसिद विभु-वोप्प-देवन- ।

गळिकेय राजधानिगळोळोप्पुव दौरसमुद्र-मध्यदोळ् ॥

गङ्ग-राजङ्गे परोक्षविनयवागि देवर्गे ।

सासिर दैवत्तैदेन-ला-शकनद्व प्रमादि-माधव-बहुळ- ।

श्री-सोमज-पञ्चमियो-ऌैसेने वोप्पं प्रतिष्ठेयं माडिसिदम् ॥

प्रतिष्ठाचार्य्यर् श्री-नयकीर्त्ति-सिद्धान्त-चक्रवर्त्तिगळ् ॥
 भ्रान्तिनोळेनो मुन्नेगळ्द चारण-शोभित-कोण्डकुन्देयोळ् ।
 शान्त-रस-प्रवाहवेसेदिर्पिनविर्द मुनीन्द्र-कीर्त्तिया- ।
 शान्तवनेय्दितन्तवर सन्ततियोळ् नयकीर्त्ति-देव-सै- ।
 द्वान्तिक-चक्रवर्त्ति जिन-शासनम वेळगळे पुट्टिदं ॥

श्री-मूलसंघट देशिय-गणद पुस्तक-गच्छद कौंडकुन्दान्वयद हन-
 सोगेय वळिय द्रोहघरद्व-जिनालय[म्]-प्रतिष्ठानन्तर
 देवर शेपेयनिन्द्रू कोण्डु-पोगि विष्णुवर्द्धन-देवर्गे वङ्गापुरदोळ् कुडु-
 ववसरदोळ् ।

कवियेरिगेन्दु वन्दा-मसणनसम-सैन्यङ्गळ विष्णु-भूप ।
 तवे कोन्दा-प्राज्य-साम्राज्यमनतुळ-भुजं कोळ्बुदु पुट्टिद भू-
 भुवनकुत्साहमागुत्तिरे बुध-निधि लक्ष्मी-महा-देविगागळ् ।
 रवि-तेज पुण्य-पुञ्जं दशरथ-नहुपाचार-सार कुमारम् ॥
 भूभूत-पति-मद-करि-हरि-शोभास्पद नचळना-समुत्तुङ्ग श्री- ।
 प्राभवनुदितारखण्डळ-वैभवनेम् गोत्र-तिलकनादनो पुत्रम् ॥

अन्तु विजयोत्सवमु कुमार-जन्मोत्सवमुमागे सतुष्ट-चित्तनागिर्द विष्णु-
 देवं पार्श्व-देवर प्रतिष्ठेय गन्धोदक-शेपगळं कोण्डु वन्दिर्दिन्द्रं कण्डु वर-
 वेळ्दिदिरेहु पोडेवद्व गन्धोदकमु शेपेयुम कोण्डेनगी-देवर प्रतिष्ठेय-फलदि
 विनगोत्सवमु कुमार-जन्मोत्सवमुमादुवेन्दु सन्तोप-परम्परेयनेय्दि देवर्गे
 श्री-विजय-पार्श्व-देवरेम् पेरुम कुमार्गे श्री-विजय-नारसिंह-देवनेम्
 पेरुमनिहु कुमारगभ्युदय निमित्तमु सकळ-शान्त्यर्थमुमागि विजयपार्श्व-
 देवरचतुर्विंशति-तीर्थङ्कर त्रि-काल-पूजार्चनाभिषेककमी-वसदिय खण्ड-
 स्फुटित-जीर्णोद्धारणकं जितेन्द्रियरूप तपोधनराहार-दानकं आसन्दि-

नाड जावगल्लुमं वसदियि वडगण वेनकन-मण्ठेयदिं मूडल राज-हस्त-
दल् नूरेणभत्तु-हस्त-प्रमाण-भूमियोळिंदेरडुकेरियुमनखिन्दाग्नेयद गोण्टिनलि
नट्ट कलिन्दिर्व्वडगलागिर्देरुं केरियुं तेल्लिगरिपत्तोक्कलवनलि पडुवल्
माधवचन्द्र-देवर वसदिवरविद केरियुमनलि पडुवण हिरिय-दण्ड-
नायकर मनेयि पडुवल् तेङ्क-देग्नेय राज-त्रीथिय मूडण वेळुहूर केरिय
हित्तिल् मेरेयागिर्द भूमियुमनलि वडगल् शिरियङ्गडिये गडि आसिरि-
यङ्गडिय मूडण-कडे यरडङ्गडियु । जावगल्लु-सीमे (आगेकी ५ पन्निगोमे
सीमाकी चर्चा हे) इन्ती-स्थळविनितुमं श्री-विष्णुवर्द्धन-होय्सळ-देवं
श्री-विजय-पार्श्व-देवर्गे धारा-पूर्व्वकं माडि कोट्टम् (चि ही अन्तिम श्लोक)

विदिताग्नेय-पदार्थ-नूत-विजय-श्री-पार्श्व-देवोळसत् ।

पद-पूजा-निचयक्के दान-महित केय् गदेय पुण्य-वी- ।

जट पेर्चिङ्गे निवासम सकळभव्याम्भोजिनीभास्करम् ।

मुददिं तेल्लिग-दास-गौण्ड-विभु कोट्टं सन्ततं सत्विनम् ॥

इदन्तूजितमेने नीम्मा- ।

ळपुदेन्दु तेल्लिगर-दास-गावुण्ड पु- ।

ण्य-देव-पूजाकर-शान्- ।

ति-देव-विभुगमळ-वारि-धारेयनित्तम् ॥

दासगौण्डनहल्लिय कुम्भार-गट्टद केळगण-मडुविन मोहमेडिवेयळ
मूवत्तु-कोळग-गदे आ-यरडु-को " " नडुवण परेय-केय्युळ्ळनितु मूडल ताव-
रेयकेरे हडुवळ होळ सीमे गडियागिर्द भूमियुळ्ळनितुमं तेल्लिगर-दास-
गावुण्डनुं राम-गावुण्डनु उत्तरायण-सक्रमणदळ श्री-विजय-पार्श्व-दे-
वरष्ट-विघाञ्चिनेगे सर्व्व-त्राधा-परिहारवागि पूजकर शान्तप्यङ्गे धारा-पूर्व्वक
कोट्टरु ॥

आरुं पोत्वरे युद्ध-दैत्य-विजय-श्री-पार्श्व-भट्टारको-
 दार-श्री-पद-पङ्कज-भ्रमरन सौजन्य-त्राक्-सारनम् ।
 सारोदार-जिनेश्वरार्चन-नियोगोद्योग-विश्रान्त.... ।
श्री-वधु-क्रान्तनं पृथुल-कीर्त्याशान्तन शान्तनं ॥

श्री-विजय-पार्श्व-देवर्गे विद् जावगल्लु गङ्गऊरदलि खण्ड-स्फुटित-
 जीर्णोद्धारके जावगल्लु । रङ्ग-भोगद विधावन्तारिगे गङ्गऊरु । श्रीमन्न-
 यकीर्त्ति-सिद्धान्त-चक्रवर्त्तिगळ शिष्यरु नेमिचन्द्र-पण्डित-देवर
 श्री-मूलसधद समुदायङ्गल्लु अवर शिष्य-सन्तानगळे ई-धर्मवना-चन्द्रार्क-
 तारंवरं सलेसुवरु ॥

[जिनशासनकी प्रशंसाके बाद पार्श्व-जिनेश्वरका माहात्म्य । होयसल
 राजाओंके वंशकी परम्परा —

ब्रह्म-भन्नि-सोम-पुरुरव-आयु नहुष-ययाति-यदु, जिसके वंशमें सल उत्पन्न
 हुआ । जिस समय, सलके राज्यकी समृद्धिके लिये, कोई जैन-व्रतीश मन्त्रों-
 द्वारा शशकपुरकी पद्मावती देवीको वंशमें कर रहा था, एक चीतेने उछल
 कर आक्रमण किया, चीता इससे उसकी सिद्धि भंग करना चाहता था ।
 उसी समय योगीश्वरने अपने चामर (या पंखे) की मूठको पकड़कर कहा
 'पोय् सल' (सल, मारो) । इतना उनके कहते ही उसने निडर होकर उसे
 मार दिया; उस समयसे यदु राजाओंका नाम 'पोयसल' पड गया और
 उनके झण्डेपर चीतेका चिह्न फहराने लगा । उस 'यक्षी' के प्रसादसे ऋतु
 वसन्त हो गई और उसी ऋतुके नामसे राजाने उसका 'वासन्तिका' देवीके
 नामसे पूजन किया ।

उसी वंशमें विनयादित्य उत्पन्न हुआ । उसका पुत्र परेयंग था । उससे
 एचल-देवीके द्वारा, ब्रह्मा, विष्णु और शिवकी तरह, बल्लाल, विष्णु और
 उदयादित्य उत्पन्न हुए । इन सबमें विष्णुका नाम सबसे ज्यादा प्रसिद्ध
 हुआ । (उसकी दिग्विजयका वर्णन, उसकी प्रशंसा)

(उसके पदों और उपाधियोंका वर्णन) उसने तलकाहु, कोङ्ग, नङ्गलि, गङ्गवाडि, नौळम्बवाडि, मासवाडि, हुळिगेरे, हलसिगे, वनवसे और हासुङ्गल्पर अधिकार कर लिया था । इतना ही नहीं, अङ्ग, कुन्तल, मध्यदेश, काञ्ची, विनीत और मधुरा (वर्तमानका मदुरा) ये सब उसीके अधीन थे ।

तत्पादपद्मोपजीवी पुराना दण्डनायक गङ्गराज था । (उसकी बहुत-सी उपाधियोंका उल्लेख) उसने अगणित ध्वस्त जैन मन्दिरोंका पुनर्निर्माण कराया । अपने अनवधि दानोंसे उसने गङ्गवाडि ९६००० को कोपणके समान चमकावा । गंगकी रायमें सात नरक ये थे:—झूठ बोलना, युद्धमें भय दिखाना, परदारारत रहना, शरणार्थियोंको शरण न देना, अधीनस्थोंको अपरितृप्त रखना, जिनको पासमें रखना चाहिये उन्हें छोड़ देना, और स्वामीसे द्रोह करना ।

गंग-चमूपति और नागल-देवीसे चोप्प-चमूप उत्पन्न हुआ । (उसकी प्रशंसा) ।

उसका गुरु-कुल—गौतम गणधरकी परम्परामें विद्ययात मलधारिदेव हुए, जो कुन्दकुन्दान्वयी थे । उनके शिष्य शुभचन्द्रदेव चोप्पके गुरु थे । गंगमण्डलाचार्य प्रभाचन्द्र-देव-संद्धान्तिक उसके पूजनीय गुरु थे ।

यह जिनमन्दिर—जिसकी शोभा रजतमय कैलाशके समान थी—चोप्पदेवने दोरसमुद्रके बीचमें बनवाया । गङ्गराज (अपने पिता) की मृत्युके स्मारकमें (उक्त तिथिको) चोप्पने मूर्तिकी स्थापना की, प्रतिष्ठापक नयकीर्त्ति सिद्धान्त-चक्रवर्त्ती थे । (उनकी प्रशंसा) ।

श्री-मूलसंघ, देशिय-नाण, पुस्तक-गच्छ, कोण्डकुण्डान्वय तथा हनसोने-वलिके इस द्रोह-घरट (पाप-नाशक) जिनालयकी स्थापनाके बाद, जिस समय पुरोहित (इन्द्रलोग) चढ़ाये हुए भोजन (शेष) को विष्णुवर्द्धनके पास बङ्गापुर ले गये,—उस समय राजा विष्णुने मसणको, जो अपार सेनाके साथ उसपर दूट पडा था, हराकर मार डाला, तथा उसका सारा साम्राज्य जव्त कर लिया, और उसी समय (रानी) लक्ष्मी-महादेवीके एक पुत्र उत्पन्न हुआ, जो गुणोंमें दशरथ और नहुषके समान था, (अन्य प्रशंसाएँ), तब

राजाने उनका स्वागत कर प्रणाम किया तथा यह समझकर कि इन्हीं पार्श्वनाथ भगवानकी स्थापनासे उसकी युद्धमें विजय तथा पुत्रोत्पत्ति तथा सुख-समृद्धि हुई है, उसने देवताका नाम विजयपार्श्व तथा पुत्रका नाम विजय-नारासिंह-देव रक्खा ।

अपने पुत्रकी समृद्धि तथा विश्व-शान्तिको बढ़ानेके लिये उसने भासन्दि-नाडूके जावगळ्का इस मन्दिरके लिये दान किया । और भी (उक्त) बहुत से दान दिये ।

तेली दास-गौण्डने भगवानके लिये पुरोहित शान्ति-देवको भूमि-दान किया । पार्श्व-जिनकी षष्टविध पूजाके लिये दास-गौण्ड और राम-गौण्डने 'उत्तरायण संक्रमण' के समय (उक्त) दान दिये । शान्तिकी प्रशंसा । नेमिचन्द्र-पण्डित-देव इस कामकी व्यवस्थापर रक्खे गये । ये नयकीर्ति-सिद्धान्त-चक्रवर्तीके शिष्य थे ।]

[EC, V, Belur tl., n° 124]

३०२

कोल्हापुर—संस्कृत

[११३५ ई० (फ्लीट) ।]

मूल लेख अक्टूबर १९०० ई० तक कहीं प्रकाशित नहीं हुआ था, ऐसा मि० जे. एफ. फ्लीटका कहना है । उन्होंने जो इस लेखका उल्लेख या संकेत किया है वह एक पाण्डुलिपि परसे किया है ।

[यह लेख ११३५ ई० का है और कोल्हापुरमें पाया गया है । इसमें बतया गया है कि कवडेगोळ्के सन्त-सुद्गोडेमें 'महासामन्त' निम्ब-देवरसके द्वारा निर्मापित एक जैनमन्दिरके मूलनायक पार्श्वनाथ भगवानको कुछ स्थानीय महसूलोंका दान किया गया । लेखमें ७ व्यक्ति तथा उनके स्थानोंके नाम दिये हैं जिन्होंने दान किया था । यह दान कोल्हापुरकी रूपनारायण 'वसदि' के 'शाचार्य' श्रुतकीर्ति त्रैविद्यदेवके लिये किया गया था । इस लेखमें 'कुण्डिपट्टन' नामके नगरका उल्लेख है । इस नगरके नामसे देशका नाम भी वही पढ़ गया था ।]

[IA, XXIX, p 280, a]

अनुक्रमणिका ।

[विशेष नाम-सूची]

इस अनुक्रमणिकामें जैन मुनि, आर्थिका, कवि, संघ, राण, राच्छ, ग्रन्थ तथा राजा, रानी, गृहस्थों और सच प्रकारके स्थानोंके नाम समाविष्ट किये गये हैं । नामके पश्चात्के अंक लेख नम्बर समझने चाहिये ।

अ [कक]	४४	अनन्तकीर्तिदेव	२०८
अकलङ्क	२०७, २१३, २१४, २१५, २१७, २७७	अनन्तपाळ्य	२४३
अकालवर्ष	९५, १२४, १२७	अनन्तवीर्य	२१३, २६४, २६७, २६९
अक्षपाद	२१५	अनन्तवीर्यसिद्धान्तकर	२७७, २९९
अंग	२	अनन्तवीर्य्य	१५४
अङ्गदेव-भटार	१९३	अनवद्य-दर्शन	१४५
अङ्ग	२८८	अन्दारि (नगर)	१२१, १२२
अचलदेवि	२१३	अन्दारि-आलतूर	१४२
अचला	७३	अन्धकासुर	२१३
अजितसेन	२१५, २३१, २७४	अन्धासुर	२१३
अजितसेनदेव	२१४	अग्नि	३०१
अजितसेनपण्डित	१६८, २४८, २६६	अवल्लदेवि	२१३
अजितसेनपण्डितदेव	२२६	अवल्लब्धा	१४२
अजितसेन-भट्टारक	२८८	अव्वेय	२७३
अजनन्दि	१३४, १३५,	अचरसेन	२२८
अङ्गकलि	१४४	अभणन्दि (अभयनन्दि)	९५
अत्तिकाभिवका	१८६	अभयणन्दि-पण्डित-देवर	१५०
अत्तिलिनाण्डु	१४४	अभिनन्दनाचार्य्य	२१३
अदट्टरादिल्ल	२२४	अभिमन्यु	२२८
अधिघच्छात्रा	७	अभिमानदानी	२६९
		अमळचन्द्र	२२४
		अमोघवर्ष	१२७, १४२, १८२

अमोहिति	५	अयनान्दि	४१
अम्बलिमणुं	९५	अयवेरि-	२९
अम्मराज	१४३, १४४	अयशिरिकी (संभोग)	८०
अयस [इ] मि [क]	६३	अय्यक्षेर	२२
अयहाट्टि [कुल]	८०	अय्यगरिक	२१
अयोध्यापुर	२७७	अय्य-[दत्त]	३३
अय्यणचन्दरसङ्ग	२१३	अय्यदेव	५५
अय्यभिरत्त	५२	[अ] य्यपाल	३१
अय्यवेरि (शाखा)	५६	अ [य्यमि] [हि] लो]	२२
अय्यपं	१४४	अय्यसीह	३१
अय्यपोटि	१४४	अय्यहाट्टिकिय	१७
अरकमहळ्ळी	१८९	अर्हणन्दि	१४४, १६०, २०५
अरकैरे	२२४	अर्हद्भक्त	१५०
अरट्टि	१२०	अर्हद्वलि	२७७
अरसय्येगन्तियद्	२३४	अर्हनहळ्ळि	२८४
अरसाय्य	१३७	अलत्तक (नगर)	१०६
अरसर	२२४	अवन्ति	२१७
अरसिकन्वे	१९८, २६४	अवरवाडि	१२७
अरह	६८	अविनीत ९५, १२१, १२२, १४२, २१३	
अरिष्टणोमि	२८	अविनीत-गङ्ग	२७७
अरुत्तळ,	१८८, १८९, १९०, १९२, २०२, २१५, २१६, २४८, २८८	अश्वपति	९१
अरुमुळिदेव	२१३, २४८	अष्टोपवासिगन्ति	२१०
अरुमोळि	१७१	अष्टोपवासिसुनि	२६९
अर्ककीर्ति	१२४	असा	८६
अर्जुनभूपति	२२८	अहरिष्टि	१०४
अर्जुनवाद (ङ)	१०६	अहिच्छत्र-पुर	२७७, २९९
अम्भोनिदेव	१६०	अळवनपुर	२९९
		अळचपुर	१४३

उदयराज	२२८	एरग	२३७, २७७
उदयादित्य	२०७, २६३, २९९, ३०१	एरेगित्तूर	१२१
उदयाभ्यिका	२४३	एरेनळूरा	१२१
उनल्गफ	१२७	एरेय	२६७
उमुळिदेवन्न	२१३	एरेयन्न	२१३, २१८, २७७, २९९
उम्मळियन्वे	२१९	एरेयपं	२७७
उरनूराहंत (आयतन)	९४	एरेंयन्न	२६३
उर्वी-तिळक	२१३	एरेंयप्प-रस	१३८
	क्र	एरेंय्य	१०९
ऋषभ	९६	एळ्गामुण्ड	१०७
	ए	एळ्चाय्य	२४१
एकदेव	१४९	एळे (रे) गङ्गदेव	१४२
एकवीर	२६९	एळेव-वेडन्न	१६४
एकसन्धि भट्टार	२१३		ऐ
एकलरस-देव	२९१	ऐरावत	२९९
एचल देवि	१९२, २१८, २६३, २९९, ३०१		ओ
एचले	२७४	ओखा	८८
एचिराज	३०१	ओखारिका	८८
एञ्जलदेवि	२१३	[ओ] व	३१
एडदोरे	२९९	ओडेयदेव	२१४, २१६, २४८,
एडय्य	१८३	ओङ्ग	२१३, २२६
एडेमळे	१९३	ओङ्गमरस	२१३
एडेहळ्ळि	२९९	ओङ्गविपैय	१७४
एदेदिण्डे (विप्रय)	१२३	ओङ्गिट्टे	१२७
एरकण्णं	२५३	ओद (शाखा)	७६
एरकाट्टिसेट्टि	२१८	ओङ्गमरस	२१३
एरकोटि	१२७	ओङ्गनदि	४७-८

क		कनकनन्दिपण्डितदेवर	२८०
ककसघत्त	५७	कनकप्रभदेव	२३७
ककुभ	९३	कनकप्रभसिद्धान्तदेव	२३७
ककराज	१२४	कनकसेन	१३७, १३९
कहूर्गण	१६०	कनकसेनदेव	२१४
कहराज	१४२	कनकसेनपण्डितदेव	२१६
कक्षेयगङ्ग	२१३	कनकसेनभट्टारक	२१३
कच्छेयगङ्ग	१४२	करकगिरिय-तीर्थ	१३९
कधरसस्सैंगोह-गङ्ग	१८२	कनकपुर	२१३
कधरिगुण्ड	१४४	कनियसिका (कुल)	७६
कधलदेवि	२१३, २७७, २९९	कनिष्क	१९, २५
कधि	२६३	कन्तियर-नाकर्य	२१०
कटकराज	१४३	कन्दवर्ममालक्षेत्र	१३७
कटकाभरण (जिनालय)	१४३	कन्दुकाचार्य	२१३, २४८
कणिष्क	२४	कन्न	१३०, २०५, २२७, २९९
कण्ठिका	१४३	कन्नकैर	२३७
कण्ठेश्वर	१२४	कन्नडिगे	१८६
कण्ठवेना	२	कन्नपार्य	२०४
कदम्ब (कुल)	९५, ९७, ९८, ९९, १००, १०१, १०४, १०५, १०८, ११४	कन्नमुञ्जे	२७७
कदम्ब-दिसायर	२४९	कन्नर-देव	१४०
कदम्मा (म्वा)	१०३	कन्नरसान्तर	२१३
कनक (कुल)	१४६	कन्न्याकुब्ज	२१३, २१९
कनकचन्द्र	२९९	कन्नमलदेव	१२८
कनकनन्दि	२७७	कन्नमलभद्र	२१३
कनकनन्दि-त्रैविद्य	२९९	कन्नम्प	२७७
कनकनन्दि-त्रैविद्य-देव	२५१	कन्नम्मनाण्डु	१४३
		कन्न	२१३
		कन्नण्डिग	१०६
		कन्नदूपण	२१३

करहड	१८६	कलिविद्वरसर	१४०
करहाट	२०४	कलिविष्णुवर्द्धन	१४३, १४४
कर्कर	१२७	कलुकरे-नाड	१७०
कर्कुहस्थ	५८	कलुसुम्बर	१४४
कर्णाट	२०४, ३०१	कलनेके (?) देव	२६९
कर्ईमपटि	१०२	कलनेके देव	१७९
कर्वाट	१७२	कत्वप्पु तीर्त्त	१३८
कर्प्पटि	११४	कल्याण	२१९
कर्प्पूरसेट्टि	२१८	कल्याणपुर	२५३
कर्म्मगल्लए	१०७	कल्पकुरु	१४३
कर्म्मटेश्वर	१४९	कविपरमेष्ठिस्वामि	२१३
कल	७५	कशपीय	६
कलञ्चुरि	१०८	कसुथ	२२
कलसराजा	१४६	कस्तूरि-भट्टार	१८३
कलाचन्द्र-सिद्धान्त-देव	२२४	कळपाळ	३०१
कलि गंग देव	२१९	कळवूरु नगर	२६७
कलि गङ्ग	२६७	कळम्बडि	१८६
कलिंगङ्ग भूपति	२१९	कळिङ्ग	२०४
कलिंग	२, ३	क्येळ्येञ्चरसि	२६३
कलिंग	१०६, १०८	काळालपुर	१३८
कलिंगाजिन	२	क्षेम	६९
कलिङ्ग	२१७, २८८, २९९	काकुस्थराज	९९, १०२
कलिङ्ग-देश	२७७	काकुत्सवर्मा	९६
कलिदेव	२१७, २२७	काकुस्थवर्म्म	१००
कलियङ्ग	२७७	काकेयनूरु	१२७
कलियङ्ग देव	२५३, २९९	काकोपल	१०६
कलियङ्ग-नृप	२५३	काङ्गणि वर्म्म	१२२
कलियर महि-शेष्टि	२९९		
कलि-रक्स-नाङ्ग	२६७, २९९		

काचवे	२१८	काळोज	२५३
काशी	११४,२४८	कि	
काशीनाथ	२१४	किणयिग (ग्राम)	१०६
काशीपुर	१०८,२८८	कित्तौले	१२७
कार्वाण	१०१	किन्नरी (क्षेत्र)	१०९
काडवमहादेवि	२१३	किरणपुर	१४३
काडुवेष्टि	२१३	किविरियय्य	१८४
काणूरगण	२६३,२९९	किञ्जोषूर (ग्राम)	१२२
काण्वायन	९४,९५,१२१	की	
कात्तिकेय	११४	कीर्त्तिवर्म्म	१०७
कादम्ब (कुळ)	२०९	कीर्त्त (र्त्ति) नन्दाचार्य	१२१
कादलवलि	१८२	कीर्त्तिवर्मा	१०८,११४
कारेय	१३०,१८२	कीर्त्तिदेव	२०९
कारेयबागु	२३७	कीर्त्तिनारायण	१६४
कार्तवीर्य	१३०,२३७,२७५,२७६	कीलनाड	१२७
कार्तवीर्यदेव	२८०	कु	
कार्तवीर्य	२३७	कुकुटासन-मल्लधारिदेव	२८४
कालवङ्ग (ग्राम)	९८	कुम्भवाळ (ग्राम)	२३७
कालिदास	१०८,२१३	कुङ्कुम-महादेवि	२१०
कालक-देवप्सरस् (धन्वय)	१४०	कुडलूरद	१२०
कावेरि	१०८,२७७,२९९,	कुण्टकुन्द (धन्वय)	२०९
कादमीर	२८८	कुण्डकुन्दाचार्यर्द्द	२०९
काळ	२६४	कुनुन्गाल (देश)	१२४
काळसेन	२३७	कुन्तलापुर	२९९
काळिदास	१९८	कुन्तळ	२०४,२०९,२८०
काळियक्क	२८८	कुन्तळी	२८८
काळिसेष्टि	२१८	कुन्दद	२१३
काळेयन्ने	२१९	कुन्दवैजिनालय	१७४
		कुन्दनाकि	१०९

कुन्दावि	१२१	कुरुळि	२९९
कुन्दूर (विपय)	१०३	कुरुळियतीर्थ	२९९
कुप्पट्टर	२०९	कुलचंद्र	२४५, २८०
कुबेरगिरि	१९८	कुलचन्द्रदेवमुनि	२०७
कुञ्जविष्णु	१४४	कुवलालपुर	८२, १३१, १३९, २१९,
कुञ्जविष्णुवर्द्धन	१४३		२५३, २६७, २७७, २९९
कुमारमित	२६, ४२	कुहुण्डि (देश)	२३७
कुमारय्य	२६४	कुहुण्डी (विपय)	१०६
कुमार-गङ्ग-रस	२५३		
कुमारगजकेसरि	२४३	[कू] केक	२२८
कुमारदत्त	१००	कूण्डि	२२७
कुमारनन्दि	६४, १२१	कूरगन्पाडि (ग्राम)	१६७
कुमारपुर (ग्राम)	९०	कूर्चक	९९, १०३
कुमार बाल्लदेव	२९३	कूविलाचार्य्य	१२४
कुमारभट्टि	४२		
कुमारमित्रा	४२	कृष्ण	१०५, १४२
कुमारसेनदेव	२१४	कृष्णराज	१२३, १३०, १४३
कुमारसेनदेवर	२१३	कृष्णवर्म	९५, १०५, १२१, १२२
कुमारसेन-त्रतिप	२४८	कृष्णवर्म	१४२
कुमार-सेनाचार्य्य	१३७	कृष्णवल्लभ	१३७, १४४
कुमारीपवत	२		
कुमुदचन्द्र भट्टारकदेव	२४६	के	
कुम्बयिज	१०६	केशवगावुण्ड	२१९
कुम्बशिक	१४६	केतलदेविय	१८६
कुम्बसे-पुर	१४६	केतवेदेवि	२१८
कुम्मुदवाड	१८२	केतव्वे	२५१
कुरु	२०४	केतुभद	२
कुरुलराजिग	२६७, २७७	केदल	१२७
		केरल	१०६, १०८, ११४, १७४, २०४,
			२६४, ३०१.

केशवनन्दि—	१८१	कोडझिनाड	२९३
केसरिवर्म	१६७	कोडझे	१४०
केसवदेव	२०८	कोडनपूर्वदवलि (ग्राम)	२९२
केळयवरसि	२९९	कोण्डकुन्द (अन्वय) ९५, १२२, १२३,	
केळयवरसि	२१३	१५०, १५८, १६६, १८०, २०४,	
केळयब्ने	२१९	२२३, २३२, २३९, २६७, २६९,	
		२७५, २७७, २८०, २८४, २९४,	
			३०१
को [कु] न्तिदेवी	११८	कोण्डकुन्दाचार्य	२१३, २१४
कोक्किलि	१४३, १४४	कोण्डनूर	२२७
कोगलि-नाडोळ	२४९	कोन्दकुन्द (अन्वय)	१२७
कोङ्कण	१०८, २७७	कोपण-तीर्थ	२९९
कोङ्क	२६४	कोप्परकेशरिपन्मरान	१७४
कोङ्कणि	९५	कोमरथे (ग्राम)	१०६
कोङ्कणिवर्म	९४, १३१, १४९, १५४,	कोमर-वेडेङ्क	१४२
कोङ्कालन	१८८, १९०	कोमारसेन-भट्टारद	१३८
कोङ्क	२९९, ३०१	कोम्मराज	१८६
कोङ्कणि	१८२	कोयतूर	२६३, २९९,
कोङ्कणिवर्म	९०, १४२	कोरप	२६४
कोङ्कोळ	२६४	कोरिकुन्द (विषय)	९४
कोळि	५	कोरुकोलतु	१४४
कोटिमडुवगण	१४३	कोलनूर	१२७
कोटन	१७४	कोलनूरात	१२७
कोटसे	१२७	कोळगिरी	२८०
कोट्टिय (गण) ३५, ५५, ५६, ५९, ६८,		कोळविगण्ड	१४४
७०, ७४, ९२,		कोळापुर्	२८०
कोट्टिया (कुल) १८, १९, २०, २२, २३,		कोविराज केसरिवर्मन्	१७१
२५, २९, ३०, ३१, ४२,		कोशलैनाडु	१७४
५४, ६०		कोशिकि	७१
कोडझाल	१८४		

कोसल	१०८	गङ्गण	३०१
कोळालपुर	१५४, २०७, २५३, २७७	गङ्गदत्त	२७७, २९९
कोळिष्पाकैयु	१७४	गङ्गदासि-सेट्टि	२४२
कौण्डिन्य	३०१	गङ्ग नृप	२१९, २५३
काणूर (गण)	२०९, २१९, २६७, २७७, २९९	गङ्गपेर्माडि	१४९, २१९
		गङ्गपेर्म्माडि	२१५
ख		गङ्गमण्डल	१२२, १४२
खचर-कन्दर्प-सेनमार	१९३	गङ्ग-महादेवि	२१९, २२२, २५३,
खर्ण	५६		२६७, २९९
खस	२०४	गङ्ग-मादेवि	२५३
खारवेल	२	गङ्गमालव	२१३, २७७
खुडा	१९	गङ्गरस	२५३
खेटग्राम	९६, १००	गङ्ग-राज	२६३, २६६, २६९
[खो] इमि [त्त]	३१	गङ्गवळ्ळिय	३००
ग		गङ्गवंश	२१३
गह [प्र] कि [व]	३७	गङ्गवाडि (गंगवाडि)	१२७, १८२,
गंगकूट	१४३		२५३, २६४, २६७, २७७, २८४,
गंग-नारायण	१४२		२९९, ३०१
गंगपेर्म्माडि	१७२	गङ्गहेरूर	२७७, २९९
गंगमण्डलेश्वर	१७२	गङ्ग-हेर्माडि-देव	२९९
गंगर-मीम	२१९	गङ्गैयि	१६७
गंगराज (कुल)	९५	गङ्गसेलेय	९५
गंगवाडि (गङ्गवाडि)	२१९	गण (उदार)	१२३
गङ्ग	१२३, १८२, २०४	गणधर	२४८
गङ्ग (कुल)	९९, १३८, २१३, २९९	गणपति	१२७
गङ्गकन्दर्प	१४९	गणेशेखरमरुपोरचुरियन्	१७१
गङ्ग-कुम्भत-कुमार	२९९	गण्ड-नारायण-सेट्टि	२८४
गङ्ग-कुमार	२९९	गण्डरादित्य	२१८
गङ्ग-गाङ्गेय	१४२	गण्डरादित्यदेव	२५०

गण्डविमुक्तसिद्धान्तदेव	२९३	गुणसेन	२०२, २१३,
गन्धिक	४१	गुणसेन-पण्डित	१७७, १९२
गर्वद-गंग	२६७	गुणसेन-पण्डित-देव	१८८, १८९,
गलिङ्ग-गंग	२७७		१९०, १९१, २०१, २०२
[गं]गवाडि	२९७	गुप्ति	२९३
गव्वद-गङ्ग	२७७	गुप्तिय-गङ्ग	२६७, २७७, २९९
गाढक	२३	गुम्तिसिय	१४४
गागी	१४१	गुर्जर	१०८ १२३, २८८,
गान्धारी देवी	२१३, २१९	गुल्हा	२३
गामण्ड	२२७	गोगिग	२१४, २१६
गावञ्चरसिं	२१३, २४८	गोगिगन	२१३, २१४
गिवसेन	३६	गोगिग-नृप	२५३
गुञ्जण	२१९	गोगियोड्डुग	२४८
गुडम्	२७७	गोग्गै-देव	२५३
गुडिगेरे	२१०	गोक्क	२८०
गुडिवयल्लु	१९७	गोङ्कन	२८०
गुणकीर्ति	१३०	गोट्टिक	५४
गुणकीर्तिदेव	१८२	गोडल	१८९
गुणग-त्रिजयादिल्य	१४४	गोणसेन-पण्डित-भट्टारकर	१५४
गुणचन्द्र	९५	गोण्ड	१०६, ३०१,
गुणचन्द्र-देव	२६७, २९९	गोतिपुत्र	९
गुणचन्द्र पण्डित-देव	३७७	गोती	१०
गुणचन्द्रभटार	१५०	गोदास	४०
गुणगान्दि	९५	गोपाली	६
गुणदुत्तरङ्ग	१४७	गोरधगिरि	२
गुणनन्दि-देव	२६७, २७७, २९९	गोळनिगुण्ट	१४३
गुणभद्रदेव	२१७	गोव	५५
गुणवीरसामुनिवन्	१७१	गोवपय्यन्	११९-

गोवर्धन	१३४	घोपको	८३
गोविन्द	१२७, १४४, २१३, २१९, २४८	च	
गोविन्दचन्द	१७४	चक्रगोष्ठ	२९३
गोविन्दर	२७७	चदणान्दि	९५
गोविन्दर	२१४	चङ्गाळ्व	२४१
गोविन्दरस	२४३	चङ्गाळ्वतीर्थ	२२३
गोविन्दराज	१२४, २०४	चटयं	२४२
गोविन्दराजदेव	१२२, १२३	चट्टलदेवि	२१३, २१४, २१५, २१६, २४८
गोगर्भ	९१	चट्टले	२१३
गोष्ट	२४	चढोभ	२२८
गोळपय्यन (वसदि)	२०४	चन्दणान्दियय्यन	१५४
गौड	२९३	चन्दल-देवि	२४८, २९९
गौडिके	२९९	चन्द्युर-पन्द-र्त्तवालि (ग्राम)	१०६
गौतम	२४८	चन्दिकव्वे	१६०
गौळ	२८८	चन्दिमय्य	२३०, २९९
ग्रहा	३५	चन्दियक्कवे-गावुण्डि	१८३
[अ] ह	४०	चन्द्रकीर्ति	२१२, २२७, २८०
ग्रहदत्त	६८	चन्द्रकीर्तिवति	२३९
ग्रहवल	५७, ५८	चन्द्रकीर्तिभट्टारक	२४१
ग्रहमित्रपालित	९२	चन्द्रखान्त	१०३
ग्रहशिरि	४०, ६१	चन्द्रगुप्त	१३८
ग्रहसेन	३६	चन्द्रनन्दी	९४, १२१
ग्रहहथ	३७	चन्द्रप्रभ-सिद्धान्त-देव	२८६
घ		चन्द्रार्थ्य	१३७
घकरव	५२	चन्द्रिकाम्बिका	१४९
घटिकाक्षेत्रम्	१०९	चाकिराज	१२४
घस्तुहस्ति	५४	चाकिसेट्टि	२१८
घोर	१२७		

चागल-देवि	१९८	चिह्न-वीर-शान्तर	२१३
चागि	२१३	चिष्ण	२९३
चागि-समुद्र	२१३	चित्रकूट	२७७, २९९
चागिसान्तर	२१३	चीरि	७८
चाङ्गणार्थ्य	१८६	चुर्चुवायद-गङ्ग	२६७
चाङ्गिमय्य	१८६	चुलुक्य	१०८
चाङ्गल (बसदि)	१८४	चेटिय	४५
चाङ्गिराज	१८६	चेतराज	२
चाणुक्य	२१८	चेर	५१, १०६,
चाण्डराय	१८१	चोक	१७०, २१३, २९३,
चान्द्रायणदभरार	१५०	चोल	१०६, १०८, ११४, १७१, १७२,
चान्द्रायणीदेव	२४१		२०४, २९९, ३०१,
चामण्ड	२२७	चोळप	१४४
चामराज	२६४	चौण्डकेसे	२६४
चामलदेवि	२९९		
चामुण्डपै	१७४	ज	
चामेकाम्वा	१४४	जकवे	२९४
चालुक्य १०६, १०८, १०९, ११४,		जङ्गवे	२१७
१२२, १२३, १२४, १२७, १४३, १४४,		जङ्गय्य	२३६
१६०, १८६, १९८, २०४, २१०, २१७,		जङ्गि	१९३
२१८, २२७, २३७, २६७, २९९		जक्रियब्बे	१४०, १८३, २१३
चालुक्यसीम	१४३	जङ्गि-सेट्टि	२७४
चालुक्य-विक्रमादित्यदेव	२८८	जङ्गिलियोळ	१४०
चावण	२६४	जगत्तुंग	२७७
चावुण्डमय्य	२१७	जगत्तुङ्गदेव	१२७
चित्रकूटान्नाय	२०८	जगदुत्तरङ्ग	२१३
चिल्दें	२१३	जगदेकमलदेव	२०४
चिचकार्य	१३७	जगदेकमलवादिराजदेव	२४८
		जजाहृति	१८१

जभ [क]	३५	जाकलदेवि	२१३
जम(व)म्भै	१६०	जाकियब्बे-गन्ति	१८५
ज[-सित्र]	३१	जान्हवेय (कुल)	९४,९५,१२१
जम्बहल्लि	१९८	जायस'	२२८
जय	२७	जाया	३६
जयकण्ठ	२२७	जालमंगल	१२४
जयकीर्ति	१००	जासूक	२२८
जयकीर्तिदेव	२४१	जिहुल्लिगे	१८१,२१७
जयकीर्तिमुनि	२४०	जितसेनपण्डित	२१३
जयकेशि	२१३,२७७,२९९	जितामित्रा	४१
जयज्ञोण्डचोलमण्डल (विषय)	१७४	जिनचन्द्र	१८२
जयणन्दि	९५	जिनदत्त	१९८,२१३,२४८
जयदास	२३	जिनदत्तराय	१४६
जयदुत्तरज्ञ	१४२	जिनदत्ति	५२
जयदेव	२२,४४,१४९,२२८	जिनदास	२१९
जयदेवपण्डित	११४	जिनदासि	६२
जयनाग	४४	जिननन्दि	१०६,१४३
जयभट्ट	३५	जिवनन्धाचार्य्य	१०६
जयभ[ट्टि]	३१	जिनवर्म्म	१८६
जयभूति	२६	जीवदेव	२
जयवर्म्म	२५२	जीवा	६१
जयवाल	३०	जूजकुमार	२४३
जयसिंह	१०६,१४३,१४४,२१३	जेष्टहस्ति	२२,२३
जयसिंहवल्लभ	१०८	ज्येष्ठल्लिङ्ग (भूमि)	१०९
जयसिङ्ग	१७४		
जयसेन	१२	ठ	
जय	२४	ठानिया (कुल)	२९,३०,४०,६८,७९
जसहितदेव	१२१	ढ	
		ढुक	८२

ण		तिनगर	
गन्दि [आ] वर्त	५९	तिप्पण-भूपति	१७४
गेडेहळिळ	२५३	तिप्पूर	२९९
		तिप्पेयूर	२६३
		तियड्डिय	१३९
तकणलाड	१७४	तिरुनन्द	२१३
तञ्जापुरी	१४२	तिरुम्पानमलै	१७४
तट्टेकेरे	२१९	तिरुमल	१६७
तडङ्गाल-माधव	२१३, २६७, २७७	तिरुळ (गण)	१७४
तण्डयुत्ति	१७४	तीर्थदरुळळ (अन्वय)	१९०
तपसीग्राम	१४९	तील्हण	२१३
तर्द्धवाडि	१८६	तुङ्ग	२२८
तलकाडु	२६३	तुङ्गभद्रा	२५३
तलवनपुर	९५, १२७, २६३	तुरुष्क	१२३
तलेकाड	२६९		२०४, २८८
तले-कावेरि	२४०	तुळु	३०१
तलेयूर	१२७	तेरिदाळ	२८०
तळकाडु	३०१	[ते]-हसनंदिक	८१
तळताळ (वसदि)	२३२	तेवणी	७
तळविति	९५	तैल	२१३, २१४, २१६, २४८
तळेकाडु	२९९	तैलपदेव	१६०, २१३, २४८
तातविकि	१४४	तैलहदेव	२१२
तालवृष	१४३	तैलुग	२४८
तालप	१४४	तैलपदेव	२१३
तालराज	१४३	तोण्ड	२१३
तालिखेड	१२७	तोण्ड-मण्डळिक	२४८
ताळकोल (अन्वय)	२०४	तोद	२६४
तित्रिणीके	२०९	तोरेणाचार्य	१२२, १२३
तित्रिणिक (गच्छ)	२६३	तोलापुरुष	१३२, १४५
		तोळडि	२४१

	६८	[न] न्दि	६७
घनहायि	१४३	नन्दिगच्छ	१४३
धम्मवुरमु	५०	नन्दिगण	२१३, २१५
घर	१०५	नन्दिघोष	८१
धर्म	१०४	नन्दिगिग (ग्राम)	१०६
धर्मनन्द्याचार्य	२१५	नन्दिप्पोत्तरण	११५
धर्मकीर्ति	१४३	नन्दिवर्मा	११२
धर्मपुरी	४६	नन्दिस्सह	१२१, १८८, १८९, १९०, १९२, २०२, २१६, २८८.
धर्मवृद्धि	१८९	नल	२०५, २३७
धर्म-वेष्टि	३३	नलम्पयन्	१७४
धम्मसोमा	११४	नन्नि-चङ्गाळ्व-देव	१९५, १९६
धवलजिनालय	१३७	नन्निय-गद्द	१४२, २६७, २७७
धवल (विषय)	१२	नन्नियगद्द-पेम्माडि	२२२, २६७, २७७
धामधोषा	६८	नन्नियरत्न-देव	२९९
धाम [या]	११	नन्निशान्तर	२१३, २१४, २१५
धारागङ्ग	१२३, १२४, १२७	नयकीर्ति	२१६, २४८,
धारावर्षे	२९९	नयनन्दि	२९७, ३०१
धारे	१४७	नरवर	२२७
धागराज	२	नरमिग	९८
धुलि	१२३	नरमिघडेव	२१३, २६३
धोर	२१०	नरसिंह	१४२
ध्वजतटाक	३८	नरिदो	२९९, ३०१
	३०१	नरिन्दक	२
नगदत्त	२९९	नरेन्द्रभृगराज	१०६
नदालि	२१३	नलमौर्यकदम्ब	१४३, १४४
नदालि	१४०	नन्नरत्त	१०८
नद्वयन	४४	नवकाम	२२४
नदुवर कालिग			
नन्द			
नन्दगिरिनाथ	१५४, २५३, २६७, २७७		१२१, १२२, २७७

नवनेदिक्कुल	१७४	[ना] दिक् [रि]	३५
नवहस्ति	३६	नामपैक्कोण	१७४
नहुष	१०८,३०१	नारणज	११५
नळ	३०१	नारसिंह	२९९
नंदगिरिनाथ	१३८	नारायण	९०,९४
नंदराज	२	नाळकोटे	१४२
नाकण	२६४	निगठ	१
नागचन्द्र-चान्द्रायण	२१८	निडुतद	१८९
नागचन्द्र-देव	१४५	निडुम्बरे	२१३
नागचन्द्रसुनीन्द्र	१८२	निधियगामण्ड	२२७
नागचम्पूपति	२९९	निन्नाम	२९९
नाग [ण] न्दि	११५	निम्मडिवल्ल	२१८
नागदिन	३०	निम्मडिघोर	१५०
नागदिना	३०	निरवद्यधवल	१४३
नागदेव	१०६,१४२,२६४	निरवद्यध्य	१९३
नागदेव्य	१०६	निर्प्रन्थ	९९
नागपुर (ग्राम)	१४९	निर्प्रन्थमहाश्रमणसघ	९८
नागभूतिक्रिया	२४	नीजिकव्व	१६०
नागरखण्ड	१४०,२०७	नीजियच्चरति	१६०
नागलदेवि	३०१	नीतिमार्ग	१३९,१४२,२१३
नागवर्म	१४०,१४२,१८१	नीतिवाक्य-कोड्डुणिवर्म	२५३
नाग-वर्म-पृथ्वीराम	१२७	नीर्गुन्द	१२१
नागसेण	४५	नील	१०६
नागार्जुन	१४०	नीलगुन्दगे	१२७
नागार्थ्य	१३७	नृप-काम	२१३
नागियक्क	२९१	नेपाल	२८८
नाडिक (कुल)	८२	नेमिचन्द्र	११
नाडु	३०१	नेमिचन्द्र	२२७,३०१
नाणव्वेकान्ति	१५०	नेमिदेव	२९९
नादा	८	नेमीश्वरतीर्थ	२७७

नेमेस	१३	परिर्क्षण्डुगं	१२१
नेरिल्लो	१२७	पद्म	२१९
नेह्वत्ति	२१९	पद्मणन्दिसिद्धान्तचक्रवर्ति	२०९
नोक्कय्य	२१९	पद्मनन्दी	२०९
नोक्कय्य सेट्टि	१९७, २१२	पद्मनाभ	९०, ९४, ९५, १२१, १४९,
नोक्कियच्चै	१९८		२७७
नोडवराष्ट्र	१४३	पद्मप्रभ	२२७
नोद्दग	२४८	पद्मावती	१९८, २१३, २४८, २७७,
नोगम्यवाडि	२९७		२९९, ३०१
नोळवि-सेट्टि	२८४	पनसवाडि	२१९
नोळ्म्यवाटि	२९९, ३०१	पनसोग	२२३, २३९, २४०
	प	पन्तिगणग	१०६
पंचाणचद	११	पन्दङ्गचट्टि	१०६
पंडराजा	२	पप्पक	१७३
पङ्कलनाट्टु	१७४	परचकराम	१४३
पद्यप्पळ्ळि	१७४	परमगूळ	१२१
पबलदेव	२१३	परमेश्वर	१९६, २४०, २४१
पद्यवमदि	२१३	परल्लर (गण)	१०७
पट्टण-स्वामि	१९७-२१२	परिधासिका (कुल)	६९
पट्टद (वमदि)	२२२	परियल-देवि	२०१
पट्टवर्द्धिक (अन्वय)	१४४	पर्म्मनडि	१७२
पट्टिग-देव	२५३	पर्म्मनदीय	१३१
पट्टिपोम्बुर्चपुर	२१३, २४८	पर्वत	१०५
पट्टियर-दोरपय्य	१५०	पर्थ	८३
पट्टिलगैरि	१२७	पलाशिका	९६, ९९, १००, १०१, १०२
पट्टर	१०२		१०३, १०४
पट्टित	१७९	पत्कीर्ति	२६९
पट्टित पारिजात	२१३	पत्पण्डित	२६९
पतवर्म्म	३६०	पल्लव	९९, १०८, १२१, १२३,

वेल्लोळ	१३८	भद्रयश	७३
बेहेरु	१२७	मरत	२७७,२९९,३०१
बेसाववे-गान्ति	२३९	मवणन्दि	१३६
बेहेरु	१२७	भागवत	७
बेळियूर	१३१	भागव्चे	२१७
बेळुगेरे	२१८	भानुकीर्ति	१५८,२९७
बेळुवलं	२९९	भानुवर्मा	१०२
बेळुगोळ	१५४	भानुशक्ति	१०४
बोडेयदेवर	२१३	भारवि	१०८,२१३
बोडुगा	२१४	भावदेव	१७३
बोडेगाकि	१४२	भीमसेन	१४४,२२८
बोधिनादि	३७	भुजगेन्द्र (अन्वय)	१०९
बोप्पण	२९१	भुजवळगांग	२२२,२५१,२५३,२६७, २७७,२९९
बोप्पय	३००,३०१	भुजवळ-शान्तर	२१२,२१३,२१४, २१६,२४८
बोप्पवे	२१८,२३०	भुवनैकमल	२०४,२०५,२०७
बोप्पुगन	२४८	भूकियर-कावण्ण	२१०
बोम्म	२१४,२१६	भूलोकमलदेवर	२९२
बोम्मरसगौड	१४६	भूलोकमल सोमेश्वर	२१८
ब्रह्म	३६	भूवेकम	१२१,१२२,१४२,२१३, २६७,२७७
ब्रह्मजिनालय	२०९	भूशु	१७४
ब्रह्मदासिका १९,२०,२२,२३,३१,३५		भोजकर	२
ब्रह्मसेन	१८६	भोजदेव	१२८
भगदत्त	२७७,२९९	मंगध	२१७,२८८
भट्टाकलङ्क	२७४	मगली (ग्राम)	१०६
भट्टारि (क्षेत्रम्)	१०९	मंगि	१४३
भट्टिभव	९२	मंगि युवराज	१४३
भट्टि [से] न	२६		
भट्टिसोमो	९३		
भद्रनादि	७३		
भद्रबाहु	१३८,२०९,२१३,२१४		

महिन्द्रचन्द्रक	१४८	मादेय सेनवोव	१४५
महिलन	२१	माधव ९५, १२१, १२२, १४२, १४८,	
महीचन्द्र	२२८	१४९, २१३, २१९, २६७, २७७, २९९	
महीदेव-भटार	१९३	माधवचंद्र त्रैविद्य-देव	१४५
महीपाल १४१, १७४, २७७, २९९		माधवचन्द्रदेव	३०१
महेन्द्रपुर	२७७	माधवति	१०७
महेन्द्र-बोळ्ळ	१९३	माधववर्म	९०, ९४
महोप्र (कुल)	१३२	माधवसेन-देव	१९८
मळिहारि (नदी)	२३७	माधव सेन भट्टारक-देव	२८६
मारुणब्वे	२६३	मानव्यस (गोत्र) ९७, ९८, १००,	
मारुलदेनि	२१८	१०३, १०४, १०५, १०६, ११४	
मागध	२	मान्वात-भूप	२९९
माजनन्दि २०४, २६७, २७७, २८०,		मान्यलेट	१२७
२९३, ३००		मान्यपुर १२१, १२२, १२३, १२४	
माघहस्ति	५५	मायन	२६२
माङ्गवरसि	२१३	मार	१७९, २३१
माचय्य	२१८	मारय्य	२७६
माचवे	२१८	मारय्य-माचि देव	२१८
माचिसेट्टि	२१८	मारसिंग २१९, २२२, २५३, २६७,	
माचेय नायक	२१८	२७७, २९९	
माजक	२७३	मारसिंह १२२, १४९, १९६, २१३,	
माणिकनन्दिदेव	२१८	२७७, २९२	
माणिक पोत्रसळाचारि	२०१	माराशब्द	१२३
माणिक्य २१८, २९२		मारिषेण	९४
माणिमोजन	२९३	मारे [थ]	२७३
मातृदिन	२९	मारैयनायक	२१८
मात्रिदिन	३३	मालव १०८, १२३, २०४, २०८, २८८,	
मादवे	२१८	२९३, २९९	
मादिगवुंड	२७२	मावण्ण	२६२

बजनागरी (शाखा)	८०	वादिराज	२१३, २१४, २१५, २१६,
बजरनय	८४		२६४, २७४, २८८
बज्रणन्याचार्य्य	२१३	वादीभसिंह	२१४, २२६, २७७
बज्रदाम	१५३	वाद्या	२३७
बज्रपाणि-पण्डित-देव	१७९, १८५	वाधर	३१
बडूराबुल्ल	२४३	वाधिशिव	८४
बडूाचार्य्य-व्रतिपति	२९९	वानसवंश	१८६
बतक	५६	वानसाम्राय	१८६
बत्सराज	१२३, १२७, १६०	वारणा	१७, ३४, ३७, ४१, ५८, ७६, ८०
बनवासी	१०८, १७४, १८१, २०९		८२
बयर्सिंह	१४१	वारिपेणाचार्यसद्व	१०३
वरण	४४, ४७, ५२	वालमीकि	२१३
वर[ण]हस्ति	२२	वासव	२१३
वरदत्ताचार्य्य	२१३	वासन्तिका	२९७, २९९
वराळ	२०४	वासवचन्द्र	१४७
वरुण	६९	वासा	८
वर्गडे षाचल-देवि	२५३	वासुदेव	६२, ६५, ६९, १०७
वर्धमान	५८, ९, ३०, ३४, ३७, ४२, ५२ ७५, १०७, १७३, २०४, २४८	वासुदेवा	२०
वर्मे	२३	वासुपूज्य	२२७, २६५
वलहारि	१४४	विष्णिरमवीर	१७४
वल्लभ	१२२, १२३, १२४, १२७, १४४, १४९, २१३, २४८, २७७	विक्रम	१२२, १४२, २१३, २६७, २७७
वसुल	२६, ६३	विक्रमचक्रि	२२७
वसुलवाटकं	१०३	विक्रमशान्तरदेव	२१३, २१४, २२६,
वहसतिमित	२, ६		२४८
वागठ	२२८	विक्रमसिंह	२२८
वाणसकुल	१८६	विक्रमादित्य	११४, १३२, १४३, १४४, १९६, २०४, २१७, २२७, २४१
वातापिपुरी	१०८	विजयकीर्ति	९४, १२४, २२८
		विजयपार्श्वदेव	३०१

सङ्गमिक	२६	सातव्य	२१८
सङ्ग	९१	सादिता	८२
सङ्गाहला	१४३	सान्तर	१३९, १४५, २१३, २४८
सत्यमंग	२२२, २६७, २९९	सान्तलिंगे	२१३
सत्यनीतिवाक्य	१४२	सान्तलिंगेशायिर	२४८
सत्यवाक्य	२१३, २६७	सान्तलिंगे सायिर	१९७
सत्यवाक्य-कौञ्जनिवर्म्म	१४९, २७७	सान्तलिंगे-सासिरम	१९८
सत्यवाक्य जिनालय	१३१	सान्तियञ्चरसि	२१३
सत्याध्रय	१०६, १०८, १०९, ११४, १४३, १४४, १८६, २१७, २१८, २२७, २३७, २४८	सान्तोज	२१९
सयिसहा	१७	सामरिवादो (डो) (ग्राम)	१०६
सधि	३५	सामिय	१४२
सन्ति	२९	सामियञ्चे	१४५
सन्दिग	१४०	सामियार	१०६
सन्धि	३६	सासल-बम्मध्य	२१८
स [न्धि] क	२४	सासवेवादु	१२७
समण	१, २	सि [किमत्रि] गिरि [पि] डल्लु	१२७
समन्तभद्र	२०७, २१३, २१४, २१७, २६४, २७४, २८८	सिङ्ग	२१७
सयिगोष्ठ	२६७	सिङ्गण	२१०
सय्य-दण्डाधिप	२८८	सिङ्गिदेव	२१३
सर्व्वणन्दि	१३१, २०४	सिद्धनन्दि	१०६
सहकार	२१३, २४८	सिद्धान्तरत्नाकरदेव	२१२
सळ	३०१	सिनविपु	७५
सकित	१४३	सिन्देश्वर (क्षेत्रम्)	१०९
संगम	१२७	सिरिणन्दि	२१०
सघनधि	६०	सिरिपत्ति (ग्राम)	१०६
साईव्या	१४१	सिरिपुर	१९३
सातकणि	२	सिरियनन्दि	२१०
		सिरियमसेट्टि	२९९
		सिरियुर	२७७

सिवदास	४३	सून्दी	१४२
सिवमार-देव	२६७	सूरस्थ-गण	१८५,२६९
सिवार	१०६	सूर्यट	२२८
सिहक	७१	सूर्य-चमूप	२८८
सिहदता	४४	सूर्य दण्डनायक	२८८
सिहनादिक	७१	से (चे)ल्लकेतन	१२७
सिहमित्र	१७	सेदोजन	१३१
सिंग	१२०,२९३	सेन ४७,४८,६२,१८६,२०५,२१७,	
सिंगण-दण्डनायक	२९१		२२७,२३७,२८६
सिंगण-दण्डाधिपति	२९१	सेनवोव	२१०,२२६
सिद्धर्नन्दि	२६७,२७७,२९९	सेनवोव-वोग देव	२५१
सिंहनन्याचार्य	२१३,२१४,२७७,	सेनवर-दण्डनाय	२८८
	२९९	सेन्द्र	१०९
सिंहपथ	२	सेन्द्रक	१०४,१०६
सिंहरथ	२१३	सेम्बनूर	२८८
सिंहल	१०६	सैगोट्ट	१८२,२१३
सिंहसेनापति	१०३	सैगोट्टपेर्मानडि	१८२
सीवट	१६०,२७७	सैगोट्ट-विजयादित्य	२७७
सीवटे	१३०	सोम	२१७,२४३,३०१
सीह	३२,५५	सोमाभिवका	२४३
सुकोशल	२०४	सोमिल	९३
सुगन्धवर्ति	१३०,१६०,२३७	सोमेश्वर	२०४,२९३,३०१
सु [चि ल]	२९	सोरिगाव	२२७
सुन्दर	१७४	सोवरस	२४३
सुव्यय	२१८	सोसवूर	१७९,१८५,१९४
सुमतिभट्टारक	२१३	सोसेवूर	२००
सुप्यदेव	२१८	सौराष्ट्र	२१७,२८८
सुराष्ट्र (गण)	२०४,२३४	स्कन्दगुप्त	९३
सुल्हाटवी	१४२	स्थानिय (कुल)	४२,५४,५५,५६,८३
सुल्ल	१२७		

स्थिर	२२	हस्तहस्ति	५५
हगनूर	१२७	हृच्छुर	२९९
हगिनंदि	४५	हाउञ्जळ	२९९, ३०१
[ह] गु [देव]	३१	हारिती	९७, ९८, १००, १०३, १०४,
हटिकिय	४४		१०६, ११४
हट्टण	२१८	हारुवनहळ्ळि	१८९
हनूमान	१०६	हिरण्यगर्भ	२१३
हन्तियूर	२८३	हिरियकेरे	२२२
हब्बण	२१०	हिरियदण्ड-नायक	३०१
हरकेरे	२२२	[हु] ल	३८
हरदेव	२२८	हुगियवे	२१८
हरी (वंश)	२९९	हुलिगेरे	२९९, ३०१
हरिगे	२१९	हुलियकेरे	२२२
हरिण (न्दि) देव-मुनि	२९१	हुलियमरसुं	१२७
हरितमालकट्टि	४५	हुविष्क	३९, ४३, ४५, ५०, ५६
हरिति	५	हेमगणगिले	२७७
हरियब्बरसि	२९३	हेमनन्दि	२६९
हरियलदेवि	२९३	हेमसेन	२७४
हरिवर्म ९०, ९४, ९५, १०३, १०४,		हेमसेनमुनि	२१३, २१५
१२१, १२२, १४२, १४९, २१३, २६७,		हेम्माडि	२७७, २९९
२७७, २९९		हैद्य	१२२
हरिश्वन्द्र २१३, २१९, २७७, २९९		होत्तगे (गच्छ)	२४०
हर्म	२९९	होनेधर (क्षेत्रम्)	१०९
हपे	१२७	होय्सल	२३०, २६३, २९९, ३०१
हलसिगे	३०१	होसजल्लु	१२७
हलोजन	२१८		
हसुम्बे	१६६		

